रहस्यनामा

रहस्यनामा

अनुक्रम

अन्तोनी पोगोरेल्स्की
(अलेक्सेई पेरोव्स्की)

१७८७–१८३६

अन्तोनी पोगोरेल्स्की
(अलेक्सेई पेरोव्स्की)

१७८७-१८३६

अन्तोनी पोगोरेल्स्की प्रकृतिविज्ञानी, इतिहासकार, वाङमीमांसक और लेखक अलेक्सेई अलेक्सेयेविच पेरोव्स्की (१७८७–१८३६) का उपनाम था। वह साम्राज्ञी येकातेरीना द्वितीया के काल के एक कुलीन काउंट अ० रज़ूमोव्स्की के जारज पुत्र थे। उन्होंने घर पर ही बड़ी अच्छी शिक्षा पायी और १८०५ में मास्को विश्वविद्यालय में दाखिला लिया। दो साल में ही इसकी पढ़ाई पूरी करके उन्होंने जर्मन, फ़्रांसीसी और रूसी में तीन व्याख्यान दिये और पी-एच० डी० की डिग्री पायी। ये व्याख्यान कालांतर में एक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित हुए। विश्वविद्यालय से डिग्री पाकर पेरोव्स्की सरकारी नौकरी में आ गये।

पेरोव्स्की सुविख्यात रूसी भावुकतावादी लेखक निकोलाई करमज़िन के प्रशंसक थे, उन्हीं की रचनाओं के प्रभाव में उनकी साहित्यिक अभिरुचि और दृष्टिकोण बने। प्रसिद्ध कवियों वसीली झुकोव्स्की और प्योत्र व्याज़ेम्स्की का प्रभाव भी उन पर पड़ा। पेरोव्स्की की पहली रचनाएं गाथागीत और भावुकतापूर्ण परितोषगीत ही थीं।

१८११ में पेरोव्स्की के प्रयासों से मास्को विश्वविद्यालय में 'रूसी साहित्य-प्रेमी समाज' की स्थापना हुई, जो १८३० तक काम करता रहा। यह समाज साहित्यिक रचनाओं और लोक-साहित्य की सामग्रियों के संग्रह प्रकाशित करता था, साहित्य-संगीत सभाएं और सुबोध व्याख्यान आयोजित करता था।

१८१२ में नेपोलियन के आक्रमण के विरुद्ध रूसी जनता के युद्ध से अधिकांश अग्रणी रूसी अभिजातों की ही भांति पेरोव्स्की में भी देशभक्ति की गहरी भावना जागी। वह सेना में भरती हो गये। नेपोलियन की फ़ौजों के विरुद्ध रूस में छापामार कार्रवाइयों में और ड्रेस्डन तथा कुल्म के पास हुई लड़ाइयों में उन्होंने अपनी वीरता का परिचय दिया। १८१३ में वह अपने बहनोई, सैक्सनी प्रांत के रूसी गवर्नर-जनरल प्रिंस रेप्निन के एडजुटेंट बन गये। ड्रेस्डन में दो वर्ष के प्रवास के दौरान पेरोव्स्की ने समसामयिक जर्मन साहित्य का अध्ययन किया, लेखकों, कलाकारों और विद्वानों के साथ परिचय बढ़ाया। ड्रेस्डन जर्मन स्वच्छंदतावाद का केंद्र था। इसके सर्वाधिक विलक्षण प्रतिनिधियों – एर्न्स्ट थियोडोर होफ़मान, ल्युड्विग टिक और क्लीमेंट ब्रेंटानो – के सृजन में
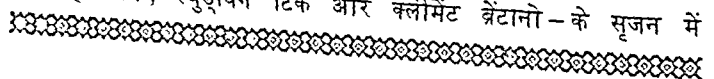
पेरोव्स्की ने गहरी रुचि ली। जर्मन स्वच्छंदतावादी साहित्य के सारे रहस्यमय जगत की, निराली कथा-कहानियों की छाप अन्तोनी पोगोरेल्स्की की मौलिक रचनाएं स्पष्टत: देखी जा सकती है।

स्वदेश लौटने पर पेरोव्स्की अपने समय के अग्रणी साहित्यकारों के सपर्क में आये। १८२० में वह स्वच्छंद रूसी साहित्य-प्रेमी समाज के सदस्य बने जो १८१६ में पीटर्सबर्ग में चल रहा था। दिसबरवादी* लेखक कोंद्राती रिलेयेव, फ्योदोर ग्लीका और विल्हेल्म क्युखेलबेकेर भी इस समाज के सदस्य थे।

१८२२ में काउंट रजूमोव्स्की की मृत्यु के पश्चात पेरोव्स्की को उक्राइना में एक जागीर विरासत में मिली। सरकारी नौकरी से रिटायर होकर वह अपनी बहन काउंटेस अ० अ० तोलस्तोय और उसके पुत्र अलेक्सेई तोलस्तोय के साथ वहा जा बसे। उनका यह भानजा कालातर में प्रसिद्ध कवि और लेखक बना।

१८२५ में 'नोवोस्ती लितेरातूरी' (साहित्य समाचार) पत्रिका में प्रकाशित कहानी 'लाफेर्तोवो की नानबाईन' रूसी साहित्य की पहली मौलिक रोमाच कथा थी। समीक्षकों ने इसका स्वागत किया। महाकवि अलेक्सान्द्र पुश्किन ने अपने एक पत्र में इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। १८२८ में पोगोरेल्स्की की स्वच्छंदतावादी कहानियों का सग्रह 'प्रेत छाया यानी उक्राइना की सैरी शामें' प्रकाशित हुआ। पेरोव्स्की ने अपने भानजे की शिक्षा-दीक्षा की ओर बहुत ध्यान दिया। उसके साथ उन्होंने पश्चिमी यूरोप की यात्रा की। वाइमेर में पेरोव्स्की गोथे से मिले। अलेक्सेई तोलस्तोय के लिए पेरोव्स्की ने 'काली मुर्गी' कहानी लिखी। १८३० में उनके उपन्यास 'मठवासिनी' का पहला भाग प्रकाशित हुआ। १८८४ और १८८६ में यह अलग पुस्तक के रूप में छपा और बहुत लोकप्रिय हुआ।

---

* दिसबरवादी उन रूसी कुलीन क्रांतिकारियों को कहा जाता है, जिन्होंने दिसबर १८२५ में निरकुश राजतत्र और भूदासप्रथा के खिलाफ विद्रोह किया। विद्रोहियों की दुखद पराजय हुई। उनके पाच नेताओं को फासी पर चढ़ा दिया गया, १२१ लोगों को साइबेरिया निर्वासित कर दिया गया, बहुत से सैनिक अफसरों की पदावनति करके उन्हे साधारण सिपाही बना दिया गया।

लाफ़ेर्तोवो की नानबाईन

मास्को के जलने* मे कोई पद्रह साल पहले की बात है। "टूटी चौकी" से थोडी दूर लकडी का एक छोटा-सा मकान था, उसकी सामने की दीवार मे पाच खिडकिया थी और बिचली खिडकी के ऊपर दुतल्ले पर एक छोटा कमरा था। टूटी-फूटी बाड से घिरे छोटे-से अहाते के बीचोंबीच एक कुआ दीख पडता था। दो कोनो मे अधढही कोठरिया थी, जिनमे एक कुछ साधारण और कुछ टर्की मुर्गियो के लिए शरण का काम देती थी। कोठरी के आर-पार लगे डडे पर बैठकर दोनो तरह की मुर्गिया अमन-चैन से रात काटती थी। मकान के सामने छोटे-से जगले के पीछे रोवानबेरी के दो-तीन ऊचे पेड उग रहे थे, जो जमीन पर उगती हिमालू और काली बेरियो की झाडियो को हिकारत से देखते प्रतीत होते थे। ओसारे के पास ही एक छोटा-सा तहखाना बना हुआ था, जिसमे खाने-पीने का सामान रखा जाता था।

इस खडहरनुमा मकान मे ही पेंशनयाफ्ता डाकिया ओनुफ्रिच अपनी पत्नी इवानोव्ना और बेटी माशा के साथ आ बसा था। जवानी के दिनो मे ओनुफ्रिच फौज मे रहा था, बीसेक साल तक नौकरी करते हुए वह हवलदार बन गया था। फिर इतने ही बरस तक मास्को के डाकघर की उसने दीन-इमान से सेवा की, कभी भी, या कम से कम अपनी किसी गलती की वजह से, जुर्माना नही भरा और आखिरकार पेंशन पाने लगा। यह मकान उसका अपना था। कुछ समय पहले ही चल बसी बुढिया फूफी से उसे विरासत मे मिला था। यह बुढिया अपने जीवन-काल मे सारे लाफ़ेर्तोवो

---

* आशय १८१२ मे रूस पर नेपोलियन के आक्रमण के दिनो मे मास्को में लगी आग से है। फ्रास की फौजो ने मास्को पर कब्जा कर लिया और उसके कुछ दिन बाद ही मास्को मे आगे लगने लगी, जिनमे शहर का बहुत बडा हिस्सा जलकर राख हो गया।

मोहल्ले में "लाफ़ेर्तोवो की नानवाईन" के नाम से मशहूर थी, क्योंकि उसका काम था शहद मिली खसखस की मीठी रोटियां बनाना, और ये रोटियां बनाने में वह गज़ब की माहिर थी। कैसा भी मौसम क्यों न हो, वह रोज़ाना सुबह तड़के अपने घर से निकलती और "टूटी चौकी" को चल देती। उसके सिर पर खसखस की मीठी रोटियों से भरी टोकरी होती। चौकी पर पहुंचकर वह साफ़ कपड़ा बिछाती, उस पर टोकरी उलट देती और रोटियों की ढेरियां लगाकर बैठ जाती। शाम तक वह इसी तरह बैठी रहती, एक बार भी हांक न लगाती, गहरी चुप्पी साधे ही अपना माल बेचती रहती। जैसे ही झुटपुटा घिरने लगता वह अपनी रोटियां टोकरी में बटोरती और धीमी चाल से घर को चल देती। चौकी पर पहरा देनेवाले सिपाहियों को बुढ़िया अच्छी लगती थी, क्योंकि वह उन्हें कभी-कभार खसखस की मीठी रोटी मुफ़्त में दे दिया करती थी।

पर यह धंधा तो बुढ़िया के लिए परदा ही था, जिसकी ओट में वह बिल्कुल दूसरा ही पेशा करती थी। सांझ ढले जब शहर के दूसरे इलाकों में बत्तियां जलने लगतीं और बुढ़िया के घर के चारों ओर अंधेरा अपना दामन फैला देता, तो छोटी-बड़ी, हर तरह की हस्ती के लोग दबे पांव उसके मकान पर आते और हौले-से फाटक का कुंडा खटखटाते। ज़ंजीर से बंधा सुलतान नाम का कुत्ता ज़ोर-ज़ोर से भौंककर बाहर के आदमी के आने की ख़बर देता। बुढ़िया दरवाज़ा खोलती, अपनी लंबी हड़ियल उंगलियों से गाहक का हाथ पकड़ती और उसे नीची छतवाले कमरे में ले जाती। वहां दीये की टिमटिमाती रोशनी में ढीली चूलोंवाली बलूत की मेज़ पर ताश की गड्डी रखी दीखती, जो इतनी बार इस्तेमाल की गयी थी कि अब पान और ईंट के पत्तों में फ़र्क करना मुश्किल था ; तख्ते पर लाल तांबे की कहवेदानी रखी होती और दीवार पर छाननी टंगी होती। बुढ़िया गाहक के हाथ से पहले चढ़ावा लेती और फिर ज़रूरत के मुताबिक ताश की गड्डी उठाती या कहवेदानी और छाननी से काम लेती। उसके कंठ से भावी सुख-सम्पदा के वायदों की अजस्र धारा बह निकलती और आशाओं के मीठे सपनों से गदगद गाहक उसे चढ़ावे से भी दूना नेग देकर जाते।

बस, इस तरह इतमीनान से इस धंधे में उसके दिन कट रहे थे। यह सच है कि ईर्ष्यालु पड़ोसी पीठ पीछे उसे टोनहाई और चुड़ैल कहते

थे, लेकिन उससे सामना होने पर झुककर सलाम करते थे और दादी मा कहकर पुकारते थे। उनकी ऐसी इज्जत का एक कारण यह भी था कि एक बार उसके एक पडोसी को पुलिस मे शिकायत करने की सूझ पड़ी थी। उसने लिखा कि लाफेर्तोवो की नानवाईन ताश और कहवे के दानो की मदद से किस्मत बूझने का अवैध धंधा करती ही, यही नही उसके यहा सदिग्ध लोगो का आना-जाना है। अगले दिन एक पुलिसवाला बुढिया के घर आ पहुंचा, अदर जाकर बडी देर तक तलाशी लेता रहा और आखिर बाहर आकर बोला कि उसे कुछ नही मिला। न जाने दादी मा ने अपने बेकसूर होने का क्या सबूत दिया, वैसे इससे फर्क भी क्या पडता है! बस आरोप झूठा पाया गया। भाग्य ही बेचारी नानवाईन का साथ दे रहा लगता था। कुछ ही दिन बाद उस पडोसी का चुस्त-फुर्तीला लडका आगन मे खेलते-खेलते एक कील पर गिर पडा और उसकी आख फूट गयी, फिर उसकी घरवाली का अचानक पाव फिसल गया और उसे मोच आ गयी। लेकिन उसकी विपदाओ का इतने पर ही अत नही हुआ उसकी सबसे अच्छी गाय, जो पहले कभी बीमार नही पडी थी, एकाएक ही मर गयी। हताश पडोसी ने बडी मुश्किल से रो-धोकर और भेंट चढाकर बुढिया का प्रकोप शात किया – तब से सभी पडोसी उसे उचित आदर-सम्मान देने लगे थे। जो लोग मकान बदलकर लाफेर्तोवो से दूर कही, जैसे कि *प्रेस्नेन्स्की ताल पर, ख्रामोव्निकी या प्यात्नित्स्कया मोहल्लो मे* जा बसते थे, वे ही नानवाईन को खुलकर चुडैल कहने की हिम्मत कर पाते थे। वे तो यह बात अपनी आखो देखी बताते थे कि अधेरी रातो मे शोलो-सी दहकती आखोवाला काला काग बुढिया की छत पर आता है। कुछ लोग तो कसम खाकर यह भी कहते थे कि बुढिया का काला बिल्ला, जो रोज़ाना सुबह उसे फाटक तक छोडने आता था और शाम को फाटक पर खडा उसके लौटने का इतज़ार करता था और कोई नही शैतान ही है।

ये अफवाहे उडती-उडती ओनुफ्रिच तक भी पहुच ही गयी। उसका पेशा ही ऐसा था कि बहुत से घरो की ड्योढी मे वह आ-जा सकता था। ओनुफ्रिच धर्मभीरु व्यक्ति था और इस विचार से कि उसकी सगी फूफी ने शैतान से नाता जोड लिया है उसकी आत्मा दुखी हो उठी। बडी देर तक वह यह तय नही कर पाया कि करे तो क्या करे!

"इवानोव्ना!" आखिर एक शाम को विस्तर पर लेटते हुए वह वोला, "इवानोव्ना, बस फ़ैसला कर लिया। कल सुवह ही फूफी के पास जाऊंगा और उसे मनाने की कोशिश करूंगा कि वह अपना यह काला धंधा छोड़ दे। ईशर की दया से नव्वे वरस की होने को जा रही है। इस उम्र में पराश्चित करना चाहिए, अपनी आत्मा की सोचनी चाहिए।"

ओनुफ़्रिच का यह इरादा उसकी घरवाली को ज़रा भी पसंद न आया। लाफ़ेर्तोवो की नानवाईन को सभी अमीर समझते थे और ओनुफ़्रिच उसका इकलौता वारिस था।

"सुनो तो!" उसकी त्योरियां सहलाते हुए वह प्यार से बोली, "मेहरवानी करके दूसरों के काम में दखल मत दो। अपनी चिंताए क्या कम हैं: माशा वड़ी हो रही है; व्याहने का दिन आयेगा तो दहेज के विना दूल्हा कहां मिलेगा? देखो न, हमारी बेटी तुम्हारी फूफी की लाड़ली है, उसके काज में फूफी को छोड़कर और कोई हमारी मदद नही करनेवाला। सो, अगर तुम्हारे दिल में माशा के लिए तरस है, मेरे लिए ज़रा-सा भी प्यार है तो वह भली वुढ़िया, जैसी है उसे रहने दो। तुम तो जानते हो..."

इवानोव्ना कुछ और कहने जा रही थी, पर तभी उसने देखा कि ओनुफ़्रिच खर्राटे भर रहा है, उसे याद आया कि वे दिन भी थे जब उसकी बातों को वह इतनी बेध्यानी से नहीं सुनता था। उदासी भरी एक नज़र उस पर डालकर इवानोव्ना दूसरी ओर मुंह करके लेट गयी और जल्दी ही खुद भी खर्राटे भरने लगी।

अगले दिन सुवह तड़के जब इवानोव्ना गहरी नींद ले रही थी, ओनुफ़्रिच हौले-से विस्तर से उठा, चमत्कारी संत निकोलाई की देव-प्रतिमा के सामने खड़े होकर उसने प्रार्थना की, फिर अपनी टोपी पर चमकते उकाव* और डाकिये के विल्ले को ऊनी चीथड़े से रगड़ा और वर्दी का कोट पहन लिया। फिर अपनी हिम्मत वुलंद करने के लिए एक गिलास वोद्का चढ़ाकर वह ड्योढ़ी में चला आया, वहां उसने अपनी भारी तलवार कमर से वांधी और "टूटी चौकी" को चल दिया।

---

* रूस के सरकारी कर्मचारियों और अधिकारियों की वर्दी की टोपी पर रूस के राज्य-चिह्न—दो सिरोंवाले उकाव—का विल्ला लगा होता था।

बुढ़िया बड़े प्यार से उससे मिली।

"आओ, भतीजे, आओ!" वह बोली, "ऐसी कौन सी मुसीबत आ पड़ी जो इतनी सुबह घर से निकल पड़े? अच्छा, आओ, बैठो।"

ओनुफ्रिच बेंच पर फूफी के बगल में बैठ गया, खखारकर गला साफ करने लगा, पर उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि अपनी बात कैसे शुरू करे। इस क्षण यह जीर्ण-शीर्ण बुढ़िया उसे तीस साल पहले तुर्कों की तोपों से भी ज्यादा डरावनी लग रही थी। आखिर उसने साहस बटोरा।

"फूफी!" दृढ़ स्वर में वह बोला। "मैं एक गम्भीर मामले पर आपसे बात करने आया हूं।"

"बोलो क्या बात है?" बुढ़िया ने जवाब दिया, "मैं सुन रही हूं।"

"फूफी, अब इस लोक में तुम्हें ज्यादा दिन तो जीना नहीं है। यही दिन हैं पश्चात्ताप करने के, शैतान से नाता तोड़ने के, उसके बहकावों से छूटने के!"

बुढ़िया ने उसे आगे नहीं बोलने दिया। उसके होंठ नीले पड़ गये, आंखों में खून उतर आया, नाक ठोड़ी से टकराने लगी।

"निकल जा मेरे घर से!" गुस्से के मारे हांफते हुए वह चीखी। "दफा हो जा! तेरी टांगें सूख जायें जो तूने फिर कभी मेरी दहलीज लांघी!"

उसने अपना हड़ियल हाथ उठाया। ओनुफ्रिच की तो डर के मारे जान सूख गयी। टांगों में पुरानी फुर्ती फिर से लौट आयी एक छलांग में वह सीढ़ियां लांघ गया और दौड़ता हुआ सीधे अपने घर जा पहुंचा, एक बार भी उसने पलटकर नहीं देखा।

तब से बुढ़िया और ओनुफ्रिच के परिवार के बीच कोई संबंध नहीं रहा। कुछ साल बीत गये। माशा पर यौवन आया वह वसंती दिन जैसी मनमोहक हो गयी। नौजवान उसके आगे-पीछे मंडराते थे, बूढ़े उसे देखकर अपनी बीती जवानी पर आहें भरते थे। लेकिन माशा गरीब थी और कोई उसका रिश्ता मांगने नहीं आ रहा था। इवानोव्ना को रह-रहकर बूढ़ी फूफी की याद हो आती और वह अपने मन को शांत न कर पाती।

"तेरे वाप का तो सिर फिर गया था!" वह अक्सर माशा से कहती। "क्या ज़रूरत पड़ी थी अपनी टांग अड़ाने की? अब वैठी रह सारी उमर कुंआरी!"

वीसेक साल पहले, जब इवानोव्ना जवान और सलोनी थी, उसे ओनुफ़्रिच को इस बात के लिए मनाने में कोई खास दिक्कत न होती कि वह जाकर फूफी से माफ़ी मांग ले, उससे सुलह कर ले। लेकिन जब से उसके गालों की लाली का स्थान झुर्रियां लेने लगी थीं, ओनुफ़्रिच को भी इस बात का ध्यान आ गया था कि पति ही घर में बड़ा होता है, और वेचारी इवानोव्ना को मन मसोसकर अपना राज छोड़ना पड़ा था। ओनुफ़्रिच खुद तो कभी बुढ़िया का ज़िक्र करता ही नहीं था, अपनी पत्नी और बेटी को भी उसने फूफी का नाम तक लेने की सख्त मनाही कर रखी थी। इसके बावजूद इवानोव्ना ने फूफी से सुलह करने की ठान ली थी। खुलकर तो वह कुछ कर नहीं सकती थी, सो उसने तय किया कि अपने पति से चोरी-छिपे बुढ़िया के घर जायेगी और उसे समझायेगी कि उसके भतीजे की बेवकूफ़ी से न उसका और न उसकी बेटी का ही कुछ लेना-देना है।

आखिर उसे अपना इरादा पूरा करने का मौका मिल गया: ओनुफ़्रिच को कुछ दिनों के लिए एक वीमार पड़ गये पोस्टमास्टर की जगह काम करने भेजा गया। उसके जाते समय इवानोव्ना बड़ी मुश्किल से ही अपनी खुशी छिपा पायी। प्यारे पति को चौकी पर विदा करके उसने अभी आंसू भी न पोंछे थे कि बेटी का हाथ पकड़ा और तेज़ कदम बढ़ाती घर को चल दी।

"माशा," वह बोली, "जल्दी से अच्छे कपड़े पहन लो। हम किसी से मिलने जा रहे हैं।"

"किसके यहां जा रहे हैं, मां?" माशा ने हैरान होकर पूछा।

"भले लोगों के यहां," मां ने जवाब दिया। "जल्दी करो, माशा, जल्दी। वक्त मत गंवाओ। सांझ हो रही है, हमें दूर जाना है।"

माशा दीवार पर गत्ते के चौखटे में टंगे आईने के पास गयी, कानों के पीछे बाल समेटे, गाढ़े गेहुएं रंग की लंबी चोटी को संवारा, फिर छींट का लाल फ़्रॉक पहना और गले में रेशमी रूमाल; एक बार फिर आईने के सामने घूम गयी और मां से बोली कि तैयार है।

रास्ते मे इवानोव्ना ने बेटी को बता दिया कि वे फूफी के यहा जा रहे है।

"उसके घर पहुचते न पहुंचते अंधेरा हो जायेगा," उसने कहा, "तब वह घर पर ही मिलेगी। देखो माशा, फूफी का हाथ चूमना, कहना कि इतने दिनो से मिली नही, फूफी के बिना उदास हो गयी हो। पहले तो वह नाराज़ होगी, पर मैं उसे खुश कर लूगी। इसमे हमारा क्या कसूर कि बूढ़ा सठिया गया।"

बातें करते-करते वे बुढ़िया के घर तक जा पहुची। खिडकियों की बद झिलमिलियो मे रोशनी छन रही थी।

"देखो, दादी का हाथ चूमना मत भूलना," फाटक के पास पहुचते हुए इवानोव्ना ने फिर से याद दिलाया।

सुल्तान ज़ोर से भौका। फाटक खुला, बुढिया ने हाथ बढाया और उन्हे कमरे मे ले गयी। वह उन्हे अपने गाहक ही समझे हुए थी।

"हमारी मेहरबान फूफी जी! " इवानोव्ना ने बोलना शुरु किया।

"जाओ भाड मे!" भतीजे की बहू को पहचानकर बुढिया चिल्लायी। "क्यो आयी हो यहा? मैं तुम लोगो को नही जानती, न जानना चाहती हू!"

इवानोव्ना अपना रोना रोने, पति को बुरा-भला कहने और माफी मागने लगी, लेकिन बुढिया के कान पर जू तक न रेगी।

"कह दिया मैंने, दफा हो जाओ यहा से!" वह चिल्ला रही थी, "जाओ, वरना! " उसने अपना हाथ उठाया।

माशा डर गयी, मा का आदेश उसे याद आया और वह ज़ोर-ज़ोर से रोते हुए उसके हाथ चूमने लगी।

"दादी मा, दादी मा!" वह कह रही थी, "मुझ पर गुस्सा मत करो, मैं इतनी खुश हू कि फिर से आप से मिल पायी हू!"

आखिर माशा के आसुओ मे बुढ़िया का कलेजा पसीजा।

"अच्छा, अब बंद करो रोना," उसने कहा, "मैं तुमसे नाराज नही हूं, तुम्हारा कोई कसूर नही, लाडो। रो मत, माशा। कित्ती बडी हो गयी, कित्ती प्यारी है तू! " उसने माशा का गाल थपथपाया और कहना जारी रखा, "आ, बैठ जा मेरे पास! बैठ जाओ, इवानोव्ना! कैसे इतने दिनो बाद याद किया?"

इवानोव्ना यह सवाल सुनकर खुश हो गयी और सब कुछ बताने लगी: कैसे वह पति को मनाती रही थी, लेकिन वह नहीं माना था, उलटे उसने मां-बेटी को फूफी से मिलने की सख़्त मनाही कर दी थी, इस पर वह कितनी दुखी हुई थी और कैसे आखिर अब ओनुफ़्रिच के बाहर जाने पर फूफी को सलाम बजाने चली आयी थी। बुढ़िया ने इवानोव्ना की बातें अधीरता से सुनीं।

"अच्छा, ठीक है," वह बोली, "मैं अपना मन मैला नहीं रखती, लेकिन अगर तुम चाहती हो कि मैं बीती बात भुला दूं तो वायदा करो: जैसे मैं कहूंगी वैसा ही करोगी। इस शर्त पर तुम्हें फिर से मेरी किरपा मिलेगी और मैं माशा को सुखी बना दूंगी।"

इवानोव्ना ने कसम खायी कि फूफी की हर बात उनके लिए पत्थर की लकीर होगी।

"अच्छा," बुढ़िया बोली, "अब जाओ, कल शाम को माशा अकेली यहां आये, पर साढ़े ग्यारह से पहले नहीं। सुना माशा? अकेली आना।"

इवानोव्ना कुछ कहना चाहती थी, लेकिन बुढ़िया ने उसे एक शब्द न बोलने दिया। वह उठ खड़ी हुई मेहमानों को बाहर पहुंचाया और उनके पीछे किवाड़ बंद कर दिये।

रात अंधेरी थी। बड़ी देर तक वे दोनों एक-दूसरी का हाथ पकड़े चुपचाप चलती रहीं। आखिर जलती बत्तियों के पास पहुंचते हुए माशा ने सहमी नज़र पीछे डाली और मौन तोड़ा।

"मां!" उसने दबी आवाज़ में कहा, "क्या सचमुच कल मुझे अकेले आना होगा, सो भी आधी रात को?"

"सुना है न, अकेली आने का हुक्म हुआ है। खैर, मैं तुझे आधे रास्ते तक छोड़ जाऊंगी।"

माशा चुप हो गयी और अपने विचारों में खो गयी। जब उसके पिता का अपनी फूफी से झगड़ा हुआ था वह तेरह बरस से ज़्यादा की नहीं थी। वह तब इस झगड़े का कारण नहीं समझती थी। उसे बस इस बात का अफ़सोस था कि उसे उस भली बुढ़िया के पास नहीं ले जाया जाता, जो उसे दुलारती और शहद मिली खसखस की रोटियां खिलाती थी। फिर वह बड़ी हो गयी, तो भी ओनुफ़्रिच इस विषय पर कभी एक शब्द तक नहीं कहता था। मां हमेशा बुढ़िया की तारीफ़

करती थी और सारा दोष ओनुफ्रिच पर डालती थी। इस तरह उस शाम माशा सहर्ष अपनी मा के साथ चली आयी थी। लेकिन जब बुढ़िया उन्हे देखकर गालिया देने लगी, जब माशा ने दीये की टिमटिमाती रोशनी मे बुढ़िया का गुस्से से नीला-स्याह पडा चेहरा देखा तब उसका कलेजा दहल उठा था। इवानोव्ना की लबी-चौडी बातचीत के दौरान उसके स्मृति-पटल पर कोहरे मे खोया-खोया-सा वह सब उभर आया जो उसने बचपन मे दादी के बारे मे सुना था। और यदि तब बुढ़िया उसका हाथ न पकडे होती तो वह शायद वहा से भाग खडी होती। सो, आप कल्पना कर सकते हैं कि आनेवाले दिन की सोचकर उसके मन मे क्या उथल-पुथल हो रही थी।

घर लौटकर माशा मा के आगे हाथ-पाव जोडने लगी कि वह उसे दादी के यहा न भेजे, लेकिन उसकी सब मिन्नतें बेकार थी।

"कैसी पगली है तू," इवानोव्ना उससे कह रही थी, "डरने की क्या बात है? मैं चुपके से तुझे घर के पास तक छोड आऊगी, रास्ते मे तुझे कोई हाथ नही लगायेगा, और वह जर्जर बुढ़िया भी तुझे खा नही जायेगी।"

अगला सारा दिन माशा का रोते हुए बीता। झुटपुटा घिरने लगा, तो उसका भय और भी बढ गया। लेकिन इवानोव्ना जैसे कुछ देख ही नही रही थी, जबरदस्ती ही उसने माशा को सजाकर तैयार किया।

"जितना रोयेगी, उतना तेरे लिए ही बुरा होगा," उसने कहा। "दादी तेरी रोने से *लाल आखे* देखकर *क्या* कहेगी!"

इस बीच दीवार घडी की कोयल ग्यारह बार कूकी। इवानोव्ना ने माशा के मुह पर ठडे पानी का छीटा दिया और उसे अपने पीछे घसीट ले चली।

माशा बलि के बकरे की तरह मा के पीछे जा रही थी। उसका कलेजा जोर-जोर से धडक रहा था, पाव मुश्किल से उठ रहे थे। इस तरह वे लाफेर्तोवो मोहल्ले मे जा पहुचे। कुछ देर तक और दोनो साथ-साथ चलती रही, लेकिन दूर से झिलमिली से छनती रोशनी दीखते ही इवानोव्ना ने माशा का हाथ छोड दिया।

"अब तू अकेली जा," उसने कहा। "आगे जाने की मैं जुर्रत नही कर सकती।"

माशा उसके पैरो मे गिर पडी।

“बस, बस, बेवकूफ़ी मत दिखा!” मां ने सख्ती से कहा। “क्या बिगड़ेगा तेरा? कहना मान और मुझे गुस्सा मत दिला!”

बेचारी माशा ने अपनी बची-खुची हिम्मत बटोरी और हौले-हौले चल दी। बारह बजने में थोड़ी ही देर थी, रास्ते में उसे कोई नहीं मिला, बुढ़िया के घर को छोड़कर और कहीं भी बत्ती नहीं जल रही थी। लगता था सारा मोहल्ला चिरनिद्रा में सोया पड़ा है; चारों ओर बोझिल सन्नाटा छाया हुआ था; उसकी अपनी पदचाप ही उसके कानों में गूंज रही थी। आखिर वह बुढ़िया के मकान पर पहुंच गयी, कांपते हाथ से फाटक का कुंडा छुआ।... दूर कहीं, संत निकोता के गिरजे का घंटा बारह बार बजा।... अंधेरी रात के सन्नाटे में घंटों की कंपायमान गूंज हवा में फैल रही थी और उसके कानों में पड़ रही थी। घर के अंदर बिल्ले ने ज़ोर से बारह बार “म्याऊं” की।... माशा थरथरा उठी, वह भागने को हुई... पर तभी कुत्ता ज़ोर से भौंका, फाटक चरमराया और बुढ़िया की लंबी हड़ियल उंगलियां उसकी कलई पर कस गयीं। माशा को कुछ पता नहीं था, कैसे वह सीढ़ियां चढ़ी और दादी के कमरे में जा पहुंची।... होश में आने पर उसने देखा कि वह बेंच पर बैठे है, और बुढ़िया उसके सामने खड़ी उसकी कनपटि-यां मल रही है।

“अरी, लाडो, कित्ती डर गयी है तू!” वह कह रही थी। “बहुत ही बढ़िया अंधेरा है बाहर, पर रानी, तू अभी इसकी कीमत नहीं समझ-ती, इसीलिए डर रही है। चल, ज़रा आराम कर ले, काम करने क वखत आ गया है!”

माशा जवाब में एक शब्द नहीं बोली। रोने-धोने से थकी उसकी आं दादी की हर गतिविधि का पीछा कर रही थीं। बुढ़िया ने मेज़ कम के बीचोंबीच लगा दी। दीवार में बनी अलमारी में से लाल-सुर्ख र की बड़ी-सी मोमबत्ती निकाली और मेज़ पर रखकर जला दी। उस दीये को बुझाया। कमरा गुलाबी रोशनी से भर गया। फ़र्श से छ तक खूनी रंग के डोरे-से फैल गये, वे हवा में अलग-अलग दिशा में लहरा रहे थे, कभी गुच्छे में गुंथ जाते और कभी सांपों तरह लगते।...

“बहुत खूब,” बुढ़िया ने कहा और माशा का हाथ पकड़ लिय “चलो मेरे पीछे-पीछे।”

माशा का रोम-रोम काप रहा था। दादी के पीछे चलने मे वह डर रही थी, लेकिन इससे भी ज्यादा डर उसे इस बात का था कि बुढिया नाराज न हो जाये। बडी मुश्किल से वह उठ खडी हुई।

"मेरा दामन कसकर पकड ले," बुढिया ने कहा, "और मेरे पीछे-पीछे चल डर मत!"

बुढिया मेज के फेरे लगाने लगी और जोर-जोर से किन्ही गूढ शब्दो का उच्चारण करने लगी। काला बिल्ला – दहकती आखे और सीधी खडी दुम – बुढिया के आगे-आगे कदम बढा रहा था। माशा ने आखे कसकर भीच ली थी और लडखडाते कदमो से दादी के पीछे-पीछे चल रही थी। तीन तिया तीन बार बुढिया ने मेज का फेरा लगाया, रहस्यमय शब्दो का उच्चारण करती रही, जिनके साथ बिल्ले की म्याऊं-म्याऊ जारी थी। एकाएक वह थम गयी और चुप हो गयी। माशा ने अनायास आखे खोल दी – हवा मे वही खूनी डोरे लहरा रहे थे। अचानक उसकी नजर बिल्ले पर पडी और उसने देखा कि वह सरकारी वर्दी का हरा कोट पहने है, और उसके गोल सिर की जगह आदम चेहरा दीख पड रहा है, जो आखे फाडकर माशा को घूरे जा रहा है। वह जोर से चीख पडी और बेहोश होकर ढह गयी।

जब उसे होश आया, तो बलूत की मेज अपनी जगह पर खडी थी, रक्ताभ मोमबत्ती वहा नही थी और मेज़ पर पहले की ही भाति दीया जल रहा था, दादी उसके बगल मे बैठी थी और उसकी आखो मे आखे डाले देख रही थी। बुढिया के प्रसन्न चेहरे पर एक विचित्र मुस्कान फैली हुई थी।

"कित्ती डरपोक है री तू!" वह माशा से कह रही थी। "खैर, कोई बात नही, मैंने तेरे बिना ही सारा काम पूरा कर लिया है। बधाई हो तुझे, बधाई – तेरा दूल्हा ढूढ लिया! मैं उसे अच्छी तरह जानती हू, वह जरूर तेरे मन भायेगा। माशा, मुझे लग रहा है कि अब मैं इस लोक मे ज्यादा दिन नही रहूगी, मेरी रगो मे खून बडी धीरे-धीरे चलता है, कभी-कभी दिल की धडकन थम जाती है। मेरा सच्चा मित्तर," बिल्ले पर एक नजर डालकर बुढिया ने कहना जारी रखा, "कब से मुझे वहा बुला रहा है, जहा मेरा ठडा खून फिर से गरमायेगा। सूरज का उजाला कुछ दिन और देखना चाहती हू, कुछ दिन और अपने सोने की चमक से आखे सहलाना चाहती हू

पर मेरी अंतिम घड़ी पास आ रही है। क्या किया जाये! जो होना है, सो होना है!"

"सुन, मेरी लाडो," मरियल होंठों से माशा का माथा चूमकर बुढ़िया ने आगे कहा, "मेरे बाद तू ही मेरे खजाने की मालकिन होगी। तुझे मैंने हमेशा चाहा है, खुशी-खुशी अपनी जगह तेरे लिए छोड़ रही हूं! पर मेरी बात ध्यान से सुन: तेरा दूल्हा आयेगा। यह दूल्हा उस शक्ति ने चुना है, जो दुनिया के ज़्यादातर ब्याहों का फ़ैसला करती है।... मैंने तेरे लिए यह दूल्हा मांगा है। आज्ञा का पालन करना, उससे ब्याह कर लेना। वह तुझे यह विदया सिखायेगा, जिससे मैंने अपना खजाना जमा किया है, तुम दोनों के जतनों से खजाना दूना बढ़ेगा और मेरी राख को शांति मिलेगी। यह लो चाबी, आंख के तारे की तरह इसे संभालकर रखना। मुझे यह बताने का हुक्म नहीं है कि मेरी दौलत कहां छिपायी हुई है; पर जैसे ही तेरा ब्याह होगा, तेरे लिए सारा भेद खुल जायेगा।"

बुढ़िया ने अपने हाथों से काले धागे में पिरोयी छोटी-सी कुंजी माशा के गले में डाल दी। इसी क्षण बिल्ले ने ज़ोर से दो बार म्याऊं-म्याऊं की।

"लो, दो बज गये," दादी ने कहा। "अब घर जाओ, मेरी बच्ची! अलविदा! शायद अब हमारा मिलना नहीं होगा।..."

वह माशा को गली तक छोड़ने आयी, और फिर अहाते में जाकर उसने फाटक बंद कर लिया।

धुंधली चांदनी में तेज़-तेज़ कदम भरती माशा घर को चल दी। वह खुश थी कि दादी के साथ यह भेंट खत्म हो गयी और सहर्ष अपने भावी वैभव के बारे में सोच रही थी। इवानोव्ना बड़ी देर तक अधीरता से उसकी बाट जोहती रही थी।

"शुक्र है ईश्वर का!" माशा को देखकर वह बोली। "मुझे तो फिकर होने लगा था कि तुझे कुछ हो तो नहीं गया। जल्दी से बताओ, दादी के यहां क्या किया?"

माशा उसे सब कुछ बताना चाहती थी, लेकिन थकावट के मारे उसके मुंह से बोल नहीं निकल रहे थे। यह देखकर कि माशा की पलकें अनचाहे ही झपकी जा रही हैं, इवानोव्ना ने अपना कौतूहल शांत करने के लिए सुबह तक सब्र करना ही उचित समझा। खुद ही प्यारी

बेटी के कपड़े बदले और उसे बिस्तर में लिटाया, जहां वह तुरंत ही गहरी नींद सो गयी।

अगले दिन जब माशा जागी तो बड़ी मुश्किल से अपनी आप बीती याद कर पायी। उसे लग रहा था कि रात जो कुछ हुआ था वह एक दुस्स्वप्न ही था, किन्तु सहसा गले में लटकती कुंजी पर उसका नजर पड़ी तो उसे यकीन हुआ कि जो कुछ उसने देखा था वह सच था और उसने मां को सारी बात विस्तार से सुना दी। इवानोव्ना की खुशी का ठिकाना न रहा।

"देखा तूने," वह बोली, "अच्छा किया न जो तेरे निहोरे नहीं सुने।"

वह सारा दिन मां-बेटी ने अपनी आती सुख-सम्पदा के ख्याली पुलाव पकाने में बिताया। इवानोव्ना ने माशा को इस बात की सख्त मनाही कर दी कि वह अपने पिता को दादी से मिलने के बारे में एक शब्द भी न कहे।

"वह अड़ियल और बिगड़ैल है," उसने कहा, "सारा काम बिगाड़ देगा।"

अगले दिन शाम गये ओनुफ्रिच घर लौट आया, हालांकि मां-बेटी को इसकी ज़रा भी उम्मीद नहीं थी। जिस पोस्टमास्टर की जगह काम करने का उसे आदेश मिला था, वह अचानक ही भला-चंगा हो गया, सो ओनुफ्रिच मास्को आ रही डाक की पहली घोड़ागाड़ी पर ही घर लौट आया।

अभी उसने पत्नी और बेटी को पूरी बात बतायी भी न थी कि कैसे वह इतनी जल्दी लौट आया है कि उसका एक पुराना साथी जो उन दिनों लाफेर्तोवो मोहल्ले में नानबाईन के घर से थोड़ी ही दूर रहता था, अंदर घुसा।

"तुम्हारी फूफी चल बसी," नमस्ते तक किये बिना उसने सीधे ऐलान किया।

माशा और इवानोव्ना की नजरें एक दूसरी की ओर गयीं।

"ईश्वर उसकी आत्मा को शांति दे!" ओनुफ्रिच ने हाथ जोड़कर कहा। "आओ, उसके लिए प्रार्थना करें। उसे हमारी प्रार्थना की जरूरत है!" वह प्रार्थना करने लगा। इवानोव्ना और माशा देव-प्रतिमा के सामने माथा टेक रही थीं, लेकिन उनके दिमाग में उन्हें मिलने जा

रहा खज़ाना ही घूम रहा था। अचानक दोनों एकसाथ ही ठिठकीं।... उन्हें लगा कि चल वसी फूफी खिड़की में से कमरे में झांक रही है और सिर झुकाकर उनका अभिवादन कर रही है। ओनुफ़िच और संतरी प्रार्थना में मगन थे, उन्होंने कुछ नहीं देखा।

रात होने जा रही थी, तो भी ओनुफ़िच फूफी के घर को चल दिया। रास्ते में उसके पुराने साथी ने उसकी फूफी की मौत के वारे में जो कुछ सुना था, उसे सुना डाला।

"कल शाम को तुम्हारी फूफी हमेशा की तरह घर लौटी," उसने बताया। "पड़ोसियों ने उसके घर में वत्ती जलती देखी थी। लेकिन आज सुवह वह "टूटी चौकी" पर नहीं आयी, जिससे लोगों ने सोचा कि उसकी तवीयत ठीक नहीं है। आखिर दिन ढले उसके कमरे में जाने की हिम्मत की, पर वह तव तक मर चुकी थी—कुछ लोग तो वुढ़िया की मौत के वारे में यह कहते हैं। कुछ दूसरे लोगों का कहना है कि पिछली रात उसके घर में कुछ अजीवोगरीव होता रहा था। कहते हैं, उसके मकान के गिर्द ज़वरदस्त ववंडर उठता रहा था, जवकि चारों ओर हवा तक नही चल रही थी। सारे मोहल्ले के कुत्ते उसके घर के सामने जमा होकर ज़ोर-ज़ोर से किकियाते रहे थे। उसके विल्ले की म्याऊं दूर तक सुनाई देती रही थी।... जहां तक मेरी वात है मैं रात भर चैन से सोता रहा, पर मेरा जो साथी पहरा देता रहा था वह कहता है उसने यह देखा था कि कव्रिस्तान से लंवी-लंवी कतारों में फुदकती हुई रोशनियां वुढ़िया के घर को वढ़ती जा रही थीं, फाटक तक पहुंचकर एक के वाद एक वे उसके तले कहीं सरककर गायव हो रही थीं। कहते हैं पौ फटने तक वुढ़िया के घर से अजीव शोरगुल, सीटियां, ठहाके और चीखें सुनायी देती रही थीं। मजे की वात यह है कि वुढ़िया के काले विल्ले का कहीं अता-पता नहीं है!"

ओनुफ़िच दुखी मन से संतरी की वातें सुनता रहा, जवाव में एक शव्द भी नहीं वोला। इस तरह वे वुढ़िया के घर पहुंच गये। दयालु पड़ोसिनें वुढ़िया के जीते भले ही उससे डरती रही थीं लेकिन अव अपना डर भुलाकर यहां चली आयी थीं, उसे नहलाकर उन्होंने साफ़ कपड़े पहना दिये थे। ओनुफ़िच जव अंदर पहुंचा तो देह मेज़ पर रखी हुई थी। उसके सिरहाने पादरी वैठा वाइवल के भजन पढ़ रहा था। ओनुफ़िच ने पड़ोसिनों का शुक्रिया अदा किया, मोमवत्तियां मंगवायीं,

ताबूत का आर्डर दिया, और जो लोग शव के पास रात काटना चाहते थे उनके लिए खाने-पीने का इतजाम किया। यह सब करके वह घर को चला। चलते समय फूफी का हाथ चूम ले, इसके लिए उसका मन राजी नहीं हुआ।

अगले दिन बुढ़िया को दफनाया जाना था। इवानोव्ना ने अपने और बेटी के लिए काला लिबास किराये पर लिया। पहले तो सब कुछ ठीक-ठाक चलता रहा। पर जब इवानोव्ना फूफी से अतिम विदाई लेने लगी तो अचानक अदबदाकर पीछे हट गयी, उसका रंग उड गया और वह सिहर उठी। उसने सब से कहा कि उसका जी खराब हो गया था। लेकिन बाद मे माशा के कान मे बताया कि उसे लगा मुर्दे ने मुह खोलकर उसकी नाक पकडनी चाही थी। जब ताबूत उठाने लगे तो वह इतना भारी हो गया, जैसे कि उसमे सीसा भरा हो। चौडे कधोवाले छह डाकिये बडी मुश्किल से उसे उठाकर बाहर ला और रत्थी पर रख पाये। घोडे जोर-ज़ोर से हिनहिना रहे थे, बडी कोशिश करने पर ही वे अपनी जगह से हिले और आगे बढे।

इन सब बातो ने और खुद उसने जो देखा था उसने माशा को सोचने-विचारने पर विवश किया। उसे यह याद आया कि बुढिया ने अपनी दौलत कैसे जमा की थी, और उसे लगा कि ऐसी दौलत की मालकिन बनना कोई खुशकिस्मती नही है। कभी-कभी तो उसके गले मे पडी कुजी उसकी छाती पर भारी पत्थर सा बोझ डालती। कई बार उसके मन मे आया कि पिता को सारी बात बता दे और सलाह मागे। लेकिन इवानोव्ना उस पर कडी नज़र रख रही थी और लगातार यही कहती रहती थी कि अगर उसने दादी का हुक्म न माना तो सबकी किस्मत फोड डालेगी। स्वार्थ के शैतान ने इवानोव्ना की आत्मा पर कब्जा कर लिया था। वह उस क्षण की प्रतीक्षा मे आतुर थी जब माशा के भाग्य मे लिखा दूल्हा आयेगा और उन्हे खज़ाने का भेद बतायेगा। चल बसी फूफी के बारे मे सोचते हुए उसे डर लगता था और उसकी याद आते ही उसके हाथ-पाव सुन्न हो जाते थे, लेकिन उसके मन मे सोने का लोभ भय से अधिक बलवान था। सो वह दिन-रात अपने पति के कान खाती रहती थी कि लाफेर्तोवो के मकान मे रहा जाये। उसका कहना था कि अपने मकान के होते वे किराये के मकान मे रहे तो सारी दुनिया उन पर उगली उठायेगी।

इधर ओनुफ़्रिच अपनी नौकरी पूरी करके रिटायर हो गया और आराम की ज़िंदगी बिताने की सोचने लगा। मकान की वात से ही उसका जी वुरा हो जाता था, जव वह याद करता कि यह मकान उसे किससे मिला है। अगर कभी फूफी के कमरे में जाना होता तो वहां पांव रखते ही वह अनायास ठिठक उठता। लेकिन ओनुफ़्रिच धर्म-भीरु व्यक्ति था और यह मानता था कि पवित्र आत्मा पर कोई भी शैतानी शक्ति अधिकार नहीं जमा सकती। सो, यह सोचकर कि किराया भरने के वजाय अपने मकान में रहना ज़्यादा अच्छा है, उसने अपनी वितृष्णा पर कावू पाने और वहां जा वसने का फ़ैसला किया।

ओनुफ़्रिच ने जव लाफ़ेर्तोवो के मकान में सामान पहुंचाने को कहा तो इवानोव्ना वेहद खुश हुई।

"देखती रहियो, माशा", उसने वेटी से कहा, "अव जल्दी ही तेरा दूल्हा आयेगा। क्या दिन होंगे वे जव हमारे संदूक सोने से भरे होंगे। हमारे पुराने पड़ोसी कितने हैरान होंगे जव हम तेरी वग्घी पर उनके यहां पहुंचेंगे, शायद उसमें पूरे चार घोड़े जुते हों।"

माशा उदासी भरी मुस्कान लिये चुपचाप मां की ओर देखती रही। उसके विचार कहीं और ही खोये हुए थे।

इस वातचीत से कुछ दिन पहले की वात है (वे तव पुराने मकान में ही रहते थे); एक रोज़ सुवह माशा अपने विचारों में खोयी खिड़की के पास वैठी थी। साफ़-सुथरे कपड़े पहने एक नौजवान आदमी गली से गुज़रा, माशा की ओर देखकर उसने वड़ी शिष्टता से अपना हैट उतारा। माशा ने भी जवाव में सिर झुका दिया और न जाने क्यों उसके गाल गुलावी हो गये। थोड़ी देर वाद वही नौजवान वापस लौटा, घूमकर माशा पर एक नज़र डाली और आगे वढ़ा, थोड़ी आगे जाकर फिर से लौट आया। हर वार वह माशा की ओर देखता और हर वार माशा के दिल की धड़कन तेज़ हो जाती। माशा सत्रहवां लांघ चुकी थी, लेकिन अभी तक ऐसा कभी नहीं हुआ था कि खिड़की के पास से किसी के गुज़रने पर उसके दिल की धड़कन तेज़ हो गयी हो। उसे यह वात अजीव लगी। दोपहर के खाने के वाद वह फिर से खिड़की के पास वैठ गयी, सिर्फ़ यह देखने के लिए जव नवयुवक फिर से वहां से गुजरेगा तो उसका दिल धड़केगा या नहीं।... वह शाम तक वैठी

रही, लेकिन कोई नही आया। आखिर जब दीया-बत्ती जली तो वह खिडकी से हट गयी, सारी शाम उदास और खोयी-खोयी रही, वह इस बात पर झुंझला रही थी कि दिल पर अपना प्रयोग नही दोहरा सकी।

अगले दिन आख खुलते ही माशा बिस्तर से उठ खड़ी हुई, जल्दी-जल्दी मुह-हाथ धोकर उसने कपडे पहने, प्रार्थना की और खिडकी के पास बैठ गयी। उसकी नजरे उस ओर ही लगी हुई थी, जिधर से कल वह अजनबी प्रकट हुआ था। आखिर माशा को वह दिखा ; उसकी आखे भी दूर से ही माशा को ढूढ रही थी और जब वह पास आया, तो मानो सयोगवश ही उनकी नजरे चार हो गयी। माशा का हाथ आप से आप ही दिल पर चला गया, यह देखने के लिए कि वह धडक रहा है या नही ? नौजवान ने हाथ की यह गति देखी और शायद यह न समझते हुए कि इसका अर्थ क्या है अपना हाथ भी दिल पर रख लिया। माशा को होश आया, वह लजा गयी और झट मे खिडकी मे परे हट गयी। इसके बाद वह दिन भर खिडकी के पास नही गयी इस डर मे कि कही फिर से वही नौजवान न दिख जाये। लेकिन इसके बावजूद सारा दिन माशा का मन उसी की ओर लगा रहा, वह बार-बार कोशिश करती कि किसी दूसरी चीज के बारे मे सोचे, लेकिन उसके सभी प्रयास व्यर्थ थे।

ध्यान बटाने की खातिर शाम को वह पडोस की एक विधवा के यहा चल दी। उसके घर मे घुसते ही माशा के आश्चर्य का ठिकाना न रहा – वही अजनबी, जिसे भुलाने का प्रयत्न वह दिन भर करती रही थी, वहा खडा था। माशा डर गयी, उसके गालो पर लाली दौड गयी, फिर चेहरा फक पड गया, उसकी समझ मे नही आ रहा था कि वह क्या कहे। उसकी आखे भर आयी। नौजवान फिर से उसे नही समझ पाया उदास चेहरा लिये उसने झुककर माशा का अभिवादन किया, एक आह भरी और बाहर चला गया। माशा और भी ज्यादा सकपका गयी और खिसियाकर रो पडी। हैरान-परेशान पडोसिन ने उसे अपने पास बिठाया और सहानुभूति दिखाते हुए उसके दुख का कारण पूछा। माशा खुद नही जानती थी कि वह क्यो रो रही है, सो कारण क्या बताती। मन ही मन उसने निश्चय कर लिया कि इस अजनबी के, जिसकी वजह से रोने की नौबत आयी थी, सामने ही

न पड़ने की पूरी कोशिश करेगी। इस विचार से उसका मन कुछ शांत हुआ। वह पड़ोसिन से वातचीत करने लगी और उसे अपने घर की वातें वताने लगी, यह भी वताया कि वे शायद जल्दी ही लाफ़ेर्तोवो चले जायेंगे।

"अफ़सोस," विधवा वोली, "इतने अच्छे पड़ोसियों का साथ नहीं रहेगा। तुम लोगों के जाने का अफ़सोस अकेली मुझको ही नहीं होगा। मैं एक ऐसे वंदे को जानती हूं जो यह खवर सुनकर वहुत दुखी होगा।"

माशा फिर से लजा गयी, वह पूछना चाहती थी कि वह कौन है, लेकिन उसके मुंह से एक शब्द तक न निकला। कृपालु पड़ोसिन उसके मन की वात भांप गयी, क्योंकि उसने कहना जारी रखा:

"तुम उस नौजवान को नहीं जानती हो जो अभी-अभी इस कमरे से निकला है? शायद तुमने यह भी नहीं देखा कि वह कल और आज तुम्हारे घर के चक्कर लगाता रहा है; लेकिन उसने तुम्हें देखा है और तुम्हारे वारे में पूछने के लिए ही मेरे पास आया था। पता नहीं मेरा अंदाज़ ठीक है या नहीं, पर मुझे लगता है कि तुमने उस वेचारे का दिल ज़ख्मी कर दिया! अरे, इसमें लजाने की वात क्या है!" माशा के गाल लाल होते देखकर पड़ोसिन ने कहा। "वह नौजवान है, सलोना है, अगर तुम्हें पसंद है, तो शायद जल्दी ही शादी की नौवत आ जायेगी।"

यह सुनते ही माशा को अनायास दादी की याद आ गयी। "ओह!" उसने मन ही मन कहा। "क्या यही मेरे लिए चुना गया दूल्हा है?" लेकिन शीघ्र ही एक दूसरा विचार उसके मन में आया, जो इतना मधुर नही था। "नहीं, यह नहीं हो सकता कि ऐसे सलोने जवान का उसके साथ कोई नाता रहा हो," उसने सोचा। "वह इतना प्यारा है, इतना सजा-संवरा है कि दादी के खज़ाने को शायद ही दुगना कर पाये।"

उधर पड़ोसिन उसे वताती जा रही थी कि वह है तो विचले तवके का, लेकिन उसका चाल-चलन अच्छा है, कोई ऐव उसे नहीं है। कपड़े की दुकान पर नौकरी करता है, पैसे तो उसके पास वहुत नहीं हैं, लेकिन तनखाह अच्छी मिलती है, और कौन जाने, एक दिन उसका मालिक उसे अपना पत्तीदार वना ले!

"मो, मेरी नेक सलाह मानो," उसने आगे कहा। "नौजवान को ठुकराओ मत। पैसे से आदमी सुखी नही होता! अपनी दादी को ही लो—माफ करना मेरे पाप, प्रभु!—पैसे तो उसके पास बेहिसाब थे, पर अब सब कुछ कहा गया? कहते है उसका काला बिल्ला भी जमीन मे समा गया है, और उसकी सारी दौलत भी!"

माशा पडोसिन की बात मे पूरी तरह सहमत थी, उसे भी यही लगता था कि गरीब होना और प्यारे अजनबी के साथ रहना कही ज्यादा अच्छा है, बजाय इसके कि अमीर हो और न जाने किसकी होकर रहे! वह उसे अपना सारा भेद बताने जा ही रही थी, पर फिर मा की सख्त हिदायत याद करके और अपने मन की कमजोरी प्रकट कर देने के डर से वह झटपट उठ खडी हुई और चल दी। लेकिन कमरे से निकलते हुए वह अपने को यह पूछने से न रोक सकी कि अजनबी का नाम क्या है।

"उसका नाम उलियान है," पडोसिन ने जवाब दिया।

इस क्षण से उलियान माशा के मन में बस गया उसकी हर बात, उसका नाम तक उसे अच्छा लगता था। लेकिन उसकी होने के लिए दादी के खज़ाने से इकार करना जरूरी थी। उलियान अमीर नही, सो मेरे मा-बाप उससे मेरी शादी करने पर राज़ी नही होगे, वह सोचती थी। मा की बातो से उसकी ये आशकाए और भी पक्की होती थी। इवानोव्ना दिन-रात यही बाते करती रहती थी कि उन्हे कितनी बडी दौलत मिलनेवाली है और तब वे कितना सुखी जीवन जियेगी। सो, मा के कोप से डरते हुए माशा ने तय किया कि वह उलियान के बारे मे सोचेगी भी नही वह खिडकी के पास जाने से बचती थी, पडोसिन से बाते करने से कतराती थी और प्रसन्नचित्त दिखने की कोशिश करती थी, लेकिन उलियान का चेहरा-मोहरा तो उसके दिल मे बसा हुआ था।

उधर मकान बदलने का दिन आया। ओनुफ्रिच पहले ही लाफेर्तोवो चला गया, पत्नी और बेटी से कह गया कि वे सामान लेकर पीछे-पीछे आये। सारा सामान एक रोज पहले ही बाध दिया गया था। दो गाडिया आयी, कोचवानो ने पडोसियो की मदद से सदूक और फ़र्नीचर लादा। इवानोव्ना और माशा ने एक-एक बडी गठरी सभाली और यह छोटा-सा कारवा धीमी चाल से "टूटी चौकी" की ओर चल

दिया। विधवा पड़ोसिन के घर के पास से गुजरते हुए माशा की नज़र अनचाहे ही ऊपर उठ गयी: खुली खिड़की के पास उलियान सिर लटकाये खड़ा था, उसके चेहरे पर गहरी उदासी की छाया थी। माशा ने जैसे उसे देखा ही न हो—दूसरी ओर मुंह फेर लिया, लेकिन उसके पीले पड़ गये चेहरे पर अश्रुधाराएं बह निकलीं।

ओनुफ़्रिच उनका काफ़ी देर से इंतज़ार कर रहा था। उसने अपनी राय प्रकट की कि फ़र्नीचर कहां रखा जाये और बताया कि नये घर में वे कैसे रहेंगे।

"इस कोठरी में हम सोया करेंगे," उसने इवानोव्ना से कहा, "बगल के छोटे कमरे में देव-परतिमाएं रखेंगे। यहां बैठक भी होगी और खाने का कमरा भी। माशा ऊपर के कमरे में सो सकती है। कभी इतने खुले मकान में नहीं रहा हूं," उसने कहना जारी रखा, "मगर पता नहीं क्यों मेरा मन बेचैन है। ईशर करे यहां भी हम उतने ही सुख-चैन से रहें जैसे पहले तंग घरों में रहे हैं!"

इवानोव्ना के चेहरे पर मुस्कान दौड़ गयी। "अरे, जरा सब्र करो!" उसने सोचा। "इससे भी सौ गुना अच्छे मकान में रहेंगे।"

लेकिन इवानोव्ना की खुशी उसी दिन ही कम हो गयी। सांझ घिरते ही कमरों में कर्णभेदी सीत्कार हुआ और खिड़कियों के पल्ले खड़खड़ाने लगे।

"यह क्या है?" इवानोव्ना चीखी।

"हवा चल रही है," ओनुफ़्रिच ने बिना किसी उत्तेजना के उत्तर दिया, "लगता है पल्ले ठीक से बंद नहीं होते। कल मरम्मत करनी होगी।"

इवानोव्ना ने चुप होकर माशा पर अर्थपूर्ण दृष्टि डाली, क्योंकि हवा का सीत्कार उसे बुढ़िया की आवाज़ जैसा लगा था।

इस क्षण माशा एक कोने में शांत बैठी थी, उसे न हवा का सायं-सायं सुनायी दे रही थी और न पल्लों की खड़खड़। इवानोव्ना को सबसे अधिक भयावह यह लगा कि बुढ़िया की आवाज़ सिर्फ़ उसे ही सुनायी दी थी। ब्यालू के बाद वह अपना बचा-खुचा साधारण भोजन और बर्तन समेटकर ड्योढ़ी में रखने गयी; अलमारी के पास जाकर उसने मोमबत्ती फ़र्श पर रखी और रकाबियां-तश्तरियां अलमारी के पटरों पर रखने लगी। सहसा उसे अपने पास सरसराहट सुनायी दी

और किसी ने हौले से उसका कधा छुआ।... उसने पलटकर देखा... उसके पीछे फूफी खडी थी, वही लिबास पहने जिसमे उसे दफनाया गया था। उसके चेहरे पर क्रोध झलक रहा था, हाथ उठाकर उसने तर्जनी दिखायी। भयाक्रात इवानोव्ना चीख उठी। ओनुफ्रिच और माशा लपककर ड्योढी मे आये।

"क्या हो रहा है तुम्हे?" ओनुफ्रिच चिल्लाया। उसने देखा कि पत्नी के चेहरे पर हवाइया उड रही है और उसका अग-अग थरथरा रहा है।

"फूफी!" कापते स्वर मे उसने कहा। वह आगे कुछ कहना चाहती थी, लेकिन फूफी फिर से उसकी नजरो के सामने आ गयी। उसका चेहरा पहले से अधिक क्रोधमय था, उसने फिर से बडी सख्ती से उगली दिखायी। इवानोव्ना के शब्द होठो पर आकर रह गये।

"छोडो मुर्दो की बाते," ओनुफ्रिच ने जवाब दिया और उसका हाथ पकडकर उसे कमरे मे ले गया। "प्रार्थना करो, सारा भरम दूर हो जायेगा। चलो, लेटो, सोना चाहिए अब!"

इवानोव्ना लेट गयी, लेकिन बुढिया अभी भी अपने उसी क्रोधित रूप मे उसकी आखो के सामने आ रही थी। ओनुफ्रिच ने इत्मीनान से कपडे बदले और ज़ोर-ज़ोर से प्रार्थना करने लगा। इवानोव्ना ने देखा कि ज्यो-ज्यो वह प्रार्थना के शब्द अधिक ध्यान से सुन रही है, त्यो-त्यो बुढिया की छाया धुधली पडती जा रही है और आखिर बिल्कुल ही लुप्त हो गयी।

माशा ने भी यह रात बेचैनी से काटी। अपने कमरे मे घुसने पर उसे लगा कि दादी की छाया उसके आगे मडरा रही है – लेकिन वह उस भयावह रूप मे नही थी, जिसमे इवानोव्ना ने उसे देखा था। उसकी बाछें खिली हुई थी और वह गदगद होकर माशा को देख रही थी। माशा ने सलीब का निशान बनाया – छाया लुप्त हो गयी। माशा ने इसे अपनी कल्पना का खेल ही समझा। उलियान के ख्यालो मे खोकर वह दादी को भूल गयी। शात मन से वह बिस्तर मे लेटी और जल्दी ही सो गयी। अचानक आधी रात के आसपास किसी ने उसे जैसे जगा दिया। उसे लगा कि कोई अपना बेजान हाथ उसके चेहरे पर फेर रहा है। वह उठ खडी हुई। देव-प्रतिमा के आगे दीया जल रहा था और कमरे मे कुछ भी असाधारण नही दीखता था,

लेकिन भय के मारे उसका दिल डूवा जा रहा था : उसे साफ़ सुनायी दे रहा था कि कमरे में कोई चल रहा है और उसांस ले रहा है।... फिर मानो दरवाज़ा खुला, चरमराया... और कोई सीढ़ियां उतरने लगा।

माशा थरथर कांप रही थी। वहुत कोशिश करने पर भी उसे दुवारा नींद न आयी। विस्तर से उठकर उसने दीये की वत्ती ठीक की और खिड़की के पास चली गयी। रात अंधेरी थी। पहले तो माशा को कुछ भी नहीं दीखा; फिर उसे लगा कि अहाते में कुएं के पास ही दो छोटी-छोटी रोशनियां चमकी हैं। ये रोशनियां वार-वार जल-वुझ रही थीं, फिर उनकी चमक तेज़ हो गयी और माशा ने साफ़-साफ़ देखा कि कुएं के पास खड़ी फूफी हाथ के इशारे से उसे वुला रही है।... उसके पीछे काला विल्ला पिछली टांगों पर वैठा था। घटाटोप अंधेरे में उसकी आंखें अंगारों-सी चमक रही थीं। माशा खिड़की से परे हटी, लपककर विस्तर में चढ़ गयी और सिर तक रज़ाई तान ली। वड़ी देर तक उसे यह लगता रहा कि दादी कमरे में टहल रही है, कोनों में कुछ टटोल रही है और दवी आवाज़ में उसे पुकार रही है। एक वार तो उसे लगा कि दादी ने उसके सिर से रज़ाई खींचने की कोशिश की है। माशा ने और भी कसकर रज़ाई लपेट ली। आखिर सव कुछ शांत हो गया, लेकिन माशा सारी रात आंख न मूंद सकी।

अगले दिन उसने मां से यह कहने का निश्चय किया कि पिता जी को सव कुछ वता देगी और दादी से मिली कुंजी उन्हें दे देगी। पिछली शाम के भयावह क्षणों में इवानोव्ना खुद ही ऐसी दौलत पाने से इंकार कर देती, लेकिन सुवह जव सूरज निकला और उसकी उज्ज्वल किरणों से कमरा रोशन हो उठा, तो उसका डर ऐसे काफ़ूर हो गया जैसे कि कभी रहा ही न हो। उसके स्थान पर भावी सुखी जीवन के लुभावने चित्र फिर से उसकी कल्पना में उभरने लगे। "वुढ़िया सारी उमर थोड़े ही मुझे डराती रहेगी," वह सोच रही थी, "माशा का व्याह हो जायेगा तो वुढ़िया शांत हो जायेगी। अव वुढ़िया चाहती क्या है? इस वात पर गुस्सा हो रही है क्या कि मैं उसकी दौलत वचाकर नहीं रखना चाहती? न, फूफी जी, जित्ता जी में आये गुस्सा कर लो, हम तो तुम्हारे खज़ाने से ऐश करेंगे!"

माशा ने मा से बहुत चिरौरी की कि वह उसे पिता के सामने सारा भेद खोलने दे, लेकिन मा ने एक न सुनी।

"तू तो जान-बूझकर अपने सुख को लात मार रही है," इवानोव्ना का जवाब था। "दो दिन तो सब्र कर ले। तेरा दूल्हा आता होगा, तब फिर सब ठीक हो जायेगा।"

"दो दिन!" माशा रुआसी हो गयी। "मुझसे तो कल जैसी एक भी रात और नही सही जायेगी।"

"अरी, छोड," मा ने कहा, "क्या पता आज ही सारा मामला तय हो जाये।"

माशा की समझ मे नही आ रहा था कि करे तो क्या करे। एक ओर वह महसूस कर रही थी कि उसे पिता को सब कुछ बता देना चाहिए, दूसरी ओर मा की नाराजगी का डर था – मा उसे कभी भी माफ नही करेगी। भारी असमजस मे पडी वह अहाते से निकली और अपने विचारो मे डूबी वह लाफेर्तोवो की एकात गलियो मे देर तक घूमती रही। आखिर कुछ भी तय किये बिना वह घर लौट आयी। इवानोव्ना ड्योढी मे उसका इतजार कर रही थी।

"माशा!" मा ने उससे कहा, "जल्दी से ऊपर जाकर तैयार हो जा। एक भला आदमी रिश्ता मागने आया है। घटे भर से तेरे पिता जी के साथ बैठा हुआ है, तेरा इतजार कर रहा है।"

माशा का कलेजा धक-धक करने लगा। वह अपने कमरे मे चली गयी। यहा उसकी आखो से आसुओ की धारा बह चली। उसकी कल्पना मे उलियान का वही उदास चेहरा उभर आया जो उसने आखिरी बार देखा था। वह सजना-धजना भूल गयी। आखिर मा के कडे स्वर ने उसके विचारो का क्रम तोडा।

"माशा! अरी, कित्ती देर लगेगी तुझे सजने मे?" इवानोव्ना नीचे से चिल्लायी। "चल, नीचे आ!"

माशा जो कपडे पहनकर घर आयी थी, उन्ही मे नीचे चली आयी। उसने दरवाजा खोला और स्तब्ध रह गयी! बेंच पर ओनुफ्रिच के बगल मे सरकारी वर्दी का हरा कोट पहने नाटे कद का आदमी बैठा था – वही चेहरा उस पर नजरे गडाये बैठा था, जो उसने काले बिल्ले के धड पर देखा था। वह दरवाजे मे ही खडी की खडी रह गयी, आगे हिल न पायी।

"इधर आओ न," ओनुफ़्रिच ने कहा। "क्या हो गया तुम्हें?"

"पिता जी! यह दादी का काला बिल्ला है," माशा ने पिता को उत्तर दिया और मेहमान की ओर इशारा किया। वह विचित्र ढंग से सिर घुमा रहा था, आंखें उसकी एकदम सिकुड़ी हुई थीं और चेहरे पर चापलूसी भरी मुस्कान खेल रही थी।

"तुम्हारा सिर फिर गया है क्या? .." ओनुफ़्रिच झुंझला उठा। "कैसा बिल्ला? यह श्रीमान टाइटलर कौंसुलर* अरिस्तार्ख़ फ़लेलेइच म्याऊकिन हैं, जो तुम्हारा रिश्ता मांगने आये हैं।"

इन शब्दों के साथ अरिस्तार्ख़ फ़लेलेइच उठा, फिसलती चाल से उसके पास चला आया और उसका हाथ चूमने को झुका। माशा चीख मारकर पीछे हट गयी। ओनुफ़्रिच गुस्से से उठ खड़ा हुआ।

"क्या है यह सब?" वह चिल्लाया। "कैसी बेशऊर है तू, निपट गंवार छोकरी!"

लेकिन माशा उसकी बात सुन ही नहीं रही थी।

"पिता जी!" आपे से बाहर होकर वह बोली। "मानिये न मानिये, है यह दादी का काला बिल्ला ही! इससे कहिये अपने दस्ताने उतारे, तब आप देख लेना इसके पंजे हैं।" यह कहकर वह कमरे से निकली और ऊपर भाग गयी।

अरिस्तार्ख़ फ़लेलेइच कुछ बुदबुदाता रहा। ओनुफ़्रिच और इवानोव्ना बुरी तरह सकपका गये, लेकिन म्याऊकिन पहले की ही तरह मुस्कराते हुए उनके पास आया।

"कोई बात नहीं, जी," नकियाते हुए वह बोला। "कोई बात नहीं। आप नाराज़ मत होइये। कल मैं फिर आऊंगा, तब मेरी प्यारी मंगेतर अच्छा स्वागत करेगी।"

अपनी वक्राकार पीठ को बड़ी शिष्टता से दोहरा करते हुए वह कई बार उनके सामने झुका और फिर बाहर निकल गया। माशा खिड़की में से देख रही थी। उसने अरिस्तार्ख़ फ़लेलेइच को सीढ़ियों से उतरकर धीरे-धीरे पांव बढ़ाते जाते देखा; मकान के आख़िर तक जाकर वह अचानक नुक्कड़ पर मुड़ गया और तीर की तरह दौड़

---

* रूस में १६१७ तक सरकारी कर्मचारियों और अधिकारियों की पदतालिका थी। इसमें १४ पद थे। पहला पद सबसे ऊंचा और चौदहवां सबसे नीचा था। टाइटलर काउंसलर का पद नौवां था – काफ़ी नीचा पद।

चला। पड़ोसियों का बडा कुत्ता जोर-ज़ोर से भौकता हुआ उसके पीछे लपका, लेकिन उसे पकड न पाया।

बारह बज गये। दोपहर के खाने का समय हो गया। गहरी चुप्पी साधे तीनो खाना खाने बैठे, लेकिन खाने का मन किसी का न था। इवानोव्ना रह-रहकर गुस्से भरी नजरो से माशा को देख रही थी। माशा नजरें झुकाये बैठी थी और ओनुफ्रिच भी विचारमग्न था। खाना खत्म हो रहा था जब एक आदमी ओनुफ्रिच के लिए चिट्ठी लाया। उसने चिट्ठी खोली और उसका चेहरा खुशी से खिल उठा। फिर उसने उठकर जल्दी-जल्दी अपना नया फ्राक-कोट पहना, टोपी और छडी पकडी और चलने को तैयार हो गया।

"कहा चल दिये?" इवानोव्ना ने पूछा।

"थोडी देर मे लौट आऊगा," इतना कहकर वह चला गया।

उसने अपने पीछे किवाड बद किया ही था कि इवानोव्ना माशा पर बरस पडी।

"निगोडी कही की, ऐसे तू अपनी मा की इज्जत करती है? ऐसे तू मा-बाप का कहा मानती है? मैं भी तुझे बताये दे रही हू, तुझे सीधी करके छोड़ूगी! अब की अरिस्तार्ख फलेलेइच पधारे तो अपनी ये बेवकूफिया करके तो दिखाइयो!"

"मा!" रुआसी माशा ने जवाब दिया। "मा, मैं तुम्हारी हर बात मानने को तैयार हू, बस दादी के बिल्ले से मेरी शादी मत करो!"

"क्या बक रही है फिर तू?" इवानोव्ना ने कहा। "कुछ शर्म करो, महारानी! सारी दुनिया जानती है कि वह टाइटलर कौसुलर है।"

"होगा, मा। पर वह बिल्ला है, सच, बिल्ला है," फूट-फूटकर रोते हुए माशा ने जवाब दिया।

इवानोव्ना ने उसे बहुत डाटा, बहुत मनाया भी, लेकिन वह बस यही कहे जा रही थी कि दादी के बिल्ले से शादी करने पर राज़ी नही होगी। आखिर इवानोव्ना ने खिसियाकर उसे कमरे मे से निकाल दिया। माशा अपने कमरे मे जाकर फिर से फूट-फूटकर रोने लगी।

कुछ समय बाद पिता के घर लौटने की आवाज आयी और फिर पल भर बाद उसे बुलाया गया। वह नीचे आ गयी। ओनुफ्रिच ने उसका हाथ पकडा और प्यार से उसे छाती मे लगाया।

"माशा!" उसने वेटी से कहा। "तू हमेशा भली लड़की और आज्ञाकारी वेटी रही है!"—माशा रो पड़ी, पिता का हाथ चूमने लगी। "अव तू हमें यह दिखा सकती है कि हम तुझे प्यारे हैं! मेरी वात ध्यान से सुन। मेरे ख्याल में तुझे उस सौदेवाले की याद होगी, जिसकी बातें मैं अक्सर तुम लोगों को सुनाया करता था। तुर्की की लड़ाई* के दिनों में हमारी गहरी दोस्ती हुई थी। तव वह एक गरीव आदमी था और मुझे उसकी मदद करने का मौका मिला था। फिर हमें जुदा होना पड़ा और हमने कसम खायी थी कि कभी एक-दूसरे को नहीं भूलेंगे। तीस साल से भी ऊपर हो गये हैं इस वात को, मुझे उसका कुछ पता नहीं रहा था। आज खाने के समय मुझे उसकी चिट्ठी मिली: हाल ही में मास्को आने पर उसने मेरा पता ढूंढ़ निकाला। मैं तुरंत उससे मिलने गया, ज़रा सोचो तो, कितनी खुशी हुई हमें एक-दूसरे से मिलकर। मेरा दोस्त ठेकेदारी करने लगा था, अमीर हो गया, अव चैन से ज़िंदगी काटने यहां आया है। उसे पता चला मेरे वेटी है तो बड़ा खुश हुआ। हमने फ़ौरन वात पक्की कर ली, मैंने उसका इकलौता वेटा तुम्हारे लिए मांग लिया। हम वूढ़ों को वक्त गंवाना अच्छा नहीं लगता – आज शाम ही वाप-वेटा दोनों हमारे यहां आ रहे हैं।"

माशा और भी ज़ोर से रो पड़ी। उसे उलियान याद आ गया।

"सुनो, माशा!" ओनुफ़्रिच ने कहा। "आज सुवह म्याऊकिन तुम्हारा रिश्ता मांगने आया था; वह अमीर आदमी है, यहां के मोहल्ले में उसे सब जानते हैं। तुमने उससे शादी नहीं करनी चाही। सच पूछो तो मेरे मन में भी उस आदमी को लेकर कुछ शक है, हालांकि मैं अच्छी तरह जानता हूं कि टाइटलर कौंसुलर विल्ला नहीं हो सकता और न ही विल्ला टाइटलर कौंसुलर। पर मेरे दोस्त का वेटा जवान है, सलोना है, उसे ठुकराने की तुम्हारे पास कोई वजह नहीं है। तो वस मेरी आखिरी वात सुन लो: जिसे मैंने चुना है उससे दामन नहीं वांधना चाहती तो कल सुवह अरीस्तार्ख़ फ़लेलेइच के साथ तुम्हारी वात पक्की हो जायेगी। ... जाओ, जाकर सोच लो।"

---

* प्रत्यक्षतः, आशय १७८७–१८९१ की रूस और तुर्की की लड़ाई से है। तुर्की ने क्रीमिया और दूसरे इलाके, जो रूस ने १८वीं सदी में जीते थे, वापस हासिल करने के लिए इसे छेड़ी थी।

माशा अत्यन्त दुखी होकर अपने कमरे में लौटी। यह निश्चय तो उसने बहुत पहले ही कर लिया था कि वह प्याऊकिन से किसी हालत में शादी नहीं करेगी; लेकिन वह उलियान की नहीं किसी और की होकर रहे – यही सबसे बड़ी निष्ठुरता थी! थोड़ी देर में इवानोव्ना उसके कमरे में आ गयी।

"माशा बेटी," वह बोली, "मेरी सलाह मान। प्याऊकिन से तेरी शादी हो या सौदेवाले से – तेरे लिए सब बराबर है, तू सौदेवाले को ना कर दे, प्याऊकिन से शादी कर ले। तेरा बाप कहने को तो कह रहा है कि सौदेवाला अमीर है, पर मैं तो जानती हूं तेरे बाप को! जिसकी जेब में सौ रूबल हो वही धन्ना सेठ है। माशा! जरा सोच तो हमारे पास कितने पैसे होंगे प्याऊकिन कोई बुरा तो नहीं। जवान भले ही नहीं रहा, पर कित्ते ढंग से, कित्ते प्यार से बातें करता है! वह तेरे नाज उठायेगा।"

माशा रोती ही जा रही थी, कुछ जवाब नहीं दे रही थी। इवानोव्ना ने सोचा कि वह राजी है, और बाहर चली गयी, ताकि कहीं उसका पति यह न देख ले कि वह माशा को मना रही है। उधर माशा ने मन मसोसकर पिता की खातिर अपने प्यार की बलि देने का निश्चय किया। "उसे भुला देने की कोशिश करूंगी," उसने अपने आप से कहा, "पिता जी को यही सुख मिले कि उनकी आज्ञा का पालन करती हूं। मैं तो उनके सामने पहले ही दोषी हूं, उनकी मर्जी के खिलाफ दादी से मिली हूं।"

झुटपुटा होते ही माशा चुपके से नीचे उतरी और कुएं की ओर चल दी। उसने अहाते में पैर रखा ही था कि उसके गिर्द बवंडर उठने लगा, ऐसा मालूम होता था कि पैरों तले धरती कांप रही है। एक मोटा घिनौना मेढक टर्र-टर्र करता सीधा उसकी ओर उछला, लेकिन माशा ने सलीब का निशान बनाया और दृढ़ कदमों से आगे चल दी। कुएं के पास पहुंचने पर उसे लगा जैसे कुएं में से किसी के कराहने की आवाज आ रही है। कुएं की जगत पर काला बिल्ला उदास बैठा था और विषादपूर्ण स्वर में म्याऊं-म्याऊं कर रहा था। माशा ने मुंह मोड़ लिया और कुएं के बिल्कुल पास आ गयी, जरा भी हिचकिचाये बिना उसने गले में से काली डोरी और उससे बंधी चाबी निकाली, जो दादी से मिली थी।

"लो, अपनी भेंट वापस ले लो!" उसने कहा। "मुझे न तुम्हारा दूल्हा चाहिए, न तुम्हारी दौलत! ले लो इसे, हमारा पिंड छोड़ो!"

उसने चाबी कुएं में फेंक दी। काला बिल्ला चीत्कार करता चाबी के पीछे लपका। कुएं में पानी ज़ोरों से उफनने लगा।... माशा घर चल दी, उसकी छाती पर पड़ा पत्थर हट गया था।

घर के पास पहुंचते हुए उसने किसी अपरिचित स्वर को पिता के साथ बातें करते सुना। ओनुफ़्रिच ने दरवाज़े पर आकर उसका हाथ पकड़ा।

"यह है मेरी बेटी!" बेंच पर बैठे सफ़ेद दाढ़ीवाले वयोवृद्ध के पास उसे ले जाते हुए ओनुफ़्रिच ने कहा। माशा ने कमर तक झुककर बूढ़े को सलाम किया।

"चलो, भई, मिलाओ इसे हमारे बेटे से!" बूढ़े ने कहा।

माशा ने सहमी नज़र उठायी – उसके पास ही उलियान खड़ा था। माशा चीख पड़ी और उसकी बांहों में जा गिरी।...

दो प्रेमियों की खुशी का वर्णन करने की शक्ति मेरी लेखनी में नहीं है। ओनुफ़्रिच और बूढ़े को पता चला कि वे दोनों पहले से ही एक-दूसरे को जानते हैं और उनकी खुशी दुगनी हो गयी। इवानोव्ना का मन यह जानकर शांत हो गया कि भावी समधी के पास कुछ लाख की राशि बैंक में जमा है। उलियान को भी यह जानकर आश्चर्य हुआ, उसने कभी सोचा तक न था कि उसका पिता अमीर है। दो हफ़्ते बाद विवाह हुआ।

विवाह के दिन शाम को उलियान के घर में दावत हो रही थी। मेहमान नवदंपति की सेहत का जाम उठा रहे थे, तभी एक संतरी कमरे में आया और उसने ओनुफ़्रिच को बताया कि जिस समय गिरजे में माशा का विवाह हो रहा था ऐन उसी समय लाफ़ेर्तोवोवाले मकान की छत गिर पड़ी और सारा मकान ही ढह गया।

"मैं तो उस मकान में अब रहना ही नहीं चाहता था," ओनुफ़्रिच ने कहा। "आओ, मेरे पुराने साथी। लो, गिलास में शेम्पेन उंडेलो और दूल्हे-दुलहन के लिए सुखी जीवन की कामना करो!"

ओरेस्त सोमोव

१७९३-१८३३

ओरेस्त मिखाइलोविच सोमोव (१७९३-१८३३) एक लेखक, पत्रकार और समीक्षक थे। अपनी साहित्यिक रचनाएं वे पोर्फ़ीरी बाइस्की के उपनाम से छपवाते थे।

सोमोव एक प्राचीन रूसी कुलीन परिवार में जन्मे। उन्होंने खार्कोव विश्वविद्यालय में वाङ्मय की शिक्षा पायी। फ़्रांसीसी, इतालवी और जर्मन भाषाओं पर उन्हें पूरा अधिकार प्राप्त था। विश्वविद्यालय में ही वह गद्य और पद्य रचना में प्रवृत्त हुए। उनकी पहली कविताओं में रूसी इतिहास के वीरतापूर्ण कालों और लोक-साहित्य में रुचि प्रतिबिंबित हुई। १८१८ में सोमोव पीटर्सबर्ग आये और स्वच्छंद रूसी साहित्य-प्रेमी समाज के सदस्य बने। पीटर्सबर्ग में सोमोव एक व्यावसायिक पत्रकार बने। अनेक पत्रिकाओं और संकलनों में उनकी रचनाएं छपने लगीं। १८२० के दशक के आरंभ में सोमोव दिसंबरवादी साहित्यकारों के निकट संपर्क में आये। उनकी ही भांति सोमोव ने भी साहित्य के मौलिक राष्ट्रीय स्वरूप, उदात्त नागरिक भावनाओं के काव्य तथा श्रेण्यवाद (क्लासिकीवाद) की रूढ़ियों से मुक्त सृजन के समर्थन में अपनी आवाज़ बुलंद की। युवा साहित्यकार सोमोव स्वच्छंदतावादी (रोमांसवादी) कला के पक्षधर बने। १८२३ में प्रकाशित उनका लेख 'स्वच्छंदतावादी काव्य', जिसके साथ इस विषय पर वाद-विवाद आरंभ हुआ, तत्कालीन समीक्षा साहित्य की एक उल्लेखनीय घटना था। १८२६ में सोमोव को दिसंबरवादियों पर चल रहे मुकदमे के सिलसिले में गिरफ़्तार किया गया, लेकिन यह प्रमाणित हो जाने
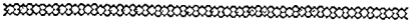
पर कि वह षड्यंत्र में शामिल नहीं थे, उन्हें रिहा कर दिया गया।

१८२७ में सोमोव ने गद्य के क्षेत्र में अपनी लेखनी आजमानी शुरू की। पुश्किन और उनके कवि मित्र अंतोन देल्विग द्वारा संस्थापित 'लितेरातूर्नाया गजेता' (साहित्यिक समाचारपत्र) में उन्होंने सक्रिय भाग लिया। इस दशक के अंत और इससे अगले के आरंभ में सोमोव की कहानियां पत्रिकाओं और संकलनों में छपी। इनमें उन्होंने उक्राइनी किसानों के जीवन का चित्रण किया, देहातों में प्रचलित विश्वासों और लोक जीवन के दूसरे लक्षणों को इनमें प्रतिबिंबित किया और इस दृष्टि से, निश्चित हद तक, निकोलाई गोगोल के आरंभिक गद्य के पूर्ववर्ती रहे। उन्होंने उक्राइनी लोक धारणाओं पर आधारित कई रहस्य-रोमांच कथाएं लिखीं ('डूबी लड़की', 'कीयेव की चुड़ैलें', इत्यादि)। रूसी लोक-साहित्य और रूसी जन-जीवन से भी प्रेरणा पाते हुए उन्होंने 'घरभुतनी', 'भड़मानस' और 'आत्महत्या' जैसी कई कहानियां लिखीं। जीवन के अंतिम वर्षों में सोमोव साहित्य में स्वच्छंदतावादी प्रवृत्ति के समर्थक समीक्षक के नाते सक्रिय रहे। रूसी साहित्य की उनकी समीक्षाएं तथा पुश्किन और बरातीन्स्की की कविताओं ('काउंट नूलिन', 'पोल्तावा', 'बाल नृत्य संध्या') पर उनके लेख बहुत लोकप्रिय रहे।

१८३२-१८३३ में सोमोव का 'दो पत्रों में उपन्यास' तथा 'मां और बेटा' लघु-उपन्यास छपे, जिनमें उन्होंने रूस के प्रांतीय जीवन का चित्रण किया।

भड़मानस

"यह भी क्या शीर्षक है?" आप पूछेंगे, या मन ही मन सोचेंगे। मेरे प्रिय पाठको, (कौन ऐसा लेखक है जिसे पाठक प्रिय नही है?) आपके प्रश्न का पहले से ही अनुमान लगाकर मैं आपको उत्तर दे रहा हू: मैं करता तो क्या करता? मेरा इसमे क्या कसूर है कि मेरे अथक समकालीन, गद्य और पद्य के रचयिता रूमानी कवि सारे रोचक शीर्षको पर हाथ साफ कर चुके है? जलदस्यु, समुद्री डाकू, काफिर बटमार और रक्तपायी पिशाच-वेम्पायर तक एक के बाद एक पाठको पर धावे बोलते आये है, या चादनी रात मे भावुक सुदरियो के कक्षो मे दबे पाव घुसते आये है। ये जीवित और मृत भयावह जीव मेरी कल्पना पर इस हद तक छाये हुए हैं कि मुझे अभी भी अपनी गर्दन पर वेम्पायर के दात किटकिटाते सुनाई देते है या लगता है "बटमार की नारकीय आख के ठडे सफेद डले मे खूनी पुतली अलग हो रही है।" *ऐसी लोमहर्षक बातो से भयभीत होकर मैंने सोचा कि क्यो न पाठक-*पाठिकाओ को भी जरा डराया जाये। परतु चूकि मुझे प्रकृति से न लार्ड बायरन की काली कल्पना मिली है, न वाल्टर स्कॉट की प्रतिभा और न ही मि० द' *अर्लेनकूर* और उनके जैसो की चरमराती* कलम ही मिली है, और मेरी लेखनी इतनी मनमौजी है कि प्राय आसू बहाते और भय से थरथर कापते हुए भी हस देती है, सो, अपनी लेखनी को उसकी मनमानी पर छोड़ते हुए मैंने अपनी कल्पना को बेलगाम करने का निश्चय किया है ले जाये मेरी लेखनी उसे जिधर ले जाती है। अपने शीर्षक की सफाई मे, देवियो और सज्जनो, मैं *बस इतना कहना चाहूगा कि आपके सामने कोई बिल्कुल नयी अश्रुतपूर्ण*

---

*चार्ल्स विक्टर द' अर्लेनकूर (१७८१–१८५६) – एक फ्रासीसी उपन्यासकार।

भड़मानस

"यह भी क्या शीर्षक है?" आप पूछेंगे, या मन ही मन सोचेंगे। मेरे प्रिय पाठको, (कौन ऐसा लेखक है जिसे पाठक प्रिय नही हैं?) आपके प्रश्न का पहले से ही अनुमान लगाकर मैं आपको उत्तर दे रहा हू. मैं करता तो क्या करता? मेरा इसमे क्या कसूर है कि मेरे अथक समकालीन, गद्य और पद्य के रचयिता रूमानी कवि सारे रोचक शीर्षको पर हाथ साफ कर चुके है? जलदस्यु, समुद्री डाकू, काफिर बटमार और रक्तपायी पिशाच-वेम्पायर तक एक के बाद एक पाठको पर धावे बोलते आये है, या चादनी रात मे भावुक सुदरियो के कक्षो मे दबे पाव घुसते आये है। ये जीवित और मृत भयावह जीव मेरी कल्पना पर इस हद तक छाये हुए है कि मुझे अभी भी अपनी गर्दन पर वेम्पायर के दात किटकिटाते सुनाई देते है या लगता है "बटमार की नारकीय आख के ठडे सफेद डले मे खूनी पुतली अलग हो रही है। " ऐसी लोमहर्षक बातो मे भयभीत होकर मैंने सोचा कि क्यो न पाठक-पाठिकाओ को भी जरा डराया जाये। परतु चूकि मुझे प्रकृति से न लार्ड बायरन की काली कल्पना मिली है, न वाल्टर स्कॉट की प्रतिभा और न ही मि० द' अर्लेनकूर* और उनके जैसो की चरमराती कलम ही मिली है, और मेरी लेखनी इतनी मनमौजी है कि प्राय आसू बहाते और भय से थरथर कापते हुए भी हस देती है, सो, अपनी लेखनी को उसकी मनमानी पर छोडते हुए मैंने अपनी कल्पना को बेलगाम करने का निश्चय किया है ले जाये मेरी लेखनी उसे जिधर ले जाती है। अपने शीर्षक की सफाई मे, देवियो और सज्जनो, मैं बस इतना कहना चाहूंगा कि आपके सामने कोई बिल्कुल नयी अश्रुतपूर्ण

---

* चार्ल्स विक्टर द' अर्लेनकूर (१७८१–१८५६) – एक फ्रासीसी उपन्यासकार।

भड़मानस

"यह भी क्या शीर्षक है?" आप पूछेंगे, या मन ही मन सोचेंगे। मेरे प्रिय पाठकों, (कौन ऐसा लेखक है जिसे पाठक प्रिय नहीं हैं?) आपके प्रश्न का पहले से ही अनुमान लगाकर मैं आपको उत्तर दे रहा हूं. मैं करता तो क्या करता? मेरा इसमें क्या कसूर है कि मेरे अथक समकालीन, गद्य और पद्य के रचयिता रूमानी कवि सारे रोचक शीर्षकों पर हाथ साफ कर चुके हैं? जलदस्यु, समुद्री डाकू, काफिर बटमार और रक्तपायी पिशाच-वैम्पायर तक एक के बाद एक पाठकों पर धावे बोलते आये हैं, या चांदनी रात में भावुक सुंदरियों के कक्षों में दबे पांव घूमते आये हैं। ये जीवित और मृत भयावह जीव मेरी कल्पना पर इस हद तक छाये हुए हैं कि मुझे अभी भी अपनी गर्दन पर वैम्पायर के दांत किटकिटाते सुनाई देते हैं या लगता है "बटमार की नारकीय आंख के ठंडे सफेद ढेले से खूनी पुतली अलग हो रही है। " ऐसी लोमहर्षक बातों से भयभीत होकर मैंने सोचा कि क्यों न पाठक-पाठिकाओं को भी जरा डराया जाये। परन्तु चूंकि मुझे प्रकृति से न लार्ड बायरन की काली कल्पना मिली है, न वाल्टर स्कॉट की प्रतिभा और न ही मि० द' अर्लेनकूर* और उनके जैसों की सरसराती कलम ही मिली है, और मेरी लेखनी इतनी मनमौजी है कि प्रायः आंसू बहाते और भय से थरथर कांपते हुए भी हंस देती है, सो अपनी लेखनी को उसकी मनमानी पर छोड़ते हुए मैंने अपनी कल्पना को बेलगाम करने का निश्चय किया है ले जाये मेरी लेखनी उसे जिधर ले जाती है। अपने शीर्षक की सफाई में, देवियों और सज्जनों, मैं बस इतना कहना चाहूंगा कि आपके सामने कोई बिल्कुल नयी अश्रुतपूर्व

* चार्ल्स विक्टर द' अर्लेनकूर (१७८१–१८५६) – एक फ्रांसीसी उपन्यासकार।

चीज़ रखने की मेरी अभिलाषा थी। तो मैंने ढूंढ़ निकाला भड़मानस, यानी आदमी, जो भेड़िया बन सकता है। जहां तक मुझे याद पड़ता है पढ़ने-पढ़ाने के इतिहास में रूसी भड़मानसों ने अभी तक भले लोगों को नहीं डराया है। भड़मानस की जगह मैं कुछ और सोच सकता था या फिर उसकी जगह कोई ख़ूंखार लुटेरा रख सकता था, लेकिन बाकी सब नये विषय, जैसा कि मैंने ऊपर बताया है, हथियाये जा चुके हैं। हमारी किताबों की दुकानों में अब बटमारों-डाकुओं के गिरोह के गिरोह जमा हो गये हैं। ये सदा दागे हुए भी नहीं होते (जैसा कि कानून मांग करता है), कम से कम प्रतिभा की छाप तो उन पर कतई नहीं होती। तो अगर चूहों और दीमकों ने इनके ख़िलाफ़ अपना सांता हर्मिदाद* न बनाया होता तो आज सज्जनों का जीना हराम होता।

मैं यह प्रस्तावना अपने किसी मित्र और किसी शत्रु के बीच वार्तालाप के रूप में लिखना चाहता था, लेकिन फिर सोचा कि मुझ पर तुरंत ही दूसरों की नकल करने का आरोप लगाया जायेगा। सच मानिये, नकलची कहलवाने की मेरी ज़रा भी इच्छा नहीं है।... कागज़ और कलम के अखाड़े में मेरे हमपेशा दोस्तो, अपना-अपना रंग जमायें! मैं आपके सामने एक उम्दा मिसाल रखना चाहता हूं और इसलिए पेश कर रहा हूं कभी न सुना, कभी न देखा रूसी भड़मानस।

* * *

बहुत पहले एक गांव में...

मेरे प्रिय पाठको, अब आप मुझसे यह तो नहीं पूछेंगे कि इस गांव का नाम क्या है और यह गांव किस ज़िले की किस तहसील में है। मैं आपको जो बताने जा रहा हूं, मेहरबानी करके उसी पर संतोष कर लें और फालतू बातें बताने के लिए मुझ पर ज़ोर न डालें।

तो फिर, सुनिये यह कहानी...

बहुत पहले एक गांव में येर्मोलाई नाम का एक बूढ़ा रहता था।

---

* सांता हर्मिदाद – शब्दशः पवित्र भाईचारा, इंक्विज़िशन के दिनों में स्पेन के ख़ुफ़िया दलों का यह नाम था। – ले०

सब जानते थे कि वह ओस में नहाता है, जडी-बूटिया जमा करता है, कि वह चलता है तो उसकी लबी सफेद मूछो तले उसके होठ लगातार कुछ बुदबुदाते रहते हैं, वह सोता है तो उसकी आखे खुली रहती है, और भी बहुत सी अजीबोगरीब बाते है उसमें। और आप क्या जानना चाहते हैं? हा, वह टोनहाया था, सो भी एक दुष्ट टोनहाया। सारा गाव उसके बारे मे यही कहता था। यहा यह भी बता दे कि गाव एक विशाल-वियावान जगल के सिरे पर ही बसा हुआ था और उसमें भी येर्मोलाई का घर सबसे अलग, प्राय जगल मे ही था। येर्मोलाई का कभी ब्याह नही हुआ था, लेकिन जिन दिनो की हम कहानी सुना रहे है, तब से कोई पद्रह साल पहले उसने एक लडके को गोद ले लिया था। इस लडके को गाववाले पहले आर्त्योम अनाथ कहते थे, लेकिन अब शायद टोनहाये का मान करते हुए, या इस जवान के डील-डौल को देखते हुए सब उसे आर्त्योम येर्मोलायेविच कहने लगे थे। असल मे उसका बाप कौन था, यह किसी को पता नही था या याद नही था, बल्कि यह कहिये कि किसी को इसकी परवाह ही नही थी।

आर्त्योम जवान गबरू था ऊचा-लमडा, गोरा-चिट्टा, उम्दा सेहत का जीता-जागता नमूना। सोचा जाये तो टोनहाये के लिए अपने गोद लिये लडके को पाल-पोसकर हट्टा-कट्टा बनाना कोई मुश्किल काम था क्या? किसानो को पक्का यकीन था बूढे टोनहाये ने आर्त्योम को चम-गादडो का दूध पिलाया है, कि रात को चुडैले उसके घने बालो मे कघी करती थी, कि मार्च महीने का सतर-बुझा हिम, जिससे बूढा आर्त्योम का मुह धोता था, उसके मुह को दूध जैसा चिट्टा और सेब जैसा लाल बनाता था। बस एक ही बात थी जो किसानो की समझ मे नही आती थी इस मरियल छोकरे को जब बूढा हट्टा-कट्टा जवान बना सकता था, तो क्या वह उसे थोडी सी अक्ल नही सिखा सकता था? आर्त्योम निरा भोदू था। सौ तक की गिनती भी वह गलती किये बिना नही सुना सकता था और जब उससे पूछा जाता कि उसका दाया हाथ कौन सा है और बाया कौन सा तो इसका भी उत्तर वह सदा सही न दे पाता। उसकी बडी-बडी सुरमई आखो से इतना भोलापन छलकता था, उसका मुह यो बुद्धुओ की तरह खुला रहता था, और जब उसे दौडना पडता तो उसकी टागे यो लटपटाती थी कि गाव की लडकिया पीठ पीछे उसका मजाक उडाती थी, दबी जबान से

उसके बारे में कहती थीं: "देखने में गुलाब है, बोलने में गधा।" गांववालों ने उसका नाम "हसीन गधा" रख छोड़ा था, लेकिन टोन-हाये से छिपाकर ही वे ऐसी बातें करते थे। उन्हें डर था कि अपने धर्मपुत्र का मज़ाक उड़ता देखकर बूढ़ा खार खा बैठेगा।

फिर भी, कुछ समय बाद उन्हें लगा कि दुष्ट बुड्ढे को उसके लड़के का मज़ाक उड़ाये जाने की भनक मिल गयी है। गांव में अचानक भेड़-बकरियां गायब होने लगीं। एक किसान की दो भेड़ें नहीं लौटीं, दूसरे की तीन-चार बकरियां लापता, तीसरे के सारे मेमने ही नदारद। गड़रियों ने कई बार देखा था कि जंगल में से यकायक खूब बड़ा भेड़िया निकल आता है, एक-दो भेड़ों पर टूटता है, उनकी गर्दन अपने दांतों में दबोचता है, उन्हें अपनी पीठ पर लादता है और नौ दो ग्यारह हो जाता है: पलक झपकते ही उन्हें लेकर जंगल में ओझल हो जाता है। गड़रिये चिल्लाते, धुत-धुत करते रह जाते हैं–उसके कान पर जूं तक नहीं रेंगती। वे कुत्तों को उसके पीछे हुशकारते, मगर वे दुम दबाकर खिसक जाते और सहमे-सहमे-से मुड़-मुड़कर देखते। किसान फ़ौरन भांप गये कि यह कोई मामूली भेड़िया नहीं बल्कि भड़मानस है; यह भांप लेने पर उनके लिए यह अनुमान लगाना भी कठिन न था कि यह भड़मानस और कोई नहीं बूढ़ा येर्मोलाई ही है।

करें तो क्या करें? सभी टोनहाये से डरते थे, हालांकि, सच कहा जाये तो अभी तक उसने गांववालों में से किसी का कुछ बिगाड़ा नहीं था, मगर था तो वह टोनहाया ही। उसकी शिकायत करें तो किससे करें, जबकि खुद पादरी ने उसे शाप देने से इंकार कर दिया है? खुद उसे ठिकाने लगा दें–पर यह तो पाप होगा, भले ही वह टोनहाया है; और फिर ऐसे कामों के लिए भरे बाज़ार में कोड़ों से पीटे जाने और साइबेरिया में कड़ी मशक्कत की सज़ा भुगतने का खतरा था, सो कोई भी उस पर हाथ उठाने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था। इसका भी क्या पता कि मरकर वह कब्र में से ही न निकलने लगे–तब भेड़ों का नहीं लोगों का गला घोंटेगा जिन्होंने उसे वक्त से पहले परलोक पहुंचा दिया। किसानों ने बहुत दिमाग लड़ाया, गांव की चौपाल में इस सवाल पर बहुत सोचा-विचारा गया, मगर किसी को कुछ न सूझा। किसान बेबस थे, उनके पास बस एक ही चारा था–होंठ सीकर दुख सहते रहें और भगवान से विनती करते

रहे कि वह उनकी और उनके ढोर-डगरो की रक्षा करे।

उस गाव मे अकुलीना नाम की एक सुंदरी रहती थी। चेहरा उसका ऐसा था जैसे रस भरा सेव, आखो की नज़र बाज़ जैसी तीखी और भौहे मखमली ज्यो सेवल का समूर। बस यह कहिये कि उसमे एक सुदरी के वे सारे गुण और मोहक लक्षण थे, जिनका वर्णन हम पुराने रूसी गीतो और परी कथाओ मे पाते हैं। सारे गाव मे एक वही ऐसी थी जो भोन्ने आत्योंम का मजाक नही उडाती थी, उलटे लडकियो के बीच उसकी हिमायत करती थी और उन्हे यकीन दिलाती थी कि वह बाका जवान है। चतुर लडकी ताड गयी कि बूढा येर्मोलाई बहुत अमीर और बहुत बुड्ढा है, कि उसकी ज़िदगी के अब ज्यादा दिन नही बचे है और उसके मरने पर उसकी सारी दौलत का एकमात्र वारिस आत्योंम ही होगा। वह आत्योंम को इतने प्यार से देखती थी और उससे आमना-सामना होने पर इतने मीठे स्वर मे उससे बाते करती थी कि अपने सारे भोदूपन के बावजूद आत्योंम ने उसका यह झुकाव देख लिया। अक्सर वह छाती फुलाये उसके पास चला आता और बातचीत छेडता। यह कहना तो उचित न होगा कि उसकी बातचीत बहुत बुद्धिमत्तापूर्ण होती थी, पर हा, सुदरी को अच्छी लगती और वह सहर्ष उससे बात करती थी। सक्षेप मे यह कि शीघ्र ही अकुलीना ने इस एकाकी नौजवान का सारा विश्वास जीत लिया। वह अब उसके पास जाता, होठो पर जीभ फेरते और मूर्खो की तरह हसते हुए चिल्लाता, "अरी ओ, अकुलीना, क्या हाल है तेरे?" अपना भारी-भरकम हाथ उसके गोल-गोल, गोरे कधे पर जमाता और उसके सामने मोम की तरह पिघल जाता। हा, वह बिल्कुल पिघल ही जाता, क्योकि उसके गाल और भी अधिक दहक उठते, आखे अधिक धुधली हो जाती। उसके लाल सुर्ख होठ, जो पहले ही खुले होते, पल-पल मोटे और अगूरी मे भिगोयी चैरी की तरह अधिक नम होते जाते। युवती अब गभीरतापूर्वक यह सोचने लगी थी कि कैसे वह सारा मामला तय करे यानी कैसे ब्याह की अगूठी की मदद से आत्योंम और उसकी सारी भावी जायदाद को अपने हाथो मे समेट ले।

समझदार किसानो ने आखिर उसी से जाकर बिनती की कि इस मुसीबत की घडी मे वह उनकी मदद करे। "सुनो, अकुलीना, तुम तो हमारे गाव मे सबसे ज्यादा अक्लमद हो। हमे पता है कि तुम्हा-

न मीन आर्त्योम इतना तेज़ नहीं है, हालांकि कहने को उस होशियार बुड्ढे का बेटा है। तुम हमारी मदद कर दो, तो हमसे भी जो बन पड़ेगा, तुम्हारी खिदमत में लायेंगे। बस एक ही विनती है हमारी: किस तरह नहीं-नहीं पता चले कि हमारी भेड़ों को सचमुच का भेड़िया दबोच रहा है, या फिर, माफ़ करना भगवान, वह बुड्ढा येर्मोलाई भड़मानस बनकर हमें खौफ़ खिला रहा है?" अकुलीना सोच में डूबी थोड़ी देर तक सिर हिलाती रही: एक ओर तो वह टोनहाये को नाराज़ करने से डरती थी, क्योंकि उससे तो कोई बात छिपी नहीं रहती; दूसरी ओर तोहफों का प्रलोभन था... इस लोभ को भला कौन संवार सकता है? किसी पटवारी से पूछ देखिये या किसी जज से, किसी से भी (मैं सबको गिनाना नहीं चाहता) पूछ देखिये: हर कोई साफ़-साफ़ शब्दों में नहीं तो नजरों में ही आपको यह पुराना मुहावरा याद दिला देगा: ईश्वर के आगे कौन पापी नहीं और राजा के आगे कौन कसूरवार नहीं! अकुलीना भी इस अर्थ में यदि पक्की पापिन नहीं थी तो कम से कम उसका मन बिल्कुल बेदाग भी नहीं था। वह सोचती रही, सोचती रही और आखिर उसने किसानों को मदद का वायदा दे दिया।

अगले दिन आर्त्योम से मिलने पर वह उससे पहले से भी अधिक प्यार से, शहद घुली बातें करने लगी। बेचारा आर्त्योम पहले से भी अधिक गदगद हो रहा था: उसके गाल अंगारों से दहक रहे थे और होंठ फूलते ही जा रहे थे। अपनी गदरायी उंगलियों से चालाक अकुलीना ने बड़े लाड से उसका गाल थपथपाया और बोली:

"आर्त्योम, मेरी जिंदगी के उजाले! एक बात कहनी है तुमसे, पर डर लगता है, तुम्हारा बुढ़ऊ न सुन ले। कहां है वह?"

"मैं क्या जानूं? भटकता होगा जंगल में बनभुतना सा और वो, क्या नाम है, लिंडन की छाल जमा कर रहा होगा जाड़ों के लिए।..."

"अच्छा, यह तो बताओ, उसे कोई अजीब काम करते देखा है?"

"ना, भगवान कसम, कभी नहीं!"

"लोग तो पता नहीं उसके बारे में क्या-क्या कहते फिरते हैं, कि वह टोनहाया है और भेड़िया बनकर जंगल में घूमता है, भेड़ें उठा ले जाता है।"

"हाय, छोड़ो भी, मेरी जान। तुम्हारी बातों से तो डर ही लगने लगी है।"

"सुनो, मेरे बाँके वीर। एक छोटा सा काम करो, जरा भी मुश्किल नही है। बस तुम उस पर नजर रखना और फिर बाद मे मुझे बता देना कि गाव मे जो अफवाहे फैली हुई है—सच हैं या झूठ। बुड्ढा तो तुम्हे चाहता है, सो तुम्हे कुछ कहेगा नही।"

"काम तो मुश्किल नहीं, पर मुझे इसमे क्या मिलेगा?"

"हाय, मेरे सोने। मैं तुमसे और भी कसकर प्यार करूंगी, तुमसे शादी करूगी फिर हम मजे मे रहेगे।"

"सच? तो क्या करना है मुझे?"

"ध्यान मे सुनो आज रात सोना नही, देखते रहना कि बुड्ढा क्या कर रहा है। जिधर वह जायेगा, उधर ही तुम भी जाना, कहीं कोने मे या झाडी के पीछे दुबक जाना और सब कुछ देखते रहना। फिर जो देखा होगा, मुझे बता देना।"

"ओफ्फो! यह तो डरावना काम है! रात को जागू! सोऊंगा कब मैं भला?"

"बाद मे नीद पूरी कर लेना। और जब मैं तुम्हारी बीवी बन जाऊगी, तब जी भर के सोना मेरे प्यारे। तब तुम्हे कोई न लकडी काटने भेजेगा न पानी लाने तुम्हारा सारा काम मैं करूगी। तुम बस मजे से लेट लगाना और तैयार खाना खाना।"

"अच्छा, मान ली तुम्हारी बात। बूढ़े पर नजर रखूगा। पर यह तो बताओ, वो मेरी ठुकाई तो नही कर देगा?"

"डरो मत। उसे कुछ पता नहीं चलेगा। चल भी गया तो मैं उससे जाकर माफी माग लूगी, कह दूगी मैंने ही तुम्हे सिखाया था।"

"हा, देख लो! मेरा नाम मत लेना।"

"लो, यह भी कोई कहने की बात है! अच्छा, तो मैं चली, मेरे प्यारे।"

"अच्छा, मेरी लाडो।"

आर्त्योम निरा भोदू भले ही था, पर बिल्कुल कायर नही था। अपने धर्मपिता की वह इज्जत करता और उससे डरता था। लेकिन, या तो अपनी मदबुद्धि के कारण, या फिर अपने जन्मजात साहस के कारण उसके मन मे किन्ही पारलौकिक शक्तियों का कोई खौफ नही था। सभव है कि बूढे ने भी उसे सुखद अज्ञान मे रखा हो, उसे टोन-टोटकों-ओझाओं, भूत-प्रेतों आदि के विचारो से दूर रखने की कोशिश करना

हो, ताकि उसके दिमाग़ में बूढ़े के बारे में कोई शक न पैदा हो जाये और वह उन चीज़ों को देखने की कोशिश न करने लगे, जिन्हें उससे छिपाना ज़रूरी था।

रात हो गई। सदा की भांति आर्त्योम जल्दी ही बिस्तर में लेट गया। उसने सिर ढांप लिया, मगर सोया नहीं, कान लगाकर सुनता रहा – बूढ़ा सो रहा है कि नहीं। घना अंधेरा छाया हुआ था। येर्मोलाई बिस्तर में करवटें बदलता हुआ कुछ बुदबुदाता जा रहा था। जब चांद निकला तो बूढ़े ने उठकर कपड़े पहने, सिरहाने रखे संदूक में से कोई चीज़ निकाली और ज़रा भी आहट किये बिना बाहर निकल गया। पलक झपकते ही आर्त्योम उठ खड़ा हुआ। कंधे पर लबादा डालकर वह भी दबे पांव बाहर निकला। ड्योढ़ी में दुबककर वह देखने लगा कि बूढ़ा किधर जा रहा है और उसे जंगल को जाते देखकर उसके पीछे हो लिया इस तरह कि खुद हमेशा परछाई में रहे। जी हां, भोले से भोले व्यक्ति में भी कुछ स्वाभाविक चतुराई होती है, जिसका प्रयोग वह तब करता है, जब उसे अपने से अधिक शक्तिशाली या अधिक चतुर व्यक्ति को चकमा देना होता है। खैर, नादानों की चतुराई की बात छोड़ें, आइये, यह देखें कि हमारा आर्त्योम क्या कर रहा है।

बाड़ से सट-सटकर, झाड़ियों के पीछे दुबकते हुए और ज़रूरत होने पर छिपकली की तरह घास पर रेंगते हुए वह बूढ़े के पीछे-पीछे बियाबान जंगल के बीचोंबीच जा पहुंचा। यहां घने जंगल में एक छोटा-सा मैदान था और इस मैदान के बीचोंबीच एस्प वृक्ष का आदमी की कमर तक ऊंचा ठूंठ था। बूढ़ा टोनहाया इस ठूंठ के पास ही गया। और अब सुनिये कि मैदान के सिर पर हेज़लनट की झाड़ियों के पीछे छिपे आर्त्योम ने क्या देखा। चंद्रकिरणें ठूंठ पर सीधी पड़ रही थीं। आर्त्योम को लगा कि ठूंठ चांदनी में चांदी की तरह चमक रहा है। बूढ़े येर्मोलाई ने ठूंठ के तीन फेरे लगाये। हर बार उसने धीमे स्वर में यह मंतर-सा पढ़ा :

सागर और महासागर पर,
दूर-पास के देशों में
बीच जंगल के मैदान में फैली चांदनी ठूंठ पर।
फेरे लगाता ठूंठ के झबरीला भेड़िया,
डरते उससे ढोर, डरता गड़रिया।

चाद रे चाद, सुनहले चाद।
पिघला दे गोलिया, भोथरा दे छुरिया,
कर दे बेकार डडे-लाठिया।
डर मे थरथराये ढोर-डगर,
भय से कापें औरत-मरद।
भेडिया उनको पकड न आये
खाल वे उमको उधेड न पाये।

चारो ओर ऐसा सन्नाटा था कि आर्त्योम को एक-एक शब्द साफ-साफ सुनाई दिया। तीसरी बार यह मतर पूरा करके बूढा चाद की ओर मुह करके खडा हुआ, फिर उसने ठूठ के बीचोबीच तावे की मूठवाला एक छुरा घोपा और उसके ऊपर से तीन बार इस तरह कलाबाजिया लगायी कि तीसरी बार सिर के बल उस ओर गिरा जिधर चाद था। अचानक आर्त्योम देखता क्या है कि बूढा तो वहा है ही नही और उसके स्थान पर विशालकाय डरावना भेडिया खडा है। इस दुष्ट जानवर ने सिर ऊपर उठाया, अपनी लाल सुर्ख, खूनी आखो से चाद को देखा, चारो ओर हवा को सूघा, और अपनी गरज मे जगल को स्तब्ध करता नौ दो ग्यारह हो गया।

इस सब के दौरान आर्त्योम पत्ते की तरह कापता रहा था। उसके दात इतनी जोर मे किटकिटा रहे थे कि वे पूरा कट्टा भर कूटू दलने के लिए पाटो का काम दे सकते थे। उसके होठ तो शायद उसके जन्म मे पहली बार एक दूसरे से आ लगे, कसकर भिच गये और नीले पड गये। बहरहाल, भडमानम के चले जाने पर वह धीरे-धीरे सभला और शात हो गया। कहते है कि मूढ व्यक्ति चोर से भी अधिक खतरनाक होता है, लेकिन यह बात सदा सच्ची नही उतरती। हमारे आर्त्योम की जगह कोई बुद्धिमान व्यक्ति होता तो वह सिर पर पाव रखकर जगल से भाग जाता और अपने दोस्त-दुश्मन सभी को चेता देता *खबरदार, टोनहायो पर नज़र रखने मत जाना।* लेकिन, जैसा कि हम अभी देखेगे, हमारे आर्त्योम ने अधिक बुद्धिमानी का नही तो अधिक साहस कार्य अवश्य किया। वह ठूठ के पास गया, अपने घने बालो मे हाथ फेरता हुआ कुछ देर विचारमग्न खडा रहा और फिर ठूठ की परिक्रमा करने और बूढे के मुह से सुने शब्द दोहराने लगा। यही नही, चाद की ओर मुह करके उसने तावे की मूठवाले छुरे के ऊपर

से तीन बार कलाबाज़ी खायी और तीसरी बार के बाद देखता क्या है कि वह हाथों-पांवों के बल खड़ा है, उसका थूथना लंबा हो गया है, लबादा घने, लंबे रेशों में बदल गया और उसके दामन का पिछला सिरा झबरीली पूंछ बन गया है, जो झाड़ू की तरह ज़मीन पर घिसट रही है। अपने रूप और वेशभूषा में आये इस आकस्मिक परिवर्तन पर दंग होकर उसने कुछ कहना चाहा – पर यह क्या? उसके कंठ से मानव स्वर के बजाय भेड़ियों की हुंकार निकली। उसने दौड़ना चाहा तो एक और चमत्कार देखा – अब उसकी टांगें पहले की तरह लटपटा नहीं रही थीं।

नया भड़मानस बोल नहीं सकता था, लेकिन उसकी विचार-शक्ति नही खोयी थी, अर्थात अपने मानव रूप में वह जितना सोच-विचार सकता था, उतना ही अब भी। सच पूछिये तो मैंने ऐसा कभी नहीं सुना कि भड़मानस भेड़िये के रूप में अपने मानव रूप से अधिक बुद्धिमान हो जाते हों। खैर, हमारा आर्त्योम थमा और सोचने लगा कि अपने इस नये रूप का क्या फ़ायदा उठाये, कैसे इसका मज़ा ले। तभी उसके दिमाग में एक विचार आया – जैसा दिमाग था बिल्कुल उसी के काबिल। उसे यह याद आया कि कैसे गांव के लौंडे उसका मज़ाक उड़ाते रहते हैं। उसने सोचा: "ठीक है, अब मैं उनका मज़ाक उड़ाऊंगा। सुबह होते ही गांव चला जाऊंगा और हर किसी पर झपटूंगा, तब देखूंगा ये पट्ठे कैसे मुझसे डरते हैं! मगर पहले नींद पूरी कर ली जाये: इस खाल में तो नम घास पर भी आराम से सोया जा सकता है।" बस, सोचा और कर डाला: हमारा आर्त्योम यानी कि भड़मानस हेज़लनट की झाड़ियों के बीच जाकर लेट गया और गहरी नींद सो गया।

यह तो मैं नहीं कह सकता कि वह कितनी देर तक सोता रहा। हां, जब वह जगा, तो सूरज काफ़ी चढ़ चुका था। उसने बदन झकझोर-कर अपने पर एक नज़र डाली। दिन की रोशनी में अपना नया रूप उसे इतना मज़ेदार लगा कि उसकी हंसी फूट पड़ी, लेकिन अट्टहास के स्थान पर उसे भेड़िये का ऐसा कर्णभेदी हुंकार सुनाई दिया, कि वह बेचारा खुद ही डर गया। फिर ज़रा संभलने पर जब उसे यह ख्याल आया कि वह खुद अपनी आवाज़ से डर रहा है तो उसने पहले से भी अधिक ज़ोर से अट्टहास लगाया और पहले से भी अधिक प्रबल

और तीखा हुकार गूजा। यह सब उसे भले ही बहुत हास्यास्पद लग रहा था, तो भी उसे स्वय पर नियत्रण रखना पडा, ताकि अपनी ही आवाज से अपने कानो के पर्दे न फाड ले। तभी उसे रात को बनाया इरादा याद आया कि वह गाव के लडको को डरायेगा। सो वह गाव को चल दिया।

रास्ते मे उसे किसान मिले, जो खेतो मे काम करने जा रहे थे। इस अति विशाल और निडर भेडिये को दूर से देखकर किसी के भी मन मे यह ख्याल नही आया कि यह भोदू आर्त्योम हो सकता है। सभी यही सोचते थे कि यह भडमानस है, कि बूढा टोनहाया येर्मोलाई ही भेडिया बना चला आ रहा है। इसीलिए हर कोई आखे ढाप लेता और सलीब का निशान बनाने लगता ताकि दुष्ट आत्मा उसके पास न फटके। भोले आर्त्योम को यह और भी मजेदार बात लगती और इससे गाव मे जाने की उसकी इच्छा अधिक तीव्र होती। आज तक कोई भी उससे इतना नही डरा था, जितना कि अब ये लोग डर रहे थे। वाह, कितनी बढिया बात है! गाव मे तो और भी मजा आयेगा। सब घबरा जायेगे, चिल्लायेगे भेडिया, भेडिया! उस पर कुत्ते छोडेगे, डडे-लाठिया और लोहे के सरिये लेकर जमा होगे, लेकिन वह जरा भी परवाह नही करेगा उसका तो न लाठिया, न सरिये कुछ बिगाड सकेगे, न गोलिया, और कुत्ते भी उससे डरेगे। क्या मौज रहेगी!

सचमुच ही सारा गाव ढीठ भेडिये का सामना करने आ गया। शुरू मे तो जिसने भी भेडिया देखा भाग खडा हुआ। किसान औरतो ने अपनी भेड-बकरियो को कोठरियो मे बद कर दिया और खुद भी जाकर दुबक गयी। सभी जानते थे कि यह मामूली भेडिया नही है। पर जल्दी ही कुछ बहादुर नौजवान सामने आये। उन्होने गाववालो से कहा कि आज इस बुड्ढे टोनहाये का फैसला हो ही जाना चाहिए। भीड जमा हो गयी – किसी के हाथ मे डडा था, किसी के हाथ मे कुल्हाडा, तो कोई सब्बल उठा लाया था। भेडिये को घेरकर वे उसे धमकाने लगे। आर्त्योम भी पहले तो डरा नही, कभी एक की ओर लपकता तो कभी दूसरे की ओर, अपने रोगटे खडे करके वह दात दिखा रहा था। लेकिन फिर उसके दिल मे डर समा गया। वह जानता था कि जादू के बल के कारण लोग उसे मार नही पायेगे, उसकी धुनाई भी नही कर पायेगे, लेकिन वे उसकी खाल नोच सकते थे,

पूंछ काट सकते थे, तव वह फटे लवादे में अपने सख़्त वाप के सामने कैसे हाज़िर होगा? वाप रे, यह तो मुसीवत आ पड़ी!

वैसे तो अभी तक कोई ऐसा वहादुर नहीं निकला था जो आगे आकर भेड़िये से टक्कर लेता। सभी दूर से ही उस पर चिल्ला रहे थे, लेकिन आगे कोई भी नहीं वढ़ रहा था। भेड़िये पर कुत्ते छोड़ने का सवाल ही नहीं पैदा होता था क्योंकि सव कुत्ते जाकर दुवक गये थे। लेकिन लोग घेरा वनाकर खड़े थे और घेरे को तोड़कर वाहर निकलना असंभव था। इधर हमारे वेचारे भड़मानस पर एक और मुसीवत आ पड़ी: उसने कल शाम से कुछ खाया नहीं था और अव उसके पेट में चूहे ज़वरदस्त उधम मचा रहे थे। अव क्या करे? और इसका क्या भरोसा कि उसका वाप गांव में नहीं है और उसे वेटे की शरारतों का पता नहीं चल गया है? धत् तेरे की! यह होता है नतीजा आंख मूंदकर अखाड़े में कूद पड़ने का! यह देखना तो वह भूल ही गया कि उसका वाप मानस रूप कैसे वापस पाता है! अव वेचारे आर्त्योम को भूखों मरना पड़ेगा, या भेड़िये के रूप में ही अपने दिन काटने पड़ेंगे।... उसकी चारों टांगें कांपने लगीं, वह गिर पड़ा और सिर को अगले पंजों के वीच दुवकाकर गठरी वन गया।

किसान यह सोच-विचार करने लगे कि इस भड़मानस का क्या करें: उसे ज़िंदा ही गड्ढे में दवा दें या उसे वांधकर कोतवाली में पेश करें? इस वीच भड़मानस की कायरता की चर्चा सारे गांव में फैल गयी थी और औरतें गली में मुंह दिखाने लगी थीं। एक लड़की तो इस छद्म भेड़िये को घेरे खड़ी भीड़ तक चली आयी। यह साहसी लड़की अकुलीना ही थी। वह तुरंत ही ताड़ गयी कि मामला क्या है, उसने किसानों से रास्ता देने को कहा और घेरे के वीच पहुंचकर वोली:

"भले लोगो, देखो, मुझे लगता है दुश्मन खुद ही सुलह करना चाहता है, सो उसे तंग नहीं करना चाहिए। भड़मानस को मारकर हमारा कोई खास भला नहीं होनेवाला, हां, मुसीवतों का पहाड़ सिर पर टूट पड़ेगा। मैंने सुना है, अदालतों का काम तो ऐसा है कि भड़मानस के पास पैसे हों तो वह भी ईमानदार गरीव से मुकदमा जीत सकता है। मेरी सलाह तो यह है: आप सव लोग भगवान के वास्ते अपने-अपने घर जाइये, इस भड़मानस को मैं अपने यहां लिये जाती हूं। यक़ीन मानिये, इसमें आप ही का भला है।"

किसानो ने बडे ध्यान से उसकी बाते सुनी और उसकी बुद्धिमत्ता पर दग रह गये। उसने जो कहा था उसमे अधिक समझदारी की बात और किसी को नही सूझी। उसकी बात मानकर भीड छट गयी, सब अपने-अपने घर को चल दिये। तब अकुलीना ने अपनी चुटिया मे से रग-बिरगा रिबन खोला और भडमानस के पास गयी, जिसने अपनी गर्दन यो आगे बढा दी, मानो जानता हो कि लड़की क्या करने जा रही है।

अकुलीना ने रिबन उसकी गर्दन मे बाधा और उसे अपने घर ले चली। भडमानस की कायरता और भोदूपन से वह तुरत भांप गयी थी कि वह कौन है। खाली कोठरी मे उसे ले जाकर अकुलीना ने जो बन पडा उसे खिलाया और साफ सूखी घास उसके लिए बिछा दी। फिर वह उसे उसकी ऐसी नासमझी और लापरवाही के लिए डाटने लगी। भेडिया रूपी आर्त्योम के थूथने पर आया दीनता का भाव हास्यास्पद भी लग रहा था। उसकी धुधली लाल आखो मे आसू टपक रहे थे। वह तो छोटे बच्चो की तरह फूट-फूटकर रो ही पडता, लेकिन इसी से रुका रहा कि भेडियो की तरह चीखेगा और फिर से सारे गाव मे हगामा मच जायेगा। अकुलीना ने कोठरी मे ताला लगाकर उसे आराम करने और दुखी होने के लिए अकेला छोड दिया।

शाम को अकुलीना बूढे येर्मोलाई के पास गयी। उसके पैरो मे पड़कर उसने जो कुछ जानती थी सब बता दिया और सारा कसूर अपने पर ले लिया। बूढा टोनहाया पहले ही सब कुछ जान गया था। वह आर्त्योम से सख्त नाराज था और बार-बार कह रहा था "भाड मे जाये! भटकता फिरे भेडिये की खाल मे।" लेकिन उस सुदरी की अनुनय-विनय और आसुओ मे बूढा कुछ पसीज ही गया। उसने तावे की मूठ वाला वही छुरा कमरबद मे लगाया, लालटेन उठायी और लडकी के साथ चल दिया। कोठरी मे जाकर उसने सबसे पहले इस छद्म भेडिये के कान खीचे। आर्त्योम ने ऐसे-ऐसे मुह बनाये जैसे आज तक न किसी जानवर और न किसी आदमी ने ही बनाये होगे, और इतनी ज़ोर-ज़ोर से चीखा कि बूढे और लडकी के ही नही, सारे गाव के कान फटे जा रहे थे। यह सज़ा देकर टोनहाये ने कुछ बुदबुदाते हुए तीन बार भडमानस के गिर्द चक्कर लगाया, फिर उसकी चारो टागे फैला दी और अपने जादुई छुरे से उसकी खाल सिर से दुम तक

और पीठ के आर-पार काट दी। फटा हुआ लवादा घास पर गिर पड़ा और उसी क्षण आर्त्योम उठ खड़ा हुआ – अपना खुला मुंह, आंखों में भोंदूपन का भाव और बहुत ही लाल कान लिये। अपना बदन झकझोरकर और कंधे दीवार से रगड़कर वह बूढ़े के पैरों में गिर पड़ा और रिरियाने लगा: "माफ़ कर दो, बापू, मुझ से गलती हो गयी!" बूढ़े ने उसे डांटा-डपटा और माफ़ कर दिया।

बूढ़े येर्मोलाई को अकुलीना बड़ी अच्छी लगी। उसने देखा कि लड़की कुशाग्रबुद्धि है और मन ही मन सोचा कि अपने धर्मपुत्र का ब्याह ऐसी बुद्धिमता से कर देना ही सबसे अच्छा रहेगा, क्योंकि तब बाप के मरने पर बेटा वह सारी दौलत बहा नहीं देगा, जो बाप ने इतनी मुश्किल से सिर पर पाप चढ़ाकर कमायी है।

तो, बस अब ज्यादा लंबी कहानी क्या कहें। तीन दिन बाद सारे गांव ने आर्त्योम और अकुलीना के ब्याह की दावत उड़ायी। सभी जानते थे कि बूढ़ा येर्मोलाई दुष्ट टोनहाया है, लेकिन उसकी घर की बनी बीयर और शहद का पेय पीने का न्योता प्राय: सभी ने स्वीकार किया। इसके कुछ ही समय बाद येर्मोलाई ने अपना मकान और खेत बेच दिया और बेटे-बहू को लेकर किसी दूर-दराज़ के गांव में चला गया, जहा पहले किसी ने उसका नाम तक न सुना था। कहते हैं कि बाकी ज़िंदगी उसने ईमानदारी से गुज़ारी, लोगों का भला और गरीबों की मदद करता रहा। चैन से मरा और भलमानसों की तरह दफ़नाया गया। यह भी कहते हैं कि अपनी होशियार और समझदार बीवी के साथ कुछ साल रहकर आर्त्योम भी थोड़ी अक्ल सीख गया और पक्की उमर में तो गांव के पंचों में चुना गया था। पंच का काम वह कैसे निभाता था यह तो मुझे नहीं पता, पर हां, सारे गांववाले एक स्वर में इतना ज़रूर कहते थे कि अकुलीना जैसी सूझ-बूझ उन्होंने किसी दूसरी औरत में नहीं देखी है।

उपसंहार

बहुत से लोग यह मानते हैं कि हर किस्से-कहानी में कोई न कोई सीख ज़रूर होनी चाहिए, कि हर कथा का कोई नैतिक उद्देश्य होना चाहिए और जो कुछ भी छपता है वह बुराइयों से समाज की रक्षा के

कीयेव की चुड़ैलें

कीयेव रेजिमेंट का नौजवान कज़्ज़ाक फ़्योदोर ब्लीस्काव्का उक्राइना के उत्पीड़क पोलों के खिलाफ़ अभियान* के बाद घर लौटा। उक्राइनी फ़ौज के वीर सरदार तरास त्र्यासीला** ने मशहूर तरास रात को घमंडी कोनेत्स्पोल्स्की को धूल चटाकर पोलों को उक्राइना के बहुत से स्थानों से खदेड़ दिया और इन इलाकों से पोलों के कपटी चाकरों विश्वासघाती यहूदियों का भी सफ़ाया कर दिया।

...जो लोग जानते थे कि फ़्योदोर ब्लीस्काव्का एक बहादुर कज़्ज़ाक है वे यह समझ गये थे कि वह खाली हाथ नहीं लौटा है। वाकई, भठियारिन या बंदूरावादक को पैसे देने के लिए जब वह जेब में हाथ डालता तो मुट्ठी भर दुकात निकालता और पोलैंड के ज़्लोती तो वह लुटाता ही रहता था। उसका सोना देखकर दुकानदारों की आंखें चमकने लगतीं और कज़्ज़ाक को देखकर जवान लड़कियों के गाल लाल हो उठते। इसकी वजह भी थी: फ़्योदोर को लोग बांका कज़्ज़ाक अकारण ही नहीं कहते थे। उसका गठीला बदन, ऊंचा कद, उसकी ठवन और काली मूंछें, जिन पर वह बड़े गर्व से ताव देता था, उसकी जवानी, खूबसूरती और बांकापन किसी को भी पागल बना सकते थे। सो, इसमें आश्चर्य की कोई बात न थी कि कीयेव की जवान लड़कियां होंठों पर मीठी मुस्कान लिये प्यार भरी नज़रों से उसे देखती थीं और

---

* चर्चा पोलैंड के उत्पीड़न के खिलाफ़ उक्राइनी जनता के संघर्ष की है जो १६वीं और १७वीं सदियों में प्राय: दो सौ साल तक चला।

** तरास त्र्यासीला पोलैंड के उत्पीड़न के खिलाफ़ १६३० में हुए किसान विद्रोह का नेता था। १५ मई १६३० को पेरेस्लाव नगर के पास हुई लड़ाई में विद्रोहियों ने पोलैंड के सेनापति स्तानीस्लाव कोनेत्स्पोल्स्की (१५६१–१६४६) की सेना के छक्के छुड़ाये।

जब वह किसी से बात छेड़ता या भोली-भाली शरारत करता तो वह गद्गद् हो उठती।

कीयेव के पेचेर्स्क और पोदोल बाजारों में सभी खोमचेवालियां उसे जानती थीं और जब कभी वह बाजार में आ निकलता तो वे बड़े संतोष से एक दूसरी को आंखों-आंखों में इशारा करतीं। वे तो वैसे ही उसके आने की प्रतीक्षा में रहती थीं जैसे चौथ मास की प्रतीक्षा में, क्योंकि फ्योदोर अपना कज्जाक बांकापन दिखाते हुए उनकी मिठाइयों या फलों की टोकरियां उलट देता, बड़े-बड़े तरबूज-खरबूजे चारों ओर लुढ़का देता और फिर माल के तिगुने पैसे देता।

"हाय री, हमारा बांका इत्ते दिनों से नजर नहीं आ रहा!" एक दिन एक खोमचेवाली दूसरी से कह रही थी। "उसके बिना तो दुकानदारी भी दुकानदारी नहीं। सारा-सारा दिन बैठी रहो तो भी उससे दसवां हिस्सा वसूल नहीं होता, जित्ता उससे पलक झपकते मिल जाता है।"

"अरी, उसे अब बाजार की क्या खबर!" पड़ोसन का जवाब था। "देखती न है, वह कत्रूसिया के गिर्द मंडरा रहा है। जब से उससे आंखें चार हुई हैं उसने बाजार ही आना छोड़ दिया है।"

"अरी, तो कत्रूसिया क्या उसके मेल की न है?" तीसरी भी बातचीत में शामिल हुई। "लौंडिया एकदम ताजी कली है, हाय, देखते ही कोई कह दे क्या हसीना है! लंबे-लंबे काले स्याह बाल, काजल सी भौंह और काली आंख, बदन भी क्या गठीला है। उसके होंठों की एक मुस्कान पे सब लौंडे जान देते हैं। मां भी उसकी कोई गरीबन न है। कंजूस जरूर है खूसट बुढ़िया! पर पैसों से तो संदूक अटे पड़े है।"

"वो तो सब ठीक है," पहलीवाली ने बात का सूत्र पकड़ा, "पर वो बुढ़िया बदनाम है। लोग कहते हैं – मेहर रख भगवान – कि वह चुड़ैल है।"

"अरी, ये बातें तो मैंने भी सुनी हैं," दूसरी बोली। "हमारे पड़ोसी ने उसे चिमनी से निकलकर कहीं उड़ते देखा था – चुड़ैलों के दंगल में जा रही होगी, और क्या जायेगी।"

"अरी, उसकी कोई एक बात है क्या," पहली ने उसे टोकते हुए कहा। "वह जो प्योत्र जुबेको है न, उसकी गाय इसने मरवा दी

और युरचेव्स्की के घर जो कुत्ते थे उन्हें ज़हर खिला दिया – एक कुत्ते के पंजे में छह अंगुलियां थीं न, चुड़ैलों को पहचानता था। और उस निचीपोर से सब्ज़ियों की क्यारियों पे झगड़ा हुआ तो उसका जो हाल किया बस पूछो मत, तौबा-तौबा!"

"क्या किया री, क्या?" दो दूसरी खोमचेवालियों का भी कौतूहल जागा।

"ठीक है, जो होगा सो होगा। बात चल पड़ी है तो बताये देती हूं। अरी, बुढ़िया ने निचीपोर की लौंडिया पर ऐसा जादू मारा है कि बेचारी किसी काम की नहीं रही। अब कभी तो लौंडिया बिल्ली की तरह म्याऊं-म्याऊं करे है, दीवार नोचे है, कभी कुतिया की तरह भौंके और दांत दिखावे है, कभी काले कौवे सी कांव-कांव करे है तो कभी एक टांग पे फुदकती फिरे है।..."

"अरी, यह बकबक बंद भी करोगी कि ना!" एक सड़ियल सी बुड्ढी खोमचेवाली ने उन्हें टोका। वह उन्हें यों घूर रही थी जैसे राह चलतों पर गुर्राता कुत्ता घूरता है। "अपनी बातें किया करो, दूसरों की नहीं," बुड्ढी गुस्से से कह रही थी। "तुम्हारे हिसाब से तो बड़ी उम्र की जिस औरत के पास दो पैसे न हुए कि वह चुड़ैल हो गयी। अरी, मुइयो, सिर घुमाके अपनी भी दुम देखोगी कि न?"

उसके इन अंतिम शब्दों पर सभी खोमचेवालियों के मुंह से अनायास ही "हाय" निकली, पर तुरंत ही उनके मुंह सिल गये। इस बुड्ढी से झगड़ा करने की हिम्मत उनमें नहीं थी, क्योंकि इसके बारे में भी पीठ पीछे लोग कहते थे कि वह भी कीयेव की चुड़ैलों की जमात में शामिल है।

बहरहाल, कुछ भले लोगों ने फ़्योदोर को चेताया कि वह कत्रूसिया से शादी न करे, लेकिन जवान कज़्ज़ाक उनके मुंह पर हंस दिया। कत्रूसिया का पीछा छोड़ने का उसका ज़रा भी इरादा न था। दूसरों की बातों पर वह यकीन भी क्योंकर करता? उसके दिल की रानी ऐसी भोली नज़रों से, ऐसे साफ़ दिल से देखती थी, इतने प्यार से मुस्कराती थी कि सारा का सारा कीयेव ही क्यों न चौक में जमा होकर कसम खाता कि उसकी मां चुड़ैल है तो भी वह यकीन न करता।

युवा गृहिणी को लाकर फ़्योदोर ने घर बसाया। उसकी सास अपने छोटे-से घर में रही। जमाई ने उसे उनके साथ आकर रहने को कहा

लेकिन साम ने यह कहकर इकार कर दिया कि उसकी पुरानी आदतो के कारण नौजवानो के साथ उसकी निभेगी नही। फ्योदोर अपनी जवान बहू को देखकर फूला न समाता और उसकी तारीफें करता न अघाता। पत्नी का उत्कट प्रेम, उसके मदहोश करते चुबन और आलिंगन, पति को हर बात से प्रसन्न रखने की उसकी तत्परता और गृहकार्य मे उसकी प्रवीणता – यह सब कज्जाक के मन को भाता था। बस एक बात उसे विचित्र लगती थी – दापत्य प्रेम के मधुरतम क्षणो मे वह एकाएक उदास हो जाती, ठडी आहे भरती और उसकी आखे भी डबडबा आती। कभी-कभी पत्नी की बडी-बडी काली आखे उसको ऐसी नजरो से देखती कि उसकी रगो मे खून जम जाता। कृष्ण पक्ष के अंतिम दिनो मे ऐसा खास तौर पर होता था। उन दिनो कत्रूमिया को कुछ भी न भाता न पति का लाड-दुलार, न उसके मित्रो की आदर-स्नेह भरी बाते, न गृहस्थी का काम-काज। लगता जैसे ईश्वर की यह दुनिया उसके लिए छोटी पड रही है, जैसे वह कही चली जाने को बेताब है, लेकिन साथ ही यह बेताबी उसके लिए घिनौनी है, उस पर मानो कोई भयकर दबाव है, कोई अदम्य शक्ति उसे खीच रही है। कभी-कभार ऐसा प्रतीत होता कि वह पति के सामने अपना कोई भेद खोलना चाहती है, लेकिन हर बार बोझिल रहस्य उसकी छाती मे ही दबा रह जाता, उसे सताता रहता – उसके फक पड गये चेहरे, अविराम आसुओ और थरथर कापते शरीर से ही उसके पति को पता चलता कि कही कुछ गडबड जरूर है इससे अधिक वह अपनी पत्नी से कुछ न जान पाता। कत्रूमिया अचानक अपना खोया सयम फिर से पा लेती, उसके चेहरे पर रौनक आ जाती, वह हसने और बच्चो जैसे खिलवाड करने लगती और पति पर पहले से भी अधिक अपना प्यार लुटाती। फिर वह पति को यकीन दिलाती कि उसे यह दौरा बचपन मे एक दुष्ट बुढिया की बुरी नजर लग जाने के कारण पडता है, कि दौरा ज्यादा देर नही चलता। फ्योदोर उसकी बात पर विश्वास करता था, क्योकि उसे अपनी पत्नी से प्रेम था और फिर उसने बुरी नजर के मारे लोगो को देखा भी था।

कृष्ण पक्ष के अतिम दिन से वह फिर से देखता कि रात घिरने के साथ-साथ उसकी पत्नी की बेचैनी बढती जाती है। प्रत्यक्षत उसे किसी चीज का डर लगने लगता था, पल-पल पर वह चौक उठती

और उसका चेहरा निरंतर अधिक पीला पड़ता जाता। वह इसका कारण जानना चाहता, लेकिन यह उसकी शक्ति से परे था: हर बार जब वह शाम से कत्रूसिया में उत्तेजना के, किसी गुप्त चिंता के लक्षण देखता, तब विस्तर पर लेटते ही वह अनबूझ गहरी नींद में खो जाता। पता नहीं उसने स्वयं अनुमान लगाया, या फिर भले लोगों ने उसे सुझाया, एक बार ऐसी ही रात को फ़्योदोर ने विस्तर पर लेटते समय तकिये तले हाथ फेरा और वहां किन्हीं जड़ी-बूटियों की छोटी सी पोटली पायी। उसे छूते ही उसे लगा कि उसका हाथ भारी होता जा रहा है और उसमें खून धीरे-धीरे जमता जा रहा है, मानो हाथ सो रहा हो। उस समय उसकी पत्नी घर के कामों में व्यस्त थी और उस पर नज़र नहीं रख रही थी। फ़्योदोर ने झट से खिड़की खोली और पोटली बाहर फेंक दी। अहाते में घर की रखवाली कर रहे कुत्ते ने सोचा कि उसके लिए हड्डी फेंकी गयी है। उसने उठकर अपना बदन झकझोरा और एक छलांग मारते ही पोटली तक पहुंच गया और उसे सूंघने लगा। लेकिन एक बार सूंघने से ही उसकी टांगें लड़खड़ा गयीं, वह गिर पड़ा और वहीं का वहीं गहरी नींद सो गया। "ओहो! तो इसी से मैं ऐसी नींद सोता था, मेरी बीवी रानी!" फ़्योदोर ने सोचा। उसके संदेह की कुछ हद तक पुष्टि हो गयी थी, लेकिन फिर भी उसने सोने का बहाना किया ताकि इस भयानक रहस्य को पूरी तरह जान ले और साथ ही पत्नी के मन में भी कोई शक पैदा न हो। वह इतनी ज़ोर-ज़ोर से खर्राटे भर रहा था जैसे कि तीन रात तक सोया न हो। कत्रूसिया ब्यालू की जूठन मुर्गियों को डालकर अंदर लौटी, पति के पास आकर उसकी छाती पर हाथ रखा, उसके चेहरे पर नज़र गड़ायी और फिर एक ठंडी आह भरकर अलावघर के पास चली गयी। फ़्योदोर ने पूरे ज़ोरों से खर्राटे भरते हुए अपनी आंखें आधी खोल लीं और देखने लगा कि पत्नी क्या करती है। उसने देखा कि कत्रूसिया ने आग जलायी, हांड़ी में पानी भरकर हांड़ी आग पर चढ़ायी और कुछ अजीबोगरीब चीज़ें पानी में डालने लगी, इसके साथ ही वह कुछ ऊटपटांग से लगनेवाले शब्द बोलती जा रही थी। फ़्योदोर का ध्यान क्षण प्रति क्षण अधिक तीव्र होता जा रहा था: उसके हृदय में भय, क्रोध और कौतूहल का संघर्ष हो रहा था। अंततः कौतूहल विजयी रहा। पहले की ही भांति

सोने का उपक्रम करते हुए वह देखता रहा कि आगे क्या होता है।

जब हाडी मे पानी भाग के माथ उफनने लगा तो उसके ऊपर मानो तूफान आया, फिर भारी वर्षा का शोर हुआ, फिर जैसे बादल गरजा और अतत लोहे पर चलती रेती जैमी तीखी आवाज ने हाडी मे से तीन बार कहा "उड, उड, उड!" तब कत्रूसिया ने जल्दी-जल्दी कोई उबटन मला और चिमनी मे उड गयी।

बेचारा कज्जाक इतनी बुरी तरह काप रहा था कि उमके दात जोरो से किटकिटा रहे थे। अब कोई सदेह नही बचा था · उसकी बीवी चुडैल है।

उमने खुद उसे तैयार होते, दगल मे जाते देखा था। अब वह क्या करे? उस क्षण मन मे मची भयकर उथल-पुथल मे वह कुछ सोच नही पा रहा था, कुछ करने का साहस भी नही जुटा पा रहा था। बेहतर यही होगा कि अगली बार तक रुका जाये, तब वह अच्छी तरह सोच-विचार लेगा, हर बात के लिए तैयार हो जायेगा और साहस भी बटोर लेगा। बस यही फैसला उसने किया। लेकिन उसकी नीद अब काफूर हो चुकी थी, अधेरे मे उसे डरावने भूत-प्रेत मडराते लग रहे थे। बडी देर तक वह करवटे बदलता रहा, फिर उठकर कमरे मे टहलने लगा, लेकिन सब व्यर्थ! नीद उसके पास फटकने का नाम ही नही ले रही थी, कमरे मे उसे घुटन लग रही थी। वह ताजी हवा मे निकल आया। शात, शीतल रात मे उसे कुछ ताजगी मिली। चाद अपनी मद-मद चादनी बिखेरता हुआ अपने नवजन्म तक पृथ्वी से विदा लेता प्रतीत होता था। उसकी टिमटिमाती धुधली रोशनी मे फ्योदोर ने सोते कुत्ते को देखा और उसके पास ही पडी जादुई पोटली भी। भारी उनीद से छुटकारा पाने और पत्नी से यह छिपाने के लिए कि वह उसका भयानक भेद जान गया है, फ्योदोर ने दो छिपटियो से पोटली उठा ली। कुत्ता तुरत ही उठ खडा हुआ और सिर झटककर अपने मालिक की टागो से सटने लगा। समय गवाये बिना नौजवान कज्जाक घर मे लौट आया, पोटली तकिये तले रखकर लेट गया और तुरत ही बेसुध होकर सो गया।

आख खुली तो उसने देखा कि कत्रूसिया उसके बगल मे लेटी हुई है। उसके चेहरे पर कल के उन्माद का कोई चिह्न तक शेष न था और न ही आखो मे वह वहशीपन, जिसके साथ वह गत को

और उसका चेहरा निरंतर अधिक पीला पड़ता जाता। वह इसका कारण जानना चाहता, लेकिन यह उसकी शक्ति से परे था: हर बार जब वह शाम से कत्रूसिया में उत्तेजना के, किसी गुप्त चिंता के लक्षण देखता, तब विस्तर पर लेटते ही वह अनबूझ गहरी नींद में खो जाता। पता नहीं उसने स्वयं अनुमान लगाया, या फिर भले लोगों ने उसे सुझाया, एक बार ऐसी ही रात को फ़्योदोर ने विस्तर पर लेटते समय तकिये तले हाथ फेरा और वहां किन्हीं जड़ी-बूटियों की छोटी सी पोटली पायी। उसे छूते ही उसे लगा कि उसका हाथ भारी होता जा रहा है और उसमें खून धीरे-धीरे जमता जा रहा है, मानो हाथ सो रहा हो। उस समय उसकी पत्नी घर के कामों में व्यस्त थी और उस पर नजर नहीं रख रही थी। फ़्योदोर ने झट से खिड़की खोली और पोटली बाहर फेंक दी। अहाते में घर की रखवाली कर रहे कुत्ते ने सोचा कि उसके लिए हड्डी फेंकी गयी है। उसने उठकर अपना वदन झकझोरा और एक छलांग मारते ही पोटली तक पहुंच गया और उसे सूंघने लगा। लेकिन एक बार सूंघने से ही उसकी टांगें लड़खड़ा गयीं, वह गिर पड़ा और वहीं का वहीं गहरी नींद सो गया। "ओहो! तो इसी से मैं ऐसी नींद सोता था, मेरी बीवी रानी!" फ़्योदोर ने सोचा। उसके संदेह की कुछ हद तक पुष्टि हो गयी थी, लेकिन फिर भी उसने सोने का वहाना किया ताकि इस भयानक रहस्य को पूरी तरह जान ले और साथ ही पत्नी के मन में भी कोई शक पैदा न हो। वह इतनी जोर-जोर से खर्राटे भर रहा था जैसे कि तीन रात तक सोया न हो। कत्रूसिया व्यालू की जूठन मुर्गियों को डालकर अंदर लौटी, पति के पास आकर उसकी छाती पर हाथ रखा, उसके चेहरे पर नज़र गड़ायी और फिर एक ठंडी आह भरकर अलावघर के पास चली गयी। फ़्योदोर ने पूरे ज़ोरों से खर्राटे भरते हुए अपनी आंखें आधी खोल लीं और देखने लगा कि पत्नी क्या करती है। उसने देखा कि कत्रूसिया ने आग जलायी, हांड़ी में पानी भरकर हांड़ी आग पर चढ़ायी और कुछ अजीबोगरीब चीज़ें पानी में डालने लगी, इसके साथ ही वह कुछ ऊटपटांग से लगनेवाले शब्द बोलती जा रही थी। फ़्योदोर का ध्यान क्षण प्रति क्षण अधिक तीव्र होता जा रहा था: उसके हृदय में भय, क्रोध और कौतूहल का संघर्ष हो रहा था। अंततः कौतूहल विजयी रहा। पहले की ही भांति

सोने का उपक्रम करते हुए वह देखता रहा कि आगे क्या होता है।

जब हाड़ी में पानी भाग के साथ उफनने लगा तो उसके ऊपर मानो तूफान आया, फिर भारी वर्षा का शोर हुआ, फिर जैसे बादल गरजा और अन्ततः लोहे पर चलती रेती जैसी तीखी आवाज ने हाड़ी में से तीन बार कहा "उड़, उड़, उड़!" तब कत्रूसिया ने जल्दी-जल्दी कोई उबटन मला और चिमनी में उड़ गयी।

बेचारा कज्जाक इतनी बुरी तरह काप रहा था कि उसके दात जोरो से किटकिटा रहे थे। अब कोई सदेह नही बचा था: उसकी बीवी चुड़ैल है।

उसने खुद उसे तैयार होने, दरान मे जाने देखा था। अब वह क्या करे? उस क्षण मन मे मची भयकर उथल-पुथल में वह कुछ सोच नही पा रहा था, कुछ करने का साहस भी नहीं जुटा पा रहा था। बेहतर यही होगा कि अगली बार तक रुका जाये, तब वह अच्छी तरह सोच-विचार लेगा, हर बात के लिए तैयार हो जायेगा और साहस भी बटोर लेगा। बस यही फैसला उसने किया। लेकिन उसकी नींद अब काफूर हो चुकी थी, अधेरे मे उसे डरावने भूत-प्रेत मडराते लग रहे थे। बड़ी देर तक वह करवटें बदलता रहा, फिर उठकर कमरे मे टहलने लगा, लेकिन सब व्यर्थ! नीद उसके पास फटकने का नाम ही नहीं ले रही थी, कमरे मे उसे घुटन लग रही थी। वह ताजी हवा में निकल आया। रात, शीतल रात मे उसे कुछ ताजगी मिली। चाद अपनी मंद-मद चादनी बिखेरता हुआ अपने नवजन्म तक पृथ्वी से विदा लेता प्रतीत होता था। उसकी टिमटिमाती धुधली रोशनी में फ्योदोर ने सोते कुत्ते को देखा और उसके पास ही पड़ी जादुई पोटली भी। भारी उनींद से छुटकारा पाने और पत्नी से यह छिपाने के लिए कि वह उसका भयानक भेद जान गया है, फ्योदोर ने दो छिपटियो से पोटली उठा ली। कुत्ता तुरन्त ही उठ खड़ा हुआ और सिर झटककर अपने मालिक की टागो से सटने लगा। समय गवाये बिना नौजवान कज्जाक घर में लौट आया, पोटली तकिये तले रखकर लेट गया और तुरन्त ही बेसुध होकर सो गया।

आख खुली तो उसने देखा कि कत्रूसिया उसके बगल मे लेटी हुई है। उसके चेहरे पर कल के उन्माद का कोई चिह्न तक शेष न था और न ही आखो मे वह वहशीपन जिसके साथ वह रात को

अपना झाड़-फूंक करती रही थी। उसकी नज़रों और मुस्कान में एक मादक शिथिलता, एक शांत आह्लाद व्याप्त था। पहले कभी भी उसने पति पर ऐसे रसीले चुंबनों की बौछार नहीं की थी, ऐसा लाड़ उससे नहीं किया था। संक्षेप में, वह कामिनी प्रेयसी थी, भोली चंचलता लिये निष्कपट नारी थी, न कि वैसी भयावह मायाविनी, जैसी रात में उसके पति ने देखी थी। और लगता था कि यह उसका दिखावा नहीं है, दिखावा हो ही नहीं सकता: वह तो प्रेम के लिए जीती है, मनमीत में ही उसके जीवन का सारा सुख है। कज़्ज़ाक के मन में तो यह शंका उठने लगी: क्या वास्तव में वह सब हुआ था, जो उसने रात देखा था? क्या यह कोई दुस्स्वप्न तो नहीं था? कहीं ऐसा तो नहीं कि किसी दुष्ट आत्मा ने उसे उसकी प्रिया से विमुख करने के लिए ये बीभत्स चित्र उसकी कल्पना में उभारे थे?

एक और महीना बीत गया। इन सभी दिनों में कत्रूसिया पहले जैसी ही कुशल गृहिणी, मधुर, हंसमुख कामिनी, प्यारी, पतिव्रता पत्नी थी। परंतु फ़्योदोर मन ही मन यह सोचता रहा था कि उसे क्या करना चाहिए और आखिर उसने सब तय कर लिया। चांद घटने लगा तो वह पहले से भी अधिक ग़ौर से पत्नी पर नज़र रखने लगा और उसने उसमें वही लक्षण पाये: वही आंसुओं का बहना, ठंडी आहें भरना, वही छिपी उदासी और हर बात से वितृष्णा, पति के लाड़-प्यार तक से और कभी-कभी वही अचल, वहशी दृष्टि। कृष्ण पक्ष की चौदहवीं शाम को ही फ़्योदोर ने कह दिया कि घर में घुटन हो रही है और खिड़की खोल दी। बिस्तर में लेटते ही तकिये तले हाथ डालकर उसने पोटली निकाली और उतनी ही तेज़ी से उसे बाहर फेंक दिया, जितनी तेज़ी से वह पाइप सुलगाने के लिए अंगीठी से निकाला शोला फेंकता था। यह सब उसने पलक झपकते ही कर डाला, सो कत्रूसिया कुछ भी न देख पायी। अपनी सफलता पर प्रसन्न कज़्ज़ाक ने सोने का बहाना किया और पहली बार की ही तरह खर्राटे भरने लगा। पत्नी वैसे ही बिस्तर के पास आयी, पति के चेहरे को घूरकर देखा, उसकी छाती पर हाथ रखा, नीचे झुककर पति को चूमा और उसने अपने गाल पर टपका गरम आंसू महसूस किया। फिर ठंडी आह भरकर और पतली कमीज़ की आस्तीन से आंखें पोंछते हुए अपने अधर्मी काम में लग गयी। कज़्ज़ाक का ध्यान इस बार पहले

से भी दुगना तीव्र था, क्योकि उसने पक्का सकल्प कर लिया था और अपना सारा साहस सजो लिया था। वह गौर से देख रहा था कि उसकी पत्नी कहा से क्या-क्या चीज ले रही है, अजीबोगरीब शब्दो को गौर से सुनता हुआ उन्हे रटता जा रहा था। अब उसके लिए कुछ भी डरावना नही था न ही पत्नी का वहशियत भरा चेहरा और दहकती आखे, न तूफान की दहाड, न बादलो का गर्जन और न ही हाडी से निकलता कर्णकटु स्वर। नौजवान चुडैल चिमनी मे से उडी ही थी कि उसका पति बिस्तर से उठ खडा हुआ, बुझती आग मे उसने लकडिया डाली, हाडी मे पानी भरा और आग पर चढा दिया। तहखाने मे बेच तले पत्थरो के बीच छिपायी छोटी सी पिटारी उसने ढूढ निकाली। उसे खोलते ही वह आतक और जुगुप्सा से स्तब्ध रह गया। पिटारी मे मानव अस्थिया और बाल थे, सुखाये हुए चमगादड और मेढक, साप की केचुली और भेडिये के दात थे, शैतान की उगलिया*, एस्प की लकडी के कोयले, काली बिल्ली की हड्डिया, भाति-भाति की विचित्र सीपिया, जडी-बूटिया तथा और भी जाने क्या-क्या था। अपनी घिन को दबाकर फ्योदोर ने पत्नी के मुह से सुने शब्द दोहराते हुए झाड-फूक की मुट्ठी भर चीजे हाडी मे डाल दी। जब पानी खौलने लगा तो उसे लगा कि उसका चेहरा टेढा होने और ऐठने लगा है, आखे भेगी हो रही है, बाल और रोगटे खडे हो गये है, छाती मे जैसे हथौडा चल रहा है और सारे जोडो मे हड्डिया चटख रही है। और फिर उस पर कोई उन्माद छा गया, उसने अपने मे कल्पनातीत साहस अनुभव किया, जो नशे की चरम दशा जैसा था। उसकी आखो के आगे तारे नाचने लगे, रोशनिया कौधने और विचित्र, कुरूप प्रेत मडराने लगे। उसके सिर पर तूफान टूटा पड रहा था, बादल गरज रहे थे, भारी वर्षा हो रही थी, लेकिन वह अब किसी चीज से नही डरता था। और जब उसने हाडी से तीखी, घरघराती आवाज को कहते सुना "उड-उड-उड!", तो आवेश मे आपे से बाहर होते हुए उसने झटपट उबटन की डिबिया उठायी, अपनी बाहो, टागो, मुह और छाती पर उबटन मला और पलाश मे ही किसी अदृश्य शक्ति ने उसे पकडकर चिमनी

---

*शैतान की उगली – उक्राइना मे बहुधा पाया जानेवाला एक खनिज जो शकु के आकार का और धुधले पीले रग का होता है। – ले०

में उछाल दिया। इस द्रुत गति में उसकी ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की सांस नीचे रह गयी, वह वेसुध हो गया। जव उसे होश आया तो उसने देखा कि वह कीयेव के वाहर बूची पहाड़ी पर खुले आसमान तले खड़ा है।...

हमारे वहादुर कज़्ज़ाक ने वहां जो देखा वह शायद उसके अलावा और किसी भले ईसाई ने न देखा होगा; ईश्वर न करे किसी को देखना भी पड़े! उसे पल में भय और पल में हंसी के दौरे आने लगे: बूची पहाड़ी पर जमा यह दंगल इतना वीभत्स और कुरूप था! सौभाग्यवश फ़्योदोर के पास ही एस्प की लकड़ियों का एक विशाल ढेर था, वह उसके पीछे दुवक गया और वहां से ऐसे झांकने लगा, जैसे कोई चूहा अपने विल में से लोगों और बिल्लियों से भरे कमरे में झांकता है।

पहाड़ी की चोटी पर एक सपाट जगह थी—कोयले सी काली और केशहीन बूढ़े के सिर जैसी बूची। इसीलिए इस पहाड़ी का नाम बूची पहाड़ी पड़ा था। मैदान के वीचोंवीच सात सीढ़ियों का मंच बना हुआ था और उस पर काला कपड़ा विछा हुआ था। मंच पर विराजमान था एक दैत्याकार रीछ—वंदर के दो सिर, वकरे के सींग, सांप की पूंछ, सारे वदन पर साही के कांटे, कंकाल की वांहें और उंगलियों पर बिल्लियों के नाखून—ऐसा था उसका रूप। उसके इर्द-गिर्द मंच से थोड़ी दूर चुड़ैलों, टोनहायों, वेम्पायरों, भड़मानसों, वनभुतनों, जलभुतनों, घरभुतनों तथा अन्य अजीबोगरीव जीवों का पूरा मजमा लगा हुआ था। इधर एक भीमकाय यहूदी नाव जितने वड़े वाजे के पास पसरा हुआ था, वाजे के तार रस्सों से कम मोटे नहीं थे। यहूदी इन तारों को पांचे से धुनते हुए अपनी नुकीला दाढ़ी हिला और अपने घिनौने चेहरे से और भी घिनौनी शक्लें वना रहा था। उधर छोटे-छोटे शैतानों का पूरा झुंड का झुंड था—सभी एक से एक वढ़कर वदसूरत और वेढव। सभी देगों, पतीलों, वाल्टियों, लोहे के थालों को दवादव पीट रहे थे और गला फाड़ रहे थे। यहां सूखी गुच्छियों जैसी झुर्रियों से भरी बूढ़ी चुड़ैलें 'सारस' नाच नाच रही थीं, फुदक-फुदक कर हड़ियल एड़ी से एड़ी यों वजा रही थीं कि उनकी हड्डियों की कड़कड़ चारों ओर गूंज रही थी, और ऐसी भद्दी आवाज़ में गा रही थीं कि कान नहीं दिया जाता था। थोड़ी आगे वांस जैसे लंवे वनभुतने वौने घरभुतनों के साथ नाच रहे थे। कहीं झाड़ुओं, वेलचों और चिमटों पर सवार

दतहीन जर्जर चुडैले बडी शान मे सफेद बालोंवाले कुरूप टोनहायो के साथ 'पोलोनेज' नाच रही थी – इन टोनहायो मे मे किसी की कमर बुढापे से दोहरी थी, किसी की नाक होठो से नीचे तक लटककर ठोड़ी से टकरा रही थी, किसी के मुह के दोनो सिरो से दो खीसें वाहर निकली हुई थी, किमी के माथे पर इतनी भुर्रियां थी, जितनी आधी तूफान मे द्नीप्र नदी मे लहरे उठती है। शादी-ब्याह की दावत मे नशे मे धुत्त लुगाइयो की तरह ठहाके और चीखे मारती जवान चुडैले जटाधारी जलभुतनो के साथ, जिनके थोवडो पर दो उगल मोटी काई की परत थी, 'घुग्घी' और 'बर्फीली आधी' नाच नाच रही थी। चुलबुली जलपरिया विकराल वेम्पायरो की बाहो मे झूल रही थी। यह चिल्ल-पों, शोरगुल, घमाघम और नारकीय वाद्यो की ची-ची, पों-पो – यह सब वहशी और उन्मादपूर्ण था, परतु साथ ही यह भी स्पष्ट था कि दगल रगरलिया मना रहा है।

अपनी घात मे से फ्योदोर यह सब देख रहा था और उसके रोगटे खडे हो रहे थे। थोडी ही दूरी पर उसने अपनी सास को द्नीप्र पार के एक मधुमक्खी पालनेवाले के साथ देखा, जो सदा से बदनाम रहा था, पोदोल बाजार मे छल्लेनुमा रोटिया बेचनेवाली ओदार्का नब्बे बरस के फेरीवाले आर्तुख के साथ झूम रही थी, फेरीवाले को सब बडा धर्मात्मा समझते थे – इतना कपटी और धूर्त्त था वह, कीयेव की गलियो मे भीख मागनेवाली अपाहिज भिखारिन मोत्रिया भी, जिसे लोग "पहुची हुई" समझते और द्जीगा यानी भभीरी कहते थे, यहा अमीर मक्खीचूस जमीदार क्रूप्का की बाहो मे बाहे डाले थी, इस मक्खीचूस को थोडे ही दिन पहले कज्जाको ने कीयेव मे खदेड दिया था, उसके अपने वतन के पोल लोग भी उससे नफरत करते थे, क्योकि वह घूसखोर था। यहा कितने ही ऐसे लोग थे, जिन्हे फ्योदोर जानता था, यही नही, बहुत से तो ऐसे भी थे, जिनके बारे मे अगर उसका सगा बाप भी कसम खाकर कहता कि वे शैतान के चाकर है, तो भी वह यकीन न करता। बूढी चुडैलो और टोनहायो का यह झुड इतने जोर-शोर मे नाच रहा था कि चारो ओर धूल के बादल उड रहे थे, जाबाज से जाबाज कज्जाक और तेज-तर्रार छोकरिया भी उनका मुकाबला क्या कर पाते। जरा एक ओर को फ्योदोर ने अपनी घरवाली को भी देखा। कत्रूमिया खूब चौडे कधो और लबे सीगोवाले वनभुतने के साथ उत्राइनी

'कज़ाचोक' नाच नाच रही थी; वनभुतना खीसें निपोरता हुआ उसे आंख मार रहा था और वह जवाव में खिलखिला रही थी और भंभीरी की तरह वल खा रही थी। गुस्से और डाह से फ़्योदोर का जी हुआ कि उस पर झपटे और उन दोनों की मरम्मत कर दे; लेकिन फिर कुछ सोचकर उसने अपने को कावू में रखा और अच्छा ही किया। वह अकेला कहां शैतानों के इस दंगल का मुकावला कर सकता था, वे तो सबके सब उस पर टूट पड़ते और फिर उसका काम तमाम हो जाता।

अचानक प्रचंड तूफ़ान की गरज की तरह मंच पर बैठे रीछ की चिंघाड़ गूंजी और सारे वाजों की चीं-चीं, पों-पों, मदमस्त भीड़ के ठहाके और कर्कश आवाज़ें—सभी कुछ उसमें डूव गया। सन्नाटा छा गया: नाचनेवालों में जिनकी एक टांग ऊपर उठी हुई थी, वे ज्यों के त्यों एक टांग पर ही खड़े रह गये, जो ऊपर उछले थे वे हवा में लटके रह गये, खुले मुंह वंद न हुए, नाच में ऊपर झटके हाथ और ऊपर को उचके कंधे और सिर नीचे न आये; यहूदी के वाजे के तारों पर उसका पांचा और छोटे शैतानों के वेलों पर उनके गज़ जहां के तहां थम गये। काले रीछ ने अपना हड़ियल हाथ उठाया और सब एक साथ गाने लगे:

अरे, छलांगें ऊंची
मैगपाई लगाती,
अरे, झुक-झुक जाता
कौवा काला,—

सव एकसाथ ऊपर उछले और फिर जमीन पर गिर पड़े—सबके सिर उस स्थान की ओर थे, जहां रीछ वैठा था। "सत्यानास जाये तुम्हारा, शैतान की औलादो," फ़्योदोर मन ही मन बुदवुदाया। "ईसाइयों की रस्मों को कलुपित करते हैं और भले लोगों का शादी-व्याह का गीत अपने दंगल में इस वीभत्स पिशाच के सामने गाकर उनका मखौल उड़ाते हैं! नरक की आग में जलो तुम सव, और मेरी घरवाली भी तुम्हारे साथ; नरक के जलते लुआठे तुम्हारे गलों में ठूंसे जायें, तव तुम ऐसे गला फाड़ना भूल जाओगे और दूसरा राग अलापोगे, शैतान की औलादो!"

काला रीछ कुछ देर तक चारों ओर हवा सूंघता रहा और फिर वादल की तरह गरजा: "यहां कोई पराया है!" पल भर में ही खल-

बली मच गयी सभी दुष्ट आत्माए, चुड़ैले, टोनहाये, वेम्पायर, जलपरिया – सब के सब ढूढने लगे, उनकी पाशविक आखो मे खून उतर आया था, वे गुस्से से इतने पागल हो गये थे कि उनके मुह मे झाग निकल रहा था। और देखो कत्रूसिया को – वह ढूढनेवालो मे सब से आगे थी। फ्योदोर का कलेजा डूब गया, हाथ-पांव सुन्न हो गये। "बस, अब मेरा अत आ गया," कज्जाक सोच रहा था। लकडियो के ढेर के पीछे वह डर से अधमरा होकर जमीन पर लेट गया और कनखियो मे देखने लगा। अचानक देखता क्या है कि कत्रूसिया सबसे पहले वहा आ पहुची, उसने ढेर के पीछे झाका, दहकती नजरो मे पति को घूरा और दात पीसे। लेकिन उसी क्षण उसने अपना चोगा उतारकर फ्योदोर पर डाला, उसके तले एक बेलचा घुसेडा, उगली मे हवा में कीयेव की ओर एक रेखा बनायी – और इससे पहले कि फ्योदोर होश सभालता वह अपने घर मे बिस्तर पर लेटा हुआ था।

जब उसका चित्त कुछ शात हुआ तो वह बिस्तर पर उठ बैठा। उसकी दशा उस व्यक्ति जैसी थी जो तेज बुखार मे भयावह दुस्वप्न देखता रहा हो और अब मुश्किल मे उसका बुखार उतरना शुरु हुआ हो। परतु शीघ्र ही उसके विचार सही दिशा मे बढने लगे वह बीती रात का अपना आतक, वह वीभत्स और हास्यास्पद दगल याद करने लगा, अपनी बीवी को उसने याद किया – कैसे वह उस पर अपना प्यार लुटाती थी, कैसे उसका और घर-गृहस्थी का ध्यान रखती थी, कैसी उसमे बालसुलभ चचलता थी। "यह सब ढोंग था!" वह सोच रहा था। "शैतान ही उसे यह सब सिखाता था, ताकि वह मुझे अच्छी तरह धोखा दे सके।" कभी वह अपनी पत्नी को झाड-फूक करते देखता, कभी फिर से वह दहकती नजरो से उसे घूरती और दात पीसती, जैसा कि बूची पहाडी पर हुआ था। सोच मे डूबे फ्योदोर ने यह देखा ही नही कि पत्नी उसके पास खडी है। उसकी ओर ध्यान जाते ही फ्योदोर यो चौक उठा, मानो उसका पाव साप पर पड गया हो। कत्रूसिया का चेहरा एकदम सफेद और निढाल था, उसके होठ बेजान थे और आखे अनवरत बहते आसुओ से लाल पड गयी थी।

"फ्योदोर," उदास स्वर मे उसने कहा। "तुम क्यो चोरी-चोरी यह देखते रहे कि मै क्या करती हू? क्यो मुझसे पूछे बिना बूची पहाडी पर चले गये? क्यो तुमने अपनी पत्नी पर भरोसा नही किया?

ईश्वर ही तुम्हें माफ़ करे। तुमने हमारा सुख अपने पैरों तले रौंद डाला है।"

"दफ़ा हो जा मेरी नजरों से नागिन, दुष्ट, अधर्मी चुड़ैल!" फ़्योदोर ने क्रोध और वितृष्णा से भरकर जवाब दिया। "तू फिर अपनी शैतानी चापलूसी से मुझे उल्लू बनाना चाहती है? नहीं, इस भरोसे मत रहना!"

"सुनो, फ़्योदोर," उसे अपनी बांहों में भरकर अपना सिर उसकी छाती से लगाकर और उसकी आंखों में आंखें डालकर कत्रूसिया बोली। "सुनो भी! मेरा कोई कसूर नहीं है, सारा कसूर मेरी मां का है: वही मेरी मर्जी के खिलाफ़ मुझे जबर-दस्ती दंगल में ले गयी थी, जबरदस्ती मुझे चुड़ैल बना दिया और मुझे एक भीषण शपथ दिलवाई... मैं तब चौदह साल की ही थी। तब मैं मां के डर से ही मन मारकर दंगल में जाती थी: चुड़ैलें और उनकी घिनौनी रस्में मेरे लिए कलेजे में घोंपे खंजर जैसी थीं, दंगल का ख्याल आते ही मेरा जी मिचलाने लगता था। तुम ही सोचो जब तुम मेरे प्राण प्यारे, परलोक के मेरे राखे, मेरे पति बन गये तो ये दंगल मेरे लिए कैसी यातना थे।... कई बार मैंने दंगल से मुक्ति पाने, वहां न जाने की सोची, लेकिन फिर जब दंगल की रात पास आने लगती, जितना अधिक मैं उससे बचने की सोचती, उतनी ही मेरे दिल में ऐसी हुड़क उठने लगती कि मैं तुम्हें बता नहीं सकती। तुम जानते ही हो तब मेरा क्या हाल होता था।... दुश्मनों का भी ऐसा हाल न हो! मैं इस हुड़क पर काबू पाने की पूरी कोशिश करती, पूजा-प्रार्थना भी करती, लेकिन कोई बात न बनती। दिन-रात कोई मेरे कान में दंगल-दंगल की रट लगाये रहता, मेरे दिमाग में बस यही विचार घूमता रहता कि मुझे वहां जाना है। और जब वह दिन आता तो कोई अदृश्य शक्ति मेरी इच्छा के विपरीत मुझे वहां खींच ले जाती। जब मैं बूची पहाड़ी पर पहुंच जाती तो मुझ पर जैसे पागलपन सवार हो जाता: मैं चुड़ैलों, टोनहायों और शैतानों की जमात में जा कूदती, मुझे कुछ सुध-बुध न रहती कि मैं क्या कर रही हूं और दूसरे जो करते वह सब करे बिना न रह सकती।... मैं तो पवित्र सप्ताह* के आने की बाट ऐसे जोह

---

* ईस्टर से पहले अंतिम सप्ताह पवित्र सप्ताह कहलाता है।

रही थी, जैसे ईसा के धरती पर उतरने की. तब मै जाकर मठ के सतो के पावो मे गिर पडती, उनसे कहती कि मुझे आखिरी तीन दिनो के लिए गुफा* मे बद कर दे, ईस्टर की सुबह की प्रार्थना मे ही छोडे, अपनी प्रार्थनाओ से मुझे इस शैतानी मोह से छुटकारा दिला दे।... लेकिन अब इसके लिए बहुत देर हो चुकी है। मेरे प्राण प्यारे, तुम्ही ने अपना भी नास कर लिया है और मेरा भी, मेरे लिए स्वर्ग के द्वार सदा-सदा के लिए बद करवा दिये है। "

"तो, जाओ, अपने सगो के साथ जाकर रहो – बनभुतनो और जलपरियो के साथ। जहा ईसाई आत्माए खुशिया पाती हैं वहा का रास्ता तुम्हारे लिए बद है तो जाओ अपने रास्ते! दफा हो जाओ यहा से! छोड़ दो मुझे। ."

"मैं तुम्हे छोड नही सकती," कत्रूसिया ने उसकी बात काटी और उसे अपनी बाहो मे पहले से भी अधिक कसकर भीच लिया, जैसे उसी मे सिमट गयी हो। "मैंने तुम्हे बताया है कि मैंने एक भीषण शपथ दे रखी है। शपथ यह है कि हमारा कोई भी सगा-सबधी पति हो या भाई या पिता – चाहे कोई भी हमारी रस्मे देख ले तो हमे . उफ, मुझसे कहे नही बनता तो हमे उसके खून की आखिरी बूद तक चूस लेनी है। "

"तो फिर पी लो मेरा खून! इस दुनिया मे जीना दूभर है! इस जिदगी मे मेरे लिए रखा ही क्या है? एक ही तो थी जो मेरे मन भायी, मेरी पत्नी बनी, जी जान से बढकर, दुनिया की हर खुशी से बढकर मै उसे चाहता था, उसी ने मुझे धोखा दिया, मुझे शैतानी जमात मे ही ले चली थी। कोई खुशी नही बची अब इस दुनिया मे मेरे लिए। लो, पी लो, चूस लो मेरा खून!"

"मैं भी तुम्हारे बिना न जिऊगी! तुम्हारी आत्मा यह देखेगी। मेरा कलेजा फटा जा रहा, किस बदकिस्मती ने हमे इस लोक मे भी और उस लोक मे भी जुदा कर दिया है। "

कत्रूसिया फूट-फूटकर रोने लगी और पति के पावो मे गिर पडी।

"बस मेरी एक बिनती है," उसने कहा। "बस एक बार प्यार

---

* आशय कीयेव नगर के ११वीं शती मे स्थापित प्राचीनतम रूसी मठ की गुफाओ से है।

से मुझे देखो, अपना सलोना मुखड़ा मुझे जी भरके देख लेने दो, आखिरी वार मुझे चूम लो और छाती से लगा लो, वैसे ही जैसे प्यार के दिनों में लगाते थे।"

भला फ़्योदोर पत्नी की अश्रुपूर्ण चिरौरी से द्रवित हो गया। उसने प्यार से उसे देखा, उसे अपनी वांहों में भरा, उनके होंठ एक लंबे, मधुर चुंवन में मिल गये।... उसी क्षण कत्रूसिया ने अपने हाथ से उसका धड़कता दिल टटोला।... सहसा एक तेज चिनगारी फ़्योदोर के हृदय में विंध गयी; उसे पीड़ा और साथ ही सुखद शिथिलता अनुभव हुई। कत्रूसिया ने उसके दिल पर झुककर अपने होंठ उससे सटा दिये। फ़्योदोर एक अद्भुत विश्राम की दशा में समाता जा रहा था तभी पत्नी ने उसे सहलाते हुए पूछा: "अच्छी लगती है ऐसी मीठी नींद?"

"हां, वहुत अच्छी!" उसने प्रायः अश्रव्य स्वर में उत्तर दिया और चिरनिद्रा में सो गया।

कज़्ज़ाक के साथियों ने पूरे सम्मान से उसे दफ़नाया। उसके अंतिम संस्कार में न उसकी पत्नी और न ही सास को किसी ने देखा। लेकिन अगली रात को कीयेववासी एक आग को देखने दौड़े आये: फ़्योदोर ब्लीस्काव्का का मकान जलकर राख हो गया। ऐन उसी वक्त वूची पहाड़ी पर भी आग लगी दीख रही थी। अगले दिन जिन हिम्मती लोगों ने उस जगह को पास से देखने का साहस किया, उनका कहना था कि वहां एस्प के लट्ठों का विशाल ढेर अव नहीं था। उसके स्थान पर वस राख की ढेरी वची रह गयी थी और चारों ओर गंधक की दुर्गंध छोड़ता धुआं फैल रहा था। यह अफ़वाह फैली कि चुड़ैलों ने इस ढेर पर अपनी जवान वहन कत्रूसिया को जला डाला था, क्योंकि वह दंगल छोड़ रही थी और गिरजे में पश्चाताप करके मठवासिनी वनना चाहती थी; कि उसकी मां ने ही सवसे पहले लकड़ियों में आग लगायी थी। जो भी हो, उस दिन के वाद से कत्रूसिया और उसकी मां को किसी ने कीयेव में नहीं देखा। मां के वारे में लोगों का कहना था कि वह मादा भेड़िया वनकर द्नीप्र के पार घने जंगल में घूम रही है।

अव वूची पहाड़ी एक रेतीला टीला ही है, उसकी ढलान के निचले हिस्से पर झाड़ियां उग आयी हैं। प्रत्यक्षतः, चुड़ैलों ने यह स्थान त्याग दिया है, इसीलिए वहां अव कुछ रौनक दिखने लगी है।

अलेक्सान्द्र पुश्किन

१७६६-१८३७

अलेक्सान्द्र सेर्गेयेविच पुश्किन (१७६६–१८३७) का जन्म एक नामी, किन्तु निर्धन हो गये कुलीन परिवार में हुआ। आरंभिक शिक्षा-दीक्षा उन्होंने घर पर पायी, और फिर १८११ में उसी वर्ष पीटर्सवर्ग के समीप त्सास्कोंये सेलो में खुले एक विशेष विद्यालय में उन्हें पढ़ने भेजा गया। वहां पर ही रूसी साहित्यकारों का ध्यान उनकी असाधारण काव्य-प्रतिभा की ओर गया।

नेपोलियन के युद्धों के अशांत दिनों में, नेपोलियन के आक्रमण के विरुद्ध १८१२ में रूसी जनता के युद्ध के फलस्वरूप व्याप्त देशभक्ति के वातावरण तथा उन दिनों उत्पन्न हो रही दिसंवरवादी विचारधारा के स्वाधीनताप्रेम के विचारों के प्रभाव में पुश्किन वौद्धिक और मानसिक परिपक्वता को प्राप्त हुए। १८१७ में विशेष विद्यालय की शिक्षा पूरी करने तक ही पुश्किन की ख्याति साहित्यिक क्षेत्र में फैल चुकी थी। इन दिनों उन्होंने नागरिक भावना से उत्प्रेरित अनेक कविताएं लिखीं तथा 'रुस्लान और ल्युद्मीला' नामक लंबी कविता लिखनी शुरू की, जिसके साथ विद्यालय और उसके वाद के दिनों का उनका सृजन काल संपन्न हुआ। पुश्किन की स्वतंत्रताप्रेम से ओत-प्रोत और व्यंग्यपूर्ण कविताओं पर असंतुष्ट सरकार ने १८२० में उन्हें रूस के दक्षिण में निष्कासित कर दिया जहां उन्होंने चार साल विताये (१८२०–१८२४)। दक्षिण में कवि पर स्वच्छंदतावाद के विचारों का प्रभाव पड़ा और उन्होंने अपनी प्रेम कविताओं और खंड काव्यों ('कोहकाफ़ का वंदी', 'वख्चीसराय का फ़व्वारा', 'दस्युवंधु', 'जिप्सी') में मूर्तित किया। अंतिम खंड काव्य पुश्किन ने उत्तरी रूस के प्स्कोव नगर के समीप अपनी खानदानी जागीर मिखाइलोव्स्कोये में पूरा किया, जहां उन्हें दक्षिण रूस से लौटने के कुछ ही समय वाद पुनः निष्कासित किया गया। इस वार निष्कासन का कारण था पुश्किन का अपने वरिष्ठ अधिकारी काउंट वोरोंत्सोव के साथ झगड़ा तथा यह संदेह कि वह निरीश्वरवादी विचारों का प्रचार कर रहे हैं।

मिखाइलोव्स्कोये में पुश्किन ने दो साल (१८२४–१८२६) गुज़ारे। यहां उन्होंने 'वोरीस गोदुनोव' नाटक, 'काउंट नूलिन' खंड काव्य और अनेक कविताएं लिखीं तथा काव्य-उपन्यास 'येव्गेनी ओनेगिन'

पर काम, जो उन्होंने दक्षिण मे ही आरभ कर दिया था, जारी रखा। मिखाइलोव्स्कोये के इस काल में पुश्किन अपने साहित्यिक सौदर्यबोधात्मक दृष्टिकोण की विकास-यात्रा मे यथार्थवाद की मजिल पर पहुचे।

१८२६ मे निष्कासन मे लौटने पर उनके जीवन और सृजन का एक नया अध्याय आरभ हुआ। इस बीच दिसबरवादियों का विद्रोह कुचला जा चुका था, किन्तु पुश्किन ने अपने विचार-स्वातत्र्य को नही त्यागा, और अपनी अनेक रचनाओ मे अपने काल के सामाजिक टकरावो का मर्म व्यक्त करने के स्तर तक उठे। साथ ही अपनी रचनाओ के माध्यम से उन्होंने ज़ार तक यह सदेश पहुचाने का प्रयास किया कि समाज मे पुनर्गठन लाना नितात आवश्यक हो गया है। इस सिलसिले मे ज़ार प्योत्र प्रथम* का विषय उनके कृतित्व मे प्रकट हुआ (खड काव्य 'पोल्तावा', उपन्यास 'प्योत्र महान का अरब', इत्यादि)। १८२६–१८३० मे पुश्किन गद्य लेखन की ओर प्रवृत्त हुए।

दार्शनिक और सामाजिक समस्याओ पर रूस और उसके साहित्य के विकास के प्रश्नो पर पुश्किन के चिंतन-मनन का परिणाम है वे रचनाए जो उन्होंने १८३० मे बोल्दिनो मे लिखी (अनेक कविताए, 'इवान बेल्किन की कहानिया', 'लघु त्रासदिया', इत्यादि)। अपना उपन्यास 'येव्गेनी ओनेगिन' भी पुश्किन ने इन्ही दिनो प्राय पूरा कर दिया।

१८३० के बाद के वर्ष पुश्किन के लिए तीव्र वैचारिक मथन के वर्ष थे। इन वर्षो मे हम उन्हे एक साहित्यकार के रूप मे ही नही, बल्कि एक समीक्षक और एक इतिहासकार के रूप मे भी पाते है। इसके साथ ही पुश्किन ने पहले 'लितेरातूर्नाया गज़ेता' और फिर 'सोव्रेमेन्निक' पत्रिका के गिर्द प्रगतिशील साहित्यकारो को सूत्रबद्ध किया। इस काल मे उन्होंने अपनी प्रमुख गद्य रचनाए – 'दूब्रोव्स्की' (१८३३), 'कप्तान की बेटी' (१८३६), 'पुगाचोव का इतिहास', अपूर्ण रचना 'प्योत्र का इतिहास', खड काव्य 'ताम्र अश्वारोही' तथा अनेक कविताए लिखी, जिनमे प्रेम, सृजन, मृत्यु जैसे मानव जीवन के आधारभूत प्रश्न उठाये। १८३३ मे ही उन्होंने 'हुक्म की बेगम' कहानी लिखी, जो इस सग्रह मे दी जा रही है।

* प्योत्र प्रथम – १६८२ से १७२५ तक रूस का सम्राट, जो देश के सामाजिक, आर्थिक और अन्य क्षेत्रो मे अनेक अत्यत महत्त्वपूर्ण और दूरगामी परिवर्तन लाया।

ताबूतसाज

क्या हमें हर दिन ताबूत नहीं दिखाई देते हैं,
हमारी इस खूसट दुनिया के पके बाल?
देर्जाविन *

ताबूतसाज़ अद्रियान प्रोखोरोव की घर-गिरस्ती का आखिरी सारा सामान मुर्दे ले जानेवाली गाड़ी पर लाद दिया गया और मरियल-से घोड़ों की जोड़ी ने बस्मान्नया गली से निकीत्स्काया गली तक का, जहां ताबूतसाज़ अपने पूरे घरबार के साथ जा बसा था, चौथी बार चक्कर लगाया। उसने दुकान का ताला बन्द किया, दरवाज़े पर यह तख्ती लगायी कि घर बिकाऊ है, भाड़े पर भी चढ़ाया जा सकता है और पैदल ही अपने नये घर की तरफ़ चल दिया। पीले रंग के इस छोटे-से घर के निकट पहुंचने पर, जो एक अर्से से उसके दिल में जगह बनाये हुए था, और जिसे उसने खासी बड़ी रकम देकर खरीदा था, उसे इस बात की हैरानी हुई कि उसका दिल खुशी से तरंगित नहीं हो रहा है। अनजानी-अपरिचित दहलीज़ को लांघने पर जब उसने अपने नये घर में सभी ओर गड़बड़ देखी, तो पुराने और टूटे-फूटे घर को याद करके, जहां अठारह वर्ष तक उसने कड़ी व्यवस्था बनाये रखी थी, गहरी सांस ली। उसने अपनी दोनों बेटियों और नौकरानी को बहुत धीरे-धीरे काम करने के लिए बुरा-भला कहा और खुद उनके काम में हाथ बटाने लगा। जल्द ही सब कुछ ढंग से सज गया, देव-प्रतिमा, चीनी के बर्तनों की अलमारी, मेज़, सोफ़ा और पलंग – इन सब के लिये पिछले कमरे के कोनों में स्थान बना दिये गये और रसोईघर तथा मेहमानख़ाने में मालिक के हाथों की बनी चीज़ें – सभी रंगों और आकारों के ताबूत तथा मातमी टोपियों, लबादों और मशालों से भरी हुई अलमारियां टिका दी गयीं। दरवाज़े पर एक साइनबोर्ड लटका

---

* एक प्रमुख रूसी कवि गव्रीला देर्जाविन (१७४३–१८१६) की 'जल-प्रपात' कविता में। – सं०

दिया गया था, जिस पर हाथ में उलटी मशाल लिये आमूर* का चित्र बना हुआ था और उसके नीचे यह लिखा था – "यहां सादे और रंगे हुए सभी तरह के तावूत बेचे तथा बनाये जाते हैं, किराये पर दिये जाते हैं और पुराने तावूतों की मरम्मत भी की जाती है"। तावूतसाज़ की बेटियां अपने कमरे में चली गयीं। अद्रियान ने अपने घर का चक्कर लगाया, खिड़की के पास बैठ गया और समोवार गर्माने का आदेश दिया।

पढ़े-लिखे पाठक को यह ज्ञात है कि शेक्सपियर और वाल्टर स्कॉट – इन दोनों ने ही क़ब्र खोदनेवालों को ख़ुशमिज़ाज और विनोदी व्यक्तियों के रूप में चित्रित किया है** ताकि उनके काम और स्वभाव की तुलना द्वारा हमारे दिलों पर अधिक गहरी छाप अंकित कर सकें। किन्तु सचाई का आदर करते हुए हम उनका अनुकरण नहीं कर सकते और यह मानने को विवश हैं कि हमारे तावूतसाज़ का मिज़ाज उसके मनहूस धंधे के बिल्कुल अनुरूप था। अद्रियान प्रोख़ोरोव आम तौर पर गुमसुम और अपने ही ख़्यालों में खोया रहता था। वह अपनी ख़ामोशी तभी तोड़ता था जब निठल्ली बेटियों को खिड़की से राहगीरों को झांकते हुए देखकर डांटता या फिर जब उसे अपनी "हस्त-रचनाओं" के लिए उनसे कसकर पैसे लेने होते, जिन्हें बदक़िस्मती से (कभी-कभी ख़ुशक़िस्मती से) उन्हें खरीदने की ज़रूरत आ पडती। तो खिड़की के क़रीब बैठा और चाय का सातवां प्याला पीता हुआ अद्रियान सदा की तरह मनहूस ख़्यालों में डूबा हुआ था। वह उस मूसलधार बारिश के बारे में सोच रहा था जिसने हफ़्ताभर पहले सेवा-निवृत्त ब्रिगेडियर के मातमी जुलूस को नगर-द्वार के निकट अपनी लपेट में ले लिया था। नतीजा यह हुआ था कि बहुत-से लबादे सिकुड़ गये थे और मातमी टोपियों के किनारे टेढ़े-मेढ़े हो गये थे। वह जानता था कि अगले कुछ समय में उसे अनिवार्य रूप से ख़ासी रक़म ख़र्च करनी पड़ेगी, क्योंकि मातमी कपड़ों के उसके पुराने स्टाक की हालत काफ़ी ख़राब थी। उसे उम्मीद थी

---

* आमूर – कामदेव, किन्तु जब उसके हाथ में उलटी मशाल हो, तो वह यमदूत या मृत्यु का प्रतीक हो जाता है। – अनु०

** पुश्किन का अभिप्राय शेक्सपियर के 'हेमलेट' (१६००–१६०१) और वाल्टर स्कॉट के 'लामेरमूर की दुलहन' उपन्यास में तावूतसाज़ों के विम्बों से है। – सं०

कि बूढी सेठानी त्र्यूखिना के मरने पर, जो लगभग एक साल से कब्र मे टाँगे लटकाये थी, उसका सारा घाटा पूरा हो जायेगा। किन्तु त्र्यूखिना राज्गुल्याई गली मे अपनी आखिरी घडियाँ गिन रही थी और प्रोखोरोव को इस बात की शका थी कि अपने वादे के बावजूद उसके वारिस उसे इतनी दूर से बुलवा भेजने के मामले मे काहिली न कर जाये और अपने नज़दीक के किसी ठेकेदार से ही मामला तय न कर ले।

अद्रियान प्रोखोरोव इसी तरह के विचारो मे खोया हुआ था कि अचानक फ्रीमेसनो* की भाँति दरवाज़े पर किसी के अचानक तीन बार दस्तक देने से उसकी विचार-शृखला टूटी। "कौन है?" ताबूतसाज़ ने पूछा। दरवाजा खुला और एक ऐसा व्यक्ति भीतर आया जिसे देखने ही पता चलता था कि वह एक जर्मन कारीगर है। वह प्रफुल्ल मुद्रा मे ताबूतसाज़ के निकट आया। "मेरे कृपालु पड़ोसी, मैं माफी चाहता हूं," उसने ऐसी अटपटी रूसी भाषा में कहा, जिसे सुनकर हम आज भी हंसे बिना नही रह सकते, "माफी चाहता हू कि आपके काम-काज में खलल डाल दिया लेकिन मैं आपके साथ जल्दी से जान-पहचान कर लेना चाहता था। मैं मोची हू, मेरा नाम गोत्लिब शूल्त्स है और गली पार आपके सामनेवाले घर मे रहता हू। कल मैं अपने विवाह की रजत-जयती मना रहा हू और आपसे तथा आपकी बेटियो से अनुरोध करता हू कि मित्र के नाते मेरे यहा खाना खाये।" निमत्रण सहर्ष स्वीकार कर लिया गया। ताबूतसाज ने मोची से बैठने और चाय का प्याला पीने को कहा। गोत्लिब शूल्त्स की मिलनसार तबीयत की बदौलत जल्द ही दोनो घुल-मिलकर बाते करने लगे। "आपका काम-धधा कैसा चल रहा है?" अद्रियान ने पूछा। "अजी, क्या कहा जाये," शूल्त्स ने उत्तर दिया, "कभी अच्छा और कभी बुरा। शिकवा-शिकायत नही कर सकता। वैसे, इतना जरूर है कि मेरा माल आपके माल जैसा नहीं है – ज़िन्दा आदमी जूतो के बिना काम चला सकता है, मगर मुर्दे का तो ताबूत के बिना गुज़ारा नही।" – "सोलह आने सही बात है," अद्रियान ने सहमति प्रकट की, "लेकिन अगर ज़िन्दा आद-

---

* १८वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे रहस्यवादी सगठन जिसका लक्ष्य मानव का नैतिक पुनरुत्थान था। दरवाज़े पर तीन बार दस्तक इस सगठन के सदस्यो का एक गुप्त सकेत था। – स०

मी के पास जूते खरीदने को पैसे नहीं, तो ग़म की कोई बात नहीं, नंगे पांव ही काम चला लेता है, मगर भिखारी को ताबूत मुफ़्त ही मिल जाता है।" तो इस तरह थोड़ी देर तक उन दोनों के बीच कुछ और बातचीत चलती रही। आखिर मोची उठा, उसने अपना निमंत्रण दोहराया और ताबूतसाज़ से विदा ली।

अगले रोज़, दिन के ठीक बारह बजे ताबूतसाज़ और उसकी बेटियां अपने नये खरीदे गये घर के फाटक से बाहर निकलीं और पड़ोसी के यहां चल दीं। मैं न तो अद्रियान प्रोखोरोव के रूसी अंगरखे का वर्णन करूंगा और न उसकी बेटियों की यूरोपीय पोशाकों के ठाठ का और इस दृष्टि से आधुनिक उपन्यासकारों की परम्परा का साथ नहीं दूंगा। फिर भी इतना कह देना अनावश्यक नहीं समझता कि दोनों लड़कियां पीली टोपियां और लाल बूट पहने थीं जो वे जशन के खास-खास मौक़ों पर ही पहनती थीं।

मोची का छोटा-सा फ़्लैट मेहमानों से खचाखच भरा था, जिनमें अधिकतर जर्मन कारीगर, उनकी बीवियां और शागिर्द थे। सरकारी कर्मचारियों में से केवल एक यानी पुलिस का सिपाही यूर्को ही यहां उपस्थित था। वह जाति का चूख़ोन था और बहुत मामूली पद के बावजूद मेज़बान उसकी खास तौर पर बड़ी खातिरदारी कर रहा था। पिछले पच्चीस सालों से वह पोगोरेल्स्की के प्रसिद्ध हरकारे या डाकिये* की तरह बड़ी आज्ञाकारिता से अपनी ड्यूटी बजा रहा था। १८१२ में प्राचीन राजधानी यानी मास्को के जल जाने पर उसकी पीले रंग की संतरी-चौकी भी भस्म हो गयी थी। किन्तु फ़्रांसीसी दुश्मन के खदेड़े जाते ही उसकी नयी संतरी-चौकी बन गयी – सलेटी रंग की और यूनानी ढंग के सफ़ेद स्तम्भोंवाली। अपने सिपाही के ठाट-बाट से यूर्को फिर उसके आस-पास गश्त करने लगा। निकीत्स्कया गली के नज़दीक रहनेवाले अधिकतर जर्मनों से उसकी अच्छी जान-पहचान थी और उनमें से कुछेक तो कभी-कभी इतवार की रात भी उसकी चौकी पर ही बिताते थे। अद्रियान ने झटपट यूर्को से परिचय कर लिया, क्योंकि वह ऐसा आदमी था जिसकी कभी और किसी भी समय ज़रूरत पड़ सकती थी। मेहमान जब खाने की मेज़ों पर पधारे,

* अ० पोगोरेल्स्की की कहानी 'लाफ़ेर्तोवो की नानवाईन' (१८२५) का एक पात्र। – सं०

तो वे दोनों एक-दूसरे के बगल में बैठे। गृहस्थ दम्पति और उनकी सत्रह वर्षीया बेटी लोत्खेन मेहमानों के साथ भोजन करते हुए खाना परोसने और दूसरी बातों में बावर्चिन का लगातार हाथ बटा रहे थे। बियर तो खूब बह रही थी। यूर्को चार आदमियों के बराबर अकेला ही खा रहा था और अद्रियान उसमे उन्नीस नहीं रह रहा था। उसकी बेटियां बड़े सलीके से बैठी थीं। जर्मन भाषा में होनेवाली बातचीत लगातार बहुत ऊंची होती जा रही थी। मेजबान ने अचानक सबका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया और कोलतार पुती बोतल का कार्क खोलते हुए रूसी भाषा में चिल्लाकर कहा, "अपनी दयालु लुईजा के स्वास्थ्य के लिए!" और सस्ती शैम्पेन का फेन उठने लगा। मेज़बान ने अपनी चालीस साल की जीवन-संगिनी का चेहरा, जिस पर ताजगी बनी हुई थी, प्यार से चूमा और मेहमानों ने शोर मचाते हुए दयालु लुईजा के स्वास्थ्य का जाम पी लिया। मेजबान ने "प्यारे मेहमानों के स्वास्थ्य के लिए!" कहते हुए शैम्पेन की दूसरी बोतल खोली और मेहमानों ने उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए फिर से अपने गिलास खाली कर दिये। इसके बाद तो स्वास्थ्य के जाम पीने का दौर चल पड़ा – हर मेहमान की सेहत का जाम पिया गया, मास्को तथा एक दर्जन जर्मन नगरों, सभी दस्तकारियों और हर दस्तकारी के लिये अलग-अलग तथा कारीगरों और उनके शागिर्दों के लिए जाम उठाये और चढ़ाये गये। अद्रियान खूब डटकर पी रहा था और इस हद तक रंग में आ गया कि उसने स्वयं भी एक विनोदपूर्ण जाम पीने का प्रस्ताव पेश किया। सहसा एक मोटे-से नानबाई अतिथि ने जाम ऊपर उठाया और चिल्लाकर कहा, "उनकी सेहत का जाम, जिनके लिए हम काम करते हैं, unserer Kundleute!"* इस जाम का भी सभी ने खुशी से और मिलकर स्वागत किया। मेहमान एक-दूसरे के सामने सिर झुकाने लगे – दर्जी मोची के सामने, मोची दर्जी के सामने, नानबाई इन दोनों के सामने और सभी नानबाई के सामने, इत्यादि। इस प्रकार के पारस्परिक अभिवादन के बीच यूर्को ने अपने पड़ोसी को सम्बोधित करते हुए चिल्लाकर कहा, "तो मेरे भाई, आओ, तुम्हारे मृतकों के नाम पर भी जाम पियें!" सभी ठठाकर

* अपने ग्राहकों के लिए! (जर्मन)

हंस पड़े, किन्तु तावूतसाज़ को लगा कि उसका अपमान किया गया है और उसके माथे पर वल पड़ गये। इस वात की ओर किसी का भी ध्यान नहीं गया, मेहमानों ने पीना जारी रखा और जव वे मेज़ पर से उठे तो रात की अन्तिम प्रार्थना की घण्टियां वज रही थीं।

अतिथि काफ़ी रात गये विदा हुए और अधिकतर नशे में वुरी तरह धुत्त थे। मोटा नानवाई और जिल्दसाज़, जिसका चेहरा "लाल चमड़े की जिल्द चढ़ा"* प्रतीत होता था, यूर्को की दोनों वांहों में वांहें डालकर उसे उसकी चौकी की ओर ले जा रहे थे और इस रूसी कहावत को सही सिद्ध करते प्रतीत होते थे–असली मज़ा तो ऋण की वसूली में ही है। तावूतसाज़ वेहद पिये हुए और झल्लाया हुआ घर लौटा। "आखिर दूसरों के मुक़ावले में मेरा धन्धा किसलिए बुरा है?" वह ऊंचे-ऊंचे सोच रहा था। "क्या तावूतसाज और जल्लाद भाई हैं? किसलिए हंसते हैं ये काफ़िर? क्या तावूतसाज़ रंग-विरंगी पोशाक पहने हुए कोई मसखरा है? मैं तो इन्हें इस घर में आने की दावत पर वुलाना और खूव खिलाना-पिलाना चाहता था–मगर अव यह नहीं होने का! मैं उन्हीं को दावत में वुलाऊंगा जिनके लिए काम करता हूं–ईसाई धर्म को माननेवाले मृतकों को!"–"अरे मालिक, यह आप क्या कह रहे हैं?" नौकरानी ने कहा जो इस समय उसके जूते उतार रही थी। "सलीव का निशान वनाइये! घर में आने की दावत के लिए मुर्दों को वुलायेंगे! कैसी भयानक वात है यह!"–"क़सम भगवान की, ज़रूर वुलाऊंगा," अद्रियान कहता गया, "और वह भी कल ही। मेरे हित-चिन्तको, कल शाम को मेरे यहां दावत पर आओ। भगवान जो देंगे, वही सेवा में हाज़िर कर दूंगा।" इतना कहकर तावूतसाज़ विस्तर पर चला गया और जल्द ही खर्राटे लेने लगा।

अगले दिन मुंह अंधेरे ही अद्रियान को जगा दिया गया। सेठानी त्रूखिना इसी रात को चल वसी थी और उसके कारिन्दे ने एक तेज़ घुड़सवार को यह खवर देने के लिये उसके पास भेजा था। तावूतसाज ने हरकारे को इनाम के तौर पर दस कोपेक वोदका पीने को दिये,

---

* या० व० क्न्याजनिन के सुखान्ती नाटक 'शेखीखोर' (१७८६) की कुछ परिवर्तित काव्य-पंक्ति।–सं०

जल्दी मे कपड़े पहने, किराये की बग्घी ली और राज्गुल्याई गली मे पहुच गया। परलोक सिधार गई बुढ़िया के दरवाज़े पर पुलिसवाले खड़े थे और सेठ-व्यापारी लोग वहा ऐसे मडरा रहे थे, जैसे लाश की गंध पाकर कौवे मडराते है। मोम की तरह पीली बुढ़िया का शव मेज़ पर रखा था, किन्तु शरीर अभी बिगड़ने नही लगा था। रिश्तेदार, पड़ोसी और नौकर-चाकर उसके क़रीब भीड़ लगाये थे। सभी खिड़किया खुली थी, मोमबत्तिया जल रही थी और पादरी मृतक की आत्मा की शान्ति के लिए पाठ कर रहे थे। अद्रियान मृतक के भानजे के पास गया, जो फैशनदार फ्राक-कोट पहने जवान व्यापारी था और उसे यह बताया कि ताबूत, मोमबत्तिया, कफन और मातम की बाकी सारी चीज़े भी अच्छी हालत मे फौरन पहुचा दी जायेगी। वारिस ने बेध्यानी मे उसे धन्यवाद दिया, यह कहा कि पैसो के बारे मे वह किसी तरह की सौदेबाज़ी नही करेगा और उसी की ईमानदारी पर सारी बात छोड देगा। ताबूतसाज़ ने अपनी आदत के मुताबिक कसम खाकर यह कहा कि एक पैसा भी फालतू नही लेगा और इसके बाद अर्थपूर्ण ढग से कारिन्दे से नज़र मिलाकर सामान की तैयारी करने चला गया। वह दिन भर राज्गुल्याई से निकीत्स्कया गली तक घोडागाडी पर चक्कर काटता रहा। शाम तक उसने सारा प्रबन्ध कर दिया और घोडागाडी छोडकर पैदल घर लौटा। रात चादनी थी। ताबूतसाज़ निकीत्स्कया गली तक सही-सलामत पहुंच गया। गिरजे के पास हमारे परिचित यूर्को ने उसे ललकारा, किन्तु पहचानकर शुभरात्रि की कामना की। काफी रात बीत चुकी थी। ताबूतसाज़ अपने घर के निकट पहुच गया था, जब अचानक उसे लगा कि कोई उसके फाटक के निकट आया और दरवाज़ा खोलकर अन्दर गायब हो गया है। "यह क्या किस्सा है?" अद्रियान ने सोचा। "किसको फिर से मेरी ज़रूरत हो सकती है? कही कोई चोर तो भीतर नही चला गया? मेरी बुद्धू बेटियो के पास प्रेमी तो नही आते?" ताबूतसाज़ ने यह भी सोचा कि अपने दोस्त यूर्को को मदद के लिए पुकारना चाहिये। इसी क्षण एक अन्य व्यक्ति फाटक के निकट आया, उसने भीतर जाना चाहा, किन्तु घर के मालिक को भागा आता देखकर रुक गया और उसने अपना तिकोना टोप उतार लिया। अद्रियान को उसका चेहरा परिचित-सा प्रतीत हुआ, किन्तु उतावली के कारण वह उसे बहुत ध्यान से नही देख पाया। "आप मेरे यहा आये हैं?" अद्रियान

ने हांफते हुए पूछा, "कृपया पधारिये, भीतर चलिये।" – "आप औपचारिकता के फेर में नहीं पड़ें," आगन्तुक ने दवी-घुटी आवाज़ में जवाव दिया, "मेहमानों को रास्ता दिखाते हुए आगे-आगे चलिये!" अद्रियान के पास औपचारिकता के फेर में पड़ने का समय ही नहीं था। घर का फाटक खुला हुआ था, अद्रियान आगे-आगे और उसका अतिथि उसके पीछे-पीछे चल दिया। अद्रियान को ऐसे लगा मानो उसके कमरों में लोग चल-फिर रहे हों। "यह क्या माजरा है!" उसने सोचा और जल्दी से क़दम वढ़ाता हुआ भीतर गया... वहां उसकी टांगें लड़खड़ा गयीं। कमरा प्रेतों से भरा हुआ था। खिड़की में से छनती हुई चांदनी उनके पीले और नीले चेहरों, सिकुड़े-टेढ़े होंठों, धुंधली-अधमुंदी आंखों और उभरी हुई नाकों को रोशन कर रही थी... अद्रियान ने दहलते दिल से इन प्रेतों के रूप में उन लोगों को पहचान लिया जो उसके योग-सहयोग से दफ़नाये गये थे और उसके साथ आनेवाला मेहमान तो वह ब्रिगेडियर था जो मूसलधार वारिश के वक़्त दफ़नाया गया था। इन सभी स्त्री-पुरुषों ने तावूतसाज़ को घेर लिया और सिर झुका-झुकाकर वे उसका अभिवादन करने लगे। क़िस्मत का मारा केवल एक ही, जो कुछ समय पहले मुफ़्त दफ़नाया गया था, मानो अपने चिथड़े को छिपाता और शर्म से गड़ा जाता हुआ एक कोने में चुपचाप खड़ा था। उसे छोड़कर वाक़ी सभी वढ़िया कपड़े पहने थे – महिलाओं के सिरों पर रिवनवाली टोपियां थीं, मृत अफ़सर वर्दियां डाटे थे, किन्तु उनकी दाढ़ियां वढ़ी हुई थीं, व्यापारी-सेठ लोग समारोही अंगरखों में खूव जंच रहे थे। "देखो प्रोखोरोव," ब्रिगेडियर ने सभी आदरणीय अतिथियों की ओर से बोलते हुए कहा, "हम सभी तुम्हारे निमंत्रण पर अपनी क़ब्रों से उठकर आये हैं। वहां केवल वही रह गये हैं जिनमें विल्कुल शक्ति शेष नहीं रह गयी, जो पूरी तरह गल-सड़ गये हैं, जो त्वचा के विना केवल हड्डियों का पंजर हैं। किन्तु इनमें से भी एक तुम्हारे यहां आने का मोह संवरण नहीं कर सका – इतना अधिक उसने तुम्हारे यहां आना चाहा..." इसी समय एक छोटा-सा पंजर औरों को कोहनियाता और भीड़ को चीरता हुआ अद्रियान के निकट आया। उसकी खोपड़ी तावूतसाज़ की ओर स्नेहपूर्वक मुस्करायी। उजले हरे और लाल रंग के चिथड़े और गाढ़े के तार-तार हुए टुकड़े उस पर ऐसे लटक रहे थे मानो डंडे पर लटके हुए हों तथा घुटनों तक के

बूटो मे टागो की हड्डिया ऐमे बज रही थी जैमे ऊखल मे मूसल। "तुमने मुझे पहचाना नही, प्रोखोरोव," ककाल ने कहा। "गार्ड सेना के भूतपूर्व सार्जेण्ट, उसी प्योत्र पेत्रोविच कुरील्किन को भूल गये हो जिमे तुमने १७६६ मे अपना पहला तावूत बेचा था और सो भी चीड का, जिमे वलूत की लकडी का बताया था?" इतना कहकर उसने अद्रियान को अपनी बाहो मे भरने के लिए अपनी ककाली बाहें उसकी ओर फैला दी। किन्तु अद्रियान अपनी सारी शक्ति बटोरकर चिल्ला उठा और उसने उसे परे धकेल दिया। प्योत्र पेत्रोविच लडखडाया, गिरा और हड्डियो का ढेर बनकर रह गया। मुर्दो मे गुस्से की लहर-सी दौड गयी, सभी अपने साथी की इज्जत की रक्षा के लिए डट गये, अद्रियान को भला-बुरा कहने और डराने-धमकाने लगे। बेचारे मेजबान के होश-हवास गुम हो गये। इनकी चीख़-चिल्लाहट से बहरा और इनके द्वारा लगभग कुचला हुआ मेजबान बिल्कुल घबरा गया, मृद गार्ड सेना के भूतपूर्व सार्जेण्ट की हड्डियो पर गिर गया और बेहोश हो गया।

सूरज की किरणे ताबूतसाज़ के बिस्तर को कभी की आलोकित कर रही थी। आखिर उसने आखे खोली और अपने सामने समोवार गर्माते नौकरानी को देखा। रात की घटनाओ को याद करके अद्रियान भय मे काप उठा। उसे अपनी कल्पना मे त्रूखिना, ब्रिगेडियर और सार्जेण्ट कुरील्किन का धुधला-सा आभास हो रहा था। वह चुपचाप इस बात की प्रतीक्षा करता रहा कि नौकरानी उसके साथ बातचीत शुरू करे और उसे बताये कि रात की घटनाओ का अत क्या हुआ।

"बहुत देर तक सोये रहे आज तो आप, अद्रियान प्रोखोरोविच," मालिक को गाउन देते हुए नौकरानी अक्सीन्या ने कहा। "पडोसी दर्जी भी मिलने के लिए आ चुका है, हमारे हलके का पुलिसवाला भी यह बता गया है कि आज इन्स्पेक्टर का जन्मदिन है, मगर आप सो रहे थे और हमने यह ठीक नही समझा कि आपको जगाये।"

"भगवान को प्यारी हो गयी त्रूखिना के यहा से कोई आया था क्या?"

"भगवान को प्यारी हो गयी त्रूखिना? क्या वह मर गयी?"

"कैसी उल्लू हो तुम भी! उसके कफन-दफन की तैयारी मे क्या कल तुम्ही ने मेरा हाथ नही बटाया था?"

"क्या कह रहे हैं आप, मालिक? कहीं आपका दिमाग़ तो नहीं चल निकला या कल के नशे का ख़ुमार अभी तक बाक़ी है? कल किसी को दफ़नाया ही कब गया था? आप दिन भर जर्मन के यहां दावत के मज़े लूटते रहे, नशे [illegible] घर लौटे, बिस्तर पर ढह पड़े और अब [illegible] प्रार्थना की घण्टियां भी कभी की बज चुकीं।'

हुक्म की बेगम

हुक्म की बेगम का
अर्थ है रहस्यपूर्ण शत्रुता।

भविष्य बूझने की नवीनतम पुस्तक से।

(१)

ठण्डे, बुरे मौसम में
जमा होकर अक्सर
भगवान उन्हें क्षमा करें,
खेले जुआ डटकर –
पचास से सौ तक
दाव पर लगाते,
जीतते, वे हारते
हिसाब लिखते जाते,
यों ठण्डे, बुरे मौसम में
ऐसे अच्छे काम में
वक्त वे बिताते।

एक बार गार्डों की घुड़सेना के अफसर नारूमोव के यहां जुआ खेला जा रहा था। पता भी नहीं चला कि जाड़े की लम्बी रात कब बीत गयी – सुबह के पाच बजे ये लोग भोजन करने बैठे। जीतनेवाले तो खूब मजे से खाने पर हाथ साफ कर रहे थे और दूसरे अपनी खाली प्लेटों के सामने खोये-खोये-से बैठे थे। लेकिन जैसे ही शेम्पेन सामने आई, बातचीत सजीव हो उठी और सभी ने उसमें भाग लिया।

"तुम्हारा कैसा हालचाल रहा, सूरिन?" मेजबान ने पूछा।

"सदा की भांति हार गया। मानना ही होगा कि किस्मत मुझसे खार खाये बैठी है – मैं छोटे-छोटे दाव लगाकर खेलता हूं, कभी उत्तेजित नहीं होता, दिमाग को इधर-उधर भटकने नहीं देता, लेकिन फिर भी हमेशा हारता ही रहता हूं!"

"क्या कभी तुम्हारे मन में लालच नहीं आया? क्या कभी बड़ा

दांव लगाने को तुम्हारा मन नहीं हुआ?.. तुम्हारी यह दृढ़ता मेरे लिए आश्चर्यजनक है।"

"यह हेर्मन्न भी खूब है न?" जवान इंजीनियर की ओर संकेत करते हुए एक मेहमान ने कहा। "इसने कभी पत्ते हाथ में नहीं लिये, कभी दांव नहीं लगाया, लेकिन सुबह के पांच बजे तक हमारे साथ बैठा हुआ हमारे खेल को देखता रहता है।"

"खेल में मुझे बहुत मजा आता है," हेर्मन्न ने कहा, "लेकिन मैं ऐसी स्थिति में नहीं हूं कि कुछ फ़ालतू पाने की उम्मीद में उसे भी क़ुर्बान कर दूं जो एकदम ज़रूरी है।"

"हेर्मन्न जर्मन है, सावधान है, बस, इतनी ही बात है!" तोम्स्की ने राय ज़ाहिर की। "लेकिन मेरे लिये अगर कोई पहेली है, तो मेरी दादी काउंटेस आन्ना फ़ेदोतोव्ना।"

"वह कैसे? वह क्यों?" मेहमानों ने चिल्लाते हुए जिज्ञासा व्यक्त की।

"किसी तरह भी यह नहीं समझ पाता," तोम्स्की ने अपनी बात जारी रखी, "कि मेरी दादी जुआ क्यों नहीं खेलती!"

"इसमें हैरानी की कौन-सी बात है कि अस्सी साल की बुढ़िया जुआ नहीं खेलती!" नारूमोव ने कहा।

"तो क्या आप उसके बारे में कुछ नहीं जानते?"

"नहीं! सचमुच, कुछ भी नहीं!"

"ओह, तो सुनिये: यह जानना ज़रूरी है कि मेरी दादी साठ साल पहले पेरिस गयी थी और वहां उसकी बड़ी धूम रही थी। La Vénus moscovite* को एक नज़र देख लेने के लिये लोग उसके पीछे-पीछे भागा करते थे। रिशेल्ये उसका दीवाना था और दादी यह यक़ीन दिलाती है कि उसकी निष्ठुरता के कारण वह अपने को गोली मारते-मारते रह गया था।

"उस ज़माने में महिलायें फ़ारो खेला करती थीं। एक दिन दरबार में जुआ खेलते हुए वह ड्यूक दे' ओरलिआन को बहुत बड़ी रक़म हार गयी जिसे उसने बाद में चुका देने का वचन दिया। घर लौटने पर चेहरे को सुन्दर बनाने के लिए लगाये जानेवाले रेशमी बिन्दु और स्कर्ट

---

* मास्को की सौन्दर्य-देवी। (फ़्रांसीसी)

को फैलानेवाले धातु के घेरे उतारते हुए उसने दादा को बताया कि कितनी रकम हार गयी है और आदेश दिया कि वे उसे चुका दे।

"जहा तक मुझे याद है, मेरे दिवगत दादा एक तरह से मेरी दादी के कारिन्दा ही थे। वे दादी से आग की तरह डरते थे। किन्तु इतनी बडी रकम हार जाने की बात सुनकर वे आपे से बाहर हो गये, सभी बिल लाकर उन्होने दादी को दिखाये और साबित किया कि छ महीनों मे उन्होने पाच लाख का खर्च किया है, कि पेरिस के आस-पास मास्को या सरातोव की भाति उनकी कोई जागीर नही है और रकम अदा करने से साफ इन्कार कर दिया। दादी ने उनके मुह पर एक तमाचा मारा और अपनी नाराजगी जाहिर करने के लिये दादा को अपने पास नहीं सोने दिया।

"अगले दिन दादी ने यह उम्मीद करते हुए कि घरेलू दण्ड का आवश्यक प्रभाव हुआ होगा, पति को बुलवा भेजा किन्तु दादा अपनी बात पर अडे हुए थे। जीवन मे पहली बार दादी ने मामले पर सोच-विचार किया, सब कुछ स्पष्ट करना चाहा, सोचा कि बडी नम्रता से यह बताते हुए पति को लज्जित करेगी कि कर्ज कर्ज मे फ़र्क होता है और प्रिस तथा बग्घी बनानेवाला – ये दोनो एक जैसे ही नही होते। लेकिन सब बेकार! दादा ने विद्रोह कर दिया था। नही, और बात खत्म! दादी की समझ मे नही आ रहा था कि क्या करे।

"दादी की अच्छी जान-पहचानवालो मे एक बहुत ही कमाल का आदमी था। आपने काउट सेट-जेर्मेन* का नाम तो सुना होगा, जिसके बारे मे बडी-बडी अद्भुत बाते कही जाती है। आपको यह भी मालूम होगा कि उसने अपने को अमर यहूदी, जीवन-अमृत और पारस का आविष्कारक आदि, आदि बताया था। लोग ढोगी-पाखडी कहकर उसका मजाक उडाते थे और काज़ानोवा ने** अपनी टिप्पणियो मे उसे जासूस कहा है। ऐसी रहस्यपूर्ण ख्याति के बावजूद सेट-जेर्मेन बहुत ही सम्मानित व्यक्तित्व रखता था और सोसाइटी मे बडा ही कृपालु तथा विनयी-शिष्ट व्यक्ति माना जाता था। दादी अभी तक उसको प्रेम-दीवानी

* १८वी शताब्दी के अन्त का फ़ासीसी कीमियागर और जोखिमबाज़। – स०

** प्रसिद्ध इतालवी जोखिमबाज़ (१७२५–१७९८), जिसने बडे दिलचस्प सस्मरण लिखे है। – स०

है और अगर कोई अनादर से उसकी चर्चा करता है, तो वह बिगड़ उठती है। दादी जानती थी कि सेंट-जेर्मेन खासा अमीर आदमी है। उसने उसी से मदद लेनी की सोची। उसके नाम एक रुक्क़ा लिख भेजा जिसमें अनुरोध किया कि वह फ़ौरन उसके पास चला आये।

"सनकी बूढ़ा उसी वक़्त आ गया और दादी को उसने बहुत ही दुखी पाया। दादी ने अपने पति की क्रूरता को काले से काले रंग में पेश किया और आखिर यह कहा कि वह उसकी मैत्री और कृपालुता पर ही पूरी आस लगाये हुए है।

"सेंट-जेर्मेन सोच में पड़ गया।

"'यह रक़म तो मैं आपको दे सकता हूं,' वह बोला, 'लेकिन जानता हूं कि जब तक आप यह रक़म मुझे लौटा नहीं देंगी, आपको चैन नहीं आयेगा। मैं आपके लिये नई परेशानियां पैदा नहीं करना चाहता। एक और रास्ता है – आप यह रक़म वापस जीत सकती हैं।' – 'किन्तु कृपालु काउंट,' दादी ने जवाब दिया, 'मैं तो यह कह रही हूं कि हमारे पास पैसे ही नहीं हैं।' – 'पैसों की कोई ज़रूरत नहीं,' सेंट-जेर्मेन ने दादी की बात काटी, 'आप पूरी तरह मेरी बात सुनने की कृपा करें।' इतना कहकर उसने दादी को वह राज़ बताया जिसे जानने के लिये हममें से हर कोई बड़ी ख़ुशी से भारी क़ीमत अदा कर देता ..."

जवान जुआरी अब बहुत ही ध्यान से बात सुनने लगे। तोम्स्की ने पाइप सुलगाया, कश खींचा और अपनी बात आगे बढ़ायी।

"दादी उसी शाम को वेर्साल, au jeu de la Reine* में पहुंची। ड्यूक द' ओरलिआन पत्ते बांट रहा था। दादी ने क़र्ज़ की रक़म न लाने के लिये ज़रा माफ़ी मांगी, अपनी सफ़ाई में छोटा-सा क़िस्सा सुनाया और ड्यूक के सामने जुआ खेलने बैठ गयी। दादी ने तीन पत्ते चुने, एक के बाद दूसरा पत्ता चला, तीनों पत्ते जीतनेवाले निकले और दादी ने अपना सारा ऋण बराबर कर दिया।"

"संयोग की बात थी!" एक मेहमान ने कहा।

"मनगढ़न्त क़िस्सा है!" हेर्मन्न ने राय ज़ाहिर की।

"शायद निशानीवाले पत्ते थे?" तीसरा कह उठा।

---

* महारानी के यहां ताश का खेल। (फ़्रांसीसी)

"मैं ऐसा नही सोचता हू," तोम्स्की ने बडी शान मे जवाब दिया।

"भई वाह!" नारूमोव बोला, "तुम्हारी ऐसी दादी है जो लगातार जीतनेवाले तीन पत्तो का अनुमान लगा सकती है और तुमने अभी तक उससे यह राज नही जाना?"

"मामला इतना सीधा-सादा नही है!" तोम्स्की ने जवाब दिया, "मेरे पिताजी समेत दादी के चार बेटे थे। चारो ही खूब जुआ खेलते थे और दादी ने उनमे से किसी को भी अपना राज नही बताया, गो यह उनके लिये और खुद मेरे लिये भी कुछ बुरा न होता। लेकिन मेरे चाचा, काउट इवान इल्यीच ने मुझे यह किस्सा सुनाया और कसम खाकर इसके बारे मे यकीन दिलाया। दूसरी दुनिया मे पहुंच चुका चाप्लीत्स्की, वही चाप्लीत्स्की जो लाखो-करोडो उडाकर बडी मुहताजी मे मरा, अपनी जवानी मे एक बार तीन लाख रूबल हार गया—याद आ रहा है जोरिच* के पास। वह बहुत ही परेशान था। दादी जवान लोगो की ऐसी शरारतो, ऐसी हरकतो के मामले मे बडी कठोर थी, लेकिन न जाने क्यो, उसे चाप्लीत्स्की पर रहम आ गया। उसने उसे तीन पत्ते बताये, यह कहा कि एक के बाद एक को चले और साथ ही उससे यह वचन ले लिया कि वह फिर कभी जुआ नही खेलेगा। चाप्लीत्स्की अपने खुशकिस्मत प्रतिद्वन्द्वी के यहा गया और वे जुआ खेलने बैठे। उसने पहले पत्ते पर पचास हजार का दाव लगाया और जीत गया, दूसरे पत्ते पर इस दाव को दुगुना कर दिया, तीसरे पर चौगुना—इस तरह हारी हुई सारी रकम लौटाने के अलावा वह कुछ जीत भी गया

"लेकिन अब सोना चाहिये—पौने छ बज गये हैं।"

वास्तव मे ही उजाला होने लगा था। जवान लोगो ने जाम खाली किये और अपने-अपने घरो को चल दिये।

---

* येकातेरीना द्वितीय का एक कृपापात्र, जुए का दीवाना (१७४५–१७९९)।—सं०

"क्या मतलब, grand'maman?"

"कोई ऐसा उपन्यास जिसमें नायक न तो अपने पिता और न ही मां का गला घोंटे और जिसमें लाशें न डुबोयी जायें। मैं डूबी लाशों से बहुत डरती हूं!"

"आजकल ऐसे उपन्यास नहीं हैं। आप रूसी उपन्यास पढ़ना नहीं चाहतीं?"

"क्या रूसी उपन्यास भी हैं?.. भेज देना भैया, कृपया भेज देना!"

"माफ़ी चाहता हूं, grand'maman, मैं जाने की जल्दी में हूं... माफ़ कीजिये, लीज़ावेता इवानोव्ना! आपने ऐसा क्यों सोचा कि नारू-मोव इंजीनियर है?"

और तोम्स्की शृंगार-कक्ष से बाहर चला गया।

लीज़ावेता इवानोव्ना अकेली रह गयी। उसने कसीदाकारी का काम छोड़ दिया और खिड़की से बाहर झांकने लगी। शीघ्र ही कोने-वाले घर के पीछे से सड़क के पार एक जवान फ़ौजी अफ़सर दिखाई दिया। लीज़ा के गालों पर लाली दौड़ गयी। वह फिर से कसीदा काढ़ने लगी और उसने किरमिच पर अपना सिर झुका लिया। इसी समय पूरी तरह से सजी-धजी हुई काउंटेस पर्दों के पीछे से बाहर आई।

"लीज़ा, बग्घी जोतने का आदेश दो," उसने कहा, "हम घूमने जायेंगी।"

लीज़ा कसीदाकारी छोड़कर उठी और अपना काम समेटने लगी।

"क्या बात है, लीज़ा! क्या तुम बहरी हो?" काउंटेस चिल्ला उठी। "जल्दी से बग्घी जोतने का आदेश दो।"

"अभी!" युवती ने धीरे से जवाब दिया और प्रवेश-कक्ष की ओर भाग गयी।

नौकर कमरे में आया और उसने प्रिंस पावेल अलेक्सान्द्रोविच की ओर से काउंटेस को पुस्तकें दीं।

"अच्छी बात है! धन्यवाद दे दीजिये," काउंटेस ने कहा। "लीज़ा, लीज़ा! कहां भागी जा रही हो तुम?"

"कपड़े बदलने के लिये।"

"बदल लेना कपड़े, ऐसी क्या जल्दी है। यहां बैठो। पहला खण्ड खोलो और मुझे पढ़कर सुनाओ..."

युवती ने किताब लेकर कुछ पक्तिया पढी।

"जोर से!" काउटेस ने कहा। "तुम्हे क्या हुआ है, लीजा? क्या तुम्हारी आवाज जाती रही? ज़रा रुको—पैर रखने की यह चौकी जरा मेरी तरफ खिसका दो, और अधिक निकट.. तो पढो!"

लीजावेता इवानोव्ना ने दो पृष्ठ और पढे। काउटेस ने जम्हाई ली।

"फेंक दो इस किताब को," उसने कहा, "क्या बकवास है यह! प्रिस पावेल को वापस भिजवा दो और धन्यवाद देने को कह देना... तो बग्घी का क्या हुआ?"

"बग्घी तैयार है," लीज़ावेता इवानोव्ना ने बाहर झाककर जवाब दिया।

"तुमने कपडे क्यो नही बदले?" काउटेस ने पूछा, "हमेशा तुम्हारा इन्तज़ार करना पडता है! बडा मुश्किल है यह तो बर्दाश्त करना!"

लीजा अपने कमरे में भाग गयी। दो मिनट भी नही गुज़रे कि काउटेस पूरे जोर से घण्टी बजाने लगी। एक दरवाजे से तीन नौकरानिया और दूसरे से एक नौकर भागा आया।

"तुम्हें जब बुलाया जाता है, तो तुम लोग उसी वक्त क्यो नही आते?" काउटेस ने उनसे कहा। "लीजावेता इवानोव्ना को बताओ कि मैं उसकी राह देख रही हू।"

लीज़ावेता इवानोव्ना चोगे जैसी पोशाक और टोपी पहने हुए भीतर आई।

"आखिर तो आ गयी तुम!" काउटेस ने कहा। "खूब बनाव-सिगार किया है! यह किसलिये भला? किसको मोहित करना चाहती हो? मौसम कैसा है? लगता है हवा है।"

"नही, मालकिन! बिल्कुल हवा नही है!" नौकर ने जवाब दिया।

"तुम लोग हमेशा वही कह देते है जो तुम्हारे मुह मे आ जाता है! खिडकी का ऊपरवाला शीशा खोलो तो। ठीक वही मामला है—हवा है, और सो भी ठण्डी! बग्घी खुलवा दीजिये! लीजा, हम नहीं जायेगी—बनने-ठनने की कोई ज़रूरत नही थी।"

"यह है मेरी जिन्दगी!" लीज़ावेता इवानोव्ना ने सोचा।

वास्तव मे ही लीजावेता इवानोव्ना बडी बदकिस्मत थी।

दांते ने कहा है कि परायी रोटी कड़ुवी होती है और पराये घर की पैड़ियों पर चढ़ना मुश्किल होता है। दूसरे पर निर्भरता की कटुता को यदि जानी-मानी वुढ़िया की आश्रिता, ग़रीब लड़की नहीं जानेगी, तो कौन जानेगा? यह सच है कि काउंटेस दिल की वुरी नहीं थी, लेकिन सोसाइटी द्वारा विगाड़ी गयी सभी औरतों की तरह मनमानी करती थी, कंजूस और निर्मम स्वार्थ में डूवी हुई थी, जैसे कि वे सभी वूढ़े लोग होते हैं जो अपने ज़माने में सारी कोमल भावनायें लुटाकर वर्त्तमान के प्रति उदासीन हो जाते हैं। वह ऊंचे समाज की सारी चहल-पहल में हिस्सा लेती थी, वॉल-नृत्यों में जाती थी, जहां पुराने ढंग से रंगी-चुनी और पुराने फ़ैशन के कपड़े पहने हुए नाच के हाल की भद्दी और ज़रूरी सजावट वनी वैठी रहती थी; एक प्रचलित रस्म के अनुरूप नवागत अतिथि उसके पास आते, वहुत झुककर उसका अभिवादन करते और वाद में कोई भी उसमें दिलचस्पी न लेता। सारे शहर को ही वह अपने यहां आमंत्रित करती, कड़ाई से आचार-व्यवहार को निभाती और किसी को भी चेहरे से न जानती-पहचानती। उसकी हवेली और वाहर वने क्वार्टरों में रहनेवाले अनेक नौकर-चाकर, जिनकी चर्वी वढ़ती जाती थी और वाल सफ़ेद होते जाते थे, जैसा चाहते थे, वैसा करते थे और मरणासन्न वुढ़िया को अधिक से अधिक लूटने के मामले में एक-दूसरे से होड़ लेते थे। लीज़ावेता इवानोव्ना घरेलू यातनायें-यन्त्रणायें सहती थी। वह चाय वनाती तो फ़ालतू चीनी ख़र्च करने के लिए उसे डांटा-डपटा जाता; वह उपन्यास पढ़कर सुनाती, तो लेखक की सभी ग़लतियों के लिये उसे ही दोषी ठहराया जाता, काउंटेस के सैर-सपाटे के समय वह उसके साथ रहती और मौसम तथा सड़क की ख़रावी के लिए भी जवावदेह होती। उसका वेतन नियत था जो उसे कभी पूरी नहीं मिलता था, लेकिन उससे यह मांग की जाती थी कि वह सभी की तरह पहने-ओढ़े यानी वहुत कम लोगों की तरह। ऊंचे समाज में उसकी भूमिका वहुत ही दयनीय होती थी। उसे सभी जानते थे, मगर कोई भी उसकी तरफ़ ध्यान नहीं देता था; वॉल-नृत्यों में वह केवल तभी नाचती थी जव vis-á-vis* न मिलती और महिलायें हर वार ही, जव उन्हें अपने साज-

---

* नृत्य-संगिनी। (फ़्रांसीसी)

सिगार मे कुछ ठीक-ठाक करना होता, उसका हाथ थामकर उसे अपने साथ शृगार-कक्ष मे ले जाती। वह स्वाभिमानी थी, अपनी स्थिति के बारे मे पूरी तरह सजग थी और इसलिये अपने इर्द-गिर्द नजर डालती हुई बडी बेसब्री से ऐसे व्यक्ति को ढूढती रहती जो उसे इस हालत से उबार सके। किन्तु अपने लाभ के फेर मे पडे हुए दम्भी जवान लोग उसकी ओर कोई ध्यान नही देते थे, यद्यपि लीजावेता इवानोव्ना उन गुस्ताख और निठुर युवतियो की तुलना मे कही अधिक प्यारी थी, जिनके गिर्द वे मडराते रहते थे। कितनी बार बडे ही ठाठदार, मगर ऊब भरे मेहमानखाने से दबे पाव निकलकर वह अपने मामूली-से कमरे मे जाकर रोने लगती, जहा कागज की दीवारी छीट से मढी हुई लकडी की ओटे थी, अलमारी थी, छोटा-सा दर्पण और रगा हुआ पलग था और जहा ताबे के शमादान मे एक ही बत्ती धीमी-धीमी जलती रहती थी।

एक बार—यह इस उपन्यासिका के आरम्भ मे वर्णित रात के दो दिन बाद और उस दृश्य के, जिसका हमने अभी उल्लेख किया है, एक सप्ताह पहले हुआ—लीजावेता इवानोव्ना ने खिडकी के पास बैठे और कशीदाकारी करते हुए सयोग से बाहर सडक पर नजर डाली और एक जवान फौजी इजीनियर को निश्चल तथा अपनी खिडकी पर नजर टिकाये खडा देखा। लीजा ने सिर झुका लिया और फिर से कढाई करने लगी। पाच मिनट बाद उसने फिर से उधर देखा—जवान अफसर उसी जगह पर खडा हुआ था। राह चलते अफसरो के साथ आखे लडाने की आदत न होने के कारण उसने सडक की ओर देखना बन्द कर दिया और सिर ऊपर उठाये बिना लगभग दो घण्टो तक अपने काम मे लगी रही। दोपहर के भोजन का समय हो गया। वह उठी, कशीदाकारी का सामान समेटने लगी और अनचाहे ही सडक की ओर देख लेने पर उसे फिर से वही अफसर वहा खडा दिखाई दिया। उसे यह काफी अजीब-सा लगा। दिन के भोजन के बाद कुछ परेशानी-सी महसूस करते हुए वह खिडकी के पास गयी, किन्तु अफसर वहा नही था—और वह उसके बारे मे भूल गयी।

दो दिन बाद, काउटेस के साथ बग्घी मे बैठने के लिये बाहर आने पर उसने उसे फिर से देखा। वह ऊदबिलाव की खाल के कालर मे अपना चेहरा ढके हुए दरवाजे के पास ही खडा था और टोप के

दांते ने कहा है कि परायी रोटी कड़ुवी होती है और पराये घर की पैड़ियों पर चढ़ना मुश्किल होता है। दूसरे पर निर्भरता की कटुता को यदि जानी-मानी बुढ़िया की आश्रिता, ग़रीब लड़की नहीं जानेगी, तो कौन जानेगा? यह सच है कि काउंटेस दिल की बुरी नहीं थी, लेकिन सोसाइटी द्वारा बिगाड़ी गयी सभी औरतों की तरह मनमानी करती थी, कंजूस और निर्मम स्वार्थ में डूबी हुई थी, जैसे कि वे सभी बूढ़े लोग होते हैं जो अपने ज़माने में सारी कोमल भावनायें लुटाकर वर्त्तमान के प्रति उदासीन हो जाते हैं। वह ऊंचे समाज की सारी चहल-पहल में हिस्सा लेती थी, वॉल-नृत्यों में जाती थी, जहां पुराने ढंग से रंगी-चुनी और पुराने फ़ैशन के कपड़े पहने हुए नाच के हाल की भद्दी और ज़रूरी सजावट बनी बैठी रहती थी; एक प्रचलित रस्म के अनुरूप नवागत अतिथि उसके पास आते, बहुत झुककर उसका अभिवादन करते और बाद में कोई भी उसमें दिलचस्पी न लेता। सारे शहर को ही वह अपने यहां आमंत्रित करती, कड़ाई से आचार-व्यवहार को निभाती और किसी को भी चेहरे से न जानती-पहचानती। उसकी हवेली और बाहर बने क्वार्टरों में रहनेवाले अनेक नौकर-चाकर, जिनकी चर्बी बढ़ती जाती थी और बाल सफ़ेद होते जाते थे, जैसा चाहते थे, वैसा करते थे और मरणासन्न बुढ़िया को अधिक से अधिक लूटने के मामले में एक-दूसरे से होड़ लेते थे। लीज़ावेता इवानोव्ना घरेलू यातनायें-यन्त्रणायें सहती थी। वह चाय बनाती तो फ़ालतू चीनी खर्च करने के लिए उसे डांटा-डपटा जाता; वह उपन्यास पढ़कर सुनाती, तो लेखक की सभी ग़लतियों के लिये उसे ही दोषी ठहराया जाता, काउंटेस के सैर-सपाटे के समय वह उसके साथ रहती और मौसम तथा सड़क की खराबी के लिए भी जवाबदेह होती। उसका वेतन नियत था जो उसे कभी पूरी नहीं मिलता था, लेकिन उससे यह मांग की जाती थी कि वह सभी की तरह पहने-ओढ़े यानी बहुत कम लोगों की तरह। ऊंचे समाज में उसकी भूमिका बहुत ही दयनीय होती थी। उसे सभी जानते थे, मगर कोई भी उसकी तरफ़ ध्यान नहीं देता था; वॉल-नृत्यों में वह केवल तभी नाचती थी जब vis-á-vis* न मिलती और महिलायें हर बार ही, जब उन्हें अपने साज-

---

* नृत्य-संगिनी। (फ़्रांसीसी)

सिंगार में कुछ ठीक-ठाक करना होता, उसका हाथ थामकर उसे अपने साथ शृंगार-कक्ष में ले जाती। वह स्वाभिमानी थी, अपनी स्थिति के बारे में पूरी तरह सजग थी और इसलिये अपने इर्द-गिर्द नजर डालती हुई बड़ी बेसब्री से ऐसे व्यक्ति को ढूंढती रहती जो उसे इस हालत से उबार सके। किन्तु अपने लाभ के फेर में पड़े हुए दम्भी जवान लोग उसकी ओर कोई ध्यान नहीं देते थे, यद्यपि लीजावेता इवानोव्ना उन गुस्ताख और निठुर युवतियों की तुलना में कहीं अधिक प्यारी थी, जिनके गिर्द वे मंडराते रहते थे। कितनी बार बड़े ही ठाठदार, मगर ऊब भरे मेहमानखाने से दबे पांव निकलकर वह अपने मामूली-से कमरे में जाकर रोने लगती, जहां कागज की दीवारी छींट से मढ़ी हुई लकड़ी की ओटें थीं, अलमारी थी, छोटा-सा दर्पण और रंगा हुआ पलंग था और जहां तांबे के शमादान में एक ही बत्ती धीमी-धीमी जलती रहती थी।

एक बार — यह इस उपन्यासिका के आरम्भ में वर्णित रात के दो दिन बाद और उस दृश्य के, जिसका हमने अभी उल्लेख किया है, एक सप्ताह पहले हुआ — लीजावेता इवानोव्ना ने खिड़की के पास बैठे और कसीदाकारी करते हुए संयोग से बाहर सड़क पर नजर डाली और एक जवान फौजी इंजीनियर को निश्चल तथा अपनी खिड़की पर नजर टिकाये खड़ा देखा। लीजा ने सिर झुका लिया और फिर से कढ़ाई करने लगी। पांच मिनट बाद उसने फिर से उधर देखा — जवान अफसर उसी जगह पर खड़ा हुआ था। राह चलते अफसरों के साथ आंखें लड़ाने की आदत न होने के कारण उसने सड़क की ओर देखना बन्द कर दिया और सिर ऊपर उठाये बिना लगभग दो घण्टों तक अपने काम में लगी रही। दोपहर के भोजन का समय हो गया। वह उठी, कसीदाकारी का सामान समेटने लगी और अनचाहे ही सड़क की ओर देख लेने पर उसे फिर से वही अफसर वहां खड़ा दिखाई दिया। उसे यह काफी अजीब-सा लगा। दिन के भोजन के बाद कुछ परेशानी-सी महसूस करते हुए वह खिड़की के पास गयी, किन्तु अफसर वहां नहीं था — और वह उसके बारे में भूल गयी।

दो दिन बाद, काउंटेस के साथ बग्घी में बैठने के लिये बाहर आने पर उसने उसे फिर से देखा। वह ऊदबिलाव की खाल के कालर में अपना चेहरा ढके हुए दरवाजे के पास ही खड़ा था और टोप के

नीचे से उसकी काली आंखें चमक रही थीं। कारण न जानते हुए ली-ज़ावेता इवानोव्ना डर गयी और ऐसी धड़कन अनुभव करते हुए, जिसे स्पष्ट करना सम्भव नहीं था, बग्घी में बैठ गयी।

घर लौटते ही वह खिड़की की तरफ़ भागी गई—अफ़सर उस पर आंखें जमाये पहलेवाली जगह पर खड़ा था। जिज्ञासा से व्यथित और ऐसी भावना से विह्वल, जो उसके लिए सर्वथा नई थी, वह खिड़की से पीछे हट गयी।

इस समय से एक भी ऐसा दिन नहीं बीतता था कि यह जवान अफ़सर नियत समय पर इनके घर की खिड़की के नीचे प्रकट न हो। इन दोनों के बीच एक अनजाना सम्बन्ध-सूत्र स्थापित हो गया। अपनी जगह पर बैठकर काम करते हुए वह उसका निकट आना अनुभव कर लेती, सिर ऊपर उठाती और हर दिन अधिकाधिक देर तक उसकी ओर देखती रहती। ऐसा लगता कि जवान अफ़सर इसके लिये उसके प्रति कृतज्ञता अनुभव करता था। जवानी की पैनी दृष्टि से वह यह देखे बिना न रहती कि जब उनकी नज़रें मिलती, तो जवान के पीले गालों पर झटपट सुर्खी दौड़ जाती। एक हफ़्ते बाद वह उसकी ओर देखकर मुस्करा दी...

तोम्स्की ने अपने मित्र का परिचय करवाने के लिये जब काउंटेस से अनुमति चाही थी, तो इस बेचारी लड़की का दिल धड़क उठा था। किन्तु यह मालूम होने पर कि नारूमोव इंजीनियर नहीं, गार्डों की घुड़सेना का अफ़सर है, उसे इस बात का अफ़सोस हुआ कि अनुचित प्रश्न पूछकर उसने चंचल तोम्स्की के सामने अपना राज़ खोल दिया था।

हेर्मन्न रूस में ही बस गये एक जर्मन का बेटा था, जो उसके लिए बहुत छोटी-सी पूंजी छोड़ गया था। अपनी आत्म-निर्भरता को सुदृढ़ करने की आवश्यकता के बारे में पक्का विश्वास होने के कारण हेर्मन्न अपनी पूंजी का सूद तक भी नहीं लेता था, केवल वेतन पर गुज़ारा करता था और अपने दिल की कोई छोटी-सी सनक-तरंग भी पूरी नहीं करता था। वैसे वह अपने ही में सीमित और महत्त्वाकांक्षी था और उसके साथियों को उसकी अत्यधिक मितव्ययता की खिल्ली उड़ाने का बहुत ही कम मौक़ा मिलता था। वह बहुत ही भावावेशी और प्रबल कल्पना-शक्ति का धनी था, किन्तु उसकी दृढ़ता ने उसे जवानी की सामान्य भूलों-भ्रांतियों से बचा लिया। उदाहरण के लिए,

यद्यपि उसकी आत्मा में जुए का शौक घर किये बैठा था, तथापि वह कभी पत्ते हाथ में नही लेता था, क्योंकि यह हिसाब लगाता था कि उसकी सम्पत्ति उसे इस बात की अनुमति नही देती थी (उसी के शब्दों में) "कि वह कुछ फालतू पाने की उम्मीद मे उसे भी कुर्बान कर दे जो एकदम जरूरी है" – और फिर भी वह सारी-सारी रात जुए की मेजो के पास बैठा हुआ खेल के उतार-चढ़ावो को बडी उत्तेजना से देखता रहता।

तीन पत्तो के किस्से ने उसकी कल्पना को अत्यधिक प्रभावित किया और सारी रात वह उसके दिमाग से नही निकला। "कैसा रहे," अगली शाम को पीटर्सबर्ग में घूमते हुए वह सोचता रहा, "कैसा रहे, अगर बूढी काउंटेस मेरे सामने अपना राज खोल दे! या फिर निश्चित रूप से जीतनेवाले तीन पत्ते ही मुझे बता दे! मैं अपनी किस्मत क्यो न आजमाकर देखू? उससे जान-पहचान करू, उसका कृपा-पात्र बन जाऊ – शायद उसका प्रेमी हो जाऊ – लेकिन इस सब के लिये तो वक्त चाहिये – और उसकी उम्र है सत्तासी साल – वह एक हफ्ते बाद, दो दिन बाद भी मर सकती है! और फिर खुद वह किस्सा भी? क्या उस पर यकीन किया जा सकता है? नही! मितव्ययता, सयतता और श्रमप्रियता – यही भरोसे के मेरे तीन पत्ते है, यही मेरी पूजी को तिगुना, सात गुना कर सकते हैं और मुझे चैन तथा स्वावलम्बिता प्रदान कर सकते है!"

इसी तरह से सोच-विचार करते हुए वह पीटर्सबर्ग की एक मुख्य सडक पर प्राचीन वास्तुकलावाले एक घर के सामने जा निकला। सडक बग्घियो से अटी पडी थी और जगमगाते दरवाजे के सामने एक के बाद एक बग्घी आकर रुक रही थी। बग्घियो में से हर क्षण किसी जवान सुन्दरी का नाजुक पाव या छनकती एडीवाला घुटनो तक का बूट, या किसी राजनयिक की धारीदार लम्बी जुराब और फैसी जूता बाहर आता। फर-कोट और बरसातिया अपनी झलक दिखाती हुई ठाठदार दरबान के पास से गुजरती। हेर्मन्न यहा रुक गया।

"यह किसका घर है?" उसने नुक्कड़वाले पुलिसमैन से पूछा।

"काउंटेस का," पुलिसमैन ने जवाब दिया।

हेर्मन्न का दिल धडक उठा। अनूठा किस्सा फिर से उसकी कल्पना मे सजीव हो गया। वह इस घर की स्वामिनी और उसकी अद्भुत क्षमता-

ओं के बारे में सोचता हुआ इसके आस-पास आने-जाने लगा। अपने साधारण-से निवासस्थान पर वह काफ़ी रात गये लौटा, देर तक सो नहीं सका और जब नींद उस पर हावी हो गयी, तो सपने में उसे पत्ते, हरे मेज़पोश से ढकी मेज़, नोटों की गड्डियां और सोने की मुद्राओं के ढेर नजर आये। वह एक के बाद एक पत्ता चलता था, दृढ़ता से दांव दुगुने करता जाता था, लगातार जीतता था, सोने की मुद्राओं के ढेरों को अपनी तरफ़ खिसका लेता था और जेबों में नोट ठूंसता जाता था। काफ़ी देर से सुबह उठने पर उसने अपनी काल्पनिक दौलत के खो जाने के कारण गहरी सांस ली, फिर से शहर का चक्कर लगाने चल दिया और पुनः अपने को काउंटेस ... के घर के सामने पाया। कोई रहस्यमयी शक्ति मानो उसे उस घर की ओर खींच ले जाती थी। वह रुका और खिड़कियों की तरफ़ देखने लगा। एक खिड़की के पीछे उसे काले बालोंवाला सिर दिखायी दिया जो सम्भवतः किसी किताब या काम पर झुका हुआ था। सिर ऊपर को उठा। हेर्मन्न को ताज़गी लिये हुए चेहरा और काली आंखें नज़र आईं। इस क्षण ने उसके भाग्य का निर्णय कर दिया।

(३)

Vous m'écrivez, mon ange, des
lettres de quatre pages
plus vite que je ne puis les lire.*

पत्र-व्यवहार

लीज़ावेता इवानोव्ना ने चोग़ा और टोपी उतारे ही थे कि काउंटेस ने उसे बुलवा भेजा और फिर से बग्घी तैयार करवाने का आदेश दिया। वे बग्घी में बैठने के लिये गयीं। जब दो नौकर बूढ़ी काउंटेस को उठाकर बग्घी के दरवाज़े में घुसेड़ रहे थे, लीज़ावेता इवानोव्ना को बग्घी के पहिये के बिल्कुल निकट ही अपना इंजीनियर दिखाई दिया; इंजी-

---

* मेरे फ़रिश्ते, मैं जितनी जल्दी उन्हें पढ़ पाता हूं, तुम मुझे चार-चार पृष्ठों की चिट्ठियां उससे कहीं ज्यादा जल्दी लिखती हो। (फ़्रांसीसी)

नियर ने उसका हाथ पकड़ लिया; डर के मारे लीज़ा की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी, जवान अफसर गायब हो गया और एक पत्र लीज़ा के हाथ मे रह गया। लीज़ा ने उसे अपने दस्ताने मे छिपा लिया और रास्ते भर उसे किसी बात की कोई सुध-बुध ही न रही। बग्घी मे जाते हुए काउटेस को लगातार कुछ न कुछ पूछते जाने की आदत थी: हमारे निकट से अभी कौन गुजरा था? – इस पुल का क्या नाम है? – वहा साइनबोर्ड पर क्या लिखा है? लीजावेता इवानोव्ना ने हर बार ही अटकल-पच्चू और असगत जवाब दिये। इससे काउटेस की झल्लाहट बढ़ती गयी।

"तुम्हे क्या हो गया है, री? तुम्हारा दिमाग तो नही चल निकला? तुम या तो मेरी बात सुनती नही हो या समझती नही हो? भगवान की कृपा से मैं न तो तुतलाती हू और न ही अभी मेरी अक्ल ने जवाब दिया है!"

लीजावेता इवानोव्ना उसे सुन ही नही रही थी। घर लौटने पर वह अपने कमरे मे भाग गयी, उसने दस्ताने मे से पत्र निकाला जो मुहरबन्द नही था। लीजावेता इवानोव्ना ने उसे पढ़ा। पत्र मे प्यार की स्वीकृति थी उसमे कोमल भावनाओ की अभिव्यक्ति थी, वह आदरपूर्ण था तथा किसी जर्मन उपन्यास से शब्दश नकल किया गया था। पर चूकि लीजावेता इवानोव्ना जर्मन भाषा नही जानती थी, इसलिये उसे इस पत्र से बहुत खुशी हुई।

किन्तु साथ ही इस पत्र से वह बड़ी बेचैन भी हो उठी। जिन्दगी मे पहली बार एक जवान मर्द के साथ उसके गुप्त और घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हो रहे थे। उसके ऐसे साहस से वह दहल उठी। अपनी गति-विधि की असावधानी के लिए उसने अपनी भर्त्सना की और यह नही समझ पा रही थी कि वह क्या करे – खिड़की के पास बैठना छोड़ दे और लापरवाही दिखाकर जवान अफसर के जोश पर आगे के लिये पानी डाल दे? उसे उसका पत्र लौटा दे? रुखाई और दृढता से उसे जवाब दे दे? वह किसी के साथ भी सलाह-मशविरा नही कर सकती थी, उसकी न तो सहेलिया थी और न ही कोई सरक्षिका। लीजावेता इवानोव्ना ने उत्तर देने का निर्णय किया।

वह लिखने की मेज पर बैठ गयी, उसने कागज-कलम सामने रखे और सोच मे डूब गयी। उसने कई बार अपना पत्र शुरु किया

और उसे फाड़ डाला – कभी तो वह उसे बहुत कोमल और कभी बहुत कठोर प्रतीत हुआ। आखिर वह ऐसी कुछ पंक्तियां लिखने में सफल हो गयी जिनसे उसे सन्तोष हुआ। "मुझे विश्वास है," उसने लिखा, "कि आपका इरादा नेक है, कि आप अच्छी तरह से सोचे-समझे बिना कोई क़दम उठाकर मेरे दिल को ठेस नहीं लगाना चाहते हैं, लेकिन हमारी जान-पहचान की इस तरह से शुरुआत नहीं होनी चाहिये। आपका पत्र लौटा रही हूं और आशा करती हूं कि भविष्य में आप मुझे अकारण अनादर की शिकायत करने का मौक़ा नहीं देंगे।"

अगले दिन हेर्मन्न को आते देखकर लीज़ा कशीदाकारी छोड़कर उठी, साथ के बड़े कमरे में गयी, उसने खिड़की का ऊपरी भाग खोला और जवान अफ़सर की चुस्ती-फुर्ती पर भरोसा करते हुए पत्र नीचे फेंक दिया। हेर्मन्न भागकर आया, उसने पत्र उठा लिया और पेस्ट्री की दुकान में जाकर उसे खोला। उसे उसमें अपना और लीज़ावेता इवानोव्ना का पत्र मिला। उसे ऐसी ही आशा थी और वह अपनी इस साज़िशी कार्रवाई में बेहद खोया हुआ घर लौटा।

इसके तीन दिन बाद फ़ैशन की दुकान से चंचल आंखोंवाली एक लड़की लीज़ावेता इवानोव्ना के पास एक रुक़्क़ा लेकर आई।

लीज़ावेता इवानोव्ना ने मन में यह घबराहट अनुभव करते हुए कि उससे बिल चुकाने की मांग की गयी होगी, लिफ़ाफ़ा खोला और सहसा हेर्मन्न की लिखावट पहचान ली।

"मेरी प्यारी, तुमसे भूल हो गयी है, यह रुक़्क़ा मेरे नाम नहीं है।"

"नहीं, आप ही के नाम है!" साहसी लड़की ने शरारतभरी मुस्कान को छिपाये बिना जवाब दिया। "इसे पढ़ने की कृपा कीजिये!"

लीज़ावेता इवानोव्ना ने रुक़्क़े पर जल्दी से नज़र डाल ली। हेर्मन्न ने मिलन की मांग की थी।

"ज़रूर भूल हुई है!" मिलन की मांग के उतावलेपन और हेर्मन्न द्वारा उपयोग में लाये गये तरीक़े से भयभीत होकर लीज़ावेता इवानोव्ना ने कहा। "सम्भवतः यह मेरे नाम नहीं लिखा गया है!" और उसने पत्र के छोटे-छोटे टुकड़े कर डाले।

"अगर आपके नाम नहीं था, तो आपने इसे फाड़ा क्यों?" लड़की ने प्रश्न किया, "मैं इसे उसी को लौटा देती जिसने भेजा था।"

"प्यारी, कृपया भविष्य मे मेरे पास पत्र नही लाइयेगा," लडकी की टिप्पणी पर भडकते हुए लीज़ावेता इवानोव्ना ने कहा। "इसके अलावा जिसने तुम्हे भेजा है, उससे यह कह देना कि उसे शर्म आनी चाहिये. "

किन्तु हेर्मन्न हतोत्साहित नही हुआ। लीज़ावेता इवानोव्ना को किसी न किसी ढग से हर दिन ही उसका पत्र मिलता। अब ये पत्र जर्मन से अनूदित नही होते थे। हेर्मन्न भावनाओ मे ओत-प्रोत होकर लिखता और अपनी ही भाषा का उपयोग करता उनमे उसकी दृढ इच्छा और बेलगाम कल्पना की उडान की गडबड भी अभिव्यक्त होती। लीज़ावेता इवानोव्ना अब उन्हे लौटाने की बात भी न सोचती वह उनके रस मे डूब-डूब जाती, उनके उत्तर देने लगी और उसके पत्र हर दिन अधिकाधिक लम्बे और प्यारभरे होने गये। आखिर उसने खिडकी मे निम्न पत्र उसके नाम फेका –

"आज राजदूत के यहा बॉल-नृत्य है। काउटेस वहा जायेगी। हम दो बजे तक वहा रहेगी। मुझसे एकान्त मे मिलने का आपके लिये यह अच्छा मौका है। काउटेस के जाते ही उनके नौकर-चाकर भी निश्चय ही चले जायेगे, ड्योढी मे सिर्फ दरबान ही रह जायेगा और वह भी आम तौर पर अपने छोटे-से कमरे मे चला जाता है। साढे ग्यारह बजे आइये। सीधे सीढिया चढ जाइये। अगर प्रवेश-कक्ष मे कोई मिल जाये, तो पूछिये कि काउटेस घर पर हैं या नही। यह जवाब मिलने पर कि नही हैं, आपके सामने कोई चारा नही रह जायेगा। आपको लौटना पडेगा। अधिक सम्भावना तो इसी बात की है कि आपको कोई नही मिलेगा। नौकरानिया एक ही कमरे मे बैठी रहती हैं। प्रवेश-कक्ष मे बाये को मुड जाइये और काउटेस के शयन-कक्ष मे पहुच जाने तक सीधे ही चलते जाइये। शयन-कक्ष मे पर्दो के पीछे आपको दो छोटे-छोटे दरवाज़े दिखाई देगे. दाया दरवाज़ा अध्ययन-कक्ष की ओर ले जाता है, जहा काउटेस कभी नही जाती, बाया दरवाज़ा बरामदे की ओर खुलता है और वही एक सकरा-सा घुमावदार ज़ीना है – इसे चढकर मेरे कमरे मे पहुचा जा सकता है।"

नियत समय की प्रतीक्षा करते हुए हेर्मन्न बाघ की तरह बेचैनी अनुभव कर रहा था। रात के दस बजने पर वह काउटेस के घर के

सामने जाकर खड़ा भी हो गया था। मौसम बहुत ही बुरा था – हवा चीख-चिंघाड़ रही थी, कच्ची-गीली बर्फ़ के बड़े-बड़े फाहे-से गिर रहे थे, सड़क के लैम्प मद्धिम-सी रोशनी छिटका रहे थे और सड़कें सुनसान थीं। कभी-कभी किराये की बग्घीवाला कोचवान अपनी मरियल-सी घोड़ी को इस आशा में इधर-उधर हांकता दिखायी दे जाता कि शायद देर से घर को लौटनेवाली कोई सवारी मिल जाये। हेर्मन्न सिर्फ़ फ़ॉक-कोट पहने था और न तो हवा और न बर्फ़ का ही असर महसूस कर रहा था। आखिर काउंटेस की बग्घी दरवाज़े के सामने आकर खड़ी हो गयी। हेर्मन्न ने झुकी पीठवाली बुढ़िया को, जो सेवल का फ़र-कोट पहने थी, सहारा देकर नौकरों द्वारा बाहर लाते और उसके पीछे-पीछे हल्का-सा ओवरकोट पहने और बालों में फूल खोंसे उसकी युवा संगिनी को उसके पीछे-पीछे आते देखा। बग्घी के दरवाज़े बन्द कर दिये गये। नर्म बर्फ़ पर बग्घी मुश्किल से आगे बढ़ी। दरबान ने घर का दरवाजा बन्द कर दिया। खिड़कियों से रोशनी ग़ायब हो गयी। हेर्मन्न सूने हो गये घर के सामने आने-जाने लगा। लैम्प के पास जाकर उसने घड़ी पर नज़र डाली – ग्यारह बजकर बीस मिनट हुए थे। घड़ी की सूई पर दृष्टि टिकाये हुए सड़क की बत्ती के नीचे ही खड़ा रहकर वह शेष मिनटों के बीतने का इन्तज़ार करने लगा। ठीक साढ़े ग्यारह बजे हेर्मन्न काउंटेस के घर का दरवाज़ा लांघकर रोशनी से जगमगाती ड्योढ़ी में दाखिल हुआ। दरबान नहीं था। हेर्मन्न भागते हुए सीढ़ियां चढ़ गया, उसने प्रवेश-कक्ष का दरवाज़ा खोला और वहां पुराने ढंग की, जहां-तहां चिकने धब्बे लगी आरामकुर्सी पर एक नौकर को लैम्प के नीचे सोते पाया। हल्के और दृढ़ क़दम रखते हुए हेर्मन्न उसके पास से निकल गया। हॉल और दीवानखाने में अंधेरा था। प्रवेश-कक्ष की बहुत ही हल्की-सी रोशनी इसमें आ रही थी। हेर्मन्न ने शयन-कक्ष में प्रवेश किया। देव-प्रतिमाओं के कोने के सामने सोने का दीप जल रहा था। बेल-बूटेदार बदरंग कपड़े से मढ़ी आरामकुर्सियां और रोयें भरे तकियोंवाले सोफ़े, जिन पर से जहां-तहां सुनहरा रंग उतर चुका था, चीनी काग़ज़ी छींट से सजी दीवारों के साथ-साथ मातमी-सी तरतीब में रखे हुए थे। दीवार पर m-me Lebrun* द्वारा पेरिस में

* फ़्रांसीसी चित्रकार महिला, छविचित्रकार (१७५५–१८४२)। – सं०

बनाये गये दो छविचित्र टगे हुए थे। एक चित्र तो कोई चालीसेक साल के लाल-लाल गालो और गदराये बदनवाले पुरुष का था जो हल्के हरे रंग की वर्दी पहने था और जिसकी छाती पर सितारा दिख रहा था। दूसरा चित्र था शुक नासिकावाली जवान सुन्दरी का जिसके बाल कनपटियो पर सवरे हुए थे और गुलाब का फूल पाउडर लगे बालों की शोभा बढा रहा था। सभी कोनो मे चीनी मिट्टी की बनी चरवाहिनो की मूर्तिया, प्रसिद्ध Leroy द्वारा बनायी गयी मेज़-घडिया, सजावटी मजूषिकाये, खेलने के चक्र, पखे और महिलाओ के मनबहलाव के ऐसे खिलौने रखे हुए थे जिनका पिछली शताब्दी के अन्त मे मोंटगोल-फियर के गुब्बारे* तथा मेस्मेर के चुम्बकत्व** सहित आविष्कार किया गया था। हेर्मन्न पर्दो के पीछे गया। उनके पीछे लोहे का छोटा-सा पलंग था, दायी ओर अध्ययन-कक्ष का दरवाजा था तथा बायी ओर बरामदे की तरफ ले जानेवाला दरवाजा। हेर्मन्न ने बायी ओर का दरवाजा खोला और उसे वह सकरा तथा घुमावदार ज़ीना दिखाई दिया जिसे चढकर बेचारी लीज़ावेता इवानोव्ना के कमरे मे पहुचा जा सकता था लेकिन वह लौटा और अधेरे अध्ययन-कक्ष मे चला गया।

वक्त बहुत धीरे-धीरे बीत रहा था। सभी ओर खामोशी छाई थी। दीवानखाने मे घडी ने बारह बजाये, एक के बाद एक सभी कमरो की घडिया टनटना उठी और फिर से सब कुछ शान्त हो गया। हेर्मन्न ठण्डी अगीठी का सहारा लिये खडा था। वह शान्त था, उसका हृदय उस व्यक्ति के दिल की तरह समगति से धडक रहा था जो कोई खतरनाक, लेकिन जरूरी काम करने का फैसला कर लेता है। घडियो ने रात का एक और फिर दो बजाये और हेर्मन्न को दूरी से बग्घी के आने की आवाज सुनाई दी। अनचाहे ही उसका मन उद्विग्न हो उठा। बग्घी घर के सामने आकर रुक गयी। उसे बग्घी से नीचे उतरने की आवाज सुनाई दी। घर मे हलचल मच गयी। लोग भागते हुए

---

* फ्रासीसी आविष्कारक मोंटगोलफियर बन्धुओ ने जून १७८३ मे गर्म हवा से भरा हुआ कागजी गुब्बारा पहली बार उडाया। – स०

** यहा आस्ट्रिया के डाक्टर फान्त्स मेस्मेर (१७३४–१८१५) के इस सिद्धान्त से अभिप्राय है कि हर व्यक्ति मे "जीवयुक्त चुम्बकत्व" होता है जो लोगो को प्रभावित कर सकता है। – स०

आये, आवाज़ें गूंज उठीं और घर रोशन हो उठा। अधेड़ उम्र की तीन नौकरानियां भागी हुई सोने के कमरे में आयीं और थकान से बेहाल काउंटेस कमरे में दाख़िल होकर ऊंची टेकवाली आरामकुर्सी में ढह पड़ी। हेर्मन्न पर्दे के पीछे से झांक रहा था। लीज़ावेता इवानोव्ना उसके पास से गुज़री। हेर्मन्न को सुनाई दिया कि कैसे वह जल्दी-जल्दी अपने कमरे की ओर जानेवाले ज़ीने पर चढ़ी। उसकी आत्मा ने मानो उसे धिक्कारा और जल्द ही यह आवाज़ शान्त हो गई। वह जैसे पत्थर की तरह कठोर हो गया।

काउंटेस दर्पण के सामने अपने कपड़े उतारने लगी। नौकरानियों ने पिनें निकालकर गुलाबों से सजी उसकी टोपी और पके तथा छोटे-छोटे कटे वालोंवाले सिर से पाउडर लगा विग उतारा। पिनें वारिश की तरह उसके आस-पास गिर रही थीं। रुपहली कढ़ाईवाला पीला फ़्रॉक उसके सूजे पैरों पर जा गिरा। हेर्मन्न उसके श्रृंगार के घृणित रहस्यों को देख रहा था। आख़िर काउंटेस सोने के गाउन और टोपी में रह गयी। उसके बुढ़ापे के अधिक अनुरूप इस पोशाक में वह कम भयानक और कम भद्दी प्रतीत हो रही थी।

सभी बूढ़े लोगों की तरह काउंटेस भी अनिद्रा रोग से पीड़ित थी। कपड़े उतारने के वाद वह खिड़की के पास ऊंची टेकवाली आराम-कुर्सी पर वैठ गयी और उसने नौकरानियों को जाने का आदेश दिया। जलती मोमवत्तियोंवाले शमादान भी वाहर ले जाये गये और कमरे में फिर से केवल देव-प्रतिमाओं के सामने जल रहे दीप का प्रकाश रह गया। एकदम पीली-ज़र्द काउंटेस अपने अधरों को हिलाती और दायें-वायें डोलती हुई वैठी थी। उसकी धुंधली-धुंधली आंखें मानो सर्वथा भावहीन थीं। उसे देखते हुए ऐसा सोचा जा सकता था कि इस भयानक वुढ़िया का दायें-वायें डोलना उसकी अपनी इच्छा का नहीं, वल्कि किसी प्रेरक प्रक्रिया के प्रभाव का परिणाम है।

इस मृतप्राय चेहरे पर सहसा अवर्णनीय परिवर्तन हो गया। होंठों ने हिलना-डुलना वन्द कर दिया, आंखों में चमक आ गयी — एक अपरिचित पुरुष काउंटेस के सामने खड़ा था।

"डरिये नहीं, भगवान के लिये डरिये नहीं!" हेर्मन्न ने स्पष्ट और धीमी आवाज़ में कहा। "आपको किसी तरह की हानि पहुंचाने का मेरा कतई इरादा नहीं। मैं आपसे केवल एक कृपा का अनुरोध

करने आया हू।"

बुढिया चुपचाप उसकी ओर देख रही थी और ऐसे लगता था मानो उसने उसकी बात ही न सुनी हो। हेर्मन्न ने कल्पना की कि वह बहरी है और उसके कान पर झुककर उसने फिर से अपने वही शब्द दोहराये। बुढिया पहले की तरह ही खामोश रही।

"आप मेरी जिन्दगी को बहुत सुखी बना सकती हैं," वह कहता गया, "और आपको इसके लिये कुछ भी तो नहीं करना पडेगा. मुझे मालूम है कि आप ऐसे तीन पत्ते बता सकती हैं जिन्हे लगातार एक के बाद एक खेला जा सकता है "

हेर्मन्न चुप हो गया। उसे लगा मानो काउटेस समझ गयी है कि उससे किस बात की अपेक्षा की जा रही है, वह अपने उत्तर के लिए शब्द ढूढती-सी दिखाई दी।

"यह तो मज़ाक था," उसने आखिर जवाब दिया, "कसम खाकर कहती हू! यह मज़ाक था!"

"यह मज़ाक की बात नही है," हेर्मन्न ने झल्लाते हुए आपत्ति की। "चाप्लीत्स्की को याद कीजिये जिसे आपने हारी हुई रकम वापस जीतने मे मदद दी थी।"

काउटेस स्पष्टत बेचैनी महसूस कर रही थी। उसके चेहरे से यह पता चल रहा था कि उसके भीतर कोई भारी उथल-पुथल हो रही है, किन्तु उसमे शीघ्र ही पहले जैसी उदासीनता-निर्जीवता आ गयी।

"आप मुझे पूरे भरोसे के तीन पत्ते बता सकती हैं?" हेर्मन्न ने अपनी बात जारी रखी।

काउटेस खामोश रही। हेर्मन्न कहता गया

"किसके लिए छिपाये रखना चाहती है आप अपना राज़? नाती-पोतो के लिए? वे तो वैसे ही बडे मालदार है, पैसा क्या कीमत रखता है, उन्हे यह मालूम नही। आपके तीन पत्ते धन उडाने-लुटानेवालो की कोई मदद नही कर सकते। अपने बाप से मिली विरासत को ही जो नही सहेज सकता, वह एडी-चोटी का जोर लगाने पर भी कौडी-कौडी को मुहताज होकर मरेगा। मैं उडाऊ-लुटाऊ नही हू, पैसे की कीमत जानता हू। आपके बताये हुए तीन पत्ते मेरे लिये बेकार नही जायेगे। तो बताइये न! "

हेर्मन्न रुका और धड़कते दिल से उसके जवाव का इन्तजार करने लगा। काउंटेस खामोश रही। हेर्मन्न घुटनों के बल हो गया।

"अगर आपके हृदय ने कभी प्रेम-भावना को जाना है, अगर आपको उसके उल्लास का स्मरण है, अगर आप नवजात शिशु का रोना सुनकर एक वार भी मुस्करायी हैं, अगर आपके दिल में कभी कोई मानवीय धड़कन-स्पन्दन हुआ है, तो एक पत्नी, प्रेयसी और मां की भावनाओं के नाम पर आपकी मिन्नत करता हूं, जीवन में जो कुछ पवित्र-पावन है, उसके नाम पर अनुरोध करता हूं कि मेरी प्रार्थना को नहीं ठुकराइये! — मेरे सामने अपना रहस्य खोल दीजिये! आपको उसे छिपाये रखकर क्या लेना है? .. हो सकता है कि उसका किसी भयानक पाप के साथ सूत्र जुड़ा हुआ हो, वह शाश्वत सुख से वंचित हो, शैतान के साथ उसने कोई सांठ-गांठ कर रखी हो... सोचिये तो: आप बूढ़ी हैं, वहुत दिन नहीं जीना है आपको, — आपके पापों को मैं अपनी आत्मा पर लेने को तैयार हूं। सिर्फ़ अपना राज़ मुझे वता दीजिये। सोचिये तो, एक व्यक्ति का सुख-सौभाग्य आपके हाथों में है, केवल मैं ही नहीं, मेरे वेटे-वेटियां, पोते-पोतियां और परपोते-परपोतियां भी आपकी स्मृति का यशोगान करेंगे और उसे पावन मानेंगे..."

बुढ़िया ने जवाव में एक भी शब्द नहीं कहा।

हेर्मन्न उठकर खड़ा हो गया।

"बूढ़ी डायन!" वह दांत पीसते हुए चिल्ला उठा, "मैं तुझे जवाव देने को मजबूर कर दूंगा..."

इतना कहकर उसने जेव से पिस्तौल निकाल ली।

पिस्तौल देखकर काउंटेस ने दूसरी वार वड़ी तीव्र प्रतिक्रिया प्रकट की। उसने सिर पीछे को झटका और हाथ ऐसे ऊपर उठा लिया मानो अपने को गोली के निशाने से वचाना चाहती हो... इसके वाद उसने आरामकुर्सी की टेक पर अपनी पीठ टिका दी... और निश्चल हो गयी।

"यह खिलवाड़ वन्द कीजिये," उसका हाथ अपने हाथ में लेकर हेर्मन्न ने कहा। "आखिरी वार पूछ रहा हूं — अपने तीन पत्ते मुझे वताना चाहती हैं या नहीं? हां या नहीं?"

काउंटेस ने कोई जवाव नहीं दिया। हेर्मन्न ने देखा कि वह मर चुकी है।

(४)

7 mai 18..
Homme sans moeurs et sans religion!*
पत्र-व्यवहार

लीज़ावेता इवानोव्ना अभी तक अपने कमरे में बॉल-नृत्य की पोशाक पहने और गहन विचारों में डूबी हुई बैठी थी। घर लौटने पर उसने ऊंघती-सी नौकरानी को, जिसने मन मारकर अपनी सेवा उपस्थित की थी, यह कहते हुए झटपट मुक्त कर दिया कि ख़ुद ही कपड़े बदल लेगी और यह आशा करते, किन्तु साथ ही ऐसा न चाहते हुए कि हेर्मन्न वहां हो, अपने कमरे में धड़कते दिल से दाखिल हुई। पहली नजर में ही उसे इस बात का यकीन हो गया कि हेर्मन्न वहां नहीं है और उसने उस बाधा के लिये अपने भाग्य को सराहा जिसने उनका मिलन नहीं होने दिया था। वह कपड़े उतारे बिना ही बैठ गयी और मन ही मन उन सभी परिस्थितियों को याद करने लगी, जो इतने थोड़े समय में उसे इतनी दूर तक खींच ले गयी थीं। उस दिन के बाद अभी तीन हफ्ते भी नहीं गुजरे थे, जब उसने खिड़की में से पहली बार इस नौजवान को देखा था, वह अब उसके साथ पत्र-व्यवहार भी कर रही थी तथा उसने उससे रात्रि-मिलन की अनुमति भी प्राप्त कर ली थी! वह केवल इसीलिये उसका नाम जानती थी कि कुछ पत्रों के नीचे उसके हस्ताक्षर थे, उसने उसके साथ कभी बातचीत नहीं की थी, कभी उसकी आवाज़ नहीं सुनी थी और आज की रात के पहले उसके बारे में कभी कुछ नहीं सुना था। अजीब मामला है! इसी रात को तोम्स्की ने जवान प्रिंसेस पोलीना से इस बात के लिये नाराज़ होकर कि वह हमेशा की तरह उसके साथ नहीं, बल्कि किसी अन्य के साथ चोचलेबाज़ी कर रही थी, उससे बदला लेना चाहा, उसके प्रति अपनी उदासीनता दिखाते हुए लीज़ावेता इवानोव्ना को अपने संग नाचने को निमन्त्रित कर लिया और उसी

* ७ मई, १८ ऐसा व्यक्ति जिसके न तो कोई नैतिक सिद्धान्त हैं और न जिसके लिए कुछ पावन है! (फ्रांसीसी)

हेर्मन्न रुका और धड़कते दिल से उसके जवाब का इन्तजार करने लगा। काउंटेस खामोश रही। हेर्मन्न घुटनों के बल हो गया।

"अगर आपके हृदय ने कभी प्रेम-भावना को जाना है, अगर आपको उसके उल्लास का स्मरण है, अगर आप नवजात शिशु का रोना सुनकर एक बार भी मुस्करायी हैं, अगर आपके दिल में कभी कोई मानवीय धड़कन-स्पन्दन हुआ है, तो एक पत्नी, प्रेयसी और मां की भावनाओं के नाम पर आपकी मिन्नत करता हूं, जीवन में जो कुछ पवित्र-पावन है, उसके नाम पर अनुरोध करता हूं कि मेरी प्रार्थना को नहीं ठुकराइये! – मेरे सामने अपना रहस्य खोल दीजिये! आपको उसे छिपाये रखकर क्या लेना है? .. हो सकता है कि उसका किसी भयानक पाप के साथ सूत्र जुड़ा हुआ हो, वह शाश्वत सुख से वंचित हो, शैतान के साथ उसने कोई सांठ-गांठ कर रखी हो... सोचिये तो: आप बूढ़ी हैं, बहुत दिन नहीं जीना है आपको, – आपके पापों को मैं अपनी आत्मा पर लेने को तैयार हूं। सिर्फ़ अपना राज़ मुझे बता दीजिये। सोचिये तो, एक व्यक्ति का सुख-सौभाग्य आपके हाथों में है, केवल मैं ही नहीं, मेरे बेटे-बेटियां, पोते-पोतियां और परपोते-परपोतियां भी आपकी स्मृति का यशोगान करेंगे और उसे पावन मानेंगे ..."

बुढ़िया ने जवाब में एक भी शब्द नहीं कहा।

हेर्मन्न उठकर खड़ा हो गया।

"बूढ़ी डायन!" वह दांत पीसते हुए चिल्ला उठा, "मैं तुझे जवाब देने को मजबूर कर दूंगा ..."

इतना कहकर उसने जेब से पिस्तौल निकाल ली।

पिस्तौल देखकर काउंटेस ने दूसरी बार बड़ी तीव्र प्रतिक्रिया प्रकट की। उसने सिर पीछे को झटका और हाथ ऐसे ऊपर उठा लिया मानो अपने को गोली के निशाने से बचाना चाहती हो ... इसके बाद उसने आरामकुर्सी की टेक पर अपनी पीठ टिका दी ... और निश्चल हो गयी।

"यह खिलवाड़ बन्द कीजिये," उसका हाथ अपने हाथ में लेकर हेर्मन्न ने कहा। "आखिरी बार पूछ रहा हूं – अपने तीन पत्ते मुझे बताना चाहती हैं या नहीं? हां या नहीं?"

काउंटेस ने कोई जवाब नहीं दिया। हेर्मन्न ने देखा कि वह मर चुकी है।

(४)

7 mai 18...
Homme sans moeurs et sans religion!*

पत्र-व्यवहार

लीजावेता इवानोव्ना अभी तक अपने कमरे में बॉल-नृत्य की पोशाक पहने और गहन विचारों में डूबी हुई बैठी थी। घर लौटने पर उसने ऊघती-सी नौकरानी को, जिसने मन मारकर अपनी सेवा उपस्थित की थी, यह कहते हुए झटपट मुक्त कर दिया कि खुद ही कपड़े बदल लेगी और यह आशा करते, किन्तु साथ ही ऐसा न चाहते हुए कि हेर्मन्न वहां हो, अपने कमरे में धड़कते दिल से दाखिल हुई। पहली नजर में ही उसे इस बात का यकीन हो गया कि हेर्मन्न वहां नहीं है और उसने उस बाधा के लिये अपने भाग्य को सराहा जिसने उनका मिलन नहीं होने दिया था। वह कपड़े उतारे बिना ही बैठ गयी और मन ही मन उन सभी परिस्थितियों को याद करने लगी, जो इतने थोड़े समय में उसे इतनी दूर तक खींच ले गयी थीं। उस दिन के बाद अभी तीन हफ्ते भी नहीं गुजरे थे, जब उसने खिड़की में से पहली बार इस नौजवान को देखा था, वह अब उसके साथ पत्र-व्यवहार भी कर रही थी तथा उसने उससे रात्रि-मिलन की अनुमति भी प्राप्त कर ली थी! वह केवल इसीलिये उसका नाम जानती थी कि कुछ पत्रों के नीचे उसके हस्ताक्षर थे, उसने उसके साथ कभी बातचीत नहीं की थी, कभी उसकी आवाज नहीं सुनी थी और आज की रात के पहले उसके बारे में कभी कुछ नहीं सुना था। अजीब मामला है! इसी रात को तोम्स्की ने जवान प्रिंसेस पोलीना से इस बात के लिये नाराज होकर कि वह हमेशा की तरह उसके साथ नहीं, बल्कि किसी अन्य के साथ चोंचलेबाजी कर रही थी, उससे बदला लेना चाहा, उसके प्रति अपनी उदासीनता दिखाते हुए लीजावेता इवानोव्ना को अपने संग नाचने को निमन्त्रित कर लिया और उसी

---

* ७ मई, १८ ऐसा व्यक्ति जिसके न तो कोई नैतिक सिद्धान्त हैं और न जिसके लिए कुछ पावन है! (फ्रांसीसी)

के साथ अन्तहीन माजूरका नाच नाचता रहा। इंजीनियर अफ़सरों के लीज़ावेता इवानोव्ना की खास दिलचस्पी के लिये वह लगातार मज़ाक करता और यह विश्वास दिलाता रहा कि जितना वह समझती है, वह उसके बारे में उससे कहीं ज़्यादा जानता है और उसके कुछ मज़ाक तो निशाने पर ऐसे ठीक बैठे कि लीज़ावेता इवानोव्ना ने कई बार यह सोचा कि वह उसका राज़ जानता है।

"किसने आपको यह सब बताया है?" लीज़ावेता इवानोव्ना ने हंसते हुए उससे पूछा।

"उसके मित्र ने जिसे आप जानती हैं," तोम्स्की ने जवाब दिया, "बहुत ही लाजवाब आदमी है वह!"

"कौन है यह लाजवाब आदमी?"

"उसका नाम हेर्मन्न है।"

लीज़ावेता इवानोव्ना ने कोई उत्तर नहीं दिया, लेकिन उसके हाथ-पांव बर्फ़ की तरह ठण्डे हो गये ...

"यह हेर्मन्न," तोम्स्की कहता गया, "सचमुच ही रोमांटिक आदमी है – उसका चेहरा-मोहरा नेपोलियन जैसा है और उसकी आत्मा है मेफ़िस्टोफ़ेलिस की। मेरे ख्याल में उसकी आत्मा पर कम से कम तीन पापों का बोझ है। आपका चेहरा कैसा पीला पड़ गया है! .."

"मेरे सिर में दर्द है ... उस हेर्मन्न – या क्या नाम है उसका? – उसने आपसे क्या कहा है? .."

"हेर्मन्न अपने दोस्त से बहुत नाखुश है: वह कहता है कि उसकी जगह उसने बिल्कुल दूसरा ही ढंग अपनाया होता ... मैं तो ऐसा मानता हूं कि खुद हेर्मन्न भी आप पर मुग्ध है। कम से कम इतना तो है ही कि अपने मित्र के प्रेमोद्गारों को सुनते हुए वह उदासीन नहीं रह पाता।"

"लेकिन उसने मुझे कहां देखा है?"

"शायद गिरजाघर में, या सैर [illegible]। भगवान ही जाने! शायद उस समय आपके कमरे में, [illegible] रही थीं – उससे [illegible]

[illegible] जा [illegible]

[illegible] "O[illegible]

[illegible]"* [illegible]

[illegible]

दिया जो लीजावेता इवानोव्ना के लिये यातनापूर्ण जिज्ञासा से ओत-प्रोत हो गयी थी।

तोम्स्की ने जिस महिला को चुना, वह स्वयं प्रिंसेस .. ही थी। नाचते हुए हॉल का एक चक्कर लगाने और प्रिसेस की कुर्सी के सामने एक बार नृत्य-चक्र पूरा करने के दौरान उनके बीच सुलह हो गयी और अपनी जगह लौटने पर तोम्स्की को न तो हेर्मन्न और न लीज़ावेता इवानोव्ना में ही कोई दिलचस्पी रही थी। वह अधूरी रह गयी बातचीत को अवश्य ही फिर से आगे बढाना चाहती थी, मगर माज़ूरका नाच खत्म हो गया और उसके फौरन बाद ही बूढी काउटेस घर को चल दी।

तोम्स्की के शब्द माजूरका नाच के समय होनेवाली हल्की-फुल्की गपशप के सिवा कुछ नही थे, किन्तु वे रोमाटिक युवती की आत्मा मे गहरे उतर गये। तोम्स्की ने जो चित्र प्रस्तुत किया था, वह खुद उसके द्वारा बनाये गये चित्र से बहुत मिलता-जुलता था और नवीनतम उपन्यासो की बदौलत यही ओछा चेहरा उसकी कल्पना को भयभीत भी करता था और मोहित भी। वह दस्तानो के बिना अपने हाथ बाधे और उघडी छाती पर सिर झुकाये, जो अभी तक फूलो से सजा था, बैठी थी अचानक दरवाजा खुला और हेर्मन्न दाखिल हुआ। वह सिहर उठी

"आप कहा थे?" उसने सहमी-सी फुसफुसाहट मे पूछा।

"बूढी काउटेस के सोने के कमरे मे," हेर्मन्न ने जवाब दिया। "मैं वही से आ रहा हू। काउटेस मर गयी।"

"हे भगवान! यह आप क्या कह रहे है?"

"और लगता है," हेर्मन्न कहता गया, "मैं ही कारण हू उसकी मौत का।"

लीज़ावेता इवानोव्ना ने उसकी ओर देखा और तोम्स्की के ये शब्द उसके दिमाग मे गूज गये – उसकी आत्मा पर कम से कम तीन पापो का बोझ है! हेर्मन्न उसके निकट ही खिडकी के दासे पर बैठ गया और उसने सारा किस्सा कह सुनाया।

लीज़ावेता इवानोव्ना ने कापते दिल से उसकी पूरी बात सुनी। तो ये तीव्र भावनाओ-उद्गारो मे भरे पत्र, मिलन की माग करनेवाले जोरदार अनुरोध, दृढता और साहसपूर्वक उसका पीछा – यह सब प्यार नही

था! पैसा—उसकी आत्मा पैसे की दीवानी थी! यह वह नहीं थी जो उसकी इच्छाओं को पूरा कर सकती थी, उसे सुखी बना सकती थी! बेचारी युवती इस लुटेरे-बदमाश, अपनी बूढ़ी अभिभाविका की हत्या करने-वाले की अन्धी सहायिका के सिवा कोई नहीं थी! .. देर से होनेवाले और यातनापूर्ण पश्चाताप के कारण वह फूट-फूटकर रो पड़ी। हेर्मन्न उसे चुपचाप देख रहा था—उसका दिल भी कसक रहा था, लेकिन न तो बेचारी लड़की के आंसू और न उसके दुख का अनूठा सौन्दर्य ही उसकी कठोर आत्मा को विह्वल कर रहा था। इस विचार से कि बुढ़िया चल बसी, उसकी आत्मा क्षुब्ध नहीं थी। सिर्फ़ इसी ख्याल से उसकी आत्मा बुरी तरह दुखी थी कि अब उस राज़ का कभी पता नहीं चलेगा जिससे उसने धनी होने की आशा की थी।

"आप राक्षस हैं!" लीज़ावेता इवानोव्ना ने आखिर उससे कहा।

"मैंने उसकी मौत नहीं चाही थी," हेर्मन्न ने उत्तर दिया, "पिस्तौल में गोलियां नही थीं।"

दोनों खामोश हो गये।

सुबह होने लगी। लीज़ावेता इवानोव्ना ने खत्म होती हुई मोमबत्ती को बुझा दिया—कमरे में हल्का-सा उजाला हो गया। उस ने रोने के कारण लाल हुई अपनी आंखों को पोंछा और उन्हें ऊपर उठाकर हेर्मन्न की तरफ़ देखा—वह छाती पर अपने हाथ बांधे और दहशत पैदा करनेवाले अन्दाज़ में नाक-भौंह सिकोड़े हुए खिड़की के दासे पर बैठा था। इस मुद्रा में वह अद्भुत रूप से नेपोलियन के छविचित्र की याद दिलाता था। इस समानता से लीज़ावेता इवानोव्ना भी दंग रह गयी।

"आप घर से बाहर कैसे जायेंगे?" आखिर उसने पूछा। "मैंने तो यह सोचा था कि गुप्त जीने से आपको बाहर ले जाऊंगी, मगर इसके लिये काउंटेस के सोने के कमरे में से गुज़रना होगा और मुझे वहां जाते डर लगता है।"

"मुझे बता दीजिये कि इस गुप्त जीने तक कैसे पहुंचा जा सकता है और मैं खुद ही वहां से बाहर चला जाऊंगा।"

लीज़ावेता इवानोव्ना उठी, उसने अलमारी में से चाबी निकालकर हेर्मन्न को दी और विस्तारपूर्वक उसे सब कुछ समझाया। हेर्मन्न ने लीज़ावेता इवानोव्ना का ठण्डा और निर्जीव-सा हाथ दबाया, झुका हुआ सिर चूमा और कमरे से बाहर चला गया।

घुमावदार सीढ़ी से नीचे उतरकर वह फिर से काउंटेस के सोने के कमरे में दाखिल हुआ। मृत बुढ़िया बुत बनी-सी बैठी थी, उसके चेहरे पर गहन शान्ति थी। हेर्मन्न उसके सामने रुककर उसे देर तक देखता रहा मानो भयानक सचाई के बारे में पूरी तरह विश्वास कर लेना चाहता हो। आखिर वह अध्ययन-कक्ष में गया, कागज की दीवारी छींट के पीछे टटोलकर उसने दरवाज़ा ढूंढा और अजीब भावनाओं से विह्वल होता हुआ अंधेरे जीने से नीचे उतरने लगा। वह सोच रहा था कि शायद साठ साल पहले, कढ़ा हुआ अगरखा पहने, à l'oiseau royal* के ढंग से बाल संवारे, अपनी तिकोनी टोपी को छाती से चिपकाये कोई खुशकिस्मत जवान इसी वक्त, इसी जीने से चढ़कर दबे पांव इसी शयन-कक्ष में आया होगा। वह तो कभी का कब्र में पड़ा सड़ चुका होगा, जबकि उसकी बूढ़ी प्रेयसी के दिल की धड़कन आज बन्द हुई है

जीने से नीचे पहुंचने पर हेर्मन्न को दरवाज़ा मिला, जिसे उसने उसी चाबी से खोला और अपने को सड़क पर ले जानेवाले सकरे गलियारे में पाया।

(५)

> इस रात को दिवंगता बैरोनेस वोन व मेरे सपने में आई। वह सफ़ेद पोशाक पहने थी और मुझसे बोली, "नमस्ते, श्रीमान कौंसिलर!"
>
> स्वेडेनबोर्ग**

उस मुसीबत की मारी रात के तीन दिन बाद हेर्मन्न सुबह के नौ बजे, गिरजे में गया, जहां मृत काउंटेस की आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना की जानेवाली थी। वह पश्चाताप की भावना अनुभव

था! पैसा – उसकी आत्मा पैसे की दीवानी थी! यह वह नहीं थी जो उसकी इच्छाओं को पूरा कर सकती थी, उसे सुखी बना सकती थी! वेचारी युवती इस लुटेरे-वदमाश, अपनी बूढ़ी अभिभाविका की हत्या करने-वाले की अन्धी सहायिका के सिवा कोई नहीं थी! .. देर से होनेवाले और यातनापूर्ण पश्चाताप के कारण वह फूट-फूटकर रो पड़ी। हेर्मन्न उसे चुपचाप देख रहा था – उसका दिल भी कसक रहा था, लेकिन न तो वेचारी लड़की के आंसू और न उसके दुख का अनूठा सौन्दर्य ही उसकी कठोर आत्मा को विह्वल कर रहा था। इस विचार से कि वुढ़िया चल वसी, उसकी आत्मा क्षुब्ध नहीं थी। सिर्फ़ इसी ख्याल से उसकी आत्मा वुरी तरह दुखी थी कि अव उस राज़ का कभी पता नहीं चलेगा जिससे उसने धनी होने की आशा की थी।

"आप राक्षस हैं!" लीज़ावेता इवानोव्ना ने आखिर उससे कहा।

"मैंने उसकी मौत नहीं चाही थी," हेर्मन्न ने उत्तर दिया, "पि-स्तौल में गोलियां नहीं थीं।"

दोनों खामोश हो गये।

सुवह होने लगी। लीज़ावेता इवानोव्ना ने खत्म होती हुई मोमवत्ती को वुझा दिया – कमरे में हल्का-सा उजाला हो गया। उस ने रोने के कारण लाल हुई अपनी आंखों को पोंछा और उन्हें ऊपर उठाकर हेर्मन्न की तरफ़ देखा – वह छाती पर अपने हाथ वांधे और दहशत पैदा करनेवाले अन्दाज़ में नाक-भौंह सिकोड़े हुए खिड़की के दासे पर वैठा था। इस मुद्रा में वह अद्भुत रूप से नेपोलियन के छविचित्र की याद दिलाता था। इस समानता से लीज़ावेता इवानोव्ना भी दंग रह गयी।

"आप घर से वाहर कैसे जायेंगे?" आखिर उसने पूछा। "मैंने तो यह सोचा था कि गुप्त ज़ीने से आपको वाहर ले जाऊंगी, मगर इसके लिये काउंटेस के सोने के कमरे में से गुज़रना होगा और मुझे वहां जाते डर लगता है।"

"मुझे वता दीजिये कि इस गुप्त ज़ीने तक कैसे पहुंचा जा सकता है और मैं खुद ही वहां से वाहर चला जाऊंगा।"

लीज़ावेता इवानोव्ना उठी, उसने अलमारी में से चावी निकालकर हेर्मन्न को दी और विस्तारपूर्वक उसे सव कुछ समझाया। हेर्मन्न ने लीज़ावेता इवानोव्ना का ठण्डा और निर्जीव-सा हाथ दवाया, झुका हुआ सिर चूमा और कमरे से वाहर चला गया।

घुमावदार सीढी से नीचे उतरकर वह फिर से काउटेस के सोने के कमरे मे दाखिल हुआ। मृत बुढिया बुत बनी-सी बैठी थी, उसके चेहरे पर गहन शान्ति थी। हेर्मन्न उसके सामने रुककर उसे देर तक देखता रहा मानो भयानक सचाई के बारे में पूरी तरह विश्वास कर लेना चाहता हो। आखिर वह अध्ययन-कक्ष में गया, कागज की दीवारी छीट के पीछे टटोलकर उसने दरवाजा ढूढा और अजीब भावनाओं से विह्वल होता हुआ अधेरे जीने से नीचे उतरने लगा। वह सोच रहा था कि शायद साठ साल पहले, कढा हुआ अगरखा पहने, à l'oiseau royal* के ढग से बाल सवारे, अपनी तिकोनी टोपी को छाती से चिपकाये कोई खुशकिस्मत जवान इसी वक्त, इसी जीने से चढकर दबे पाव इसी शयन-कक्ष मे आया होगा। वह तो कभी का कब्र मे पडा सड चुका होगा, जबकि उसकी बूढी प्रेयसी के दिल की धडकन आज बन्द हुई है

जीने से नीचे पहुचने पर हेर्मन्न को दरवाजा मिला, जिसे उसने उसी चाबी से खोला और अपने को सडक पर ले जानेवाले सकरे गलियारे मे पाया।

(५)

इस रात को दिवगता बैरोनेस वोन व मेरे सपने मे आई। वह सफेद पोशाक पहने थी और मुझसे बोली, "नमस्ते, श्रीमान कौंसिलर!"

स्वेडेनबोर्ग**

उस मुसीबत की मारी रात के तीन दिन बाद हेर्मन्न सुबह के नौ बजे गिरजे मे गया, जहा मृत काउटेस की आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना की जानेवाली थी। वह पश्चाताप की भावना अनुभव

* "शाही परिन्दे"। (फ़ासीसी)

** स्वीडन का रहस्यवादी दार्शनिक (१६८८-१७२२)।-स०

नहीं करता था, लेकिन लगातार सुनायी देनेवाली आत्मा की इस आवाज़ को भी–तुमने बुढ़िया की जान ली है!–पूरी तरह से दवाने में असमर्थ था। उसमें सच्ची आस्था वहुत कम थी, पूर्वाग्रह वहुत ज़्यादा थे। वह ऐसा मानता था कि परलोक सिधार जानेवाली काउंटेस उसके जीवन पर बुरा प्रभाव डाल सकती थी और इसलिये उससे क्षमा मांगने के लिये उसने उसकी अन्त्येष्टि में जाने का फ़ैसला किया।

गिरजाघर लोगों से भरा हुआ था। हेर्मन्न वड़ी मुश्किल से लोगों के वीच से रास्ता वनाकर आगे वढ़ा। तावूत वहुत ही वढ़िया मुर्दा-गाड़ी पर रखा था और उसके ऊपर मख़मली छत्र था। लेसदार टोपी और साटिन का सफ़ेद फ़्राक पहने तथा छाती पर हाथ बांधे दिवंगता तावूत में लेटी हुई थी। काली वर्दियां पहने, कंधों पर फ़ीतों के कुलचिह्न लगाये तथा हाथों में मोमवत्तियां लिये घर के नौकर-चाकर, रिश्तेदार–वेटे-वेटियां, पोते-पोतियां और परपोते-परपोतियां गहरे शोक में डूवे हुए उसके चारों ओर खड़े थे। कोई भी रो नहीं रहा था–आंसू une affectation* प्रतीत होते। काउंटेस इतनी बूढ़ी थी कि उसकी मौत से किसी को हैरानी नहीं हो सकती थी और उसके रिश्ते-दार एक अर्से से ही उसे वीती कहानी मानते थे। एक जवान पादरी मातमी शब्द कह रहा था। सीधी-सादी और मार्मिक भावाभिव्यक्तियों में उसने पवित्र महिला के शान्तिपूर्ण अन्त का वर्णन किया जिसके लिये जीवन के लम्बे वर्ष ईसाई के अनुरूप मृत्यु की शान्त और मर्मस्पर्शी तैयारी के समान थे। "मौत के फ़रिश्ते ने," पादरी ने कहा, "उसे पावन पूजा-प्रार्थना में लीन, ईसा मसीह की प्रतीक्षा में जागते पाया।" प्रार्थना शोकपूर्ण शिष्टता के साथ समाप्त हुई। सवसे पहले रिश्तेदार मृत काउंटेस से विदा लेने के लिये आगे वढ़े। उनके वाद वे अनेक अतिथि उसके निकट गये जो एक ज़माने तक इन लोगों की चहल-पहल और रंग-रलियों में भाग लेते हुए इस महिला के प्रति श्रद्धा प्रकट करने आये थे। उनके वाद घर के सभी नौकरों-चाकरों ने विदा ली। अन्त में बूढ़ी नौकरानी, जो दिवंगता की हमउम्र थी, निकट आई। दो जवान नौकरानियां उसे सहारा दिये हुए थीं। वह धरती तक झुककर प्रणाम करने में असमर्थ थी–केवल उसी ने अपनी मालकिन का ठण्डा

---

* दिखावा या ढोंग। (फ़्रांसीसी)

हाथ चूमकर कुछ आसू बहाये। बूढी नौकरानी के पश्चात हेर्मन्न ने तावूत के निकट जाने का निर्णय किया। उसने जमीन पर माथा टेका और कुछ मिनट तक फर्श पर, जहा फर-वृक्ष की टहनिया विखरी हुई थी, पडा रहा। आखिर वह मृतक जैसा पीला चेहरा लिये हुए उठा और उसने मुर्दागाडी के पायदान पर चढकर सिर झुकाया इस क्षण उसे ऐसे लगा कि मृतका ने उपहास उड़ाते और एक आख मिकोडते हुए उसकी तरफ देखा है। वह जल्दी से पीछे हटा, पायदान पर अपना पाव नही टिका पाया और चित जा गिरा। उसे उठाया गया। इसी वक़्त लीज़ावेता इवानोव्ना को बेहोशी की हालत में ड्योढी में लाया गया। इस घटना ने कुछ मिनट के लिये इस शोकपूर्ण सस्कार की गम्भीरता को भग कर दिया। उपस्थित लोगो मे दबी-घुटी-सी खुसर-फुसर सुनाई दी और एक दुबले-पतले दरबारी अफसर ने, जो काउटेस का निकट सम्बन्धी था, अपनी बगल में खडे अग्रेज़ को फुसफुसा-कर बताया कि जवान अफसर काउटेस का अवैध बेटा है और अग्रेज़ ने जवाब में रुखाई से – 'ओह?' कहा।

हेर्मन्न दिन भर बहुत ही खिन्न रहा। किसी एकान्त-से मदिरालय में भोजन करते हुए उसने अपनी आन्तरिक परेशानी पर काबू पाने के लिये सामान्य से कही अधिक शराब पी। किन्तु शराब ने उसकी कल्पना को और अधिक तीव्रता प्रदान कर दी। घर लौटकर वह कपडे उतारे बिना अपने बिस्तर पर जा गिरा और गहरी नीद सो गया।

काफी रात गये उसकी आख खुली, उसके कमरे मे चादनी छिटकी हुई थी। उसने घडी पर नज़र डाली – रात के पौने तीन बजे थे। उसे अब और नीद नही आ रही थी। वह पलग पर बैठकर बूढी काउ-टेस के अन्त्येष्टि सस्कार के बारे मे सोचने लगा।

इसी समय किसी ने खिडकी में से भीतर झाककर देखा और फौरन पीछे हट गया। हेर्मन्न ने इस बात की ओर कोई ध्यान नही दिया। एक मिनट बाद उसे ड्योढी का दरवाज़ा खोलने की भनक मिली। हेर्मन्न ने सोचा कि सदा की भाति शराब के नशे मे धुत उसका अर्दली अपनी रात की आवारागर्दी से वापस लौटा है। किन्तु उसे अपरिचित पद-चाप सुनाई दी – कोई अपने स्लीपरो को धीरे-धीरे घसीटते हुए चल रहा था। दरवाज़ा खुला, सफेद पोशाक पहने एक नारी भीतर आयी। हेर्मन्न ने उसे अपनी बूढी धाय समझा और हैरान

हुआ कि इतनी रात गये वह किसलिये आई है। मगर सफ़ेद पोशाक पहने औरत लपककर अचानक उसके सामने आ गयी—और हेर्मन्न ने काउंटेस को पहचान लिया!

"मैं अपनी इच्छा के विरुद्ध तुम्हारे पास आयी हूं," उसने दृढ़ आवाज़ में कहा, "लेकिन मुझे तुम्हारा अनुरोध पूरा करने को कहा गया है। तिक्की, सत्ती और इक्का तुम्हारे जीतनेवाले पत्ते हैं, लेकिन शर्त यह है कि तुम एक दिन में एक से अधिक पत्ता नहीं चलना और बाद में ज़िंदगी भर जुआ नहीं खेलना। अपनी मौत के लिये तुम्हें इस शर्त पर माफ़ करती हूं कि तुम मेरी आश्रिता लीज़ावेता इवानोव्ना से शादी कर लोगे..."

इतना कहकर वह धीरे से मुड़ी, दरवाजे की ओर बढ़ी और स्लीपरों को घसीटते हुए ग़ायब हो गयी। हेर्मन्न को ड्योढ़ी का दरवाज़ा बन्द होने की आवाज़ सुनायी दी और उसने किसी को फिर खिड़की में से भीतर झांकते देखा।

हेर्मन्न देर तक अपने होश-हवास ठीक नहीं कर पाया। वह दूसरे कमरे में गया। अर्दली फ़र्श पर सोया पड़ा था; हेर्मन्न ने बड़ी मुश्किल से उसे जगाया। वह हमेशा की तरह नशे में धुत्त था—उससे कुछ भी जानना-समझ पाना संभव नहीं था। ड्योढ़ी का दरवाज़ा बन्द था। हेर्मन्न अपने कमरे में लौट आया, उसने मोमबत्ती जलाई और जो कुछ हुआ था, सब लिख लिया।

(६)

— Atande*

—आपने मुझसे atande कहने की जुर्रत कैसे की?
—नहीं हुजूर, मैंने तो atande-जनाब! कहा था।

हमारी नैतिक प्रकृति में दो जड़ विचार वैसे ही एकसाथ विद्यमान नहीं रह सकते, जैसे भौतिक जगत में एक ही जगह पर दो ठोस पदार्थ नहीं टिक सकते। तिक्की, सत्ती और इक्के ने शीघ्र ही हेर्मन्न की

---

* दांव न. लगाने का सुझाव देना।—सं०

कल्पना मे मृत बुढिया के बिम्ब की जगह ले ली। ये तीनो पत्ते उसके दिमाग मे नही निकलते थे और उसके होंठो पर घूमते रहते थे। किसी जवान लडकी को देखकर वह कहता – "कितनी सुघड है वह! बिल्कुल पान की तिक्की!" उससे अगर पूछा जाता – "क्या बजा है?" तो वह जवाब देता – "पाच मिनट कम सत्ती।" सभी तोंदल आदमी उसे इक्के की याद दिलाते। तिक्की, सत्ती और इक्का उसके सपनो मे घूमते रहते, तरह-तरह के रूप धारण करते तिक्की एक बडा और खिला हुआ फूल बन जाती, सत्ती गोथिक शैली का फाटक और इक्का *विराटकाय मकडी। सब विचार एक ही विचार में घुल-मिल जाते –* किसी तरह उस राज से फायदा उठाया जाये जिसके लिये उसने इतनी बडी कीमत चुकायी है। वह सेवा-निवृत्त होने *और* यात्रा करने की सोचने लगा। उसका मन होता कि पेरिस के सार्वजनिक जुआखानो मे जाकर जादू-टोने में बधे भाग्य से सजाने हासिल करे। सयोग ने उसे ऐसी चिन्ताओ से मुक्त कर दिया।

इस समय मास्को मे धनी जुआरियो की एक सस्था थी। प्रसिद्ध चेकालिन्स्की, जिसने सारी उम्र जुआ खेलते बितायी थी और हुडिया जीतते तथा नकद रकम हारते हुए लाखो-करोडो की पूजी जमा कर ली थी, उसका अध्यक्ष था। लम्बे अनुभव ने उसके साथियो मे उसके प्रति विश्वास पैदा कर दिया था, सभी के लिये खुले उसके घर के द्वार, बढिया बावर्ची, स्नेह और हसी-खुशी के वातावरण ने आम लोगो मे उसकी मान-मर्यादा बढा दी थी। वह पीटर्सबर्ग आया। युवाजन बॉल-नृत्यो की जगह ताश, और सुन्दरियो की प्यारी सगत के बजाय जुए के आकर्षण को तरजीह देते हुए उसके यहा उमडने लगे। नारूमोव हेर्मन्न को उसके घर ले गया।

इन दोनो ने कई कमरे लाघे जिनमे अनेक शिष्ट बैरे तैनात थे। कुछ जनरल और कौसिलर ह्विस्ट खेल रहे थे। जवान लोग बेल-बूटेदार सोफो पर पसरे हुए आईसक्रीम खा रहे थे, पाइप के कश लगा रहे थे। मेहमानखाने मे एक लम्बी-सी मेज के गिर्द *जुआ खेलनेवाले* कोई बीसेक व्यक्ति जमा थे। गृह-स्वामी भी वही था और वही खजाची बना हुआ था। वह साठ *साल का बहुत ही सजा-बजा व्यक्ति था।* सिर पर रुपहले केश थे और भरा हुआ तथा ताजगी लिये हुए उसका चेहरा खुशमिज़ाजी *अभिव्यक्त करता था।* होंठो पर हर समय खिली

रहनेवाली मुस्कान से सजीव उसकी आंखें चमक रही थीं। नारूमोव ने हेर्मन्न का परिचय करवाया। चेकालिन्स्की ने मैत्रीपूर्ण ढंग से उससे हाथ मिलाया, तकल्लुफ़ न करने का अनुरोध किया और खेल जारी रखा।

बाज़ी बहुत देर तक चली। मेज़ पर तीस से अधिक पत्ते थे।

चेकालिन्स्की हर दांव के बाद रुकता, ताकि खिलाड़ियों को अपनी स्थिति समझने का समय मिल जाये, हारी हुई रक़में लिखता, बड़ी शिष्टता से खेलनेवालों की मांगों को सुनता और इससे भी अधिक शिष्टता से किसी बेध्यान खिलाड़ी द्वारा गल्ती से लगायी बाज़ी को ठीक कर देता। आखिर बाज़ी ख़त्म हुई। चेकालिन्स्की ने पत्ते फेंटे और अगली बाज़ी बांटने के लिये तैयार हुआ।

"मैं भी एक पत्ते पर दांव लगाना चाहूंगा," मेज़ के गिर्द बैठे हुए एक मोटे आदमी के पीछे से हाथ बढ़ाते हुए हेर्मन्न ने कहा। चेकालिन्स्की मुस्कराया और नम्रतापूर्ण सहमति के रूप में उसने सिर झुका दिया। नारूमोव ने हंसते हुए उसे इस बात की बधाई दी कि आखिर तो उसने अपना इतने लम्बे अर्से का व्रत तोड़ लिया और उसके लिये शुभारम्भ की कामना की।

"तो मैं दांव लगा रहा हूं!" हेर्मन्न ने अपने पत्ते पर खड़िया से रक़म लिखकर कहा।

"कितना दांव लगाया है जनाब?" मेज़बान-ख़ज़ांची ने आंख सिकोड़ते हुए पूछा, "माफ़ी चाहता हूं, लगता है कि मुझे साफ़ नज़र नहीं आ रहा है।"

"सैंतालीस हज़ार," हेर्मन्न ने जवाब दिया।

ये शब्द सुनते ही सबके सिर फ़ौरन हेर्मन्न की ओर घूम गये और आंखें उस पर जम गयीं। "इसका दिमाग़ चल निकला है!" नारूमोव ने सोचा।

"मैं यह कहने की अनुमति चाहता हूं," चेकालिन्स्की ने सदा की भांति मुस्कराते हुए कहा, "आप बहुत बड़ा दांव लगा रहे हैं। यहां किसी ने भी दो सौ पचहत्तर से अधिक बड़ी रक़म दांव पर नहीं लगाई।"

"आप यह बताइये कि खेलेंगे या नहीं?" हेर्मन्न ने आपत्ति की।

चेकालिन्स्की ने विनयपूर्ण सहमति के रूप में सिर झुकाया।

"मैं केवल यह निवेदन करना चाहता हूं," उसने कहा, "कि मित्रों का विश्वासपात्र होने के नाते मैं दांव की रकम के सामने रख दिये जाने पर ही खेलता हूं। अपनी ओर से मैं तो आपके वचन पर ही भरोसा करने को तैयार हूं, लेकिन खेल और हिसाब को सही ढंग से चलाने के लिए आपसे दांव की रकम पत्ते पर रख देने की प्रार्थना करता हूं।"

हेर्मान्न ने जेब से एक बैंकनोट निकाला और चेकालिन्स्की को दे दिया, जिसने उस पर सरसरी-सी नजर डालकर उसे हेर्मान्न के पत्ते पर रख दिया।

वह पत्ते बांटने लगा। दायीं ओर नहला आया और बाईं ओर तिक्की।

"मेरा पत्ता जीत गया!" हेर्मान्न ने अपना पत्ता दिखाते हुए कहा।

खिलाड़ी खुसुर-फुसुर करने लगे। चेकालिन्स्की के माथे पर बल पड़ गये, किन्तु तत्काल ही उसके चेहरे पर मुस्कान लौट आयी।

"रकम चुका दूं?" उसने हेर्मान्न से पूछा।

"कृपा होगी।"

चेकालिन्स्की ने जेब से कुछ बैंकनोट निकाले और फौरन हिसाब चुकता कर दिया। हेर्मान्न ने अपनी रकम समेटी और मेज से हट गया। नारूमोव तो सम्भल भी नहीं पाया। हेर्मान्न लैमनेड का एक गिलास पीकर अपने घर को चला गया।

अगले दिन की शाम को वह फिर चेकालिन्स्की के यहां पहुंचा। गृहस्वामी पत्ते बांट रहा था। हेर्मान्न मेज के निकट गया, लोगों ने फौरन उसके लिए जगह खाली कर दी। चेकालिन्स्की ने स्नेहपूर्वक सिर झुकाया।

हेर्मान्न ने नई बाजी शुरू होने का इन्तजार किया, एक पत्ते पर अपने सैंतालीस हजार और पिछले दिन जीते गये सैंतालीस हजार भी रख दिये।

चेकालिन्स्की पत्ते बांटने लगा। दायीं ओर गुलाम गया, बायीं ओर सत्ती आई।

हेर्मान्न ने सत्ती दिखाई।

सभी आश्चर्य से चिल्ला उठे। चेकालिन्स्की स्पष्टतः परेशान हो उठा। उसने चौरानवे हजार गिनकर हेर्मान्न के हवाले कर दिये।

हेर्मन्न ने बड़ी शान्ति से यह रक़म ली और उसी क्षण चलता बना।

अगली शाम को हेर्मन्न फिर से खेल की मेज़ पर आया। सभी उसकी राह देख रहे थे। जनरलों और कौंसिलरों ने ऐसा असाधारण खेल देखने के लिये अपनी ह्विस्ट बन्द कर दी। जवान अफ़-सर अपने सोफ़ों से उठकर आ गये, सभी बैरे दीवानख़ाने में जमा हो गये। सभी हेर्मन्न को घेरे हुए थे। दूसरे खि-लाड़ियों ने अपने दांव नहीं लगाये, सभी यह देखने को उत्सुक थे कि इस खेल का क्या अन्त होगा। चेकालिन्स्की के साथ बाज़ी खेलने को तैयार हेर्मन्न अकेला मेज़ के पास खड़ा था। चेकालिन्स्की के चेहरे का रंग उड़ा हुआ था, लेकिन वह सदा की भांति मुस्करा रहा था। दोनों ने ताश की एक-एक नई गड्डी निकाली। चेकालिन्स्की ने पत्ते फेंटे, हेर्मन्न ने पत्ते काटे, अपना पत्ता सामने रखा और उसपर बैंकनोटों का ढेर लगा दिया। एक तरह से यह द्वन्द्व-युद्ध हो रहा था। सभी ओर गहरी ख़ामोशी छाई हुई थी।

चेकालिन्स्की पत्ते बांटने लगा, उसके हाथ कांप रहे थे। दायें बेग़म आई और बायें इक्का।

"इक्का जीत गया!" हेर्मन्न ने कहा और अपना पत्ता खोल दिया।

"आपकी बेगम पिट गयी," चेकालिन्स्की ने स्नेहपूर्वक जवाब दिया।

हेर्मन्न चौंका—वास्तव में ही इक्के की जगह हुक्म की बेगम सामने पड़ी थी। उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था, वह यह नहीं समझ पा रहा था कि कैसे उससे ऐसी भूल हुई।

इसी क्षण उसे ऐसे प्रतीत हुआ कि हुक्म की बेगम अपनी आंखें सिकोड़ रही है और व्यंग्यपूर्वक मुस्करा रही है। असाधारण समानता से वह दंग रह गया...

"बुढ़िया!" वह भयभीत होकर चिल्ला उठा।

चेकालिन्स्की ने जीती हुई रक़म अपनी ओर खींच ली। हेर्मन्न बुत बना खड़ा था। उसके मेज़ से दूर हट जाने पर सभी खिलाड़ी ऊंचे-ऊंचे कह उठे, "क्या कमाल की खेल था!" चेकालिन्स्की फिर से पत्ते फेंटने लगा, खेल सदा की भांति चलता रहा।

सारांश

हेर्मन्न पागल हो गया। वह ओबुखोव अस्पताल के वार्ड नं० १७ में है, किसी के प्रश्नों का कभी कोई उत्तर नहीं देता और असाधारण तेज़ी से लगातार यही बड़बड़ाता रहता है – "तिक्की, सत्ती, इक्का! तिक्की, सत्ती, बेगम! "

लीज़ावेता इवानोव्ना की किसी बहुत ही शालीन युवा व्यक्ति से शादी हो गयी। वह किसी सरकारी दफ्तर में काम करता है और खासा अमीर है। वह बूढ़ी काउंटेस के भूतपूर्व कारिन्दे का बेटा है। लीज़ावेता इवानोव्ना एक ग़रीब रिश्तेदारिन का पालन-पोषण कर रही है।

तोम्स्की कप्तान हो गया है और प्रिंसेस पोलीना से शादी करने जा रहा है।

सारांश

हेर्मन्न पागल हो गया। वह ओबुखोव अस्पताल के वार्ड नं० १७ में है, किसी के प्रश्नों का कभी कोई उत्तर नहीं देता और असाधारण तेज़ी से लगातार यही बड़बड़ाता रहता है—"तिक्की, सत्ती, इक्का! तिक्की, सत्ती, बेगम!"

लीज़ावेता इवानोव्ना की किसी बहुत ही शालीन युवा व्यक्ति से शादी हो गयी। वह किसी सरकारी दफ़्तर में काम करता है और खासा अमीर है। वह बूढ़ी काउंटेस के भूतपूर्व कारिन्दे का बेटा है। लीज़ावेता इवानोव्ना एक गरीब रिश्तेदारिन का पालन-पोषण कर रही है।

तोम्स्की कप्तान हो गया है और प्रिंसेस पोलीना से शादी करने जा रहा है।

व्लादीमिर ओदोयेव्स्की

१८०३-१८६९

सिल्फ़ीदा*

(एक तर्कनिष्ठ व्यक्ति की टिप्पणियों में)

अनस्तासिया सेर्गेयेव्ना पन्ना को समर्पित

फूलों का पहनायेंगे ताज कवि को और निकाल देंगे
बाहर नगर से।**
प्लेटो

राज्य के तीन स्तम्भ हैं
कवि, खड्ग और न्याय।
उत्तरी देशों के चारणों की सूक्ति

कवियों का उपयोग केवल
निर्धारित दिनों में सामाजिक
आकृतियों की प्रशंसा में गीत
रचने के लिए किया जायेगा।
१७वीं शती की एक औद्योगिक कम्पनी

।?।?
१९वीं शती

पत्र १

आखिर मैं अपने स्वर्गीय चचा के गांव आ गया हूं। यहां दादा के जमाने की विशाल *आरामकुर्सी* में खिड़की के पास बैठा तुम्हें यह पत्र लिख रहा हूं। हां, बाहर का दृश्य बहुत बढ़िया नहीं कहा जा सकता सब्जियों की क्यारी, दो-तीन सेब के पेड़, एक चौकोर पोखर और खाली पड़ा खेत – बस। लगता है, चचा खेती में खास दिलचस्पी नहीं लेते थे। पता नहीं पद्रह साल तक लगाकर यहां रहते हुए वह क्या करते रहे। क्या वह भी मेरे एक पड़ोसी की तरह थे? वह सुबह तड़के पांच बजे उठ बैठता है, जी भरकर चाय पीता है और फिर ताश

---

* सिल्फ़ीदा – जर्मन डाक्टर पेरासेल्सस (वास्तविक नाम फिलीप्पस आरेओलस थेओफ्रास्तस फोन होहेनहीम, १४९३–१५४१) की कीमियागरी पर एक पुस्तक में वायु तत्त्व की आत्माओं का नाम सिल्फ़ीदा बताया गया है।

** यह सूक्ति प्लेटो (४२८–३४८ ई० पू०) की पुस्तक 'गणराज्य' में ली गयी है।

की गड्डी लेकर दिन के खाने तक 'पेशेंस' खेलता रहता है; खाना खाता है, लेटकर थोड़ा आराम करता है और फिर से रात तक 'पेशेंस' खेलता रहता है। साल में ३६५ दिन उसके ऐसे ही वीतते हैं। मेरी तो समझ में नहीं आता। मैंने लोगों से पूछा कि चचा क्या किया करते थे? उनका जवाव था: "जी, वस ऐसे ही।" मुझे यह जवाव वेहद पसंद है। ऐसे जीवन में कुछ काव्यात्मकता है। मुझे उम्मीद है मैं भी शीघ्र ही चचा के कदमों पर चलने लगूंगा। वाकई, वड़े अक्लमंद आदमी थे चचा!

सचमुच ही मेरा चित्त यहां शहर की तुलना में कहीं अधिक शांत है। डाक्टरों ने मुझे यहां भेजकर वड़ी समझदारी का काम किया है। शायद उन्होंने मुझसे अपना पिंड छुड़ाने के लिए ऐसा किया, लेकिन, लगता है, मैं उन्हें चकमा दे दूंगा। मानो न मानो, मेरी वदमिज़ाजी जाती रही है। यह सोचना वेकार है कि मनवहलाव मेरे जैसे रोगियों को ठीक कर सकता है। झूठ है यह सव: सोसाइटी की ज़िंदगी आदमी को पागल वनाती है और वही पुस्तकें भी करती हैं। लेकिन ज़रा कल्पना करो यहां मेरे सुख की। मैं यहां प्राय: किसी से मिलता-जुलता नहीं हूं और न ही मेरे पास कोई पुस्तक है। इस सुख का वर्णन शव्दों में नहीं किया जा सकता—इसे तो अनुभव ही किया जा सकता है। पुस्तक मेज़ पर रखी हो तो हाथ अनचाहे ही उसकी ओर वढ़ जाता है—तुम पुस्तक खोलते हो, पढ़ने लगते हो। शुरुआत तुम्हें आकर्षित करती है, अथाह संपदा की आशाएं वंधाती है। तुम आगे वढ़ते हो और केवल वुलवुले देखते हो। तुम्हें वह भयानक अनुभूति होती है, जो आदिकाल से आज दिन तक सभी विद्वानों को होती आयी है: खोजना और न पाना! जव से मैंने होश संभाला है तव से यह अनुभूति मुझे सताती रही है और मैं सोचता हूं मुझे वदमिज़ाजी का जो दौरा पड़ता है उसकी असली वजह यही है, जवकि डाक्टर इसका कारण पित्त वताते हैं।

पर यह मत सोचना कि मैं यहां विल्कुल संन्यासी वनकर रह रहा हूं। पुरानी प्रथाओं का पालन करते हुए एक नये ज़मींदार के नाते मैं अपने सभी पड़ोसियों से मिलने गया हूं। खुशकिस्मती यही है कि इनकी गिनती वहुत ज़्यादा नहीं है। उनसे मैंने शिकार की वातें कीं, जो मुझे ज़रा भी पसंद नहीं है, खेतीवारी की वातें कीं, जिसका मुझे रत्ती भर भी ज्ञान नहीं है और उनके सगे-संवंधियों की वातें कीं, जिनका

नाम तक पहले कभी नही सुना है। लेकिन ये सब लोग इतने मिलनसार, इतने स्नेही और इतने सरल स्वभाव के हैं कि मैं तहेदिल से इन्हे चाहने लगा हू। इनके जिले के बाहर जो कुछ होता है उसके बारे मे ये न कुछ जानते है, न जानना चाहते है। तुम सोच भी नही सकते कि मुझे इनका यह उदासीनता भरा अज्ञान कितना हर्षदायक लगता है। सारे जिले में आनेवाले 'मोस्कोव्स्कीये वेदोमोस्ती'* के एकमात्र अक पर यहा कैसी-कैसी टिप्पणिया सुनने को मिलती है! इस अक मे, जिसकी सभाल के लिए दीवारी कागज का कवर चढाया जाता है, बारी-बारी से सभी लेख पढे जाते हैं – राजधानी मे घोडे लाये जाने के समाचार से लेकर वैज्ञानिक समाचार तक। पहली किस्म के समाचार कौतूहलवश पढे जाते है और दूसरी किस्म के हास्य-विनोद के लिए, जिसमे मैं भी खुले दिल से हिस्सा लेता हू, हालाकि मेरे हसने की वजह दूसरी होती है। पर हा, इसके लिए मुझे इनका भरपूर आदर मिलता है। शुरू मे ये लोग डरते थे कि मै राजधानी से आया हू, इन्हे रसायनशास्त्र और कृषिशास्त्र के सबक पढाऊगा। लेकिन जब मैंने इनसे कहा कि मेरे विचार मे जितना हमारे वैज्ञानिक जानते है उतना जानने से तो कही अच्छा है कि आदमी कुछ भी न जाने, कि मनुष्य के सुख के लिए अत्यधिक ज्ञान से बढकर हानिकारक और कुछ नही है, तथा यह कि अज्ञान से आज तक किसी के हाजमे को नुकसान नही पहुचा है, तो इन्होने साफ-साफ देख लिया कि मैं बढिया आदमी हू। और तब ये उन अक्लमदो के बारे में तरह-तरह के किस्से सुनाने लगे, जो सारी तर्कबुद्धि को त्याग कर आलू उगाते हैं और दूसरे नये-नये काम अपने गावो मे शुरू करते है। क्या किस्से है – हस-हस के पेट मे बल पड जाते है! इन अक्लमदो के लिए सही ईनाम है – आखिर किसलिए यह सारी भागदौड करते है वे? मेरे नये दोस्तो मे जो कुछ चुस्त है वे राजनीति पर भी बहस करते है। वे अभी तक तुर्की के सुलतान को लेकर चितित है** और तिगिल-बुजी व हाफिज-

---

* रूस का एक सबसे पुराना समाचारपत्र जो १७५६ से १६१७ तक प्रकाशित होता रहा।

** प्राय एक शताब्दी (१७३५ से १८२६ तक) की अवधि के दौरान रूस और तुर्की के बीच पाच लडाइया हुईं १७३५–१७३६, १७६८–१७७४, १७८७–१७६१, १८०६–१८१२ तथा १८२८–१८२६ मे।

9–1333

वुज़ी के झगड़े से बहुत परेशान हैं। उनकी समझ में यह बात भी नहीं आती कि लोग चार्ल्स दशम को अब दोन कार्लोस क्यों कहने लगे हैं।...* कितने खुशकिस्मत लोग हैं! राजनीति की चर्चा से मन में जो घिन उठती है उससे बचने के लिए हम कृत्रिम रास्ता अपनाते हैं–अखबार पढ़ना छोड़ देते हैं, इनका रास्ता नैसर्गिक है–ये पढ़ते हैं और कुछ नहीं समझते।...

सच मानो, इन्हें देखकर मेरा यह विश्वास दृढ़ होता जा रहा है कि सच्चा सुख तभी प्राप्त हो सकता है जबकि ज्ञान संपूर्ण हो, या फिर बिल्कुल ही न हो, चूंकि पहली बात मनुष्य की पहुंच से परे है, सो उसे दूसरा रास्ता ही अपनाना चाहिए। अपना यह विचार मैं नाना रूपों में अपने पड़ोसियों के सामने रख रहा हूं और उन्हें यह बहुत पसंद है। मेरा यह देखकर मन बहलता है कि मेरी बातों को वे कितनी तन्मयता से सुनते हैं। बस उन्हें मुझमें एक बात ही समझ में नहीं आती कि मैं इतना बढ़िया आदमी होकर पंच** क्यों नहीं पीता और मैंने शिकारी कुत्ते क्यों नहीं पाल रखे। लेकिन मुझे उम्मीद है कि वे इसके आदी हो जायेंगे और मैं कम से कम अपने ज़िले में इस निरर्थक शिक्षा का उन्मूलन कर पाऊंगा, जो बस मनुष्य को अधीर ही बनाती है और हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने के उसकी आंतरिक, नैसर्गिक प्रवृत्ति का दमन करती है।... पर, छोड़ो, भाड़ में जाये यह फ़लसफ़ा! पाशविक से पाशविक मनुष्य के विचारों में भी यह दखल देने लगता है।... हां, पाशविकता से याद आया... मेरे कुछ पड़ोसियों की बड़ी कमसिन लड़कियां हैं, पर उनकी तुलना फूलों से तो नहीं, हां, सब्ज़ियों से ज़रूर की जा सकती है–ताज़ी और रसभरी। उनके मुंह से एक शब्द तक निकलवाना मुश्किल है। मेरे सबसे निकट के एक पड़ोसी, एक बहुत अमीर आदमी के एक बेटी है, नाम उसका

---

* चार्ल्स दशम–लुई सत्तरहवें के बाद १८२४ से १८३० तक फ़्रांस का बादशाह, जिसने घोर प्रतिक्रांतिकारी नीति अपनायी। जुलाई १८३० की क्रांति के बाद उसे अपना सिंहासन छोड़ना पड़ा। इसी तरह स्पेन के राजकुमार दोन कार्लोस को, जो १९वीं शती के पहले दशक में निरंकुशतंत्र और पुरोहित वर्ग का एक सबसे अधिक प्रतिक्रियावादी समर्थक था, नेपोलियन ने सिंहासन का अधिकार त्यागने पर विवश किया था।

** हल्की अंगूरी या अधिक तेज मदिरा में नींबू आदि का रस, मसाले, चाय और पानी मिलाकर बनाया जानेवाला गरम पेय।

शायद कतेरीना है। उसे आम नियम से एक अपवाद माना जा सकता था, बशर्ते उसे भी दांतों से जीभ सटाने और तुम्हारी हर बात पर लाज में लाल होने की आदत न होती। मैं आधे घंटे तक उसके साथ मगजपच्ची करता रहा, पर अभी तक यह तय नहीं कर पाया हूं कि इस सुंदर आवरण के अंदर बुद्धि नाम की भी कोई चीज है कि नहीं, और क्या यह आवरण वाकई सुंदर है। उसकी अधमुंदी आंखों में, जरा ऊपर को उठी-सी उसकी छोटी-सी नाक में कुछ इतना प्यारा और बालसुलभ है कि उसे चूम लेने को जी करता है। मेरे लिए यह बहुत वांछनीय है, जैसा कि यहां कहा जाता है, कि मैं इस नन्हीं गुड़िया के मुंह से दो शब्द निकलवा लूं। अपनी अगली मुलाकात में और कुछ नहीं तो अतुलनीय इवान फ्योदोरोविच श्पोन्का के शब्दों में ही *"गर्मियों में तो मक्खियां बहुत होती हैं, जी!"** – उससे बातचीत शुरू करने का मैंने पक्का इरादा कर लिया है। देखते हैं इवान फ्योदोरोविच और उनकी मंगेतर के वार्तालाप में हमारी बातचीत कुछ लंबी चलती है कि नहीं।

अच्छा तो, अलविदा। जल्दी-जल्दी पत्र लिखा करना, लेकिन मुझसे इसकी उम्मीद मत रखना। तुम्हारी चिट्ठियां पढ़ने में बहुत मजा आता है, लेकिन उनका जवाब देने में इतना नहीं।

पत्र २

(पहले पत्र के दो महीने पश्चात्)

लो, कर लो बात मानव-संकल्प की अडिगता की! अभी कितने दिन हुए हैं जब मैं इस बात पर खुश हो रहा था कि मेरे पास एक भी पुस्तक नहीं है, लेकिन फिर एक महीना भी न बीतने पाया कि मेरा मन पुस्तकों के लिए उदास हो गया। शुरुआत इस बात से हुई कि मैं अपने पड़ोसियों से बुरी तरह आजिज आ गया। तुमने ठीक ही लिखा था कि मैं वैज्ञानिकों के बारे में अपनी व्यंग्यात्मक टिप्पणियां उन्हें *व्यर्थ ही बताता हूं*, कि मेरे शब्द उनके मूर्खतापूर्ण अहंकार की

---

* संदर्भ निकोलाई गोगोल की कहानी 'इवान फ्योदोरोविच श्पोन्का और उसकी मौसी'।

तुष्टि करते हुए उन्हें और भी ज़्यादा घामड़ वना रहे हैं। हां, मेरे दोस्त, अव मैं इस वात का कायल हो गया हूं: अज्ञान से उद्धार नहीं हो सकता। तथाकथित शिक्षित लोगों के बीच जो विषय-विकार फैले देखकर मुझे डर लगता था, वही सव शीघ्र ही मैंने यहां भी पाये—वही अहंमन्यता, वही घमंड, वही ईर्ष्या, वही धनलोलुपता, वही दुष्टता, वही चापलूसी, वही नीचता। अंतर बस इतना है कि यहां ये सव अवगुण अधिक उग्र, अधिक खुले और अधिक घिनौने हैं, जवकि जिन वातों को लेकर ये प्रकट होते हैं वे अधिक तुच्छ हैं। मैं तो इससे भी अधिक कहूंगा: शिक्षित व्यक्ति की शिक्षा ही उसके चित्त को व्यस्त रखती है, कम से कम इतना तो है कि उसकी आत्मा उसके आस्तित्व के प्रत्येक क्षण में पतित नहीं होती; संगीत, चित्र, ऐश्वर्य की वस्तुएं—यह सव उसके पास नीच कर्मों के लिए थोड़ा समय छोड़ता है।... लेकिन मेरे इन मित्रों को पास से जानना तो लोमहर्षक अनुभव है। स्वार्थ भावना तो उनमें कूट-कूट कर भरी हुई है। सौदे में धोखा देना, झूठा मुकदमा जीतना, घूस खाना—यह सव चुपके-चुपके नहीं, वल्कि खुले आम होशियार आदमी का काम माना जाता है। जिससे कुछ फ़ायदा उठाया जा सकता है उससे स्नेह जताना सभ्य व्यक्ति का कर्त्तव्य माना जाता है। वरसों तक मन में कटुता वनाये रखना और वदला लेना स्वाभाविक वात है। शरावखोरी, जुआ और ऐसा व्यभिचार, जिसकी कल्पना तक कोई पढ़ा-लिखा आदमी नहीं कर सकता—यह सव अनिंदनीय मनोरंजन है। और फिर भी ये लोग दुखी हैं, अपनी ज़िंदगी को कोसते हैं। और हो भी क्या सकता है! यह सारा व्यभिचार, मानव गरिमा की यह अवहेलना दादा से वाप को, वाप से वेटे को पिता की नसीहतों और मिसाल के तौर पर धरोहर में मिलती है, पूरी की पूरी पीढ़ियां इस रोग से ग्रस्त हैं। इन महानुभावों को पास से देखते हुए मैं यह समझ गया हूं कि अनैतिकता का अज्ञान के साथ और अज्ञान का दुख के साथ इतना घनिष्ठ संवंध क्यों है। यह अकारण ही नहीं कि ईसाई धर्म सांसारिक जीवन से विमुख होने का आह्वान करता है। आदमी अपनी भौतिक आवश्यकताओं की ओर जितना अधिक ध्यान देता है, अपने घर-गृहस्थी के कामों, इनसे जुड़ी निराशाओं, लोगों की वातों, उसके साथ उनके वर्ताव, छोटे-छोटे सुखों, संक्षेप में जीवन की छोटी-छोटी

बातों को जितना अधिक महत्त्व देता है उतना ही अधिक वह दुखी होता है। ये छोटी-छोटी बातें ही उसके लिए जीवन का उद्देश्य बन जाती हैं। उनके लिए वह चिंतित होता है, क्रोध करता है, दिन का हर पल उनमें लगाता है, आत्मा की सारी पावनता को होम करता है, और चूंकि ये तुच्छ बातें असंख्य हैं, सो उसकी आत्मा अनगिनत परेशानियों का शिकार होती है, उसका चरित्र बिगड़ता है। सभी उदात्त, अमूर्त और मन को शांति पहुंचानेवाली बातें वह भूल जाता है। सहिष्णुता, जो सबसे बड़ा सद्गुण है, विलुप्त हो जाती है और आदमी अनचाहे ही दुष्ट, क्रोधी और अनुदार हो जाता है। नतीजा यह है कि आदमी मानसिक नरक भोगता है। इसके उदाहरण हम आये दिन देखते हैं। आदमी को हमेशा इस बात की चिंता लगी रहती है कि दूसरे उसके प्रति उचित सम्मान दिखा रहे हैं या नहीं, उसके साथ शिष्टाचार बरता जा रहा है कि नहीं। गृहिणी सारा दिन गृहस्थी के कामों में डूबी रहती है। साहूकार सारा समय मुनाफा गिनता रहता है। कार्यालय का अधिकारी कार्यालयों के नियमों के पालन की चिंता में अपने कार्य का सच्चा प्रयोजन भूल जाता है। तुच्छ बातों के पीछे आदमी अपनी गरिमा को भुला देता है। इन लोगों को इनके घर के दायरे में, इनके अधीनों के साथ व्यवहार में देखिये—कितने भयंकर, कितने घिनौने हैं ये! दिन-रात की चिंता ही इनकी जिंदगी है और इस चिंता का कोई नतीजा हासिल नहीं होता—ये जीवन के साधनों और उपायों की चिंता में इतने डूबे रहते हैं कि इनके पास जीने का वक्त ही नहीं बचता। अपने ग्रामीण मित्रों की दशा का यह दुखद अनुभव पाकर मैं अपने घर में बंद हो गया और नौकरों से कह दिया कि किसी को भी अंदर न आने दें। अकेला रह जाने पर मैंने कमरे में टहलकदमी की, अपने चौकोर पोखर को देखता रहा, उसका चित्र बनाने की कोशिश की लेकिन तुम तो जानते ही हो मुझसे कभी पेंसिल चली ही नहीं है। हठपूर्वक चलाता रहा, चलाता रहा और बनी एक बेहूदी तस्वीर। कविता पर हाथ आजमाना चाहा तो विचारों और छंदों के द्वंद्व में फंस गया। सोचा कुछ गाकर ही देखा जाये लेकिन कभी सरगम तक तो ठीक से निकली नहीं थी। आखिर हारकर चचा के बूढ़े वेन्सिक को बुला भेजा और उससे पूछा क्यों भई चचा के पास पढ़ने को कुछ नहीं था क्या? कोई पुस्तकें-वुस्तकें? बूढ़े

वेलिफ़ ने नीचे तक झुककर सलाम बजाया और बोला: "नहीं, मालिक, ऐसा हमारे पास कुछ नहीं रहा।" – "अरे, तो फिर, ऊपर की मंज़िल पर जो बंद अलमारियां मैंने देखी हैं, उनमें क्या है?" मैंने पूछा। "उनमें, मालिक, कुछ पोथे हैं। आपके चचाजान जब गुजरे तो चची मालकिन ने हुक्म दिया कि उन अलमारियों पर सील लगा दें और कोई उन्हें खोले नहीं।"

"चलो, खोलो उन्हें!"

हम ऊपर गये। वेलिफ़ ने मोम की ढीली-सी सीलें तोड़ीं, अलमारियां खोलीं और मैं देखता क्या हूं? कभी ख्वाब में भी नहीं सोचा था कि चचाजान रहस्यवादी थे! अलमारियों में पेरासेलसस, काउंट गेवेलिस, एर्नोल्डिस विलानोवा, रेमंड लली, आदि कीमियागरों और गुप्तविद्याओं के दूसरे जानकारों की रचनाएं भरी पड़ी थीं।* बुढ़ऊ ज़रूर पारस खोजता रहा होगा।... वाह मियां! और देखो तो, अपना भेद कितनी अच्छी तरह दूसरों से छिपाये रखा था।

अब मैं और करता भी क्या? जो किताबें मिलीं उन्हें ही पढ़ने लगा। अब ज़रा कल्पना करो, मैं उन्नीसवीं सदी का आदमी भारी-भरकम पोथियां लिये बैठा हूं और बड़े जतन से उनमें लिखी विचित्र बातें पढ़ रहा हूं: आद्य तत्व की, विद्युत तत्व की, सौर आत्मा की, उत्तरी आर्द्रता की, तारक आत्माओं और ऐसी ही कितनी दूसरी चीज़ों की। इस सब पर हंसी भी आती है, उकताऊ भी लगता है यह सब, पर साथ ही कौतूहल भी जगाता है। इस काम में मैं अपनी पड़ोसिन तक को भूल गया हूं, हालांकि उसका बाप (सारे ज़िले में वही एकमात्र ढंग का आदमी है, हालांकि उबाता वह भी कम नहीं)

---

* 'काउंट गेवेलिस अर्थात गुप्त विद्याओं पर वार्तालाप' – इस शीर्षक से एक गुमनाम लेखक की पुस्तक १६७० में पेरिस में छपी थी। वास्तव में इसके लेखक फ़्रांसीसी पादरी निकोला विलार दे मोंफ़ोको (१६३५–१६७३) थे। इसका विषय था – मूल तत्वों की आत्माएं और मनुष्यों के साथ उनके संबंध।

एर्नोल्डिस विलानोवा (१२३५–१३१२) – स्पेन के कीमियागर और दार्शनिक थे।

रेमंड लली (१२३५–१३१५) – स्पेन के रहस्यवादी और धर्मविज्ञानी थे, जो कीमियागरी के प्रयोग भी करते रहे थे।

अक्सर मेरे यहा आता है और मेरा बहुत ख्याल रखता है। अपनी पड़ोसिन के बारे मे मैं जो कुछ भी सुन रहा हू उसमे यही पता चलता है कि वह, जैसा पुराने जमाने में कहा जाता था, बड़ी कायदे की लड़की है, यानी उसे अच्छा-खासा दहेज मिलनेवाला है। इधर, ऐसा भी मेरे सुनने मे आया है कि वह बहुत परोपकार करती है—गरीब लड़कियों का ब्याह कराती है, उन्हे ब्याह के लिए पैसे देती है और अक्सर अपने पिता का, जो बड़ी जल्दी उबल पड़ता है, गुस्सा ठडा करती है। आस-पड़ोस के सभी लोग उसे देवी कहते है, जो कि यहा के लिए बड़ी असाधारण बात है। वैसे तो ऐसी लड़किया हमेशा अपनी नही तो दूसरों की शादी करने की बड़ी शौकीन होती है। क्या वजह है इसकी?

पत्र ३

(दो महीने बाद)

दोस्त, तुम सोचते होगे कि मैं न सिर्फ इश्क मे डूबा हुआ हू, बल्कि अब तक शादी भी कर चुका हू—नही, तुम्हारा ख्याल गलत है। मैं बिल्कुल दूसरे ही काम मे व्यस्त हू। मैं पीता हू—जानते हो क्या? निठल्ले बैठे आदमी क्या कुछ नही सोच डालता! मैं जल पीता हू। हसो नही यह तो जान लो, कैसा जल! चचा की किताबे छानते हुए मुझे उनमे एक ऐसी पुस्तक मिली जिसमे मूल तत्वो की रूहो को बुलाने के तरह-तरह के नुस्खे दिये गये हैं। कई तो बेहद हास्यास्पद हैं, किसी के लिए सफेद कौए की कलेजी चाहिए, कही काच लवण, तो कही हीग काष्ठ। ज्यादातर नुस्खो मे ऐसी-ऐसी चीजें हैं जो किसी भी दवाफरोश के पास नही मिल सकती। इन नुस्खो मे से एक ऐसा भी था "मूल तत्वो की रूहो को लोगो से बहुत लगाव होता है, आदमी थोड़ा सा जतन करे तो उनके साथ सपर्क स्थापित कर सकता है, मिसाल के लिए, हवा मे विचरनेवाली रूहो को देख पाने के लिए बस इतना करना काफी है कि काच के बर्तन मे भरे जल मे सूरज की किरणे जमा करो और यह जल प्रति दिन पियो। इस रहस्यमय विधि मे सूरज की रूह

धीरे-धीरे आदमी में प्रवेश करती जायेगी और फिर उसकी आंखें एक नये संसार को देख पाने के लिए खुल जायेंगी। जो व्यक्ति किसी राजसी धातु के माध्यम से उनसे नाता जोड़ने का साहस करेगा, वह प्रकृति के मूल तत्वों की रूहों की भाषा और उनके जीने के ढंग को समझने लगेगा, जिस रूह को वह चाहेगा उसके साथ उसका अस्तित्व एकाकार हो जायेगा और इस तरह वह प्रकृति के ऐसे-ऐसे भेदों को जान पायेगा... परंतु इससे अधिक हम और कुछ नहीं कह सकते... Sapienti sat...* प्रिय पाठक, तुम्हारे प्रवोध के लिए हम पहले ही वहुत कुछ कह चुके हैं," इत्यादि, इत्यादि। यह विधि मुझे इतनी सरल लगी कि मैंने इसे आज़माने का फ़ैसला कर लिया। कम से कम यह तो कह सकूंगा कि मैंने गुप्त विद्या खुद अपने पर आजमायी है। मुझे उंदीना की याद आयी,** जिसने लड़कपन में मेरे मन को इतना प्रसन्न किया था, लेकिन उसके मामा से मैं कोई वास्ता नहीं रखना चाहता था, सो मैंने सिल्फ़ीदा को देखने की कामना की। सो, इस इरादे से – खाली वैठे आदमी क्या कुछ नहीं करने लगता? – मैंने अपनी फ़िरोज़े की अंगूठी विल्लौरी कांच के फूलदान में भरे जल में डाली और इस जल को धूप में रख दिया। रात को सोने से पहले मैं यह जल पीता हूं। अभी तक तो मैंने इतना देखा है कि यह मेरी सेहत के लिए वहुत अच्छा है। कोई तात्विक शक्ति तो मैं अभी नहीं देख पाया हूं, पर हां, नींद अच्छी आने लगी है।

पता है, मैं अभी भी कीमियागरी की और गुप्त विद्याओं की पुस्तकें पढ़ रहा हूं, और, जानते हो, मुझे काफ़ी दिलचस्प लग रही हैं ये! इनके लेखक कितने अच्छे, कितने निष्कपट हैं। "हमारा काम," वे लिखते हैं, "वड़ा सरल है। तकुअ कातते-कातते भी औरत यह सव कर सकती है – वस हमारी वात समझना सीख लो।" – "मैंने अपनी आंखों से देखा है," एक लिखता है, "मेरे सामने पेरासेल्सस ने ग्यारह पाउंड सीसा सोने में वदल दिया।" – "मैं स्वयं," दूसरा कहता है,

---

* समझदार के लिए इशारा वहुत है। (लैटिन)

** उंदीना – जल तत्व की आत्मा, जर्मन स्वच्छंदतावादी फ़ेडरिक दे ला मोत फुके (१७७७–१८४३) के इसी नाम के उपन्यास की नायिका। रूसी कवि वसीली झुकोव्स्की (१७८३–१८५२) ने इस उपन्यास का रूसी में काव्य रूपांतरण किया था।

"प्रकृति से आदि तत्व पा सकता हू और उसकी मदद से स्वयं किसी भी धातु को अपनी इच्छानुसार दूसरी धातु मे बदल सकता हू।"—"पिछले वर्ष," तीसरा लिखता है, "मैंने चिकनी मिट्टी से बहुत उम्दा नीलम *बनाया।*" हर कोई अपनी ऐसी स्पष्ट स्वीकारोक्ति के पश्चात छोटी-सी, परतु भावप्रवण प्रार्थना करता है। यह दृश्य मेरे लिए बडा मर्मस्पर्शी है। आदमी हिकारत से उसकी बात करता है जिसे अधर्मियो का यानी हमारा-तुम्हारा विज्ञान कहा जाता है। गर्वमय आत्म-विश्वास के साथ वह मानव शक्ति, उसकी चरम सीमा तक पाता है या सोचता है कि पा लेगा, और इस चरम बिंदु पर पहुचकर वह सर्वशक्तिमान ईश्वर की कृतज्ञतापूर्ण और निश्छल प्रार्थना करते हुए अपने को दीन-हीन बताता है। ऐसे व्यक्ति के ज्ञान पर विश्वास न करना कठिन है, केवल अज्ञानी ही निरीश्वरवादी हो सकता है, वैसे ही जैसे कि केवल निरीश्वर-वादी ही अज्ञानी। हम, उद्योगो मे विश्वास रखनेवाले १६वी सदी के अहंकारी व्यर्थ ही इन पुस्तको की अवहेलना करते है, उनके बारे मे कुछ जानना भी नही चाहते। भौतिकी का शैशवकाल दर्शानेवाली अनेक बेतुकी बातो के बीच मैंने इनमे बहुत से गूढ विचार भी पाये है। *इनमे से कई विचार १८वी सदी मे भ्रामक प्रतीत हो सकते थे,* किंतु आज की नयी खोजे इनमे ज्यादातर की पुष्टि करती है। इनके साथ भी वही हुआ है जो ड्रैगन के साथ—तीस साल पहले सब उसे कल्पित जीव मानते थे, किंतु अब उसके अवशेष प्राक्प्रलय काल के जीवो के अवशेषो के बीच मिले हैं। यह बताओ कि जब हमने जल की रचना की विधि खोज ली है, उस जल की, जिसे अब तक एक मूल तत्व माना जाता रहा था, तो क्या अब सीसे को सोना बनाने की सभावना पर हम सदेह कर सकते हैं? कौन ऐसा रसायनशास्त्री है, जो हीरे को मूल तत्वों मे *विघटित करने और फिर से उसे आरभिक* रूप देने का प्रयोग करने से इकार करेगा? तो फिर सोना बनाने का विचार हीरा बनाने के विचार से अधिक हास्यास्पद क्यो है? दोस्त, तुम चाहो तो मुझ पर हस लो, पर मैं तो यही कहूगा कि ये विस्मृत लोग हमारा ध्यान पाने के योग्य है। इनकी हर बात पर यदि हम विश्वास नही कर सकते, तो भी, दूसरी ओर, इस बात मे कोई सदेह नही हो सकता कि इनकी रचनाए ऐसे ज्ञान की ओर इशारा करती है, जिसे हम गवा चुके है और जिसे फिर से खोज लेना बुरा न होगा।

चचा की पुस्तकों से कुछ उद्धरण तुम्हें भेजूंगा तो तुम स्वयं इसके कायल हो जाओगे।

पत्र ४

अपने पिछले पत्र में तुम्हें वह वात तो लिखनी भूल ही गया, जिसकी खातिर पत्र लिखना शुरू किया था। वात यह है, मेरे दोस्त, कि मेरी स्थिति वड़ी विचित्र है और मुझे तुम्हारी सलाह की जरूरत है: मैं तुम्हें अपने पड़ोसी की वेटी कतेरीना के वारे में कई वार लिख चुका हूं। आखिरकार मैं उसके मुंह से वोल निकलवाने में सफल हो ही गया और मैंने देखा कि उसमें प्रकृतिदत्त वुद्धि और निर्मल हृदय ही नहीं है, वल्कि उसमें एक और विल्कुल अप्रत्याशित गुण भी है – यह कि वह मुझे अपना दिल दे वैठी है। कल उसका वाप आया और उसने मुझे कुछ ऐसी वातें वतायीं, जो मैंने सरसरी तौर पर ही सुनी थीं, क्योंकि अपने सारे काम मैंने कारिंदे को सौंप रखे हैं। हमारे वीच कुछ हजार देस्यातिना* जंगल को लेकर मुकदमा चल रहा है, और इस जंगल से ही मेरे किसानों की सारी आमदनी होती है। यह मुकदमा चलते तीस साल से ऊपर हो गये हैं और अगर इसका फ़ैसला मेरे हक में न हुआ तो मेरे किसान विल्कुल तवाह हो जायेंगे। सो, तुम देख ही रहे हो कि मुकदमा कितना महत्वपूर्ण है। मेरे पड़ोसी ने मुकदमे की वात मुझे सारी तफ़सीलों के साथ वतायी और आखिर में सुझाव रखा कि हम समझौता कर लें। उसने मुझे वड़ी होशियारी से यह जता दिया कि हमारा यह समझौता पक्का हो, इसके लिए वह मुझे अपना दामाद वना देखना चाहता है। विल्कुल किसी घटिया नाटकवाला दृश्य था, लेकिन इसने मुझे सोचने पर विवश किया है। क्यों न यह शादी कर ली जाये? जवानी मेरी गुजर गयी, कोई महान व्यक्ति मैं वनने से रहा, हर चीज़ से मैं उकता गया हूं। कतेरीना वड़ी प्यारी आज्ञाकारी लड़की है और वातूनी भी नहीं है। उससे शादी करके मैं यह वेहूदा मुकदमा खत्म कर दूंगा। ज़िंदगी में कम से कम एक तो भला काम मेरे हाथों हो जायेगा: मेरे आश्रितों के लिए जीना कुछ आसान हो

---

* १ देस्यातिना – १.०६ हेक्टर।

जायेगा। सो, बात का लुब्बेलुबाब यह है: मेरा बहुत मन है कि कतेरीना से विवाह कर लूं, ठाठ से ज़मींदार बनकर जिऊं, ज़मींदारी के सारे काम पत्नी को सौंप दूं और खुद सारा दिन चुपचाप बैठा पाइप पीता रहूं। है न स्वर्ग की ज़िंदगी? यह सारी भूमिका मैं तुमसे यह कहने के लिए बांध रहा हूं कि मैंने विवाह का निश्चय कर लिया है, लेकिन कतेरीना के पिता को नहीं बताया और तब तक बताऊंगा भी नहीं, जब तक तुम मुझे निम्न प्रश्नों का उत्तर नहीं दे देते: तुम्हारा क्या ख्याल है, क्या मैं एक विवाहित व्यक्ति बनने के लायक हूं? क्या मेरी पत्नी मुझे मेरे बदमिज़ाजी के रोग से बचा सकेगी, याद रखना कि उसे सारा-सारा दिन एक शब्द तक न बोलने की आदत है, सो, किसी भी तरह मुझे उकता नहीं सकती? संक्षेप में यह कि क्या मुझे कुछ देर और रुकना चाहिए जब तक कि मैं कोई नया, अप्रत्याशित, मौलिक रंग नहीं दिखा देता, या फिर मुझे जो बनना था वह मैं बन चुका हूं और मुझे बस इस बात की चिंता करनी चाहिए कि मेरे बदन से कितनी वसा बन सकती है? बड़ी अधीरता से मैं तुम्हारे उत्तर की प्रतीक्षा करूंगा।

पत्र ५

मेरे दोस्त, तुम्हारी दृढ़ता, तुम्हारे परामर्शों और शुभ कामनाओं के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। तुम्हारा पत्र मिलते ही मैं तुरंत घोड़ा दौड़ाता कतेरीना के पिता के पास गया और उनके सामने विवाह का प्रस्ताव रखा। काश, तुम देखते, कतेरीना कितनी खुश थी। उसके गाल लाल हो गये और उसने ये शब्द भी कहे, जिनमें उसकी सारी निश्छल और निर्मल आत्मा व्यक्त हुई है "मैं नहीं जानती," उसने मुझसे कहा, "मैं ऐसा कर पाऊंगी या नहीं, लेकिन प्रयत्न पूरा करूंगी कि जितनी मैं सुखी हूं, उतना ही आपको भी सुखी बना सकूं।" बड़े सीधे-सरल शब्द हैं, लेकिन काश तुमने सुना होता कि कितने भावभीने स्वर में कहे थे उसने ये शब्द! तुम तो जानते ही हो कि कभी-कभी एक शब्द ही पूरे सबे भाषण से कहीं अधिक भावनाएं व्यक्त करता है। कतेरीना के शब्दों में मैंने विचारों का पूरा संसार देखा। कितना मुश्किल रहा होगा उसके लिए इतनी बात कहना। कितनी शक्ति मिली

होगी उसे अपने प्रेम से कि वह अपनी लाज और संकोच को लांघकर इतनी बात कह पायी! किसी व्यक्ति के कार्यों को उसकी शक्ति को ध्यान में रखते हुए आंकना चाहिए, और मैं अभी तक यही सोचता आया था कि अपने संकोच को लांघ पाना कतेरीना की शक्ति से परे है।... अब तुम कल्पना कर ही सकते हो कि इसके बाद हमने आलिंगनबद्ध होकर चुंबन लिया, बूढ़े की आंखें गीली हो गयीं। बस अब चालीसे का व्रत खत्म होते ही ब्याह की तैयारी है। तुम्हें जरूर आना होगा, अपने सारे काम-वाम छोड़ो और चले आओ, मैं चाहता हूं कि तुम मेरे सौभाग्य के साक्षी बनो। और कुछ नहीं तो सारी दुनिया से अनोखे वर-वधू को देखने ही चले आना: दोनों एक दूसरे के सामने बैठे हैं, टकटकी लगाये एक दूसरे को देख रहे हैं, एक शब्द भी नहीं कह रहे हैं और दोनों बेहद खुश हैं।

पत्र ६

(कुछ सप्ताह पश्चात्)

समझ में नहीं आता कैसे यह पत्र शुरू करूं। तुम मुझे पागल समझोगे, मुझ पर हंसोगे और बुरा-भला कहोगे।... जो चाहो कर लो; चाहो तो मेरी बातों पर विश्वास भी मत करना, लेकिन मैंने जो देखा है और रोज़ाना अपनी आंखों से जो देख रहा हूं उस पर मैं रत्ती भर भी संदेह नहीं कर सकता। नहीं! मेरे चचा के नुस्खों में सब कुछ बकवास नहीं है। वास्तव में उन पुरातन रहस्यों के अवशेष हैं, जो आज तक प्रकृति में बने हुए हैं, और हम बहुत कुछ अभी तक नहीं जानते, बहुत कुछ भुला बैठे हैं और बहुत सी सच्चाइयों को कपोल कल्पना कहते हैं। तो, सुनो मेरे साथ क्या घटी है: पढ़ो और चकित होते जाओ! इसकी तो तुम कल्पना कर ही सकते हो कि कतेरीना से वार्तालापों के पीछे मैं सौर जल के अपने फूलदान को नहीं भूला। तुम तो जानते ही हो कि ज्ञान-प्रेम, या सीधे-सीधे कहा जाये तो कौतूहल मेरा मूल तत्व है, यह मेरे हर काम में दखल देता है, उन्हें गड्डमड्ड कर देता है और मेरे लिए जीना मुश्किल बनाता है। मैं कभी इससे छुटकारा नहीं पा सकूंगा। कोई चीज सदा मुझे अपनी ओर आकर्षित

करती लगती है, लगता है दूर कहीं कुछ है जो मेरी प्रतीक्षा कर रहा है, आत्मा व्याकुल होती है, तडपती है। .. पर, खैर, काम की बात पर आये। कल शाम को जब मैं अपने फूलदान के पास गया तो मुझे अपनी अगूठी में कुछ गति सी प्रतीत हुई। पहले तो मैने सोचा कि यह प्रकाशीय भ्रम है और इस बारे मे आश्वस्त होने के लिए मैने फूलदान अपने हाथों में उठा लिया। लेकिन मेरे हाथो के जरा से हिलने की देर थी कि मेरी अगूठी नीली और सुनहरी चिंगारियों मे बिखर गयी, महीन रेतो की तरह वे पानी मे फैल गयी और फिर विलुप्त हो गयी, लेकिन जल सुनहरा हो गया और उसमे नीली-नीली आभा आ गयी। मैने फूलदान को वापस रख दिया और उसके तले पर फिर से मेरी अगूठी बन गयी। सच पूछो तो मै सिहर उठा। नौकर को बुलाकर मैने उससे पूछा कि क्या उसे फूलदान मे कोई खास चीज नज़र आती है, उसने जवाब दिया कि नही, उसे कुछ नजर नही आता। तब मै समझ गया कि इस विचित्र परिघटना को केवल मै ही देख सकता हू। नौकर मुझ पर हसे न इसलिए मैने उसे यह कहकर वापस भेज दिया कि मुझे पानी गदा लगा था। अकेले रहकर मैं बडी देर तक अपना प्रयोग दोहराता रहा और इस विचित्र परिघटना पर विचार करता रहा। मैने कई बार यह जल एक फूलदान से दूसरे मे पलटा। हर बार आश्चर्यजनक सटीकता के साथ वही परिघटना दोहरायी जाती – लेकिन देखो कि भौतिकी का कोई भी नियम इसकी व्याख्या नही कर सकता। क्या यह वाकई सच है? क्या मुझे इस विचित्र रहस्य का साक्षी होना बदा है? मुझे यह इतना महत्व-पूर्ण लगता है कि मैने इसका पूरी तरह अध्ययन करने का सकल्प कर लिया है। अब मैं पहले से भी अधिक लगन से अपनी पोथिया पढ रहा हू, और अब जब कि मेरी आखो के सामने यह प्रयोग हो गया है, मै मनुष्य और दूसरे, अगम्य ससार के बीच सबध को अधिकाधिक समझता जा रहा हू। आगे-आगे देखिये होता है क्या!

पत्र ७

नही, मेरे मित्र, तुम गलती पर हो, और मैं भी। मेरी नियति मे यह लिखा है कि मुझे प्रकृति के एक महान रहस्य का साक्षी होना है और लोगो को उसके बारे मे बताना है, उन्हे यह याद दिलाना है कि एक

चमत्कारी शक्ति उनकी पहुंच में है, मगर वे उसे भुलाये बैठे हैं; उन्हें यह याद दिलाना है कि हमारे चारों ओर अभी तक अज्ञात जगत हैं। कितनी सरल हैं प्रकृति की सभी क्रियाएं! कितने सरल साधनों से वह ऐसे कार्य करती है, जो लोगों को चकित और भयभीत करते हैं। लो, सुनो और चकित होते जाओ।

कल जब मैं अपनी चमत्कारी अंगूठी को निहारने में तल्लीन था तो मुझे फिर से उसमें कोई गति प्रतीत हुई। देखता क्या हूं—जल पर नीली-नीली लहरें उठ रही हैं और उनमें इंद्रधनुषी ओपल किरणें प्रतिबिंबित हो रही हैं। फ़िरोजा ओपल में बदल गया था और उससे मानो सौर प्रकाश जल में उठ रहा था। सारे जल में हलचल थी, सुनहरी धाराएं ऊपर को उठ रही थीं और आसमानी चिनगारियों में बिखर रही थी। सभी संभव रंग यहां थे, कभी वे मिलकर असंख्य वर्णच्छटाएं प्रस्तुत करते, कभी स्पष्टतः अलग-अलग हो जाते। अंततः, यह इंद्रधनुषी चमक समाप्त हो गयी और उसका स्थान हल्के हरे रंग ने लिया; हरी-हरी सी लहरियों पर गुलाबी धागे तिरने लगे, बड़ी देर तक अंतर्गुथित होते रहे और फिर फूलदान के तले पर मिलकर एक बेहद खूबसूरत गुलाब का फूल बन गये—सब कुछ शांत हो गया, जल निर्मल था, बस गज़ब के गुलाब की पंखुड़ियों में ही हल्का-हल्का कंपन हो रहा था। यह कुछ दिन पहले की बात है। तब से मैं रोज़ाना सुबह तड़के उठकर अपने रहस्यपूर्ण गुलाब के पास जाता हूं—नये चमत्कार की उम्मीद लिये, लेकिन अभी तक कुछ नहीं दिखा। गुलाब खिला हुआ है और मेरे कमरे में अकथनीय सुगंध फैला रहा है। अनायास ही मुझे गुप्तविद्या के एक ग्रंथ में पढ़ी यह बात याद आयी कि मूल तत्वों की आत्माएं अपने वास्तविक रूप में प्रकट होने से पहले प्रकृति के सभी जगतों से गुज़रती हैं। आश्चर्य! आश्चर्य!

कुछ दिन पश्चात्

आज मैं अपने गुलाब के पास गया और मुझे लगा कि वहां कुछ नया है।... फूल को अच्छी तरह देखने के लिए मैंने फूलदान उठाया और उसका पानी दूसरे बर्तन में उंडेलने की सोची। लेकिन मैंने उसे हिलाया ही था कि फिर से गुलाब में से हरे और गुलाबी धागे-से निकलने

लगे, और फिर हरी-गुलाबी जल-धारा दूसरे बर्तन मे बह गयी। एक बार फिर मैंने फूलदान के तले पर अपना अनुपम पुष्प देखा. सब कुछ शात हो गया था, किन्तु फूल के बीचोबीच मुझे कुछ दीख पडा। पखुडिया धीरे-धीरे खुली और—मुझे अपनी आखो पर विश्वास न हुआ!—नारगी पुकेसर के बीच—विश्वास करो न करो!—एक अद्भुत, अकथनीय जीव विश्रामरत था—यह एक नारी थी, जो मुश्किल से दीख पड़ रही थी! अपने इस भयमिश्रित आनद का वर्णन मैं किन शब्दो मे करू! वह कोई शिशु नही थी। यौवन के पूरे निखार पर पहुची नारी के सूक्ष्म चित्र की कल्पना करो और तब तुम उस चमत्कार का हल्का-सा आभास पा सकोगे, जो मेरी आखो के सामने था। अपनी कोमल सेज पर वह बेखबर लेटी हुई थी। उसके सुनहले केश जल मे लहराते हुए कभी मेरी आखो के सामने उसका अछूता सौदर्य उभार रहे थे, तो कभी छिपा लेते थे। वह निद्रामग्न प्रतीत होती थी, मैं टकटकी लगाये उसे देखता जा रहा था, अपनी सास मैंने रोक ली ताकि उसके इस मधुर विश्राम मे विघ्न न पडे।

हा, अब मुझे गुप्तविद्या के जानकारो मे पूरा विश्वास हो गया है। अब तो यह सोचकर हैरानी होती है कि कभी मै इन्हे अविश्वास भरी नजरो से देखते हुए इन पर हसता था। नही, यदि पृथ्वी पर सत्य है तो वह इनके ग्रथो मे ही है! अब जाकर ही मेरा ध्यान इस बात की ओर गया है कि वे हमारे आम वैज्ञानिको जैसे नही है वे आपस मे बहस नही करते हैं, एक-दूसरे की बातो का खडन नही करते। वे सब तो एक ही रहस्य की चर्चा करते है, उनकी केवल शब्दावली ही अलग-अलग है, किंतु जो उनके गूढ अर्थ मे पैठ जाये, उसके लिए वे बोधगम्य है। अलविदा! प्रकृति के रहस्यो का अब मैं पूरी तरह अध्ययन करके रहूगा, सो लोगो से मैं अपना नाता तोड रहा हू। मेरे लिए एक दूसरा नया रहस्यमय ससार खुल रहा है। केवल वशजो के लिए मैं अपनी खोजो का इतिहास छोड जाऊगा। सो, मेरे दोस्त, मेरे भाग्य मे भी इस जीवन मे कोई महान कार्य करना लिखा हुआ है!

प्रकाशक के नाम गव्रीला सोफ़्रोनोविच रेभ्रेन्स्की का पत्र

आदरणीय महोदय!

क्षमा करें कि आपसे परिचित होने का सम्मान प्राप्त न होने पर भी, किंतु मिखाईल प्लातोनोविच से आपकी गाढ़ी मैत्री की जानकारी के कारण, मैं आपको यह पत्र लिखकर परेशान कर रहा हूं। निस्संदेह, आप इस वात से नावाकिफ़ न होंगे कि उसके स्वर्गीय चाचा से, जिसका वह अव कानूनी वारिस है, मेरा इमारती लकड़ी और ईंधन की लकड़ी के काफ़ी वड़े जंगल को लेकर मुकदमा चल रहा था। मेरी वड़ी वेटी कतेरीना की ओर आकर्पित होकर आपके मित्र ने मेरा दामाद वनने का सुझाव रखा, जिस पर, जैसा कि आप जानते हैं, मैंने अपनी सहमति प्रकट की। इसके परिणामस्वरूप, आपसी हित की उम्मीद रखते हुए मैंने अपने मुकदमे की कार्रवाई रुकवा दी। परंतु अव मैं भारी असमंजस में हूं। मंगनी के कुछ समय वाद, जवकि सभी परिचितों को निमंत्रण भेजे जा चुके हैं, और मेरी वेटी का दहेज पूरी तरह तैयार है, और सारे काग़ज़ात दुरुस्त करा लिये गये हैं, मिखाईल प्लातोनोविच ने हमारे यहां आना-जाना प्रायः वंद कर दिया है। यह सोचकर कि इसका कारण उनकी तवीयत दुरुस्त न होना हो सकता है, मैंने अपना आदमी उनका हाल लिवाने भेजा और फिर स्वयं भी, अपने जर्जर शरीर की परवाह न करते हुए उनसे मिलने गया। उन्हें यह याद दिलाना मुझे वड़ी अशिष्टता और अपमान की वात लगी कि उन्होंने अपनी मंगेतर को भुला दिया है। और कुछ नहीं तो माफ़ी ही मांग सकते थे। वस कहने लगे कि एक वहुत ज़रूरी काम शुरू किया है, जिसे विवाह से पूर्व संपन्न करना आवश्यक है और जिसकी ओर कुछ समय तक उन्हें लगातार ध्यान देना होगा। मैंने सोचा कि वह पोटाश फ़ैक्टरी लगाना चाहते हैं, जिसका ज़िक्र पहले भी कई वार कर चुके थे। मैं यह सोच रहा था कि वह मुझे चकित करना चाहते हैं, व्याह के लिए तोहफ़ा तैयार कर रहे हैं, यह सावित करना चाहते हैं कि वह भी कुछ ढंग का काम कर सकते हैं, क्योंकि मैं उन्हें निठल्ले वैठे रहने के लिए अक्सर डांटता था। लेकिन फ़ैक्टरी की कोई तैयारी मैंने नहीं देखी, न अव देख रहा हूं। मैंने सोचा था कि देखते हैं आगे

क्या होता है, पर तभी कल यह जानकर मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि वह अपने कमरे मे बद हो गये है, किसी को अंदर नही आने देते, यहा तक कि खाना भी उन्हे खिडकी में से दिया जाता है। तो, श्रीमान, यह जानकर मेरे दिमाग मे एक बहुत ही विचित्र विचार आया। बात यह है कि इनके चचा भी इसी मकान मे रहते थे और उनके बारे में यह मशहूर था कि वह गुप्त विद्या-शिद्या जैसी उलटी-सीधी किताबें पढते रहते हैं। महोदय, मैं स्वय विश्वविद्यालय में पढा हूं, अब भले ही जमाने से थोडा पीछे पड गया हू, मगर इन उलटी-सीधी किताबों मे विश्वास नही करता। परन्तु आदमी के साथ क्या कुछ नही हो सकता, खास तौर पर आपके मित्र जैसे दार्शनिक स्वभाव के व्यक्ति के साथ! उडते-उडते मेरे कानो मे यह अफवाह पडी है, कि वह सारा-सारा दिन पानी से भरे फूलदान को टकटकी लगाये देखते रहते है—इससे मेरा यह यकीन और भी अधिक पक्का होता है कि मिखाईल प्लातोनोविच को कुछ हो गया है। ऐसे हालात मे, आदरणीय महोदय, मेरा आपसे विनम्र निवेदन है कि आप शीघ्रातिशीघ्र यहा पधारे और सहानुभूति रखनेवाले एक मित्र के नाते मिखाईल प्लातोनोविच को होश मे लाये। तब मुझे भी पता चला जायेगा कि आगे क्या करना है फिर से मुकदमा शुरू किया जाये या जो तय हो चुका है वह काम पूरा किया जाये। आपके मित्र ने मेरा जो अपमान किया है उसके बाद मैं तो उनके घर में पाव नही रखूगा, हालाकि कतेरीना रो-रोकर मुझसे वहा जाने को कह रही है।

आशा है आपसे शीघ्र ही भेट होगी। आपका विनम्र

कहानी

यह पत्र पाते ही मैंने सबसे पहले अपने एक परिचित डाक्टर, एक अनुभवी और विद्वान व्यक्ति के पास जाने मे ही अपना कर्तव्य समझा। मैंने डाक्टर को अपने दोस्त के पत्र दिखाये, उसकी दशा के बारे मे बताया और पूछा कि क्या उसे इस सबसे कुछ समझ मे आता है। "यह तो बिल्कुल साफ मामला है," डाक्टर ने कहा, "और डाक्टरो के लिए कोई नयी बात नही है। आपके दोस्त का सिर फिर गया है।" – "लेकिन उसके पत्र

फिर से पढ़कर देखिये," मैंने आपत्ति की, "क्या उनमें पागलपन का कोई चिन्ह नज़र आता है? उनके विचित्र विषय की ओर ध्यान न दें तो वह किसी भौतिक परिघटना का विवरण मात्र लगते हैं।..."

"मामला साफ़ है," डाक्टर ने दोहराया। "आप जानते हैं हम पागलपन यानी इनसैनिया के कई भेद मानते हैं। पहले भेद में सभी प्रकार के आवेश और भीतियां आते हैं—इनका आपके दोस्त से कोई वास्ता नहीं है। दूसरे भेद में एक तो वह रोग आता है जिसमें रोगी में भूत-प्रेत देखने की प्रवृत्ति पायी जाती है, यह है विभ्रम यानी हैलुसिनेशन, दूसरा है भूत-प्रेतों से संबंध होने का विश्वास, यानी डेमनोमानिया। तो यह बात बिल्कुल समझ में आती है कि आपका दोस्त, जो स्वभाव से ही रोगभ्रमी है, गांव में अकेला रहकर तरह-तरह की बकवास पढ़ने में लग गया और इस पढ़ाई का उसकी मस्तिष्क तंत्रिकाओं पर प्रभाव पड़ा है, और तंत्रिकाएं..."

डाक्टर बड़ी देर तक मुझे यह समझाता रहा कि कैसे आदमी पूरी तरह से बुद्धिमानी की बातें करते हुए भी पागल हो सकता है, जो उसे दिखाई नहीं दे रहा है, वह देख और जो सुनाई नहीं दे रहा वह सुन सकता है। मुझे अत्यंत खेद है कि मैं पाठकों को ये सारी बातें नहीं बता सकता, क्योंकि खुद भी उन्हें नहीं समझ पाया। बहर-हाल, डाक्टर की बात का कायल मैं ज़रूर हो गया और मैंने उससे अपने मित्र के गांव चलने को कहा।

मिखाईल प्लातोनोविच बिल्कुल पीला चेहरा और सूखा बदन लिये पलंग पर लेटा हुआ था। कई दिनों से उसने कुछ नहीं खाया था। जब हम उसके पास पहुंचे तो उसने हमें नहीं पहचाना, हालांकि उसकी आंखें खुली हुई थीं, एक विचित्र चमक से दहक रही थीं। हमारी सारी बातों के जवाब में वह एक शब्द भी नहीं बोला।... मेज़ पर स्याही से रंगे कई कागज़ रखे हुए थे, उनमें से केवल कुछ पंक्तियां ही मैं पढ़ पाया। ये हैं वे पंक्तियां:

मिखाईल प्लातोनोविच की डायरी के अंश

"तुम कौन हो?"

"मेरा कोई नाम नहीं है, मुझे उसकी आवश्यकता नहीं है।..."

"तुम कहा से आयी हो?"

"मैं तुम्हारी हू—बस इतना ही जानती हू। मैं तुम्हारी हू, और किसी की नही लेकिन तुम यहा क्यो हो? कितनी घुटन और ठड है यहा! हमारे यहा सूरज बहता है, फूलो की झकार होती है, गीतो की सुरभि फैलती है चलो मेरे साथ चलो मेरे साथ.. तुम्हारे वस्त्र कितने भारी है—उतार फेको इन्हे, उतार फेको .. हमारा जगत अभी दूर है, बहुत दूर है किंतु मैं तुम्हे छोड़कर नही जाऊगी! .. तुम्हारे निवास मे सब कुछ कितना निष्प्राण है जो कुछ भी प्राणमय है उस पर एक आवरण है, उसे उतार फेको, उतार फेको!"

. यहा है तुम्हारा ज्ञान? यहा है तुम्हारी कला? तुम लोग काल को काल से, दिक् को दिक् से, कामना को आशा से, विचार को उसकी पूर्ति से अलग करते हो, और तुम ऊब से मर नही जाते?—चलो मेरे साथ, मेरे साथ! जल्दी, जल्दी

. यह तुम हो गर्वीले रोम, शताब्दियो और जनगण की राजधानी? तुम्हारे खडहरो पर बेले फैली हुई है। परतु यह क्या? खडहर गतिमान है, हरी घास में से श्वेत स्तभ उभरते हैं, एक सुदर क्रम मे लग जाते है, अपनी सदियो की राख झाडकर एक गुबद साहस-पूर्वक उनके ऊपर तन जाता है, रग-बिरगी पच्चिया क्रीडा करती हुई मच बन जाती हैं—मच पर जीते-जागते लोगो की भीड लग जाती है, प्राचीन भाषा की प्रबल ध्वनिया लहरो की मर्मर ध्वनि मे घुल-मिल जाती है—श्वेत परिधान और पुष्प-मुकुटधारी एक वक्ता अपने हाथ ऊपर उठाता है। और सब कुछ ओझल हो जाता है भव्य भवन धरती को झुकते है, स्तभ दोहरे हो जाते है, गुबद धरती मे समा जाता है। फिर से खडहरो पर बेले फैल जाती है। सब कुछ शात हो जाता है। पूजा का घटा बजता है, मदिर के कपाट खुले हैं, सगीत वाद्य के स्वर सुनाई देते है, मेरी उगलियो मे सहस्रो सुर-लहरिया प्रवाहित होती है, एक के बाद एक विचार उभरता आता है, किसी स्वप्न की भाति वे उड जाते है। क्या इन्हे पकडा या थामा नही जा सकता? और आज्ञाकारी वाद्य फिर से सच्ची प्रतिध्वनि की भाति आत्मा की कभी न लौटकर आनेवाली सभी क्षणिक गतियो को दोहराता है। मदिर निर्जन हो जाता है, असख्य मूर्तियो पर चादनी फैल जाती है। वे अपने स्थान से उतरती है और मेरे पास से गुजरती हैं—वे प्राणमय

हैं। उनके शब्द प्राचीन और नूतन हैं, उनकी मुस्कान गंभीर और दृष्टि अर्थपूर्ण है। परंतु वे फिर से अपने-अपने स्थान पर लौट आती हैं और प्रस्तर मूर्तियों पर चांदनी फैल जाती है... देर हो गयी है... एक शांत, हर्षमय शरण-स्थल हमारी प्रतीक्षा में है। खिड़की में से टाइवर का झिलमिलाता पाट नज़र आता है। उसके आगे शाश्वत नगरी का कैपिटोल* है।... कितना मनोहारी दृश्य है! यह हमारी अंगीठी के तंग चौखटे में समा गया है।... हां, वहां दूसरा रोम, दूसरी टाइवर, दूसरा कैपिटोल है। आग की चटचट कितनी हर्षदायक है।... मुझे अपने बाहुपाश में कस लो, हे सुंदरी... रत्नजड़ित चापक में फेनिल पेय उफन रहा है... पियो... पियो... वहां हिम फाये गिर रहे हैं, रास्ते को ढक रहे हैं। यहां तुम्हारे आलिंगन मुझे गर्माहट पहुंचा रहे हैं।...

उड़ चलो, उड़ चलो, ऐ द्रुत अश्वो, कोमल हिम के उड़ाओ बादल; हर एक कण में दमकता है सूरज – सुंदरी के मुखमंडल पर गुलाब दहक उठे हैं, उसके सुरभित ओष्ठ मेरे ओष्ठों से मिल जाते हैं।... चुंबन की यह कला तुमने कहां से पायी? तुम्हारा रोम-रोम दहक रहा है और मेरी एक-एक तंत्रिका में खौलता द्रव प्रवाहित कर रहा है। उड़ चलो, उड़ चलो, ऐ द्रुत अश्वो, कोमल हिम पर।... क्या? क्या यह युद्ध का चीत्कार नहीं? क्या यह आकाश और धरती के बीच नयी शत्रुता का आर्तनाद नहीं? .. नहीं, यह तो भाई ने भाई के साथ विश्वासघात किया है, यह तो एक मासूम युवती अपराध के चंगुल में है... और सूरज चमक रहा है, वायु शीतल है? नहीं! धरती दहल उठी है, सूरज धुंधला पड़ गया है, आकाश से एक तूफ़ान उतरा है, मासूम की रक्षा करके अपराधी को बहा ले गया है – और फिर से सूरज चमकता है, वायु शांत और शीतल है, भाई भाई को गले लगाता है और शक्ति मासूमियत के आगे घुटने टेकती है।... चलो मेरे साथ, चलो मेरे साथ... एक दूसरा संसार है, नया संसार... देखो, स्फटिक घुल गया है।... वहां स्फटिकों का महान रहस्य संपन्न हो रहा है; आओ, पर्दा उठायें।... पारदर्शी जगत के निवासी इंद्रधनु-पी पुष्पों से अपने जीवन का उत्सव मना रहे हैं। यहां वायु, सूर्य

---

* प्राचीन रोम में जूपिटर का मंदिर।

और जीवन—शाश्वत प्रकाश है। वे वनस्पति जगत मे सुरभित गले पाते है, उन्हे चमकते इद्रधनुषो का रूप देते है और अग्नि तत्व से इन्हे जोडते है। "चलो मेरे साथ, चलो मेरे साथ! अभी हम पहले चरण पर ही हैं। अनगिनत मेहरावो पर जल-धाराए बहती हैं, वे बडी तेजी से ऊपर को फूटती है और तेजी से धरती पर गिरती है। उनके ऊपर एक सजीव प्रिज्म और किरणो को अपवर्तित करता है, वे धमनियो मे बल खाती है और फव्वारा उनके इंद्रधनुषी स्फुलिगो को हवा मे बिखेरता है। ये स्फुलिग कभी फूलो की पखुडियो पर गिरते हैं तो कभी बेलबूटेदार जाली पर लबी जिह्वाओ मे फैल जाते हैं। सदा उफनते चपको से बधी जीवन आत्माए जीवत द्रव को सुगधित वाष्प मे बदलती है, वह बादल बनकर मेहरावो पर उमडता-घुमडता है और वर्षा की बडी-बडी बूदो के रूप मे वनस्पति जीवन के रहस्यमय पात्र मे गिरता है। यहा, पवित्रतम गर्भगृह मे जीवन भ्रूण का मृत्यु भ्रूण से सघर्ष होता है, जीवत-रस प्रस्तर हो जाता है, धातुक धमनियो मे जम जाता है और निर्जीव तत्व आत्मा-तत्व द्वारा रूपातरित होते है। चलो मेरे साथ चलो मेरे साथ .. उदात्त सिहासन पर मानव विचार विराजमान है, सारे ब्रह्माड से स्वर्णिम शृखलाए उस तक चली आती हैं। प्रकृति की आत्माए उसके सामने नतमस्तक है। पूर्व मे जीवन-प्रकाश का उदय होता है, पश्चिम मे सध्या की किरणो मे स्वप्नो की भीड लगी हुई है, विचार के सकेत पर वे कभी सामजस्यपूर्ण रूप ग्रहण कर लेते हैं और कभी उडते बादल बनकर बिखर जाते है। सिहासन के पास उसने मुझे अपने आलिगन मे कस लिया। पृथ्वी हमारे पीछे छूट गयी है!

देखो, वहा निस्सीम महासागर मे धूल के एक कण सरीखी तुम्हारी पृथ्वी तैर रही है। मनुष्य के अभिशाप, माता का रुदन, सासारिक अभावो की बाते, दुष्टो का कुटिल परिहास, कवि की पीडा—सब कुछ वहा है, यहा तो सब कुछ एक मधुर सामजस्य मे विलय हो जाता है, यहा तुम्हारा तुच्छ धूल-कण एक व्यथामय ससार नही है, बल्कि एक सुघड वाद्य है, जिसकी सुस्वर ध्वनिया ईथर की तरगो को हौले-हौले डोलायमान करती हैं।

काव्यमय पार्थिव ससार से विदा लो! हा, पृथ्वी पर भी काव्य है! तुम्हारे आनद का जीर्ण-शीर्ण ताज! बेचारे लोग! अजीब लोग!

अपने अंधकारमय जगत में तुम लोगों नें यह पाया है कि पीड़ा भी सुख है! तुम लोग अपनी वेदना को काव्यमय चमक देते हो! तुम्हें अपनी व्यथा पर गर्व है और तुम चाहते हो कि दूसरे जगत के लोग तुम्हारे जीवन से ईर्ष्या करें! हमारे जगत में दुख नहीं है, पीड़ा नहीं है—वह तो अपूर्ण संसार की नियति है, अपूर्ण जीवों की रचना की। मनुष्य इस बात के लिए स्वतंत्र है कि वह इसके सामने झुके या इसे उतार फेंके, वैसे ही जैसे यात्रा से लौट रहा पथिक अपनी मातृ-भूमि के दर्शन पाकर पुराने वस्त्र अपने कंधों से उतार फेंकता है।...

क्या तुम सोचते हो कि मैं तुम्हें नहीं जानती थी? शैशव काल से ही पवन की सांसों में, वसंती सूर्य की रश्मियों, सुरभित ओस की बूंदों में, कवि के अपार्थिव स्वप्नों में मैं तुम्हारे साथ रही हूं। जब मनुष्य में अपनी शक्ति का गर्व जन्म लेता है, जब इहलोक के बिंबों पर उसके चक्षुओं से विरक्ति की दृष्टि पड़ती है, जब उसकी आत्मा सांसारिक यातनाओं की राख झाड़कर उसके सम्मुख थरथराती प्रकृति को उपहास के साथ रौंदती है—तब हम तुम लोगों के सिरों पर मंडराती हैं, हम उस क्षण की प्रतीक्षा करती हैं, जब हम तुम्हें पदार्थ की बेड़ियों से मुक्त करा सकेंगी – तब तुम हमारा रूप पाने योग्य हो जाते हो!... देखो, क्या मेरे चुंबन में कोई व्यथा है: उसकी कोई काल-सीमा नहीं है – वह अनंत काल तक चलेगा। प्रत्येक क्षण हमारे लिए नये हर्ष से भरपूर है।... ओह, मुझे धोखा मत देना! अपने को प्रवंचना मत देना! अपनी अपरिष्कृत, तुच्छ प्रकृति के प्रलोभनों से बचकर रहना!

देखो – वहां दूर, तुम्हारी पृथ्वी पर कवि पत्थरों के उस ढेर के सम्मुख, जिस पर वनस्पति-शक्ति का संवेदनाहीन शरीर फैला हुआ है, नतमस्तक हो रहा है। "हे प्रकृति!" वह उन्माद में चिल्ला रहा है। "हे भव्य प्रकृति, तुझ से बढ़कर इस संसार में और क्या है? तेरे सम्मुख मनुष्य का विचार क्या है?" और अंधी, निर्जीव प्रकृति उसका परिहास करती है, मानव विचार की पूर्ण विजय के क्षण में वह हिम की बाढ़ लाकर मनुष्य और उसके विचार को नष्ट कर देती है। आत्मा की आत्मा में ही शिखर ऊंचे हैं! आत्मा की आत्मा में ही गहराइयां अथाह हैं! मृत प्रकृति इन गहराइयों में उतरने का साहस नहीं करती, यहां मनुष्य का स्वतंत्र, सुदृढ़ जगत है। देखो, यहां कवि का जीवन पुनीत है! यहां काव्य सत्य है! यहां वह सब कहा जाता है, जो

कवि ने अनकहा छोड़ दिया। यहां उसकी पार्थिव यातनाएं आह्लाद का अनत क्रम बन जाती हैं। ..

ओह, मुझसे प्रेम करो! मैं कभी भी नही मुरझाऊंगी. चिर युवा मेरे अछूते स्तनो का स्पदन तुम्हारे वक्षस्थल पर सदा थिरकता रहेगा! अनन्त सुख तुम्हारे लिए सदा नया और पूर्ण होगा और मेरी बाहों मे असंभव लालसा निरतर सभव सार तत्व होगी!

. . . .

यह शिशु हमारी सतान है! उसे पिता के सरक्षण की अपेक्षा नहीं है, वह मिथ्या सदेह नही जगाता, उसने पहले से ही तुम्हारी आशाए चरितार्थ कर दी हैं, वह युवा और प्रौढ है, वह मुस्कराता है और क्रदन नही करता—उसके लिए किसी भी दुख की सभावना नही, यदि तुम अपने अनघड, हेय, अश्रुपूर्ण ससार को याद न करोगे)... नही, तुम तृष्णा से हमारी हत्या न करोगे!

परतु आगे चलो, आगे, वहा दूसरा उत्कृष्टतम जगत है, वहा स्वय विचार का अभिलाषा से सगम होता है। चलो मेरे साथ! चलो मेरे साथ! .

इसके आगे कुछ और पढ पाना प्राय असभव था। वहा अलग-अलग असबद्ध शब्द ही थे "प्रेम वनस्पति विद्युत मनुष्य आत्मा .." अतिम पक्तिया तो किसी विचित्र लिपि मे लिखी हुई थी, जिससे मैं अनभिज्ञ था, और हर पृष्ठ पर वे अधूरी थी।

इस सारे प्रलाप को हमने कही दूर छिपाकर रख दिया और काम मे जुट गये। सबसे पहले हमने अपने स्वप्नद्रष्टा के लिए जडी-बूटिया उबालकर उनका पानी टब मे भरा और उसमे उसे बिठा दिया। जडी-बूटियो के काढे के इस हम्माम से रोगी का अग-अग सिहर उठा। "यह तो शुभ लक्षण है!" डाक्टर ने कहा। रोगी की आखो मे एक विचित्र भाव प्रकट हुआ—पश्चाताप, अनुनय और विरह की पीडा जैसा भाव, उसकी अश्रुधारा अनवरत बह रही थी। मैंने मुख के इस भाव की ओर डाक्टर का ध्यान दिलाया। उसने उत्तर दिया "फेसिस हाइपोक्राटिका!"*

घटे भर बाद फिर से जडी-बूटियो का हम्माम कराया और चम्मच

---

* मृत्यु रूप! (लैटिन)

भर दवाई दी। इसके लिए हमें वहुत जूझना पड़ा: रोगी वड़ी देर तक मुंह फेरता और हठ करता रहा, परंतु आखिर उसने दवाई का घूंट निगल लिया। "हम जीत गये," डाक्टर ने वड़े उत्साह से कहा।

डाक्टर का आग्रह था कि किसी भी तरह रोगी का व्यामोह भंग करने और उसकी इंद्रियों की जड़ता दूर करके उन्हें जगाने की हमें भरपूर कोशिश करनी चाहिए। हमने ऐसा ही किया: पहले हम्माम, फिर स्वादिष्ट औषधि का एक घूंट, फिर चम्मच भर शोरवा। वुद्धिमत्ता के साथ की गयी परिचर्या की वदौलत रोगी की दशा हमारे देखते-देखते सुधरने लगी। अंततः उसे भूख भी लग आयी और वह हमारी मदद के विना ही पथ्य लेने लगा।

मेरी चेष्टा यह थी कि पहले जो कुछ हुआ है उसकी मेरे मित्र को याद न दिलायी जाये। व्यावहारिक और उपयोगी वातों की ओर उसका ध्यान ले जाने की मैं कोशिश करता, जैसे कि उसकी ज़मींदारी की दशा, वहां पोटाश फ़ैक्टरी लगाने और किसानों को लगान के वजाय वेगार पर लगाने के लाभ की वातें।... लेकिन मेरा मित्र मेरी वातें ऐसे सुनता जैसे कि वह किन्हीं सपनों में खोया हो, कभी भी मेरी वात न काटता, जो मैं कहता वही करता, जव उसे खाने-पीने को देते, तव खा-पी लेता, परंतु हर वात से विरक्त रहता।

डाक्टर की सारी दवाइयां जो न कर पायीं वह काम हमारी मस्ती-भरी जवानी की मेरी वातों और विशेषतः उम्दा शेम्पेन की कुछ वोतलों ने किया, जिन्हें अपने साथ लाने की दूरदर्शिता मैंने दिखायी थी। इसके साथ लाजवाव स्टीक्स की दावतों ने मेरे दोस्त को विल्कुल दुरुस्त कर दिया, सो अव मैंने उसकी मंगेतर की चर्चा छेड़ना उचित समझा। उसने वड़े ध्यान से मेरी वात सुनी और अपनी पूरी सहमति प्रकट की। एक कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति होने के नाते मैंने उसके अच्छे मिज़ाज का लाभ उठाने में ज़रा भी देर न की, तुरंत उसके ससुर के पास गया, सारी वातचीत तय कर ली, जंगल को लेकर चल रहे झगड़े का फ़ैसला करवा दिया, दहेज की फहरिस्त तैयार कर दी, अपने सनकी दोस्त को उसकी पुरानी फ़ौजी वर्दी पहनायी, उसका व्याह करवाया और वर-वधू को सुखी जीवन की कामना करके अपने घर चल दिया, जहां मेरे कई काम वकाया पड़े हुए थे। सच कहा जाये तो मैं अपने आप से और अपने किये से वहुत संतुष्ट था। मास्को में सव रिश्तेदारों का

ढेरों स्नेह और आभार मुझे मिला।

अपने काम निपटाकर कुछ महीनों बाद मैंने सोचा कि चलकर नवदपति को देख लेना ठीक रहेगा—उस महोदय से मुझे कोई चिट्ठी-पतरी भी नहीं मिली थी।

सुबह-सुबह मैं उनके घर पहुंचा। वह गाउन पहने, मुह में पाइप दबाये बैठा था, उसकी पत्नी प्यालों में चाय उडेल रही थी, खिड़की से धूप आ रही थी, खूब बडा पका हुआ बबूगोसा ऐन खिड़की के पास पेड़ पर लगा हुआ था। मेरे आने पर वह प्रसन्न तो लगा, लेकिन ज्यादा बातें उसने नहीं की।

उसकी पत्नी जब कमरे से बाहर गयी तो मैंने सिर हिलाकर कहा:

"क्यों, दोस्त, सुखी नहीं हो?"

आप क्या सोचते हैं? उसने बातें शुरू कर दी? हां, लेकिन कैसी बातें!

"सुखी!" उपहासपूर्ण स्वर में वह बोला, "तुम्हें पता भी है इस शब्द का मतलब? तुमने मन ही मन अपनी तारीफ की है और सोचा है: 'कितना समझदार आदमी हू मैं! मैंने इस पागल का इलाज करवा दिया, इसकी शादी करवा दी और अब मेरी कृपा से यह सुखी है।... सुखी है!' मेरे चचा, ताऊ, मौसी, फूफी-बूफी ने, इन सब समझदार कहलवानेवाले लोगो ने तुम्हारी जो तारीफ़ें की हैं, वे सब तुम्हें याद आ गयी हैं और तुम्हारे अहकार की इससे तुष्टि हुई है। है कि नहीं?"

"माना, ऐसा है, तो?" मैंने कहा।

"तो फिर इन तारीफों और अहसानो में ही अपना मन खुश कर लो, लेकिन मुझ से कुछ उम्मीद मत रखो। हां! कतेरीना मुझसे प्यार करती है, हमारी जमींदारी अच्छी दशा में है, आमदनी ठीक से आती रहती है—बस, समझ लो, तुमने मुझे सुख दिया है, लेकिन यह मेरा सुख नहीं है। तुम सब जो समझदार लोग हो न, तुम उस बढई के जैसे हो, जिसे भौतिकी के महगे उपकरणों के लिए बक्सा बनाने को कहा गया। उसने नाप ठीक नहीं लिया, उपकरण बक्से में आते नहीं। क्या किया जाये? उधर बक्सा तैयार है, बड़ी उम्दा पालिश उस पर हुई है। बढई ने किसी उपकरण को थोड़ा मोड़ दिया, किसी को सीधा कर दिया,—बस उपकरण बक्से में फ़िट आ गये

वक्सा देखकर तवीयत खुश होती है, वस एक ही वात वुरी है: उपकरण किसी काम के नहीं रहे।—महानुभावो! उपकरण वक्से के लिए नहीं हैं, वक्सा उपकरणों के लिए है! वक्सा उपकरणों के नाप का वनाइये, न कि उपकरण वक्से के नाप के!"

"तुम कहना क्या चाहते हो?"

"तुम वहुत खुश हो कि तुमने, जैसा तुम कहते हो, मुझे निरोग करा दिया है, यानी मेरी भावनाएं भोथरी वना दी हैं, उन पर एक अभेद्य आवरण चढ़ा दिया है, उन्हें किसी दूसरे जगत के लिए अगम्य बना दिया है, सिवाय तुम्हारे वक्से के... वहुत खूव! उपकरण फ़िट आ गया है, लेकिन वह खराव हो गया है; वह किसी दूसरे प्रयोजन के लिए वना था।... अव अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में जव मैं यह महसूस करता हूं कि मेरा पेट दिन पर दिन वढ़ता जा रहा है और सिर पर पाशविक जड़ता छाती जा रही है, मैं हताश होकर वे दिन याद करता हूं जव तुम्हारे ख्याल में मैं पागल था, जव अदृश्य जगत से एक मोहिनी अवतरित होती थी, जव वह मेरे सामने ऐसे-ऐसे रहस्य अनावृत करती थी, जिन्हें अव मैं व्यक्त भी नहीं कर सकता, परंतु जो तब मेरी समझ में आते थे... कहां है वह सुख? लौटा दो मुझे वह सुख!"

"भैया मेरे, तुम तो बस कवि हो, और कुछ नहीं," मैंने खीजकर कहा। "कविताएं लिखा करो..."

"कविताएं लिखो!" रोगी ने आपत्ति की, "कविताएं लिखो! तुम्हारी कविताएं भी बक्सा हैं; तुमने काव्य का भी अंग-विच्छेद कर दिया है: यह रहा गद्य, यह रही कविता, यह रहा संगीत, यह रही चित्रकला—किधर चलियेगा? तुम्हें क्या पता, हो सकता है मैं ऐसी कला का कलाकार हूं, जिसका अभी अस्तित्व ही नहीं है, जो न काव्य है, न संगीत, न चित्रकला—वह कला जिसकी मुझे खोज करनी थी, जिसे मुझे जीवन प्रदान करना था और जो अब शायद सहस्राब्दियों के लिए विस्मृति के गर्भ में समायी सुषुप्त रहेगी। खोज दो मुझे वह कला! शायद अपने पिछले जगत का विछोह सहने के लिए मुझे उससे कुछ सांत्वना मिल जाये!"

उसने सिर झुका लिया, उसकी आंखों में एक विचित्र भाव आ गया, वह बुदबुदाने लगा: "सब वीत गया—अब लौटकर न आयेगा—

वह नही रही—नही सह सकी—गिरो, गिरो!" और ऐसा ही प्रलाप वह करता गया।

वैसे यह उसका आखिरी दौरा था। कालातर मे, जैसा कि मुझे पता चला, मेरा मित्र बिल्कुल अच्छा आदमी बन गया· उसने शिकारी कुत्ते पाल लिये, पोटाश फैक्टरी लगवा ली और फलों का बाग भी, बड़े कमाल से जमीन के कुछ मुकदमे जीते (उसकी जमीनो के बीच-बीच मे दूसरे जमीदारो की जमीनो की पट्टिया हैं), सेहत उसकी खूब बढिया है, गाल लाल है और अच्छी खासी तोंद भी है (पुनश्च., वह अभी तक जडी-बूटियो का हम्माम करता है)। एक ही बात बुरी है सुनने मे आया है कि अपने पडोसियो के साथ मिलकर और कभी तो उनके बिना भी कुछ ज्यादा ही डटकर पीने लगा है, यह भी सुनने मे आया है कि एक भी नौकरानी उससे बचकर नही जा सकती। पर इस दुनिया मे कौन ऐसा है, जिसमें कोई अवगुण नही? कम से कम अब वह औरो के जैसा बडा तो बन गया है।

यह कहानी मेरे एक परिचित ने, जो बहुत ही समझदार और तर्कनिष्ठ व्यक्ति है और जो मिखाईल प्लातोनोविच के पत्र मेरे पास लाया था, मुझे सुनायी। सच कहता हू, मेरे पल्ले कुछ नहीं पडा। शायद पाठक अधिक सौभाग्यशाली होगे।

भूत

...मुकाम गाड़ी में हम चार जने थे: एक रिटायर्ड कैप्टन, एक सरकारी अफ़सर, इरिनेइ मोदेस्तोविच और मैं। पहले दो जनें बड़ी औपचारिकता वरतते हुए एक दूसरे को अपनी शिष्टता दिखा रहे थे, कभी-कभार उनमें कोई वहस छिड़ती, पर थोड़ी देर के लिए ही। इरिनेइ मोदेस्तोविच लगातार बोलता चला जा रहा था। पास से गुज़री गाड़ी, कोई पैदल जाता आदमी, कोई गांव—सब कुछ उसके लिए वातचीत छेड़ने का वहाना होता। उसके श्रोता तो गाड़ी में से कूदकर उससे पिंड छुड़ा नहीं सकते थे, सो वह बड़ी खुशी से एक के वाद एक किस्से सुनाता जा रहा था। वेशक इन किस्सों में भूत-प्रेतों, शैतानों और घरभुतनों, आदि की भूमिका ही प्रमुख होती थी। मैं यह सोच-सोचकर हैरान हो रहा था कि यह शैतानों का पिटारा उसने कहां से पा लिया, और उसकी वारीक आवाज़ सुनता हुआ मजे से ऊंघ रहा था। दूसरे साथी रास्ता काटने की खातिर ज़रा ध्यान से उसकी वातें सुन रहे थे वस इरिनेइ मोदेस्तोविच को इसके अलावा और चाहिए ही क्या था।

"यह कौन-सा महल है?" रिटायर्ड कैप्टन ने खिड़की में झांकते हुए पूछा। "आप तो जरूर इसके वारे में कोई मजेदार किस्सा जानते होंगे," इरिनेइ मोदेस्तोविच की ओर मुड़कर उसने कहा।

"मैं उसके वारे में विल्कुल वैसी ही कहानी जानता हूं," इरिनेइ मोदेस्तोविच ने जवाव दिया, "जैसी आजकल के वहुत से मकानों के वारे में सुनाई जा सकती है, यानी कि इसमें लोग रहते थे, खाते-पीते थे और फिर मर गये। लेकिन इस महल को देखकर मुझे एक किस्सा याद आ रहा है, जिसमें ऐसा ही एक महल वहुत वड़ी भूमिका अदा करता है। आप सिर्फ़ यह कल्पना कर लीजिये कि मैं जो कुछ

भी आप को बताने जा रहा हू वह सब इन खंडहरो में हुआ। आखिर इसमें कोई फर्क नही पड़ता – बस किस्सागो पर विश्वास होना चाहिए। सफर में ज्यादातर लोग ऐसे ही कहानिया सुनाते हैं, फर्क सिर्फ इतना है कि वे मेरी तरह सब कुछ साफ-साफ नहीं बताते।

"जवानी के दिनो मे मै अक्सर अपनी पडोसन के यहा जाया करता था–बडी ही मिलनसार महिला थी। देखिये, आप कुछ मत सोच बैठिये, मेरी पडोसन उस उम्र की थी, जब स्त्री खुद कहने लगती है कि उसका जमाना गुज़र गया। उसके न कोई बेटिया थी, न भतीजी-भानजिया। उसका घर न० नगर के सभी घरो जैसा था· तीन-चार कमरे, दर्जन भर आरामकुर्सिया और इतनी ही साधारण कुर्सिया, भोजन-कक्ष मे दो लैम्प और बैठक मे दो मोमबत्तिया। पर पता नही, इस महिला के बर्ताव मे, उसकी मामूली-सी बातो मे, मै तो कहूगा कि उसकी लाल लकडी की मेज मे भी, या फिर उसके घर की दीवारो में कुछ ऐसा था जो हर शाम तुम्हारे कानो मे फुसफुसाता था क्यो न आज मार्या सेर्गेयेव्ना के यहा चला जाये। ऐसा महसूस करनेवाला मै अकेला नही था जाडो की लबी शामो को बहुत से लोग बिना बुलाये ही उसके यहा चले आते थे, जैसे कि पहले से वहा मिलना तय हो। यहा हम समय बिताने के लिए वही सब करते थे, जो हर जगह किया जाता है चाय पीने और बोस्टन खेलते, कभी पत्रिकाओ के पन्ने पलटते। इस घर मे हमें हर काम मे जितना मजा आता था उतना वही काम दूसरे किसी घर मे करने मे कभी नही आता था। हमे खुद भी यह बात अजीब लगती थी। अब मै महसूस करता हू – बात सारी यह थी कि मार्या सेर्गेयेव्ना किसी के आगे अपना दुखडा नही रोती थी – न मुकदमो का और न घर-गृहस्थी की मुसीबतो का, निंदा-चुगली उसे पसद नही थी, न आस-पडोस की घटनाओ पर, न अपने नौकरो के चाल-चलन पर अपनी राय किसी को सुनाती थी, आप जो नही कहना चाहते थे वह आप से कहलवाने की कोशिश कभी नही करती थी, आपके सामने आप पर लाड-प्यार की बौछार नही करती थी, आपके दरवाजे के बाहर निकलते ही आपका मजाक नही उडाती थी, अगर हम मे से कोई छह-छह महीने तक उसके घर न आता या उसका जन्मदिन भूल जाता तो वह नाराज़ न होती। उसमे ऐसा एक भी नखरा, ऐसी एक भी सनक नही थी, जिनके कारण न० की महिलाओ का साथ

वर हो जाता था। वह न झूठमूठ की लाज-शर्म करती थी, न ही
धविश्वासी थी। वह कभी आपसे यह उम्मीद नहीं रखती थी कि
ाप बस यही राय रखें और बस ऐसा ही कहें; अगर आपकी राय
ससे बिल्कुल उलट होती तो भी वह तौबा-तौबा नहीं करती थी। वह
भी आपसे दान-चंदा नहीं मांगती थी, आपको ज़बरदस्ती ताश खेलने
ा पियानो बजाने के लिए नहीं बिठाती थी। वह सहिष्णुता का पूरा-
पूरा अर्थ समझती थी। उसकी बैठक में भद्रजन वह सब कह, कर और
सोच सकते थे, जो उन्हें उचित लगता था। उसके घर में सुरुचिपूर्ण
वातावरण व्याप्त था, जो कि सोसाइटी में विरले ही पाया जाता है
और जिसका मर्म आज भी बहुत कम लोग समझते हैं। मार्या सेर्गेयेव्ना
और दूसरी महिलाओं के व्यवहार और जीवन में अंतर को मैं स्वयं
तब बहुत अच्छी तरह महसूस करता था, लेकिन अपनी इस छाप को
दो शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता था।"

"माफ़ कीजिये," सरकारी अफ़सर बीच में बोल पड़ा। "आप
कहना क्या चाहते हैं? आपका मतलब है, सुरुचिपूर्ण वातावरण इसी
बात से बनता है कि गृहिणी अतिथियों का आवभगत न करे? यह क्या
बात हुई? हम भी अच्छे-अच्छे घरों में जाते हैं... मैं आप से सहमत
नहीं हो सकता। ऐसा कैसे हो सकता है! ऐसा कैसे हो सकता है!"

"कहते हैं," इरिनेइ मोदेस्तोविच ने जवाब दिया, "कि जिस घर
में गृहिणी का व्यवहार अधिक सरल होता है वह घर मेहमानों को
अधिक आरामदेह लगता है, कि अच्छी सोसाइटी के आदी आदमी को
उसके सीधे-सरल व्यवहार से पहचाना जा सकता है। ..."

"मेरी भी बिल्कुल यही राय है," रिटायर्ड कैप्टन ने अपनी
बात जोड़ी। "ये सारे ढोंग तो मुझे फूटी आंखों नहीं सुहाते! हमारे
ब्रिगेडियर जनरल के यहां कभी जाना पड़ता तो वहां न ढंग से आराम
कर पाते, न खुलकर उठ-बैठ सकते। क्या बोरियत होती! अपने जैसों
के बीच बात ही दूसरी थी: वर्दी को मारो गोली, रम की बोतल रखो
मेज़ पर और उड़ाओ मौज। ..."

"नहीं, जनाब, आप जो चाहे कहें," सरकारी अफ़्सर ने आपत्ति
की, "मैं आपसे सहमत नहीं हो सकता। यह सादगी-वादगी क्या है!
सादगी के लिए अपना घर बहुत है। सोसाइटी में आदमी जाता है
इसलिए है कि अपना शिष्टाचार दिखा सके, यह दिखा सके कि उ

चार लोगो के बीच उठना-बैठना आता है, कि उसे अपना हर शब्द नाप-तौलकर कहना आता है। आपके हर शब्द मे यह जाहिर होना चाहिए कि आप कोई गवार नही, बल्कि सभ्य-सुशील व्यक्ति है। . "

इन दो विपरीत ध्रुवो के बीच फसा इरिनेइ मोदेस्तोविच असमंजस मे पड गया। वह सोचने लगा कि कैसे पियक्कडो की जमात मे भी न फसा जाये और शिष्ट महानुभाव की सोहबत से भी बचा जाये। अपने मित्र को दुविधा मे देखकर मै भी बातचीत मे शामिल हो गया।

"ऐसे तो, भई, हम कभी भी कहानी के अत तक नही पहुंच पायेगे," मैने कहा। "हा तो, इरिनेइ मोदेस्तोविच, आप क्या कह रहे थे?"

हमारे विरोधी चुप हो गये, क्योकि दोनो अपने आप मे सतुष्ट थे' अफसर को यकीन था कि उसने मेरे मित्र के सारे तर्को की धज्जिया उडा दी है, जबकि कैप्टन यह सोचे बैठा था कि इरिनेइ मोदेस्तोविच उसके जैसा ही मत रखता है।

इरिनेइ मोदेस्तोविच ने बात आगे जारी रखी

"मै आपको बता चुका हू कि हम न जाने कैसे, आपस मे कुछ तय किये बिना ही प्राय रोजाना शाम को मार्या सेर्गेयेव्ना के यहा जमा हो जाते थे। वैसे यह भी कबूल करना होगा कि ऐसी बिना तैयारी की सभाएं, दुनिया मे बिना तैयारी के सभी कामो की ही भाति, सदा सफल नही हो पाती थीं। कभी-कभी ऐसे लोग जमा हो जाते थे, जिनमे दो बोस्टन खेलते थे, तो दो ह्विस्ट, कोई ऊचे दाव लगाता था, तो कोई छोटे। सो बाजी नही जम पाती थी।

"ऐसा ही एक बार, जहा तक मुझे याद है, पतझड के दिनो मे हुआ। मूसलाधार ठडी बारिश पड रही थी, पटरियो पर परनाले बह रहे थे और तेज़ हवा मे सडक की बत्तिया बुझ रही थी। बैठक मे मेरे अलावा कोई चार जने बैठे अपने पार्टनरो का इतजार कर रहे थे। लेकिन लगता था पार्टनर मौसम मे डर गये हैं, इस बीच बातो का सिलसिला चल पडा।

"जैसा कि अक्सर होता है, एक विषय से दूसरे पर जाते हुए बातचीत आखिर पूर्वाभास और भूत-प्रेतो पर आ गयी।"

"यही सोच रहा था मै!" अफसर बोल उठा, "भूतो के बिना आपकी कोई कहानी बन ही नही सकती। "

"इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है!" इरिनेइ मोदेस्तोविच ने आपत्ति की, "ये विषय प्रायः सभी का ध्यान आकर्षित करते हैं। हमारी बुद्धि ज़िंदगी की नीरसता से ऊबकर अनायास ही इन रहस्यमय घटनाओं की ओर आकर्षित होती है, जो हमारे समाज का काव्य हैं और इस बात का प्रमाण भी कि मूल पाप की ही भांति काव्य के बिना भी ज़िंदगी में किसी का काम नहीं चल सकता।"

अफ़सर महोदय ने अर्थपूर्ण ढंग से सिर हिलाया, यह दर्शाते हुए कि वह इन शब्दों के मर्म की तह में पहुंच गये हैं। इरिनेइ मोदेस्तोविच ने कहना जारी रखा:

"बारी-बारी से इस तरह की सभी ज्ञात घटनाओं का ज़िक्र हो चुका था: मृत्यु के बाद प्रकट होनेवाले लोगों, तीसरी मंज़िल पर खिड़की में झांकनेवाले चेहरों और नाचती कुर्सियों, वगैरा का।

"बैठक में एक आदमी ऐसा भी था जो ये सारी बातें सुनते हुए चुप्पी साधे रहा था। हम सब जब भयभीत होकर चीख उठते तो वह बस मुस्करा देता। ढलती उम्र का यह आदमी पुराने दिनों का पक्का वाल्टेयरपंथी था। हमारी बहसों में प्रायः वह पूरी गंभीरता से अपने तर्क वाल्टेयर की 'उरानिया के नाम संदेश' या 'कविता में निबंध' का कोई उद्धरण देकर पूरे करता था। यदि इसके बाद भी हम उससे सहमत न होने की जुर्रत करते तो उसे बड़ी हैरानी होती। उसका मनपसंद मुहावरा था: 'मुझे सिर्फ़ इस बात में विश्वास है कि दो गुना दो चार होता है।'

"किस्से-कहानियों का हमारा सारा भंडार जब चुक गया तो हमने इन महानुभाव से यह उपहासपूर्ण अनुरोध किया कि वह भी इस तरह का कोई किस्सा सुनायें। वह हमारा इरादा भांप गया और बोला: 'आप जानते हैं मुझे यह सारी बकवास ज़रा भी पसंद नहीं है। इस मामले में मैं अपने पिता जी पर गया हूं। एक दिन एक भूत को उनके सामने आने की सूझी। एकदम असली भूत था: पीला चेहरा और विषादमय दृष्टि लिये। लेकिन मेरे स्वर्गीय पिता जी ने उसे जीभ दिखा दी; इस पर भूत ऐसे दंग रह गया कि उस दिन के बाद उसने न उनके और न हमारे खानदान में किसी के सामने आने की हिम्मत की। अब पत्रिकाओं में जब आपके किसी फ़ैशनेबुल लेखक की रोमांच-बोमांच की कोई कहानी मेरी नज़रों में पड़ती है तो मैं भी पिता जी

का उपाय अपनाता हू। लेकिन मैंने देखा है कि ये लेखक भूत-प्रेतों मे कही ज्यादा बेहया है, कितनी बार इन्हे मुह चिढा चुका हू, फिर भी मेरी नजरो मे पडते रहते है। बहरहाल, यह मत सोचिये कि मै आपको कोई डरावना किस्से नही सुना सकता। तो सुनिये। मै आपको एक सत्य कथा सुनाता हू, लेकिन शर्त लगाकर कह सकता हू कि आपके रोगटे खडे हो जायेगे।

"'कोई तीस साल पहले की बात है। मै तब फौज मे भरती हुआ ही था। हमारी रेजिमेट ने एक गाव मे पडाव डाल रखा था। हम रिजर्व मे थे। अफवाह थी कि अभियान खत्म हो रहा है और इस अफवाह की पुष्टि इस बात से होती थी कि हमे एक ही जगह पर रुके हुए महीने भर से ऊपर हो गया था। फौजियो के लिए तो स्थानीय लोगो से दोस्ती बना लेने को इतना समय बहुत होता है। मै एक खाती-पीती जमीदार महिला के मकान मे ठहरा हुआ था। बडी हसमुख, मिलनसार और खूब बातूनी थी वह और उसके साथ मेरी अच्छी बनती थी। यहा की ही भाति उसके घर पर भी रोज शाम को मेहमान जमा होते थे और मजे से समय कटता था। उस जगह से वेर्स्ता भर दूर, थोडी ऊचाई पर एक पुराना महल था – अर्धचद्राकार झरोखो, नुकीली बुर्जियो और बादनुमाओ से सजा महल। बस यह समझिये कि उसमे वे सारी अजीबो-गरीब चीजे थी, जिनके लिए गोथिक स्थापत्य मशहूर है और जिन पर हम तब खूब हसा करते थे। अब तो लोगो की रुचिया इतनी बिगड गयी है कि फिर से इस गोथिक स्थापत्य का फैशन होने लगा है। हम तो तब इसकी कल्पना भी नही कर सकते थे। हमारे लिए तो यह महल कुरूप था, और वह वाकई बेहूदा था। हम उसकी तुलना कभी भुमौरे से करते थे, तो कभी दड्बे से और कभी पागलखाने से।

"'यह केक किसका है?' एक बार मैंने अपनी मकान मालकिन से पूछा।

"'मेरी सखी काउटेस मल्वीना का,' उसने जवाब दिया। 'बडी प्यारी महिला है। आपको जरूर उससे मिलना चाहिए। काउटेस पहले बडी दुखी थी,' मकान मालकिन ने आगे कहा, 'अपने जमाने मे बडी तकलीफे सही है उसने। जवानी के दिनो मे उसे एक नौजवान से प्यार हो गया। यो तो वह भी काउट था, लेकिन गरीब। सो मल्वीना के मा-बाप किसी हालत मे अपनी बेटी का विवाह उससे करने पर राजी

नहीं थे। पर हमारी काउंटेस भी वड़े प्रचंड स्वभाव की थी, अपने प्यार में वह अंधी थी और आखिर उस नौजवान के साथ भाग गयी, यही नहीं, उसने नौजवान से शादी भी कर ली, हालांकि मेरे ख्याल में, इसकी कोई ज़रूरत नहीं थी। ज़रा सोचिये, कितना शोर मचा होगा इस घटना को लेकर। काउंटेस की मां पुराने ज़माने की औरत थी, वड़े ही कठोर स्वभाव की। अपने ऊंचे कुल पर उसे वड़ा घमंड था, दंभी थी और सदा चपड़कनातियों से घिरी रहती थी। ज़िंदगी भर उसने यही देखा था कि हर कोई उसकी आज्ञा का आंख मूंदकर पालन करता है। मल्वीना का घर से भाग जाना उसके लिए वहुत वड़ा सदमा था। एक ओर वह इस वात पर आग ववूला थी कि सगी वेटी ने उसका कहना न मानने की जुर्रत की, दूसरी ओर वह इसे अपने कुल के नाम पर अमिट कलंक समझती थी। वेचारी काउंटेस अपने मां के स्वभाव से वाकिफ़ थी, सो वहुत दिनों तक मां के सामने हाज़िर होने की हिम्मत नहीं कर पायी। अपनी चिट्ठियों का उसे कोई जवाव न मिलता। वह विल्कुल हताश थी। किसी वात से उसके मन को ढाढ़स न मिलता: न पति के प्रेम से, न मित्रों के इन आश्वासनों से कि मां का क्रोध अधिक दिनों तक नहीं वना रहेगा, विशेषतः अव, जवकि काम हो चुका है। इस मानसिक व्यथा में छह महीने गुज़र गये। उन दिनों मैं अक्सर उससे मिलती थी, वह पहचानी नहीं जाती थी। आखिर उसका पैर भारी हो गया। उसकी वेचैनी वढ़ गयी। ऐसे समय में स्त्री की मानसिक अवस्था वहुत वड़ी भूमिका अदा करती है: उसे हर वात की अधिक तीव्र अनुभूति होती है; हर विचार, हर शब्द उसे पहले से हज़ारों गुना अधिक परेशान करता है। मल्वीना के लिए यह विचार असह्य हो गया कि वह ऐसे में वच्चा जनेगी जव कि उसके सिर पर मां का क्रोध है। यह सोचकर ही उसका दम घुटता था, उसे नींद नहीं आती थी, उसकी सारी शक्ति जा रही थी। आखिर उससे और न सहा गया। चाहे जो भी हो, उसने कहा, मैं जाकर मां के पैर पकड़ती हूं। हमने उसे रोकने की वहुत कोशिश की, वहुतेरा समझाया-वुझाया कि वच्चा हो जाने दो और तव वच्चे को लेकर क्रोधित मां के सामने हाज़िर होना, कि अवोध शिशु को देखकर पत्थर का कलेजा भी पिघल उठता है – लेकिन हमारी वातों का उस पर कोई असर न हुआ। अपने डर पर कावू पाकर एक दिन सुवह, जव सव सो रहे थे, वेचारी काउंटेस

अपने घर से निकली और महल को चल दी। उसकी मा अभी बिस्तर मे ही थी जब वह शयन-कक्ष मे घुसी और घुटनो के बल गिर पड़ी।

"बूढ़ी काउटेस अजीब ही थी; वह उन प्राणियों में से थी, जिनके मन की तरग का कभी कोई अनुमान नही लगा सकता। कोई यह नही बता सकता कि वह क्या चाहते हैं, और शायद स्वय उनके लिए यह बता पाना सबसे कठिन होता है। इर्द-गिर्द की हर चीज का उसके मिजाज पर असर पड़ता था चलते-चलते कही गयी बात का, घर में आयी चिट्ठी का और मौसम का। एक ही बात से कभी वह खुश हो सकती तो कभी उसी बात से नाराज भी।

"बेटी को देखकर काउटेस पहले तो भयभीत हो गयी। उनींदे में वह यह नही समझ पा रही थी कि सफेद कपड़े पहने यह औरत कौन है, जो रोते हुए उसके घुटने पकड़ रही है और रजाई खीच रही है। पहले तो काउटेस ने अपनी बेटी को भूत समझा, फिर पगली और अंततः उसका भय झुझलाहट में बदल गया। बेटी के आसुओं से उसके कान पर जू तक न रेगी, बेटी के दिन चढ़े देखकर भी उसका कलेजा न पसीजा, उसकी ममता न जागी, उसका अह ही सर्वोपरि रहा। दफा हो जा यहा से! वह चिल्लायी, मैं तुझे नही जानती। मेरा शाप लगे तुझे, कलमुही! बेचारी मल्वीना के तो होश-हवास ही उड़ चले थे, लेकिन मातृभाव ने उसे शक्ति प्रदान की। बड़ी कठिनाई से, परन्तु भावातिरेक के साथ, सुबकिया लेते हुए उसने कहा मुझे शाप दे दीजिये पर मेरे बच्चे पर रहम कीजिये! तुझ पर शाप पड़े आपे से बाहर काउटेस फिर से चिल्लायी और तेरे बच्चे पर भी! तेरी मौत बनके आये वह! बेचारी मल्वीना बेहोश होकर ढह गयी।

"इस बेहोशी का बूढ़ी काउटेस पर बेटी की सारी मिन्नतो से अधिक असर पड़ा। अब काउटेस एक बार फिर भयभीत हो गयी। उसके मनकी मिजाज के लिए यह दृश्य असह्य था। वह झट से बिस्तर से उठी, घटी बजायी और डाक्टर को बुलवा भेजा। अभागी बेटी को होश आया तो वह मा की बाहो मे थी। मा ने सब माफ कर दिया था, सब कुछ भुला दिया था।

"मल्वीना और उसका पति महल मे रहने लगे। शीघ्र ही उनके बेटा हुआ। अपने अशोभनीय व्यवहार पर लज्जित बूढ़ी काउटेस ने तो अब अपनी बेटी पर जिदगी की सभी खुशिया लुटाने को ही अपना ध्येय

बना लिया लगता था। कई बार उसने इस बात की बाकायदा घोषणा की कि वह अपना शाप वापस लेती है, एक कागज़ पर यह बात लिखी, कंठहार की लटकन में यह कागज़ रखा और बेटी के गले में पहना दिया। युवा काउंटेस यह तावीज़ कभी नहीं उतारती है। उसका बेटा बड़ा हो गया है, फ़ौज में चला गया है। लेकिन आज तक बूढ़ी काउंटेस अपने को बेटी की ऋणी मानती है और उसे किसी छोटे बच्चे की तरह हमेशा खुश रखने की कोशिश करती है। इसके लिए पैसे भी उसके पास बहुतेरे हैं। लगता है, भाग्य स्वयं बूढ़ी काउंटेस का किया सुधारने में मदद कर रहा है। अभी हाल ही में उन्होंने कई लाख का मुकदमा जीता है। इससे उन्हें महल को ऐशो-आराम की सभी चीज़ों से सजाने को पैसा मिला है। वहां हर चीज़ आपको मिलेगी: विलायती पार्क भी, एक से एक बढ़िया खाना और हंगरी की सौसाला मदिरा भी, ठंडे और गरम पानी के फव्वारे और संगमरमर के फ़र्श भी, शीत उद्यान भी—पूरा स्वर्ग ही है! दावतों और बॉल डांसों का तो सिलसिला कभी टूटता ही नहीं। चाहें तो मैं आपका परिचय कराये देती हूं: बड़ी खुशी से आपका स्वागत होगा। ...

"ऐसे नौजवान अफ़सरों के लिए इससे बढ़िया न्योता और क्या हो सकता था, जिनके लिए छह महीने से दुनिया में सबसे बड़ी मौज कभी-कभार किसी गरीब की अंधेरी कोठरी में मिलकर शराब उड़ाना हो रही थी।"

"नेकी और पूछ-पूछ! कैप्टन ने मूंछों पर ताव देते हुए कहा।

"अगले ही दिन हम काउंटेस के यहां गये, मकान मालकिन ने हमारा परिचय कराया, और हमें यह देखने का अवसर मिला कि उसका कहना गलत नहीं था। घर में वाकई पूरी रईसी थी। हम सबको अलग-अलग कमरा दिया गया, जहां ज़िंदगी के आराम का पूरा-पूरा बंदोबस्त था: नरम-नरम बिस्तर, जो सूखी घास पर सोते रहने के बाद हमें चमत्कार ही लग रहा था; हर कमरे के साथ गुसलखाने में ठंडे और गरम पानी के नलोंवाला टब था; सौंदर्य प्रसाधन की हर चीज़ वहां थी; नौकर, जो दबे पांव चलते थे और तुम्हारी छोटी से छोटी इच्छा भांप जाते थे; हर दिन गज़ब की सुरा और गज़ब का खाना। बूढ़ी काउंटेस बड़ी मिलनसार थीं, हालांकि अब अपनी आरामकुर्सी से नहीं उठती थीं। तथाकथित युवा काउंटेस चालीस से ऊपर की हो गयी थी,

तो भी षोडशी सरीखी चपला और सुकोमला थी। हमारे कई भाई लोगों ने सच्चे फौजी ढग से उसकी तारीफों के पुल बाधना, उसके हर अदाज को सराहना अपना फर्ज समझा और कुछ तो उसके दीवाने ही हो गये। उसका पति यह सब देखकर अनदेखा करता था, यही नहीं, लगता था वह इस बात पर खुश था कि उसकी पत्नी को नाज-नखरे करने का मौका मिला है और वह युवा अफसरों का सिर फिरा सकती है। ऐशो-आराम और नये-नये मनबहलाव इस घर की एक जरूरत ही थे, यहा की जिंदगी ही थे। हमसे बस इस बात की उम्मीद की जाती थी कि हम सारा दिन खाये-पिये और रात को थकान से चूर होने तक नाचते रहे। हमारी पाचो उगलिया घी मे थी। कुछ दिन बाद घर मे हर्षोल्लास दुगना हो गया—युवा काउटेस का बेटा छुट्टी पर घर आया। बडा ही हसमुख और बढिया आदमी था वह। हमारी तरह वह भी अरसे तक अधेरी कोठरियो मे जीता रहा था, जवानी की सारी अनबुझ लालसा के साथ वह पूरी मौज लेने लगा, जो उसे अपने घर मे, जिंदादिल परिवार मे मिल सकती थी।

"हमारी रेजिमेट की रवानगी का दिन तय हो गया और हमारे मेजबानो ने हमे आखिरी बार शानदार दावत देने और बॉल डास पार्टी करने का फैसला किया। इलाके भर के सभी पडोसी-पडोसिनो को न्योता भेजा गया। पार्क मे रोशनियो और आतिशबाजी की तैयारिया होने लगी। एक दिन पहले दावत की बाते करते हुए (अब तक हम घर के लोग हो गये थे और सारी तैयारियो मे पूरा हिस्सा ले रहे थे) आज की ही भाति भूत-प्रेतो की चर्चा छिड गयी। युवा काउटेस को याद आया कि महल मे एक कमरा है, जो सारे इलाके मे इस बात के लिए मशहूर है कि वहा डरावनी आवाजे सुनायी देती है और भूत आते है। और कोई कमरा खाली न होने के कारण काउटेस का बेटा इसी कमरे मे रह रहा था। उसने हसते हुए हमे यकीन दिलाया कि अभी तक भूतनो का उस पर एक ही असर हुआ है वह घोडे बेचकर सोता है। हम सब उसके साथ मिलकर हसे और फिर अपने-अपने कमरे मे सोने चले गये। अगले दिन ढेरो मेहमान महल मे जमा हुए। सुबह दस बजे से ही हम नाचने लगे और खाने के वक्त तक नाचते रहे। खाने के बाद बॉल डास का क्रम आधी रात तक चलता रहा। हम मे से कोई भी यह नहीं सोच रहा था कि कल पाच बजे

हमें घोड़ों पर सवार होना है। पर सच कहें तो दिन बीतते न बीतते हम थककर चूर हो चुके थे और यह देखकर हमें संतोष हुआ कि बारह बजे के बाद मेहमान विदा लेने लगे। कमरे खाली होने लगे, हम भी सोने जाना चाहते थे, लेकिन युवा गृहस्वामिनी, जिसके लिए चौबीस घंटे नाचते रहना वैसा ही था जैसे कि एक गिलास पानी पी लेना, हमसे बार-बार अनुरोध कर रही थी कि हम नारियों को वाल्ट्ज़ नृत्य के लिए आमंत्रित करें ताकि विदा लेते मेहमानों को और थोड़ी देर रोका जा सके। अपना आखिरी ज़ोर लगाकर हम नाचते रहे, पर अंततः हमें काउंटेस से जाने की इजाज़त मांगनी ही पड़ी इस बात का हवाला देते हुए कि उसका अपना बेटा कब का सोने जा चुका है।

"ओफ़्फ़ो, काउंटेस बोली, उस आलसी की तरफ़ क्यों देखते हैं! इस निकम्मे को इसके आलस के लिए सबक सिखाना चाहिए! हॉल में इतनी सुंदरियां मौजूद हों तो भला कोई सोने कैसे जा सकता है! चलिये मेरे साथ!

"नौजवान की नींद बेचैनी भरी थी, जैसे कि सारा दिन लगातार दौड़ते-नाचते रहने पर होता ही है। दरवाज़े की चरमराहट से वह जाग गया। रात के दीये की धुंधली रोशनी में उसने देखा कि कई सफ़ेद भूत उसकी ओर बढ़ते आ रहे हैं। उनींदे में उसने पिस्तौल उठा ली और चिल्लाया: दफ़ा हो जाओ, नहीं तो गोली मार दूंगा! लेकिन सबसे आगे जो भूत था वह उसके पास आता जा रहा था, लगता था उसे अपनी फैली बांहों में भरना चाहता है। नौजवान या तो डर गया, या फिर उसकी नींद अभी पूरी तरह नहीं खुली थी – उसने पिस्तौल चला दी, धमाका हुआ। ...

"हाय, मैं तावीज़ पहनना भूल गयी! मल्वीना गिरते हुए चीखी। भूतों का भेस बनाये हम सब लोग उसकी ओर लपके, चादर उठायी ... उसका चेहरा इतना सफ़ेद पड़ गया था कि पहचाना नहीं जाता था: उसे घातक घाव लगा था। उसी क्षण दूर से आती फ़ौजी ड्रम की ढमढम ने हमें सूचित किया कि रेजिमेंट कूच कर रही है। हमने शोक में डूबा वह घर छोड़ा, जहां इतने सुखद दिन बिताये थे। तब से मुझे इस बात का कुछ पता नहीं कि सारा मामला कैसे खत्म हुआ। मैंने अगर कभी भूत देखे नहीं है तो कम से कम खुद भूत बना हूं – यह बात भी कुछ मायने रखती है। भूतों के सभी किस्से इसी तरह के होते

है। भगवान जाने अब इस घटना के बारे में क्या-क्या बातें हांनी होगी, लेकिन जैसा आपने देखा, मामला सीधा-सादा था। और किस्मागो हंस पड़ा।

"उसी क्षण एक नौजवान, जो सारा किस्सा बड़े ध्यान से सुनता रहा था, उसके पास आया और बोला आपने इस घटना का बिल्कुल सही-सही वर्णन किया है। मै जानता हू, क्योकि मै खुद उसी खानदान का हू, जिसमे यह घटना घटी थी। लेकिन आप एक बात नही जानते है: यह कि काउटेस अभी तक भली-चगी है और उनके बेटे के कमरे मे आपको ले जानेवाली *वह नही थी*, सचमुच मे कोई *भूत ही था*, जो अब तक उस महल मे आता है।

"किस्मागो का चेहरा फक पड गया। नौजवान ने कहना जारी रखा:

"इस घटना को लेकर बहुत सी बाते चली, लेकिन इसकी वजह कोई नही समझ सका। एक और रहस्य की बात यह है कि जिस-जिस ने इस घटना की कहानी सुनायी, वह उसके ठीक दो हफ्ते बाद मर गया। यह कहकर नौजवान ने अपनी टोपी उठायी और चला गया।

"किस्मागो का तो रग बिल्कुल ही उड गया। नौजवान के इतने आत्मविश्वास भरे और भावशून्य लहजे से वह प्रत्यक्षत स्तब्ध रह गया था। सच पूछे तो हम सबकी हालत कुछ ऐसी ही थी और अनचाहे ही हम चुप हो गये। कोई दूसरी बात छेडने की कोशिश हुई, लेकिन जमी नही, सो जल्दी ही हम सब अपने-अपने घर को चल दिये। कुछ दिनो बाद हमने सुना कि भूतो का मजाक उडानेवाले जनाब की तबीयत खराब है और मामला गभीर ही है। शरीर की तकलीफ के साथ-साथ मानसिक व्यथा भी जुड गयी। उसे लगता सफेद चादर ओढे सफेद मुहवाली औरत उसे बिस्तर से खीच रही है। अब जरा सोचिये जनाब," इरिनेइ सोदेस्तोविच ने शोकमय स्वर मे कहा, "ठीक दो हफ्ते बाद मार्या सेर्गेयेव्ना की बैठक मे एक मेहमान कम हो गया।"

"अजीब बात है," कैप्टन बोला, "बहुत ही अजीब!"

सरकारी अफसर राजधानी के निवासी के नाते किसी भी बात पर आश्चर्यचकित न होने का आदी था और सारा किस्सा यो सुनता रहा था जैसे कि कोई सरकारी फाइल पढ रहा हो।

"इसमे हैरान होने की कोई बात ही नही," बडे गर्वीले लहजे

मिखाईल यूरियेविच लेर्मोन्तोव (१८१४–१८४१) का जन्म एक संपन्न कुलीन परिवार में हुआ। उनका वचपन तर्खानी में उनकी नानी येलिज़ावेता अर्सेन्येवा की जागीर में गुज़रा। वह अक्सर बीमार रहते थे, सो नानी प्रायः उन्हें काकेशिया में खनिज जल चिकित्सा के लिए ले जाती थी। यही कारण है कि किशोर लेर्मोन्तोव की छापें तर्खानी और काकेशिया से जुड़ी हुई हैं।

तेरह वर्ष की आयु तक लेर्मोन्तोव का लालन-पालन और शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई। १८२७ में यह तय किया गया कि वालक को मास्को विश्वविद्यालय की युवा कुलीन पाठशाला में प्रवेश दिलाया जाये, सो नानी उन्हें लेकर मास्को आ गयीं और यहां वह प्रवेश-परीक्षाओं की तैयारी करने लगे। सभी विषयों का लेर्मोन्तोव का ज्ञान इतना अच्छा था कि १८२८ में उन्हें सीधे पाठशाला की चौथी कक्षा में ले लिया गया। १८३० में पाठशाला की पढ़ाई पूरी करके युवा लेर्मोन्तोव ने मास्को विश्वविद्यालय में दाखिला लिया। पाठशाला और विश्व-विद्यालय के वर्षों में लेर्मोन्तोव ने रूसी और यूरोपीय साहित्य की अनेक रचनाएं पढ़ीं। १८२८ से वह स्वयं कविता लिखने लगे।

विश्वविद्यालय की शिक्षा लेर्मोन्तोव पूरी नहीं कर पाये। एक वार्षिक मौखिक परीक्षा में उन्होंने प्राध्यापकों को उद्दंडतापूर्ण उत्तर दिये, जिससे नाराज़ होकर अधिकारियों ने उन्हें विश्वविद्यालय छोड़ देने को कहा। १८३२ में विश्वविद्यालय छोड़कर लेर्मोन्तोव ने पीटर्सवर्ग
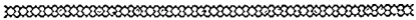
के गार्ड्स और कैवेलरी कैडेट स्कूल में दाखिला लिया। १८३४ में इसकी शिक्षा पूरी करने पर उन्हें अफसर का ओहदा मिला और राज-परिवार सेना की हुसार रेजिमेंट में नियुक्त किया गया, जो तब नगर के बाहर त्सारस्कोये सेलो में तैनात थी। साल भर बाद उन्हें छुट्टी मिली और वह तर्खानी गये, जहा मार्च १८३६ तक रहे। इस बीच लेर्मोन्तोव कई कविताए, खड काव्य और नाटक लिखे और 'प्रिंसेस लिगोव्स्काया' उपन्यास आरभ कर चुके थे। उनकी आरभिक रचनाओ में भी हम विषयवस्तु और विधाओ की विविधता पाते है। 'देवदूत', 'भिखारी' और 'पाल' कविताओ तथा 'छद्मवेश' नाटक जैसी रचनाए तो गूढ दार्शनिक अर्थ लिये हुए है और रूप की दृष्टि से अनिद्य हैं।

लेर्मोन्तोव ने ख्याति १८३७ मे पायी जब द्वद्वयुद्ध में पुश्किन की हत्या पर स्तब्ध होकर उन्होने 'कवि की मृत्यु' नामक आक्रोशमय कविता लिखी। इस कविता को क्राति का आह्वान करार दिया गया और लेर्मोन्तोव को काकेशिया मे तैनात नीझेगोरोद्स्की ड्रैगून रेजिमेंट में निष्कासित कर दिया गया। परतु नानी ने कोशिशे करके उन्हें फिर से उस हुसार रेजिमेंट में बहाल करवा दिया, जहा उन्होंने सैनिक सेवा शुरू की थी। इस बीच लेर्मोन्तोव ने पुश्किन के योग्य उत्तराधिकारी कवि के रूप मे मान्यता पा ली थी। उनकी बहुत सी कविताए रूसी पाठकों मे अत्यत लोकप्रिय हो गयी।

१८३८–१८३९ के वर्ष लेर्मोन्तोव ने पीटर्सबर्ग में बिताए। यहां 'ओतेचेस्तवेन्नीये ज़ापीस्की' पत्रिका के साथ उनके घनिष्ठ संबंध बने और वह नियमित रूप से इसके लिए लिखने लगे। ओदोयेव्स्की, भ्रुको-व्स्की, सोलोगूब और पनायेव आदि साहित्यकारों के संपर्क में वह आये। कविताएं और खंड काव्य लिखने के साथ-साथ इन दिनों वह गद्य-लेखन की ओर भी उन्मुख हुए और 'ओतेचेस्तवेन्नीये ज़ापीस्की' में अपने भावी उपन्यास 'हमारे युग का नायक' की तीन कहानियां छपवायीं। यह उपन्यास रूसी साहित्य में पहले मनोविश्लेषणात्मक यथार्थवादी उपन्यास था।

दिसंबरवादी विद्रोह की पराजय के बाद आये प्रतिक्रिया के युग में मनुष्य सामाजिक रूप से निष्क्रिय रहने पर विवश था। इस निष्क्रियता की व्यथा और अवसाद को लेर्मोन्तोव ने व्यक्त किया। उनके उत्कृष्ट कलात्मक काव्य ने समाज के उच्च संस्तरों में उनके प्रति रुचि जगायी। लेकिन इस लोकप्रियता की परिणति सामाजिक-मनोवैज्ञानिक टकराव में होनी अवश्यंभावी थी, क्योंकि इन उच्च संस्तरों में ईर्ष्यालुओं और कीचड़ उछालनेवालों की कोई कमी न थी। ऐसा ही हुआ भी। फ़्रांस के राजदूत के पुत्र एर्नेस्ट दे बरांत को किसी ने कवि द्वारा बहुत पहले लिखी व्यंग्य कविता अभी-अभी उसके खिलाफ़ लिखी बतायी। लेर्मोन्तोव की कुछ दूसरी कविताओं को भी फ़्रांस के लिए अपमानजनक बताया

गया। बरात ने लेर्मोन्तोव को द्वद्वयुद्ध के लिए ललकारा। यद्यपि प्रतिद्वद्वियो ने एक दूसरे को कोई क्षति नही पहुचायी (बरात ने लेर्मोन्तोव को तलवार मे हल्का-सा घोपा ही था), तो भी लेर्मोन्तोव को द्वद्वयुद्ध मे भाग लेने के लिए गिरफ्तार करके काकेशिया मे तैनात तेगीन्स्की रेजिमेट मे भेज दिया गया। उन दिनो जार की फौजे वहा काकेशिया के जनगण के विरुद्ध लड रही थी।

१८४० की गर्मियो मे लेर्मोन्तोव रणक्षेत्र मे फौज मे पहुचे और कई खूनी लडाइयो मे हिस्सा लेते हुए वीरता और पौरुष का परिचय दिया।

१८४१ के आरभ मे लेर्मोन्तोव को छुट्टी मिली और पीटर्सबर्ग जाकर उन्होने सेना से सेवा-निवृत्त होने के लिए आवेदन पत्र दिया। लेकिन उन्हे तुरत ही अपनी रेजिमेट मे लौट जाने को कहा गया। वापसी मे लेर्मोन्तोव कुछ समय के लिए प्यातीगोर्स्क नगर मे रुके, जहा उन्हे बहुत से पुराने परिचित मिले। उनमे सैनिक विद्यालय के उनका सहपाठी न० मार्तीनोव भी था। किसी बात पर उनका झगडा हो गया और उसका अत द्वद्वयुद्ध मे हुआ। २७ जुलाई १८४१ को माशूक पर्वत पर यह द्वद्वयुद्ध हुआ। मार्तीनोव की गोली ने महान कवि की जान ले ली।

यहा प्रकाशित कहानी 'श्तोस', जिसे लेर्मोन्तोव पूरा नही कर पाये, उनकी अतिम रचनाओ मे से एक है।
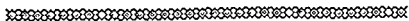
१८३८–१८३९ के वर्ष लेर्मोन्तोव ने पीटर्सबर्ग में बिताए। यहां 'ओतेचेस्तवेन्नीये ज़ापीस्की' पत्रिका के साथ उनके घनिष्ठ संबंध बने और वह नियमित रूप से इसके लिए लिखने लगे। ओदोयेव्स्की, भुकोव्स्की, सोलोगूब और पनायेव आदि साहित्यकारों के संपर्क में वह आये। कविताएं और खंड काव्य लिखने के साथ-साथ इन दिनों वह गद्य-लेखन की ओर भी उन्मुख हुए और 'ओतेचेस्तवेन्नीये ज़ापीस्की' में अपने भावी उपन्यास 'हमारे युग का नायक' की तीन कहानियां छपवायीं। यह उपन्यास रूसी साहित्य में पहले मनोविश्लेषणात्मक यथार्थवादी उपन्यास था।

दिसंबरवादी विद्रोह की पराजय के बाद आये प्रतिक्रिया के युग में मनुष्य सामाजिक रूप से निष्क्रिय रहने पर विवश था। इस निष्क्रियता की व्यथा और अवसाद को लेर्मोन्तोव ने व्यक्त किया। उनके उत्कृष्ट कलात्मक काव्य ने समाज के उच्च संस्तरों में उनके प्रति रुचि जगायी। लेकिन इस लोकप्रियता की परिणति सामाजिक-मनोवैज्ञानिक टकराव में होनी अवश्यंभावी थी, क्योंकि इन उच्च संस्तरों में ईर्ष्यालुओं और कीचड़ उछालनेवालों की कोई कमी न थी। ऐसा ही हुआ भी। फ़्रांस के राजदूत के पुत्र एर्नेस्ट दे बरांत को किसी ने कवि द्वारा बहुत पहले लिखी व्यंग्य कविता अभी-अभी उसके खिलाफ़ लिखी बतायी। लेर्मोन्तोव की कुछ दूसरी कविताओं को भी फ़्रांस के लिए अपमानजनक बताया

गया। बरात ने लेर्मोन्तोव को द्वद्वयुद्ध के लिए ललकारा। यद्यपि प्रतिद्वद्वियो ने एक दूसरे को कोई क्षति नही पहुचायी (बरात ने लेर्मोन्तोव को तलवार से हल्का-सा घोपा ही था), तो भी लेर्मोन्तोव को द्वद्वयुद्ध मे भाग लेने के लिए गिरफ्तार करके काकेशिया मे तैनात तेगीन्स्की रेजिमेंट मे भेज दिया गया। उन दिनो जार की फौजे वहा काकेशिया के जनगण के विरुद्ध लड रही थी।

१८४० की गर्मियों मे लेर्मोन्तोव रणक्षेत्र मे फौज मे पहुचे और कई खूनी लडाइयो में हिस्सा लेते हुए वीरता और पौरुष का परिचय दिया।

१८४१ के आरभ मे लेर्मोन्तोव को छुट्टी मिली और पीटर्सबर्ग जाकर उन्होंने सेना मे सेवा-निवृत्त होने के लिए आवेदन पत्र दिया। लेकिन उन्हे तुरत ही अपनी रेजिमेंट मे लौट जाने को कहा गया। वापसी मे लेर्मोन्तोव कुछ समय के लिए प्यातीगोर्स्क नगर मे रुके, जहां उन्हें बहुत से पुराने परिचित मिले। उनमे सैनिक विद्यालय के उनका सहपाठी न० मार्तीनोव भी था। किसी बात पर उनका झगडा हो गया और उसका अत द्वद्वयुद्ध मे हुआ। २७ जुलाई १८४१ को माशूक पर्वत पर यह द्वद्वयुद्ध हुआ। मार्तीनोव की गोली ने महान कवि की जान ले ली।

यहा प्रकाशित कहानी 'श्तोस', जिसे लेर्मोन्तोव पूरा नही कर पाये, उनकी अतिम रचनाओ मे से एक है।

स्तोस

१
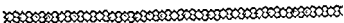
काउंट व० के यहा संगीत-संध्या का आयोजन था। अभिजातो की इस सभा मे उपस्थित होने की कीमत राजधानी के प्रमुख कलाकार अपनी कला से चुका रहे थे। अतिथियो मे कुछ साहित्यकार और विद्वजन थे ; दो-तीन जगतप्रसिद्ध रूपसिया, कुछ कुमारिया और वृद्धाए थी तथा एक गार्ड्स अफसर था। दूसरी बैठक के दरवाजे पर और अगीठी के पास दसेक जवामर्द ठाठ से खड़े थे। सब कुछ अपने ढर्रे पर चल रहा था। वातावरण न नीरस था और न ही बहुत उल्लासमय।

राजधानी मे नयी-नयी पधारी गायिका जब पियानो के पास जाकर अपनी कापी खोल रही थी, ऐन उसी वक्त एक युवा नारी ने जम्हाई ली और उठकर बगल के कमरे मे चली गयी, जो इस बीच खाली हो गया था। वह काला लिबास पहने थी, क्योकि शायद उन दिनो दरबार मे किसी का मातम चल रहा था। उसके कधे पर नीले रिबन से लगा सम्राज्ञी की साखी का प्रतीक हीरो का मोनोग्राम चमक रहा था। वह मझले कद की थी, छरहरा बदन, गतिया मथर और अलसायी-सी, सुदर-सुदर लबे, काले केशो से घिरे उसके चेहरे का रग फीका था और उस पर बुद्धिमत्ता की छाप थी।

"नमस्ते, मि० लूगिन," मीन्स्कया ने किसी से कहा। "मैं तो थक गयी कुछ बोलिये।" और वह अगीठी के पास रखी खुली आरामकुर्सी मे बैठ गयी। जिस व्यक्ति को उसने सबोधित किया था वह उसके सामने बैठ गया और कुछ नही बोला। कमरे मे वे दोनो ही थे और लूगिन की भावशून्य खामोशी साफ-साफ यह दिखाती थी कि वह उसके दीवानो की जमात मे शामिल नही है।

"क्या ऊब है," मीन्स्कया ने कहा और फिर से जम्हाई ली। "देखा, मै आपसे कोई पर्दा नही करती," जम्हाई लेकर वह बोली।

"मेरा भी मन उचाट है!.." लूगिन ने जवाब दिया।

"फिर से इटली जाने को मन कर रहा है?" थोड़ी देर चुप रहने के बाद मीन्स्कया ने पूछा।

लूगिन ने उसका सवाल सुना ही नहीं। टांग पर टांग रखे और उसके संगमरमरी कंधों पर कुछ न देखती नज़रें टिकाये हुए उसने कहना जारी रखा: "ज़रा सोचिये तो कैसी मुसीबत आ पड़ी है मुझ पर; मेरी तरह जिसने अपना जीवन चित्रकला को अर्पित किया हो उसके लिए इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है! पिछले दो हफ़्तों से मुझे सभी लोग पीले नज़र आ रहे हैं—और सिर्फ़ लोग ही! सभी चीज़ें पीली नज़र आतीं तो बात दूसरी थी; तब तो सारे वर्ण विन्यास में कोई सामंजस्य होता; मैं सोचता कि मैं स्पेनी चित्रकला की वीथिका में घूम रहा हूं। पर नहीं! बाकी सब कुछ पहले जैसा है; सिर्फ़ चेहरे बदल गये हैं; कभी-कभी मुझे लगता है कि लोगों के सिरों की जगह बड़े-बड़े नींबू उगे हुए हैं।"

मीन्स्कया मुस्करा दी।

"डाक्टर को दिखाइये," उसने कहा।

"डाक्टर कुछ नहीं कर सकते—यह सब पित्त की वजह से है!"

"किसी पर फ़िदा हो जाइये!" (इन शब्दों के साथ जिस दृष्टि से मीन्स्कया ने उसे देखा उसमें कुछ ऐसा भाव था: "जी करता है इसे थोड़ा सताया जाये!")

"किस पर?"

"और कोई नहीं मिलता तो मुझ पर फ़िदा हो जाइये!"

"आपको तो मेरे साथ नाज़-नखरे दिखाना भी नीरस लगेगा। फिर मैं आपको साफ़-साफ़ बता सकता हूं—दुनिया में कोई ऐसी औरत नहीं है जो मुझसे प्यार कर सके।"

"पर वह जो थी एक इटालियन काउंटेस—आपके पीछे नेप्लस से मिलान तक गयी थी?"

"देखिये न मैं दूसरों को अपने जैसा ही समझता हूं और मुझे पूरा यकीन है कि इस मामले में मैं गलत नहीं हूं," विचारमग्न स्वर में लूगिन ने उत्तर दिया। "हां, मैं कुछ औरतों में भावनाओं का उफान लाने में सफल रहा हूं, लेकिन मैं अच्छी तरह जानता हूं कि यह मेरे कौशल का और ठीक समय पर मानव हृदय के कुछ तारों को छूने

की मेरी आदत का ही नतीजा है, सो इस सौभाग्य पर मुझे कोई खुशी नही होती। मैंने अक्सर अपने से पूछा है कि क्या मै किसी बदसूरत औरत पर फिदा हो सकता हू? उत्तर एक ही है. नहीं। मैं बदसूरत हू, सो कोई औरत मुझसे प्यार नही कर सकती, बिल्कुल साफ बात है। औरतो मे कलात्मक भावना हम मर्दो में अधिक विकसित होती है, उन पर पहली छाप का असर हमारे से कही अधिक पडता है और कही अधिक समय तक बना रहता है। अगर कभी मै किसी औरत के दिल मे कोई हलचल पैदा करने में सफल रहा हू तो इसके लिए मुझे बडे-बडे जतन और कुरबानिया करनी पडी है, पर चूकि मै भली-भाति जानता हू कि मेरे ही प्रयासो से जागी यह भावना कृत्रिम है और इसका श्रेय केवल मुझ को है, सो मैं भी कभी भावावेग मे अपने आपको भूल जाने की स्थिति तक नही पहुच पाया हू, मेरे आवेश मे सदा थोडी कटुता मिली रही है। सोचकर मन उदास होता है, पर क्या किया जाये? सच्चाई यही है। "

"क्या बकवास है!" मीन्स्कया ने कहा, लेकिन फिर सिर से पैर तक उस पर एक नजर दौडाकर उससे सहमत हो गयी।

लूगिन वास्तव में ही देखने में जरा भी आकर्षक नही था। यद्यपि उसकी आखो मे विदग्धता मिश्रित एक विचित्र भाव की चमक थी तथापि उसके सारे रूप-रग मे आप एक भी वैसी बात न पाते, जो आदमी को समाज मे प्रिय बनाती है। उसके शरीर की गठन बेढब थी, उसका बोलने का ढग तीखा और दोटूक था। कनपटियो पर रुग्ण और विरले बाल, चेहरे की असमान रगत – किसी लगातार चल रहे गुप्त विकार के ये लक्षण उसे उसकी उम्र से बडा दिखाते थे। तीन साल तक उसने इटली मे रोगभ्रम का इलाज करवाया था, निरोग तो नही हुआ, परतु मनबहलाव का उपयोगी साधन उसे वहा मिल गया चित्रकला मे उसकी रुचि जागी। उसकी प्राकृतिक प्रतिभा, जो रोज़मर्रा की ज़िदगी मे उसके दायित्वो मे दब गयी थी, यहा दक्षिण के प्राण-सचारक आकाश तले, प्राचीन शिक्षको के अनुपम स्मारको के प्रभाव से पूर्णत मुखरित हो गयी। वह सच्चा कलाकार बनकर लौटा, हालांकि केवल उसके मित्रो को ही उसकी प्रतिभा का रसपान करने का अवसर मिला था। उसके चित्रो से सदा एक अस्पष्ट, बोझिल व्यथा की अनुभूति होती थी उन पर उस कटु कविता की छाप थी, जो हमारे इस कलुषित

युग ने अपने पहले उपदेशकों के हृदयों से कभी-कभार निकलवायी थी।

लूगिन को पीटर्सवर्ग आये दो महीने हो गये थे। वह किसी पर निर्भर नहीं था, रिश्तेदार थोड़े से ही थे और राजधानी के सबसे ऊंचे दायरे में उसके कुछ पुराने मित्र थे। जाड़ा वह यहीं काटना चाहता था। मीन्स्कया के यहां वह अक्सर जाता था: इस महिला का सौंदर्य, विरली वुद्धि और मौलिक दृष्टिकोण किसी भी वुद्धिमान और कल्पनाशील व्यक्ति को प्रभावित किये विना न रह सकते थे। लेकिन उन दोनों के वीच प्यार नाम की कोई चीज़ न थी।

उनकी वातचीत थोड़ी देर के लिए थम गयी, लगता था दोनों ही संगीत में मगन हो गये हैं। अतिथि गायिका शूवेर्ट द्वारा स्वरवद्ध गेटे का गाथागीत 'वन का राजा' सुना रही थी। गीत समाप्त होते ही लूगिन उठ खड़ा हुआ।

"किधर चल दिये?" मीन्स्कया ने पूछा।

"वस, जा रहा हूं।"

"अभी तो कोई देर नहीं हुई।"

वह फिर से वैठ गया।

"जानती हैं मैं पागल हो रहा हूं," वह वोला और लगा कि उसकी आवाज में कुछ अभिमान-सा है।

"सच?"

"मज़ाक नहीं। आपसे मैं यह वात कह सकता हूं, आप मेरा मज़ाक नहीं उड़ायेंगी। इधर कुछ दिनों से मुझे एक आवाज़ सुनाई दे रही है। सुवह से शाम तक कोई मेरे कान में एक ही वात कहता है – जानती हैं क्या? – एक पता – इस वक्त भी मुझे सुनायी रहा है: कोकुश्किन पुल के पास वढ़इयों की गली, टाइटलर काउंसलर श्तोस का मकान, फ़्लैट २७। वड़ी तेज़ी से वह दोहराता जाता है, जैसे कि जल्दी में हो... उफ़्फ़, सहा नहीं जाता!"

उसका चेहरा पीला पड़ गया, लेकिन मीन्स्कया ने यह नहीं देखा।

"वोलनेवाला आपको दिखायी नहीं देता?" उसने अन्यमनस्क भाव से पूछा।

"नहीं। लेकिन खनकती, तीखी आवाज़ है।"

"कव यह शुरू हुआ?"

"सच पूछे तो मै सही-सही बता भी नही सकता.. मुझे पता ही नहीं, है न मजे की बात!" जबरदस्ती मुस्कराते हुए वह बोला। "सिर पर खून चढता है, कानों मे गूज होती है, और कुछ नही।"

"नही, नही। कुछ बताइये, कैसे इससे जान छुड़ाऊ?"

पल भर सोचने के बाद मीन्स्कया ने उत्तर दिया "सबसे अच्छा उपाय यही है कि कोकुश्किन पुल के इलाके मे जाइये, वहा यह नंबर ढूढ लीजिये, जरूर वहा कोई मोची या घडीसाज रहता होगा, सो उसे कुछ काम-वाम देकर घर आकर आराम से सो जाइये, क्योंकि .. आपकी तबीयत वाकई ठीक नही है!" उसके चिंतित चेहरे पर सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि डालकर उसने इतना और कहा।

"आप सही कहती हैं," खिन्न लूगिन ने कहा। "जरूर वहा जाऊंगा।"

उसने उठकर अपनी टोपी सभाली और चला गया।

मीन्स्कया आश्चर्यचकित नजरों से उसे जाते देखती रही।

२

पीटर्सबर्ग पर नवबर की मनहूस सुबह छायी हुई थी। गीले हिम के फाहे गिर रहे थे, मकान गदे और अधेरे लगते थे, राह चलते लोगों के चेहरे हरे। अड्डे पर खडी स्लेज गाडियों के कोचवान भालू की खाल का लबादा ओढे ऊघ रहे थे। उनकी मरियल घोडियों के लबे-लंबे बाल भेडो की ऊन की तरह घुघराले हो रहे थे। कोहरा दूर की चीजो को सुरमई-बैगनी रग में रग रहा था। कभी-कभार ही पटरी पर किसी क्लर्क के रबड के जूते छप-छप करते चले जाते, और कभी बीयर की दुकान से ठहाके और शोर-शराबा सुनायी देता, जब वहा से हरा ग्रेट कोट और मोमजामे की टोपी पहने किसी नशे मे धुत्त पट्ठे को बाहर धकेला जाता। कहना न होगा कि ऐसे दृश्य आपको नगर के गदे इलाकों मे ही देखने को मिल सकते थे, जैसे कि कोकुश्किन पुल के पास। इसी पुल पर मझले कद का एक आदमी चला जा रहा था – वह न दुबला था, न मोटा और न सुघड, लेकिन कधे उसके चौडे थे, साफ-सुथरा ओवरकोट वह पहने था, वैसे तो

सकी सारी वेशभूषा ही सुरुचिपूर्ण थी। उसके चमकते बूट कीचड़
र वर्फ़ में सने देखकर अफ़सोस होता था, लेकिन लगता था उसे
इसकी ज़रा भी परवाह नहीं है। जेवों में हाथ डाले, सिर लटकाये वह
उखड़े-उखड़े कदमों से चल रहा था, मानो अपने लक्ष्य पर पहुंचने से
डर रहा हो या उसका कोई लक्ष्य हो ही नहीं। पुल पर रुककर उसने
इधर-उधर नज़र दौड़ायी। यह लूगिन था। उसके मुरझाये चेहरे पर
मानसिक थकान की छाप साफ़ नज़र आ रही थी, आंखें मन में गहरी
छिपी किसी वेचैनी से दहक रही थीं।

"वढ़इयों की गली कहां है?" उसने झिझकते हुए एक कोचवान
से पूछा, जो अपनी खाली गाड़ी लिये पास से गुज़र रहा था।

कोचवान ने उस पर एक नज़र डाली, घोड़े की पीठ पर चावुक
का सिरा फटकारा और आगे वढ़ गया।

उसे यह अजीव लगा। क्या कोई ऐसी गली है भी? पुल से उतरकर
उसने वही सवाल एक लड़के से पूछा, जो अद्धा लिये दौड़ा जा रहा था।

"वढ़इयों की गली? सीधे इस सड़क पर चले जाओ, दाहिने
हाथ पर पहली गली वढ़इयों की है," लड़के ने वताया।

लूगिन शांत हो गया। नुक्कड़ तक जाकर दायें मुड़ा और एक छोटी-सी
गंदी गली उसे दिखी, जिसकी दोनों ओर १०-१० से ज़्यादा मकान नहीं
थे। किरयाने की पहली दुकान का दरवाज़ा उसने खटखटाया और
दुकानदार से पूछा:

"श्तोस का मकान कहां है?"

"श्तोस का? पता नहीं, हजूर, यहां तो ऐसा कोई मकान है
नहीं। इधर वगल में व्यापारी ब्लीन्निकोव का मकान है, उससे आगे..."

"मुझे श्तोस का मकान ढूंढना है..."

"नहीं जी, श्तोस का तो नहीं मालूम," टांड़ खुजलाते हुए दुका-
दार ने कहा और फिर से वोला: "नहीं, ऐसा नाम तो नहीं सुना!

लूगिन ने हर मकान पर नाम-प्लेट देखने का फ़ैसला किया। उस
मन कह रहा था कि पहली नज़र में वह उस मकान को पहचान जाये
हालांकि पहले कभी नहीं देखा है। इस तरह वह गली के अंत तक प
गया, कोई भी नाम उसके लिए कोई मायने नहीं रखता था। अच
उसने गली के दूसरी ओर नज़र डाली और वहां एक फाटक पर
टीन की तख़्ती दिखी, जिस पर कुछ नहीं लिखा हुआ था।

वह भागकर उस फाटक के पास गया, बड़ी बारीकी से तख्ती को देखने पर भी उसे समय से मिटे अक्षरो के चिन्ह जैसा कुछ नही दिखा ; तख्ती एकदम नयी थी।

फाटक के पास एक चौकीदार लबे बदरग कोट पर पेटबद बाधे लंबे भाड़ू से बर्फ साफ कर रहा था, सफेद दाढी उसने जाने कब से नही बनायी थी और सिर पर उसके टोपी नही थी।

"ऐ, चौकीदार," लूगिन ने उसे पुकारा।

चौकीदार दात भीचकर कुछ बडबडाया।

"किसका मकान है यह?"

"बिक गया!" चौकीदार ने बेरुखाई से जवाब दिया।

"पर था किसका?"

"किसका? किफेइकिन सौदागर का।"

"नही हो सकता, श्तोस का रहा होगा!" लूगिन के मुह से अनचाहे ही निकला।

"नही, पहले किफेइकिन का था, अब जरूर श्तोस का है!" चौकीदार ने सिर उठाये बिना जवाब दिया।

लूगिन का कलेजा बैठ गया। उसके सीने मे धुकधुकी होने लगी, जैसे किसी अनिष्ट का पूर्वाभास उसे हो गया हो। क्या अब भी वह अपनी पूछ-ताछ जारी रखे? क्या समय रहते रुक जाना ठीक न होगा?

ऐसे द्वद्व से जो लोग स्वय नही गुजरे हैं उनके लिए लूगिन की मनोदशा समझ पाना बहुत कठिन है। कहते है कौतूहल ने ही मानव वश का सत्यानास किया है, आज भी वह हमारा प्रमुख, पहला आवेग है, यहा तक कि दूसरे मनोवेगो की भी वह व्याख्या कर सकता है। लेकिन कुछ ऐसे भी मामले होते हैं जब किसी वस्तु से जुडा रहस्य कौतूहल को असाधारण सत्ता प्रदान कर देता है उसके वश मे आकर हम पहाडी ढलान पर शक्तिशाली हाथ से लुढकाये गये पत्थर की तरह रुक नही सकते हैं—हालाकि हमारे सामने मुह बाये फैले अथाह गर्त को साफ देख रहे होते हैं।

लूगिन बडी देर तक फाटक के सामने खडा रहा। आखिर उसने चौकीदार से पूछा

"नया मकान-मालिक यही रहता है?"

"नही।"

"तो कहां?"

"शैतान जाने।"

"इस मकान में चौकीदारी करते वहुत साल हो गये?"

"वहुत।"

"कोई रहता है यहां?"

"रहते हैं।"

थोड़ी देर चुप रहकर लूगिन ने चौकीदार के हाथ में एक रूवल का नोट थमाया और पूछा: "अच्छा, यह वताओ २७ नंवर में कौन रहता है?"

चौकीदार ने लंवे डंडेवाला झाड़ू फाटक पर टिका दिया और एक रूवल का नोट लेकर लूगिन को घूरकर देखा।

"२७ नंवर में?.. वहां कौन जियेगा?.. जाने कव से खाली पड़ा है।"

"क्या किसी ने किराये पर नहीं लिया?"

"लिया क्यों नहीं, हजूर, जरूर लिया है।"

"तो फिर यह क्यों कह रहे हो कि वहां कोई नहीं रहता?"

"भगवान जाने! वस रहते नहीं। साल भर को किराये पर ले लेते हैं, पर रहने नहीं आते।"

"अच्छा, अभी आखिरी वार किसने किराये पर लिया था?"

"कोई करनल था, शायद इंजीनरी फ़ौज का।"

"यहां रहा क्यों नहीं?"

"वो तो अपना सामान यहां लाने ही वाला था, पर तभी उसका तवादला हो गया, वस कवाटर खाली रह गया।"

"कर्नल से पहले किसने लिया था?"

"कोई वैरन था, जर्मनों जैसा नाम था उसका, उसने तो यहां पांव ही नहीं रखा, सुना मर-मरा गया।"

"उससे पहले?"

"एक व्यापारी ने अपनी... वो... उसके लिए लिया था, मगर उसका दिवाला निकल गया, पेशगी भी हमारे पास धरी रह गयी।"

"अजीव वात है!" लूगिन ने सोचा और पूछा: "फ़्लैट देख सकता हूं?"

चौकीदार ने फिर से लूगिन को घूरकर देखा।

"क्यों नहीं, हुजूर? जरूर देख सकते हैं," उसने जवाब दिया और बतख की तरह डोलता हुआ चाबी लेने चल दिया।

जल्दी ही वह लौट आया और खुले किंतु काफी गंदे जीने से उसे दूसरी मंजिल पर ले गया। जंग लगे ताले में चाबी चरचरायी और दरवाजा खुल गया। सीलन की गंध उनके नथुनों में घुस गयी। वे अंदर गये। यह चार कमरे और रसोई का फ्लैट था। पुराना, धूल भरा फर्नीचर, जिस पर कभी सुनहरी मुलम्मा चढ़ा हुआ था, दीवारों के साथ-साथ करीने से लगा हुआ था, हरे दीवारी कागज पर लाल तोते और सुनहरी लाइराएं बनी हुई थीं, अंगीठियों की टाइलों पर कहीं-कहीं दरारें पड़ी हुई थीं, चीड़ की लकड़ी का फर्श कहीं-कहीं बुरी तरह चरमरा रहा था। कमरों का रूप-रंग कुछ विचित्र-सा पुरानापन लिये था।

पता नहीं क्यों लूगिन को वे पसंद आ गये।

"मैं यह फ्लैट किराये पर ले रहा हूं," उसने कहा, "जाओ खिड़कियां धोने और फर्नीचर झाड़ने-पोंछने को कह दो देखो, कितना जाला है! —और हां, अंगीठियों में अच्छी तरह आग जलवा दो "

ऐन उसी क्षण आखिरी कमरे की दीवार पर उसे एक छविचित्र दीखा—लगभग चालीस वर्ष की आयु के व्यक्ति का छविचित्र था यह, वह बुखारा का रेशमी चोगा पहने था, नयन-नक्श उसके सीधे थे, आंखें बड़ी-बड़ी और सुरमई थीं। दायें हाथ में वह बहुत ही बड़ी नमवारदानी पकड़े हुए था। उसकी उंगलियों में नाना प्रकार की अनेक अंगूठियां थीं। लगता था किसी शागिर्द ने इस्ते-सहमते यह छविचित्र बनाया है—चोगा, बाल, हाथ, अंगूठियां—इन सबकी चित्रकारी काफी घटिया थी। परंतु चेहरे के, विशेषतः होंठों के भाव में जीवन का ऐसा भयावह स्पंदन था कि उससे नजरें हटाये नहीं हटती थीं मुंह की रेखा में कोई नामालूम-सा मोड़ था, जो कलाकार के हाथों, बेशक, अनजाने में ही बन गया था, क्योंकि ऐसा कर पाना कौशल और दक्षता की पहुंच से बाहर था। यह मोड़ इस चेहरे पर बारी-बारी से उपहास, उदासी, विद्वेष और कोमलता का भाव लाता था। क्या आपने कभी ठंड में जमी खिड़की पर या किसी वस्तु से दीवार पर संयोगवश पड़ी टेढ़ी-मेढ़ी छाया में मानव मुख का पार्श्व चित्र बना देखा है, जो कभी कल्पनातीत सुंदर हो सकता है या वर्णनातीत घिनौना? इन पार्श्वचित्रों को

कागज़ पर उतारने की कोशिश करिये! आप कभी भी सफल नहीं होंगे, दीवार पर जिस मुख ने आपको इतना विस्मित किया है उसकी रेखाओं पर पेंसिल चलाकर देखिये, आप पायेंगे – सारा आकर्षण जाता रहा है; आदमी का हाथ सचेतन रूप से प्रयास करते हुए ये रेखाएं कभी नहीं बना सकता, लेशमात्र भी विचलन हुआ नहीं कि पहले का भाव सदा के लिए खो जाता है। छविचित्र के चेहरे पर ऐसी ही कुछ अकथनीय बात थी, जो किसी मेधा या फिर मात्र संयोग की ही पहुंच में हो सकती है।

"अजीब बात है, यह पोर्ट्रेट मुझे उसी क्षण नज़र आया जब मैंने कहा कि फ़्लैट ले रहा हूं!" लूगिन ने कहा।

आरामकुर्सी में बैठकर उसने सिर लटका लिया और विचारों में डूब गया।

चौकीदार चाबियां झुलाता बड़ी देर तक उसके सामने खड़ा रहा।

"तो, हजूर?" आखिर वह बोला।

"हुं!"

"क्या सोचा, हजूर? लेना है, तो पेशगी दें।"

किराया तय हो गया। लूगिन ने पेशगी दे दी, अपने नौकर को कहलवा भेजा कि तुरंत ही सामान यहां लाये और खुद शाम तक उस छविचित्र के सामने ही बैठा रहा। नौ बजे तक उस होटल से सारा जरूरी सामान आ गया, जहां अब तक लूगिन रह रहा था।

"क्या बकवास है कि इस फ़्लैट में कोई रह नहीं सकता," लूगिन मन ही मन सोच रहा था। "पुराने किरायेदारों के भाग्य में शायद नहीं लिखा था यहां रहना – वैसे तो यह अजीब बात है! – लेकिन मैंने फ़ैसला किया और तुरंत ही यहां चला आया! तो क्या हुआ? – भी नहीं!"

बारह बजे तक वह अपने बूढ़े नौकर निकीता के साथ सामान लगाता रहा। ... यहां इतना और बता दें कि छविचित्रवाले कमरे को ही उसने अपना शयन-कक्ष बनाया।

बिस्तर में लेटने से पहले वह मोमबत्ती हाथ में लेकर छविचित्र के पास गया, ताकि एक बार फिर उसे अच्छी तरह देख ले। नीचे के कोने में चित्रकार के नाम की जगह लाल अक्षरों में लिखा हुआ था: बुध।

"आज कौन सा दिन है?" उसने निकीता से पूछा।

"सोमवार, मालिक।"

"परसों बुध होगा," खोया-खोया-सा लूगिन बोला।

"जी, मालिक!"

न जाने क्यों उसे गुस्सा आ गया।

"दफा हो जा!" पाव पटककर वह चिल्लाया।

बूढ़ा निकीता सिर हिलाकर बाहर चला गया।

लूगिन जाकर बिस्तर मे लेटा और सो गया।

अगले दिन सुबह बाकी का सामान भी आ गया, जिसमे लूगिन द्वारा आरंभ किये गये कुछ चित्र भी थे।

३

लूगिन के अधूरे चित्रो मे, जो ज्यादातर छोटे-छोटे ही थे, एक काफी बडे आकार का भी था। हरी-कत्थई जमीनवाले कैनवस पर चाक और चारकोल से बनी धारियो के बीच एक महिला सिर का स्कैच कलामर्मज्ञ का ध्यान अवश्य आकर्षित करता। स्कैच बडा प्यारा था और उसकी रगत जीती-जागती, लेकिन फिर भी आखो और मुस्कान मे कुछ ऐसा अकथनीय भाव था जो देखनेवाले को अपनी ओर खीचते हुए उसमे सिहरन पैदा करता था। लूगिन ने यह चेहरा दूसरे रूपो मे भी बनाया था और अपने प्रयासो से असतुष्ट रहा था – इसका पता इस बात से चलता था कि कैनवस के कोनो मे जगह-जगह यही चेहरा बना हुआ था और उस पर कत्थई रग फिरा हुआ था। यह किसी नारी का छविचित्र नही था। किसी अनिद्य सुदरी के लिए आहे भरनेवाले कवि की ही भाति उसने भी कैनवस पर नारी का अपना आदर्श उतारने की चेष्टा की थी। चढती जवानी मे तो ऐसी तरग समझ मे आती है, लेकिन ऐसे व्यक्ति मे वह विरले ही पायी जाती है, जिसने जीवन का थोड़ा बहुत अनुभव पाया हो। परतु ऐसे भी लोग होते हैं, जिनका अनुभवी मस्तिष्क उनके हृदय को प्रभावित नही करता, और लूगिन ऐसे अभागे, कविहृदय प्राणियो मे से ही था। कोई धूर्त से धूर्त व्यक्ति और आखे लडाने मे माहिर से माहिर स्त्री भी बडी मुश्किल से ही उसे चकमा दे पाते, जबकि वह स्वय बच्चो जैसे भोले अपने मन को

कागज़ पर उतारने की कोशिश करिये! आप कभी भी सफल नहीं होंगे, दीवार पर जिस मुख ने आपको इतना विस्मित किया है उसकी रेखाओं पर पेंसिल चलाकर देखिये, आप पायेंगे–सारा आकर्षण जाता रहा है; आदमी का हाथ सचेतन रूप से प्रयास करते हुए ये रेखाएं कभी नहीं बना सकता, लेशमात्र भी विचलन हुआ नहीं कि पहले का भाव सदा के लिए खो जाता है। छविचित्र के चेहरे पर ऐसी ही कुछ अकथनीय बात थी, जो किसी मेधा या फिर मात्र संयोग की ही पहुंच में हो सकती है।

"अजीब बात है, यह पोर्ट्रेट मुझे उसी क्षण नज़र आया जब मैंने कहा कि फ़्लैट ले रहा हूं!" लूगिन ने कहा।

आरामकुर्सी में बैठकर उसने सिर लटका लिया और विचारों में डूब गया।

चौकीदार चाबियां झुलाता बड़ी देर तक उसके सामने खड़ा रहा।

"तो, हज़ूर?" आखिर वह बोला।

"हुं!"

"क्या सोचा, हज़ूर? लेना है, तो पेशगी दें।"

किराया तय हो गया। लूगिन ने पेशगी दे दी, अपने नौकर को कहलवा भेजा कि तुरंत ही सामान यहां लाये और खुद शाम तक उस छविचित्र के सामने ही बैठा रहा। नौ बजे तक उस होटल से सारा ज़रूरी सामान आ गया, जहां अब तक लूगिन रह रहा था।

"क्या बकवास है कि इस फ़्लैट में कोई रह नहीं सकता," लूगिन मन ही मन सोच रहा था। "पुराने किरायेदारों के भाग्य में शायद नहीं लिखा था यहां रहना–वैसे तो यह अजीब बात है!–लेकिन मैंने फ़ैसला किया और तुरंत ही यहां चला आया! तो क्या हुआ?–कुछ भी नहीं!"

बारह बजे तक वह अपने बूढ़े नौकर निकीता के साथ सामान लगाता रहा।... यहां इतना और बता दें कि छविचित्रवाले कमरे को ही उसने अपना शयन-कक्ष बनाया।

बिस्तर में लेटने से पहले वह मोमबत्ती हाथ में लेकर छविचित्र के पास गया, ताकि एक बार फिर उसे अच्छी तरह देख ले। नीचे के कोने में चित्रकार के नाम की जगह लाल अक्षरों में लिखा हुआ था: बुध।

"आज कौन सा दिन है?" उसने निकीता से पूछा।

"सोमवार, मालिक।"

"परसो बुध होगा," खोया-खोया-सा लूगिन बोला।

"जी, मालिक!"

न जाने क्यों उसे गुस्सा आ गया।

"दफा हो जा!" पाव पटककर वह चिल्लाया।

बूढा निकीता सिर हिलाकर बाहर चला गया।

लूगिन जाकर बिस्तर मे लेटा और सो गया।

अगले दिन सुबह बाकी का सामान भी आ गया, जिसमे लूगिन द्वारा आरभ किये गये कुछ चित्र भी थे।

३

लूगिन के अधूरे चित्रो मे, जो ज्यादातर छोटे-छोटे ही थे, एक काफी बडे आकार का भी था। हरी-कत्थई जमीनवाले कैनवस पर चाक और चारकोल से घनी धारियो के बीच एक महिला सिर का स्कैच कलामर्मज्ञ का ध्यान अवश्य आकर्षित करता। स्कैच बडा प्यारा था और उसकी रंगत जीती-जागती, लेकिन फिर भी आखो और मुस्कान में कुछ ऐसा अकथनीय भाव था जो देखनेवाले को अपनी ओर खीचते हुए उसमे सिहरन पैदा करता था। लूगिन ने यह चेहरा दूसरे रूपो मे भी बनाया था और अपने प्रयासो से असतुष्ट रहा था – इसका पता इस बात से चलता था कि कैनवस के कोनो मे जगह-जगह यही चेहरा बना हुआ था और उस पर कत्थई रग फिरा हुआ था। यह किसी नारी का छविचित्र नही था। किसी अनिद्य सुदरी के लिए आहे भरनेवाले कवि की ही भाति उसने भी कैनवस पर नारी का अपना आदर्श उतारने की चेष्टा की थी। चढती जवानी में तो ऐसी तरग समझ मे आती है, लेकिन ऐसे व्यक्ति मे वह विरले ही पायी जाती है, जिसने जीवन का थोडा बहुत अनुभव पाया हो। परतु ऐसे भी लोग होते है, जिनका अनुभवी मस्तिष्क उनके हृदय को प्रभावित नही करता, और लूगिन ऐसे अभागे, कविहृदय प्राणियों में से ही था। कोई धूर्त से धूर्त व्यक्ति और आखे लडाने मे माहिर से माहिर स्त्री भी बडी मुश्किल से ही उसे चकमा दे पाते, जबकि वह स्वय बच्चो जैसे भोले अपने मन को

रोज़ाना धोखा देता था। कुछ समय पहले एक विचार उसके मन में घर कर गया था, यह विचार और भी अधिक पीड़ादायी और असह्य था, क्योंकि इससे उसके अहं को ठेस पहुंचती थी: वह सुंदर तो कदापि नहीं था, यह सच था, परंतु उसमें कुछ भी ऐसा नहीं था, जो घिनौना लगे; जो लोग यह जानते थे कि वह कितना बुद्धिमान, प्रतिभावान और सहृदय है, उन्हें तो उसके चेहरे का हाव-भाव काफ़ी प्रिय लगता था। परंतु उसने मन में यह बात बिठा ली थी कि उसकी कुरूपता को देखते हुए प्रेम की कोई संभावना ही नहीं हो सकती, और वह स्त्रियों को अपना स्वाभाविक शत्रु मानने लगा। अगर कभी कोई स्त्री उसके प्रति यों ही ज़रा स्नेह भाव दिखाती, तो वह उसके पीछे कोई दूसरा ही कारण छिपा समझता, और यदि किसी का झुकाव प्रत्यक्षत: उसकी ओर होता तो उसकी व्याख्या वह बड़े भोंडे और एक निश्चित ढंग से करता। यहां मैं इस बात पर गौर नहीं करूंगा कि उसका ऐसा सोचना किस हद तक सही था, बात बस इतनी है कि चित्त की ऐसी दशा में अपने स्वप्नों के आदर्श के प्रति काल्पनिक प्रेम हो जाना बहुत संभव है, ऐसा प्रेम जिससे अधिक निर्मल, अधिक घातक प्रेम किसी कल्पनाविहारी के लिए और नहीं हो सकता।

अगले दिन, जो मंगलवार था, लूगिन के साथ कुछ भी असाधारण नहीं घटा। शाम तक वह घर पर ही बैठा रहा, हालांकि उसे कहीं जाना था। उसकी सभी इंद्रियां विचित्र तंद्रा की जकड़ में थीं। उसने चित्रकारी करनी चाही, मगर कूंचियां हाथ से गिर-गिर जाती थीं। पढ़ने की कोशिश की, मगर उसकी दृष्टि पंक्तियों पर फिसलती जाती और कुछ ऐसा पढ़ती जो वहां लिखा ही नहीं हुआ था। पल में उसे गर्मी लगती, पल में ठंड। उसका सिर भन्ना रहा था, कान बज रहे थे। झुटपुटा हुआ तो उसने नौकर से मोमबत्तियां न जलाने को कहा और भीतरी अहातेवाली खिड़की के पास बैठ गया। अहाते में अंधेरा छाया हुआ था। गरीब पड़ोसियों की खिड़कियों से धुंधली रोशनी आ रही थी। बहुत देर तक वह ऐसे ही बैठा रहा। अचानक अहाते में कोई भिखारी अपना बाजा बजाने लगा, वह कोई पुरानी जर्मन धुन बजा रहा था। लूगिन बैठा यह धुन सुनता रहा, सुनता रहा और उसका दिल बहुत ही उदास हो उठा। वह कमरे में चहलकदमी करने लगा। ऐसी बेचैनी उसे पहले कभी नहीं हुई थी; कभी उसका जी करता वह

रो पड़े, कभी जी करता ठहाके मारे... वह पलंग पर औंधा गिर पड़ा और फूट-फूटकर रोने लगा। उसका सारा अतीत उसकी आंखों के सामने आ गया, उसे याद आया कि कैसे बारंबार उसे धोखा दिया गया, कितनी ही बार उसने उन्हीं लोगों का बुरा किया जिन्हें चाहता था, उसे याद आया कि उन आंखों को, जो अब सदा के लिए मुंद चुकी हैं, रुलाकर उसकी छाती कैसी पाशविक खुशी से फूल जाती थी। उसे यह भयावह अहसास हुआ और स्वीकार करना पड़ा कि वह सुध-बुध खोनेवाले सच्चे प्रेम का अधिकारी नहीं है और उसका हृदय असह्य पीड़ा से व्याकुल हो उठा।

आधी रात होने को थी जब उसका मन शांत हुआ। वह मेज़ पर बैठा, मोमबत्ती जलायी और कागज़ लेकर उसपर कुछ रेखाएं खींचने लगा। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। इकसार जलती मोमबत्ती की रोशनी तेज़ थी। वह किसी बूढ़े का सिर बना रहा था, और जब चित्र पूरा हुआ तो यह देखकर स्तब्ध रह गया कि वह किसी जाने-पहचाने व्यक्ति से मिलता है। सिर उठाकर सामने टंगे छविचित्र पर नज़र डाली–हूबहू यही शक्ल उसने बना डाली थी! अनचाहे ही वह सिहर उठा और पीछे घूम गया–उसे लगा कि खाली बैठक का दरवाज़ा चरमराया है, उसकी नज़रें दरवाज़े पर जमकर रह गयीं।

"कौन है?" वह चीख उठा।

दरवाज़े के पीछे सरसराहट सुनायी दी, मानो स्लीपर फ़र्श पर घिसट रहे हों, अंगीठी से चूने की पपड़ी फ़र्श पर गिरी। "कौन है?" क्षीण स्वर में उसने फिर पूछा।

उसी क्षण दरवाज़े के दोनों कपाट हौले-हौले, ज़रा भी आवाज़ किये बिना खुलने लगे, कमरे में ठंडी हवा का झोंका आया। दरवाज़ा अपने आप खुलता जा रहा था। बैठक में तहखाने जैसा घटाटोप अंधेरा था।

जब दरवाज़ा पूरा खुल गया तो उसमें धारीदार चोगा और स्लीपर पहने एक आकृति प्रकट हुई। यह सफ़ेद बालों और दोहरी कमरवाला बूढ़ा था। वह धीरे-धीरे दबा-दबाकर पांव घसीटता हुआ आगे बढ़ रहा था। उसका लंबा पीला चेहरा भावहीन था, होंठ भिंचे हुए, लाल घेरे में घिरी सुरमई धुंधली आंखें एकदम सीधे देख रही थीं, लगता था उन्हें कुछ नहीं दिख रहा। वह आकर लूगिन के सामने मेज़ पर बैठ

गया। चोगे में से उसने ताश की दो गड्डियां निकालीं और एक लूगिन के आगे रखकर मुस्करा दिया।

"क्या चाहिए आपको?" हताशा मिश्रित साहस से लूगिन ने पूछा। उसकी मुट्ठियां ऐंठन से भिंच रही थीं, इस बिन बुलाये मेहमान पर चिरागदान दे मारने को उसके हाथ कुलबुला रहे थे।

चोगे तले से एक आह छूटी।

"मैं नही सह सकता यह सब!" उखड़ती आवाज़ में लूगिन ने कहा। वह कुछ सोच नहीं पा रहा था।

बूढ़ा कुर्सी पर हिला। उसकी सारी आकृति पल-पल बदलने लगी। कभी वह लंबा हो जाता, कभी मोटा और कभी एकदम सिकुड़ जाता। आखिर उसने पहले जैसा रूप ग्रहण कर लिया।

"ठीक है," लूगिन ने सोचा, "अगर यह प्रेत है तो मैं इससे डरनेवाला नहीं।"

"एक बाज़ी खेलियेगा श्तोस की?" बूढ़े ने पूछा।

लूगिन ने अपने सामने रखी ताश की गड्डी ले ली और उपहासपूर्ण लहजे में बोला: "दांव पर क्या लगायेंगे? मैं चेताये देता हूं अपनी आत्मा दांव पर नहीं लगाऊंगा!" (उसका ख्याल था कि यह सुनकर प्रेत चकरा जायेगा), "अगर आप खेलना ही चाहते हैं तो मैं सोने का सिक्का दांव पर लगाये देता हूं। आपके प्रेत खज़ाने में तो ये नहीं होंगे।"

बूढ़ा इस मज़ाक से ज़रा भी नहीं सकपकाया।

"मेरे खज़ाने में यह है!" हाथ बढ़ाकर उसने जवाब दिया।

"यह? क्या यह?" लूगिन ने सहमकर कनखियों से बायीं ओर देखा। उसके पास ही कुछ सफ़ेद, अस्पष्ट और पारदर्शी सा स्पंदित हो रहा था। उसने घिन से मुंह मोड़ लिया। "बांटिये!" फिर कुछ संभलकर उसने कहा और जेब से सोने का सिक्का निकालकर पत्ते पर रख दिया। "चलिये, ब्लाइंड।" बूढ़े ने सिर झुकाया, पत्ते फेंटे, काटे और बांटने लगा। लूगिन ने ईंट की सत्ती रखी और वह पिट गयी। बूढ़े ने हाथ बढ़ाकर सोने का सिक्का उठा लिया।

"एक बाज़ी और!" लूगिन ने खिसियाकर कहा।

आकृति ने सिर हिला दिया।

"क्या मतलब?"

"बुध को," बूढ़ा बोला।

"अच्छा! बुध को!" नूगिन आपे से बाहर होकर चीखा। "नहीं, नहीं! कोई बुध-वुध नहीं! कल – या कभी नहीं! सुना तुमने?"

विचित्र अतिथि की आखों में एक चमक कौंध गयी, वह फिर से बेचैनी से कुर्सी पर हिलने लगा।

"ठीक है," आखिर वह बोला, उठकर सिर झुकाया और दबा-दबाकर पाव घसीटता हुआ बाहर निकल गया। उसके पीछे दरवाज़ा ज़रा भी आहट किये बिना भिड़ गया, बगल के कमरे से स्लीपरों के घिसटने की आवाज़ आयी। . धीरे-धीरे फिर से सन्नाटा छा गया। नूगिन के सिर में हथौड़े बज रहे थे। एक विचित्र भावना उसके हृदय को उद्विग्न कर रही थी और कचोट रही थी। वह खिसिया रहा था कि बाज़ी हार गया!

"लेकिन मैं उससे डरा नहीं," अपने मन का ढाढ़स बधाते हुए वह कह रहा था। "अपनी ही मनवा ली। बुध को! हू, देखो तो! मैं क्या पागल हू? ठीक है, सब ठीक है! मुझसे बचके नहीं जा पायेगा!"

"अरे, बिल्कुल पोर्ट्रेट जैसा है! हूबहू वही शक्ल! अब समझा मैं!"

यह सोचते हुए वह आरामकुर्सी पर ही सो गया। अगले दिन सुबह उसने किसी को इस घटना के बारे में नहीं बताया। सारा दिन घर पर ही बैठा रहा और बड़ी आतुरता से शाम होने की प्रतीक्षा करता रहा।

"पर मैंने ठीक से देखा नहीं कि उसने दाव पर क्या लगाया था," वह सोच रहा था, "हो न हो कोई अनूठी चीज़ होगी।"

आधी रात हुई तो वह अपनी आरामकुर्सी से उठा, बगल के कमरे में जाकर वहा से ड्योढ़ी में जाने के दरवाज़े पर ताला लगा दिया और अपनी जगह लौट आया। उसे ज्यादा देर इन्तज़ार नहीं करना पड़ा। फिर से सरसराहट सुनाई दी, स्लीपरों के घिसटने और बूढ़े के खासने की आवाज़ आयी, दरवाज़े पर उसकी निर्जीव आकृति प्रकट हुई। उसके पीछे एक और आकृति थी – इतनी धुधली कि नूगिन उसका रूप नहीं देख पाया।

बूढ़ा बैठ गया, पिछली रात की ही भाति उसने मेज़ पर दो गड्डिया

रखीं, एक काटी और पत्ते बांटने को तत्पर हुआ, प्रत्यक्षतः लूगिन की ओर से किसी तरह की आपत्ति की उम्मीद उसे नहीं थी। उसकी आंखों में असाधारण विश्वास की चमक थी, जैसे कि वे भविष्य को देख रही हों। उसकी सुरमई आंखों के चुंबकीय प्रभाव से पूर्णतः स्तब्ध लूगिन पांच-पांच रूबल के सोने के दो सिक्के मेज़ पर रखने जा ही रहा था कि अचानक उसे होश आया।

"ठहरिये," अपनी गड्डी पर हाथ रखकर वह बोला।

बूढ़ा बिल्कुल निश्चल बैठा था।

"क्या कह रहा था मैं!.. हां... ठहरिये..." लूगिन हकलाने लगा। आखिर बहुत जतन करके वह धीरे-धीरे बोला: "ठीक है... मैं खेलूंगा – मुझे आपकी चुनौती मंजूर है – मैं डरता नहीं, – बस एक शर्त पर: मुझे पता होना चाहिए, किससे खेल रहा हूं। आपका नाम?"

बूढ़ा मुस्करा दिया।

"वरना मैं नहीं खेलूंगा," लूगिन बोला, जबकि उसका कांपता हाथ गड्डी में से पत्ता निकाल रहा था।

"श्तोस?" बूढ़े ने कुटिल मुस्कान के साथ पूछा।

"श्तोस? क्या आपका नाम श्तोस है?" लूगिन का कलेजा बैठ गया। वह भयाक्रांत हो उठा। उसी क्षण उसे अपने पास ही किसी के कोमल, सुरभित श्वास की अनुभूति हुई, धीमी सी मर्मर ध्वनि हुई, अनचाहे में एक उसांस छूटी और पलांश को एक बिजली उसे छू गयी। उसकी रगों में एक विचित्र, मधुर और साथ ही पीड़ाजनक कंपकंपी दौड़ गयी। क्षण भर को उसने सिर घुमाया और फिर से नज़रें पत्तों पर टिका दीं। परंतु यह क्षणिक दृष्टि ही इस बात के लिए पर्याप्त थी कि वह अपनी आत्मा हार बैठा। वह एक अनूठा दैवी दृश्य था: लूगिन के कंधे पर एक युवती का सिर झुका हुआ था, उसके होंठ विनती कर रहे थे, उसकी आंखों में अकाथनीय वेदना थी... कमरे की अंधेरी दीवारों की पृष्ठभूमि में वह वैसी ही लगती थी जैसे कि धूमिल आकाश में भोर का तारा। इससे पूर्व जीवन ने कभी ऐसी सृजना नहीं की थी, जो इतनी दिव्यमय और इतनी पार्थिवेतर होती, इससे पूर्व मृत्यु कभी अपने अनंत अंतराल में ऐसा कुछ नहीं ले गयी थी, जो उद्वेगमय जीवन से इतना दोलायमान होता: वह कोई पार्थिव प्राणी नहीं था, वह तो आकार और शरीर के स्थान पर रंग और

प्रकाश था, रक्त के स्थान पर उष्म श्वास था, भावना के स्थान पर विचार था, वह कोई मिथ्या भ्रम और प्रेताभास भी नही था... क्योंकि उसकी धूमिल रेखाओं में उत्कट, अनबुझ प्यास थी, ललक, उदासी, प्रेम, भय और आशा थी—वह उन अनुपम सुदरियो मे से एक थी, जो हमारी युवा कल्पना रचती हैं, जिनके सम्मुख हम अपने प्रचंड स्वप्नो की आग मे दहकते हुए नतमस्तक होते हैं, रोते और पूजा करते हैं और न जाने किस बात पर हर्षोल्लास से भरपूर हो उठते हैं—वह युवा आत्मा का एक दिव्य सृजन थी, ऐसा सृजन जो तब होता है जब अतिशय शक्ति से भरपूर यह आत्मा एक नयी प्रकृति की, जिस प्रकृति से वह बंधी होती है उससे कही श्रेष्ठ और पूर्ण प्रकृति की रचना करती है।

इस क्षण लूगिन यह नही बता सकता था कि उसे क्या हुआ, लेकिन अब उसने तय कर लिया कि जब तक वह जीत नही जाता तब तक खेलता रहेगा। अब यही उसके जीवन का लक्ष्य बन गया था और वह इस पर बहुत खुश था।

बूढ़ा पत्ते बाटने लगा लूगिन का पत्ता पिट गया। बदरग हाथ मेज़ से दोनो सिक्के घसीट ले गया।

"कल," लूगिन ने कहा।

बूढ़े ने ठडी आह भरी, लेकिन सिर हिलाकर सहमति व्यक्त की और पिछली रात की ही तरह चला गया।

महीने भर तक हर रात को यही दृश्य दोहराया जाता रहा, हर रात लूगिन हार जाता। लेकिन उसे हारने का अफसोस नही था, क्योंकि उसे पूरा विश्वास था कि आखिर एक पत्ता उसका भी जीतेगा, इसलिए वह दाव दुगना करता जा रहा था। वह बुरी तरह हार रहा था, लेकिन हर रात पल भर को उसे वह दृष्टि और वह मुस्कान देखने को मिलती थी, जिस पर वह अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तत्पर था। वह सूखकर काटा हो गया, उसका चेहरा बिल्कुल पीला पड गया। सारा-सारा दिन वह अपने कमरे मे बद बैठा रहता, अक्सर खाना भी न खाता। दिन ढलने की उसे यो प्रतीक्षा रहती, जैसे प्रेमी को प्रिया-मिलन के क्षण की, और हर रात उसे पहले से भी अधिक कोमल दृष्टि, पहले से भी अधिक मधुर मुस्कान का पुरस्कार मिलता। वह—नही जानता कि उसे क्या कहू—लगता था वह व्याकुल मन से इस खेल को देख रही है। बडी अधीरता से वह उस क्षण की प्रतीक्षा कर

रही थी जब इस मनहूस बूढ़े के अंकुश से मुक्त होगी। हर बार जब लूगिन का पत्ता पिट जाता और वह उदास नज़र उसकी ओर उठाता तो प्रेम-ज्वाला से दहकती उन आंखों को अपनी ओर देखता पाता। वे मानो उससे कहतीं: "हिम्मत मत हारो, धीरज रखो, मैं तुम्हारी होकर रहूंगी! तुम्हीं मेरे प्रियवर हो..." और उसकी चंचल छवि पर निष्ठुर, मौन उदासी की घनी छाया घिर आती। हर रात को जब वे जुदा होते तो अपनी निस्सहायता पर क्रोधोन्मत्त लूगिन का हृदय चीर-चीर हो जाता। खेल जारी रखने के लिए वह अपना सामान बेचने लगा था। वह देख रहा था कि वह दिन दूर नहीं जब उसके पास बेचने के लिए भी कुछ नहीं बचेगा। अब उसे कुछ फ़ैसला करना ही था और उसने फ़ैसला कर लिया।

निकोलाई गोगोल
१८०६–१८५२

निकोलाई वसीलियेविच गोगोल (१८०९–१८५२) का जन्म उक्राइना के एक साहित्यिक रुझानवाले कुलीन परिवार में हुआ। नेझिन नगर में उन्होंने माध्यमिक विज्ञान विद्यालय में शिक्षा पायी। यहां पढ़ते हुए ही उन्होंने लिखने के पहले प्रयास किये। विद्यालय की शिक्षा पूरी करके गोगोल शिक्षा और राज्य की सेवा करने तथा साहित्य के क्षेत्र में अपने को परखने का सपना लेकर पीटर्सवर्ग चले गये। १८२९ में उन्होंने व० आलोव उपनाम से एक स्वच्छंदतावादी खंड काव्य 'हांस क्यूखेलगार्तेन' छपवाया, परंतु पाठकों और समीक्षकों ने इसका स्वागत नहीं किया, उलटे इसका मज़ाक उड़ाया।

१८२९ के अंत में गोगोल एक सरकारी दफ़्तर में नौकरी पाने में सफल रहे। उन्होंने लिखना जारी रखा, परंतु अब वह गद्य की ओर प्रवृत्त हुए और विषय-वस्तु भी उन्होंने वह चुनी, जिससे अच्छी तरह परिचित थे – उक्राइना की किंवदंतियां और जन-जीवन। १८३१ में 'दिकान्का के पास ग्रामीण संध्याएं' कथा-माला का पहला भाग प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक ने गोगोल को रातोंरात एक सफल लेखक बना दिया। कहानियों का प्रखर रोमांसवाद, सघन आंचलिक छटा, उत्कृष्ट हास्य और चित्ताकर्षक रहस्य-रोमांच – यह सब पाठकों और समीक्षकों को बहुत पसंद आया। अब लेखक के लिए साहित्यिक गोष्ठियों के द्वार खुल गये, पुश्किन और झुकोव्स्की से उनका परिचय हुआ। १८३२
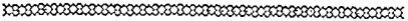
मे इस पुस्तक का दूसरा भाग निकला और तब एक प्रतिभासपन्न युवा लेखक के नाते गोगोल का सिक्का पूरी तरह जम गया।

१८३४ मे उन्होंने पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय मे विश्व इतिहास पर व्याख्यान दिये। उन्होंने कई ऐतिहासिक ग्रथ लिखने की योजना बनायी, जिनका एक अश 'अराबेस्क्स' सग्रह (१८३५) मे शामिल हुआ। इसी वर्ष उन्होंने देशभक्तिपूर्ण ऐतिहासिक लघु उपन्यास 'तरास बुल्बा' की रचना की, जो 'मीरगरोद' नामक उनके नये सग्रह मे छपा। तब से गोगोल की रचनाओ मे स्वच्छदतावादी प्रवृत्ति यद्यपि पूरी तरह विलुप्त नहीं हुई, तथापि यथार्थवाद की तुलना मे उसका स्थान गौण हो गया।

अब गोगोल की एक के बाद एक नयी रचनाए छपने लगी। पुश्किन की 'सोव्रेमेन्निक' पत्रिका मे पाठको ने उनकी 'नाक' कहानी पढी, जिसे गोगोल ने 'पीटर्सबर्ग की कहानिया' नामक माला मे रखा। इन्ही दिनो गोगोल अपने हास्य नाटको 'शादी' और 'इन्स्पेक्टर जनरल' पर भी काम कर रहे थे। १८३६ मे पीटर्सबर्ग मे 'इन्स्पेक्टर जनरल' का मचन हुआ और प्रतिगामी हलको ने इस पर भयकर हगामा मचाया। तब गोगोल विदेश चले गये। स्विट्ज़रलैड मे उन्होंने अपनी प्रमुख कृति 'मृत आत्माए' नामक प्रबध काव्य पर काम किया, जिसका विचार उन्होंने 'इन्स्पेक्टर जनरल' से पहले ही बना लिया था। पेरिस मे उन्हे पुश्किन के दुखद देहात का समाचार मिला।
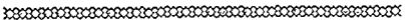
गोगोल ने विदेश में ही वस जाने का फ़ैसला किया। १८३६ में ही वह थोड़े दिनों के लिए रूस आये।

१८४१ में रोम में उन्होंने 'मृत आत्माओं' का पहला खंड पूरा कर लिया और उसके प्रकाशन के सिलसिले में फिर से रूस आये। १८४२ में पुस्तक प्रकाशित हुई। पाठक इससे अत्यंत प्रभावित हुए। अलेक्सान्द्र हर्ज़ेन के शब्दों में 'मृत आत्माएं' काव्य ने "रूस को झकझोर डाला"।

उधर गोगोल अपनी इस कृति को पूरा करने को उत्सुक थे। वह फिर से विदेश गये और रोम में रहने लगे। वहां उन्होंने 'गर्म कोट' कहानी और हास्य-नाटक 'शादी' पूरे किये, 'तरास बुल्बा' का नया संस्करण तैयार किया। १८४२ में उनकी रचनाओं का चारखंडीय संग्रह छपा। परतु 'मृत आत्माओं' के दूसरे और तीसरे खंडों का काम लंबा ही खिंचता चला जा रहा था। गोगोल की यह कामना थी कि 'मृत आत्माओं' के नायकों का शुद्धिकरण हो और वे सच्चे रूसी चरित्र की नैतिक संपन्नता के प्रतीक आदर्श-सकारात्मक प्ररूप बनें। परंतु उनके ऐसे चमत्कारपूर्ण कायाकल्प के लिए वस्तुगत परिस्थितियां नहीं थीं, लेकिन गोगोल ने तत्कालीन रूसी जीवन की यथार्थ परिस्थि-तियों को नहीं, वल्कि अपने को, अपनी प्रतिभा को, अपने में आत्मिक शक्ति के अभाव को इसका उत्तरदायी ठहराया। इस प्रकार लेखक
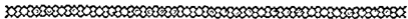
मे एक मानसिक सकट पैदा हुआ। साथ ही वह धार्मिक विश्वदृष्टिकोण मे अधिकाधिक प्रभावित होते जा रहे थे और उनके मन मे यह दोष-भावना घर कर गयी थी कि उन्होंने अपनी प्रिय मातृभूमि पर भूठे लाछन लगाये है। यह सकट 'मित्रो मे पत्र-व्यवहार के चुने हुए अश' (१८४७) नामक पुस्तक मे सबसे अधिक स्पष्ट रूप से प्रकट हुआ। इस पुस्तक मे जहा एक ओर आश्चर्यजनक सूक्ष्मदृष्टि है, वही दूसरी ओर निरकुशतत्र, भूदासता प्रथा और चर्च का समर्थन किया गया है। पुस्तक के इन पहलुओ का महान रूसी क्रातिकारी जनवादी विसारिओन बेलीन्स्की ने 'गोगोल के नाम पत्र' मे साक्रोश विरोध किया। बेलीन्स्की की आलोचना से गोगोल को गहरी निराशा हुई।

मई १८४८ मे वह रूस लौट आये, मास्को मे रहने लगे और फिर से 'मृत आत्माओ' के दूसरे खड पर काम करने लगे। परन्तु गोगोल की धर्माधता निरतर बढती जा रही थी, उनकी आत्म-प्रताडना की भावना अपनी चरम सीमा पर पहुच गयी और १८५२ मे हताशा के दौरे मे उन्होंने अपनी रचना का दूसरा खड जला डाला। इसके कुछ दिन बाद परिक्लाति से उनका देहात हो गया।

गोगोल के कृतित्व का रूसी साहित्य पर अपार प्रभाव पडा है। यहा प्रकाशित उनकी कहानियो मे पाठक गोगोल के रहस्य-रोमाच के स्वरूप और कुछ हद तक उसके विकास को भी आक पायेगे।
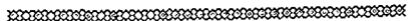
मई की रात, या डूबी लड़की

> भगवान ही जाने कि इसका क्या मतलब लगाया जाये। अच्छे भले धर्मभीरु लोग कुछ करने का बीड़ा उठाते हैं और खरगोश का पीछा करते हुए शिकारी कुत्तों की तरह अपना खून-पसीना एक कर देते हैं लेकिन उसका कोई भी नतीजा नहीं निकलता, पर जिस क्षण शैतान अपनी नाक घुमेड़ता है और अपनी दुम फटकारता है तब—जानते हैं आप—हर चीज़ जैसे आसमान से बरसने लगती है।

१

हान्ना

न० गाव की गलियो मे एक सुरीला गीत गूज उठा। गोधूलि की वेला थी, जब गाव के लडके-लडकिया दिन-भर के काम के बाद थककर सध्या के स्वच्छ आकाश की आभा मे एक जगह जमा हो जाते है और अपनी उल्लसित आत्मा को गीतो मे उडेल देते हैं, जिनके सुरो मे हमेशा उदासी की कसक होती है। विचारो मे डूबी हुई सध्या ने उदास होकर गहरे नीले आकाश को गले लगा लिया और हर चीज़ मे अस्पष्टता और बिलगाव की भावना भर दी। झुटपुटा छाने लगा था, फिर भी गीत शात नही हुए। गाव के मुखिया का बेटा, नौजवान कज़ाक लेव्को गीतो की धूम मचानेवालो से बचकर अपने हाथ मे बदूरा* लिये उधर आ निकला। उसने अपने सिर पर मेमने की खाल की टोपी पहन रखी थी। सडक पर चलते हुए वह कज़ाक अपने बाजे के तारो को धीरे से छेडता जा रहा था और ठुमक-ठुमककर नाच रहा था। चेरी के पेडो से घिरी हुई एक झोपडी के दरवाज़े के सामने पहुचकर वह शात होकर रुक गया। यह किसका घर था? यह किसका दरवाज़ा था? कुछ देर चुप रहने के बाद उसने फिर बाजा बजाना और गाना शुरू कर दिया

---

* तारवाला उक्राइनी अर्धगोला बाजा जो आम तौर पर उगली पर हड्डी की बनी मिज़राब पहनकर बजाया जाता है।—स०

सूरज डूबा, सांझ ने अपने पंख पसारे
आ जा, प्रीतम, तुझको मेरी प्रीत पुकारे

"नहीं, इस वक़्त तो मेरी सुंदर मृगनयनी सो रही होगी!" उसने अपने गीत के अंत पर पहुंचकर खिड़की के और पास जाते हुए कहा। "हान्ना! हान्ना! तुम सो रही हो या बाहर मेरे पास आना नहीं चाहतीं? तुम डरती होगी कि कहीं कोई हमें देख न ले, या शायद तुम अपना चांद-सा मुखड़ा बाहर सर्दी में निकालना नहीं चाहतीं! डरो नहीं: यहां कोई नहीं है। रात में हल्की-हल्की गर्मी है। और अगर कोई आ भी गया तो मैं तुम्हें अपने कोट से ढक लूंगा, अपनी पेटी तुम्हारे चारों ओर लपेट दूंगा और तुम्हें अपनी बांहों में समेट लूंगा—कोई भी हमें देख नही पायेगा। और अगर ठंडी हवा चलने लगी तो मैं तुम्हें अपने सीने से और कसकर चिपटा लूंगा, तुम्हें अपने चुंबनों से गरमाऊंगा, तुम्हारे छोटे-छोटे गोरे पांवों को अपनी फ़र की टोपी से ढक दूंगा। प्राणप्रिये, मेरी मीनाक्षी, मेरी हीरे की कनी—एक क्षण के लिए तो बाहर झांककर देखो। अपना गोरा-गोरा कोमल हाथ कम से कम खिड़की के बाहर तो निकालो... नहीं, तुम सो नहीं रही हो, तुम बड़ी अभिमानिनी हो!" वह और भी ऊंचे स्वर में कहता रहा, मानो अपनी इस क्षणिक उपेक्षा से लज्जित हो। "हालांकि तुम मेरा मज़ाक़ उड़ा रही होगी, क्यों, है न? अच्छा, मैं जाता हूं!"

यह कहकर वह झटके के साथ पीछे घूमा, अपनी टोपी सिर पर एक ओर झुका ली और धीरे-धीरे अपने बंदूरे के तार छेड़ता हुआ बड़े गर्व से खिड़की के पास से चला आया। उसी क्षण दरवाज़े का लकड़ी का हैंडिल घूमा: दरवाज़ा चूं-चूं करता हुआ खुला और चांदनी में नहायी हुई, सहमी-सहमी आंखों से चारों ओर देखती हुई और दरवाजे का हैंडिल पकड़े हुए सोलह साल की एक लड़की ने चौखट के पार क़दम रखा। रात के अंधेरे में उसके उद्दीप्त नयन स्वागत की ज्योति से नन्हे-नन्हे सितारों की तरह चमक रहे थे; उसके गले में लाल मूंगों का हार पड़ा हुआ था; युवक की तीव्र दृष्टि ने उसके गालों पर बिखरी हुई लाज की गुलाबी आभा को भी देख लिया था।

"ऐसी भी बेसब्री क्या," लड़की ने दबे स्वर में उससे कहा। "इतनी जल्दी रूठ भी गये! इस वक़्त आने की क्या ज़रूरत थी:

सड़क पर भुंड लोग आ-जा रहे हैं . मैं तो थर-थर काप रही हूं ."

"अरे, मेरी कोमल सुकुमार सोनजूही की बेल, थर-थर कापो नही! आकर मेरे कलेजे से लग जाओ!" युवा प्रेमी ने उसे अपनी बाहो मे समेटते हुए कहा और गले मे लबे-से पट्टे मे लटके हुए वंदूरे को एक तरफ हटाते हुए वह उसके साथ दरवाजे की चौखट पर बैठ गया। "तुम जानती हो कि तुम्हे देखे बिना मैं घडी-भर भी जिंदा नही रह सकता।"

"जानते हो मैं क्या सोचती हू?" लडकी उसकी आखो मे आखें डालकर देखते हुए बोली। "एक हल्की-सी आवाज मेरे कान मे कहती रहती है कि एक वक्त ऐसा आयेगा जब हम एक-दूसरे से इस तरह बार-बार नही मिल सकेंगे। तुम्हारे यहा के लोग बडे कमीने हैं सारी लड़किया कैसे जलकर देखती हैं, और छोकरे मैंने तो यह बात भी देखी है कि मेरी मा अब मुझ पर ज्यादा कडी नजर रखने लगी है। सच कहती हू कि जब मैं अजनबियो के बीच रहती थी तो मैं ज्यादा खुश थी।"

ये अतिम शब्द कहते हुए उसके चेहरे पर उदासी छा गयी।

"अपने गाव मे वापस आये हुए दो ही महीने हुए हैं और तुम अभी से उकता गयी। मैं समझता हू कि तुम मुझसे भी ऊब गयी होगी।"

"अरे नही, तुमसे नही," उसने मुस्कराते हुए कहा। "तुम्हे तो मैं प्यार करती हू, मेरे सलोने कज़ाक! मुझे तुम्हारी बादामी आखो से प्यार है, जिस तरह वे मुझे देखती हैं उससे मुझे प्यार है— मुझे ऐसा लगता है कि मेरे अदर मेरी आत्मा मुस्करा रही है, और इससे मेरा मन खिल उठता है, जिस दोस्ताना ढग से तुम अपनी मूछे फड़काते हो उससे मुझे प्यार है, जिस तरह तुम अपना बदूरा बजाते हुए चलते हो उससे मुझे प्यार है, और मुझे तुम्हारा गाना सुनना अच्छा लगता है।"

"मेरी प्यारी हान्ना!" लडके ने उसे चूमते हुए और उसे कसकर अपने सीने से भीचते हुए कहा।

"जरा ठहरो, लेव्को! पहले यह बताओ कि तुमने अपने बाप से बात की?"

"क्या?" उसने कहा, मानो सोते से चौक पडा हो। "हा, मैंने

कहा तो था कि तुम और मैं ब्याह करना चाहते हैं।"

लेकिन जिस तरह उसने कहा कि "मैंने कहा तो था" उसमें कुछ घोर निराशा का भाव था।

"तो?"

"अब उसकी क्या कही जाये? उस बूढ़े ठूंठ ने हमेशा की तरह बात अनसुनी कर दी: मेरी बात तो सुनी नहीं और लगा मुझे डांटने कि मैं बिल्कुल बेलगाम ज़िंदगी बसर करता हूं और छोकरों के साथ आवारागर्दी करता रहता हूं। लेकिन, मेरी बुलबुल हान्ना, तुम बिल्कुल परेशान न हो! मैं तुमसे एक कज़ाक की हैसियत से अपनी इज़्ज़त की क़सम खाकर कहता हूं कि मैं बात करके उसे राज़ी कर लूंगा।"

"तुम्हें तो बस इतना ही करने की ज़रूरत है, लेव्को, कि तुम एक बार कह दो, और जैसा तुम चाहोगे वैसा ही होगा। मैं यह बात अपने अनुभव से जानती हूं: कभी-कभी मैं किसी बात के बिल्कुल खिलाफ़ होती हूं, लेकिन जब तुम कह देते हो तो जैसा तुम कहते हो वैसा ही करती हूं। देखो, उधर देखो!" वह उसके कंधे पर अपना सिर टिकाये हल्की-हल्की सुखद उष्णता बिखेरनेवाले नीले उक्राइनी आकाश के अनंत विस्तार की ओर, जिसके नीचे उनके चारों ओर के चेरी के पेड़ों की लेस जैसी पत्तियों की झालर लगी थी, आंखें उठाकर कहती रही। "वह दूर टिमटिमाते हुए नन्हे-नन्हे सितारे देख रहे हो? देखो: एक, दो, तीन, चार, पांच हैं... मैं समझती हूं वे फ़रिश्ते होंगे, जो स्वर्ग में अपनी छोटी-छोटी सुंदर कुटियाओं की खिड़कियां खोलकर हमें देख रहे हैं। है न, लेव्को? वे ही हमारी इस दुनिया को देख रहे हैं, है न? ज़रा सोचो, अगर आदमियों के पंख होते, चिड़ियों की तरह, और हम उड़कर वहां जा सकते, बहुत दूर आसमान की ऊंचाई पर... उफ़, बड़ा डर लगता है! एक भी बलूत का पेड़ इतना ऊंचा नहीं है कि सितारों तक पहुंच सके। लेकिन लोग कहते हैं कि एक पेड़ है ऐसा, कहीं किसी दूर देश में, जिसकी सबसे ऊपरवाली डालें स्वर्ग में सरसराती हैं, और भगवान उन्हीं पर चलकर ईस्टर के इतवार से पहलेवाली रात को धरती पर उतरते हैं।"

"नहीं, हान्ना, भगवान के पास एक लंबी-सी सीढ़ी है जो स्वर्ग से पृथ्वी तक चली आती है। ईस्टर के इतवार से पहलेवाली रात को सबसे बड़े फ़रिश्ते यह सीढ़ी लगा देते हैं और जैसे ही भगवान उसके

पहले डडे पर अपना पाव रखते है सारी अपवित्र आत्माए लुढककर नरक मे पहुच जाती है और यही वजह है कि ईसा के पुनरुत्थान के दिन पृथ्वी पर एक भी दुष्ट आत्मा नही रह जाती।"

"सुनो, पानी कैसे हिलोरे लेता हुआ चुपचाप बह रहा है, जैसे बच्चा पालने मे झूलता है।" मेपिल के गहरे रग के उदास पेडो और निराश भाव से पानी मे अपनी जटाए झुलाते हुए बेदवृक्षो से घिरे तालाब की ओर इशारा करके हान्ना अपनी बात कहती रही। दुर्बल बूढे की तरह तालाब ने अधकारमय और सुदूर आकाश को अपनी ठडी बाहो मे समेट रखा था, और वह सुलगते हुए सितारो पर अपने बर्फीले चुबनो की बौछार कर रहा था, रात की हवा की हल्की-हल्की सुखद आच मे सितारे मद ज्योति मे इस तरह टिमटिमा रहे थे मानो किसी भी क्षण निशा की जगमगाती हुई देवी के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हो। जगल मे लगी हुई पहाडी पर लकडी की एक पुरानी झोपडी बद किवाडो के पीछे सो रही थी, उसकी छत पर काई जमी हुई थी और घास-फूस उगा हुआ था, उसकी खिडकियो को जगली सेब के घने पेडो ने पूरी तरह ढक रखा था, जगल अपनी मलिन छाया उस कुटिया पर डाल रहा था जिसकी वजह से वह अधकारमय और भयावह लगने लगी थी, कुटिया से नीचे पहाडी की ढलान पर अखरोट के पेडो का एक झुरमुट था जो नीचे तालाब तक फैला हुआ था।

"मुझे एक बार की बात याद है, बहुत पहले की, जैसे कोई सपना देखा हो," हान्ना ने उसकी ओर देखते हुए कहा, "जब मैं छोटी-सी थी और ननिहाल मे रहती थी, तब मैंने उस पुराने घर के बारे मे एक डरावनी कहानी सुनी थी। लेव्को, तुम्हे वह कहानी जरूर मालूम होगी, मुझे सुनाओ न!"

"तुम उसके बारे मे परेशान न हो, मेरी जान! बूढी औरते और बेवकूफ लोग दुनिया-भर की बकवास करते रहते है। तुम बेकार परेशान होगी, तुम्हारे दिल मे डर समा जायेगा और तुम्हे नीद नही आयेगी।"

"नही, बताओ मुझे, बताओ न, मेरे सलोने राजकुमार!" उसने अपना गाल उसके गाल से सटाकर और उसे सीने से लगाकर आग्रह किया। "अच्छा! मैं समझ गयी, तुम मुझसे सचमुच प्यार नही करते हो, तुम्हे किसी और से प्यार है। मुझे डर नही लगेगा,

जो पिटाई करना चाहती थीं उससे वह बच गयी। इन बुढ़ियों को भी कैसी-कैसी बातें सूझती हैं! लोग यह भी कहते हैं कि वह डूबी हुई लड़की रोज़ रात को अपनी सारी औरतों को जमा करती है और यह पता लगाने के लिए उनके चेहरों को घूर-घूरकर देखती है कि उनमें से वह चुड़ैल कौन-सी है; लेकिन अभी तक वह उसका पता नहीं लगा पायी है। और अगर कोई ज़िंदा आदमी उसके चंगुल में फंस जाता है तो वह फ़ौरन उसे डूबो देने की धमकी देकर यह अटकल लगाने के लिए मजबूर करती है कि उनमें से वह चुड़ैल कौन-सी है। तो, मेरी प्यारी हान्ना, बूढ़े लोग यही सब बकवास करते रहते हैं!.. उस घर का मौजूदा मालिक वहां शराब की भट्ठी लगाना चाहता है और उसे चलाने के लिए उसने एक शराब बनानेवाले को ख़ास तौर पर वहां भेजा भी है... रुको, मुझे कुछ आवाज़ें सुनायी दे रही हैं। छोकरे गा-बजाकर लौट रहे हैं। अच्छा, हान्ना, मैं चलता हूं! सुख की नींद सोना – बुढ़ियों की इन कहानियों को बिल्कुल भूल जाना!"

यह कहकर उसने कसकर उसे सीने से लगाया, उसे प्यार किया और चला गया।

"अलविदा, लेव्को!" हान्ना ने अपनी विचारमग्न आंखें अंधेरे जंगल की ओर फेरते हुए जवाब दिया।

उसी क्षण चांद के बड़े-से दमकते हुए गोले ने क्षितिज के पीछे से बड़ी शान से उभरना शुरू किया। उसका आधा हिस्सा अभी तक छिपा हुआ था लेकिन उसकी जादू-भरी रोशनी सारी दुनिया में फैल गयी थी। तालाब ज़िंदा होकर झिलमिला रहा था। अंधकारमय पृष्ठ-भूमि पर पेड़ों की परछाइयां साफ़ पहचानी जा सकती थीं।

"अलविदा, हान्ना!" उसे अपने पीछे से किसी की आवाज़ सुनायी दी और इन शब्दों के साथ ही किसी ने उसे चूम लिया।

"तुम वापस आ गये!" उसने पीछे मुड़कर देखते हुए कहा; लेकिन अपने सामने एक बिल्कुल अजनबी को देखकर उसने फिर मुंह फेर लिया।

"अलविदा, हान्ना!" उसे फिर सुनायी दिया, और किसी ने उसके गाल पर एक और चुंबन जड़ दिया।

"एक और ढीठ बदमाश!" उसने झल्लाकर कहा।

"अलविदा, मेरी प्यारी हान्ना!"

"अब एक और!"

"अलविदा! अलविदा! अलविदा, हान्ना!" और चारों ओर से उस पर चुबनो की बौछार होने लगी।

"यह तो पूरा गरोह है!" हान्ना ने उसे चूमने को बेताब नौजवानो की भीड के बीच मे झपटकर बाहर निकलते हुए चिल्लाकर कहा। "ये लोग चूमते-चूमते कभी थकते भी नही? हे भगवान, इस तरह तो जल्दी ही मैं सडक पर मुह दिखाने लायक भी नही रह जाऊगी!"

यह कहकर उसने दरवाजा धड से बद कर लिया और लोहे की कुडी सरकाने की आवाज के अलावा कुछ भी सुनायी नहीं दिया।

२

मुखिया

आप उक्राइना की रात को जानते हैं? नही, आप उक्राइना की रात को नही जानते! उसे ध्यान से देखिये। आकाश के बीचोबीच चाद झाक रहा है। व्योम का अनत विस्तार और भी फैल गया है और उसके आयाम पहले से भी अधिक असीम हो गये है। वह झिलमिला रहा है और सास ले रहा है। नीचे धरती रुपहली रोशनी से सजी हुई है, स्वच्छ निर्मल वायु शीतल और मादक है, मिठास से भरी हुई और सुगध के सागर मे नहायी हुई। कैसी दिव्य रात है! मत्रमुग्ध कर देनेवाली रात! रात के अधेरे से भरे हुए जगल निश्चल, सचेतन खडे हुए है और अपने सामने विशाल छायाए डाल रहे हैं। तालाब चुप और शात है, बागो के चारो ओर की काही रग की चारदीवारिया उदास भाव से पानी की ठडक और अधेरे को घेर लेती है। बर्ड-चेरी और चेरी के जगली पेडो के अछूते झुरमुट बीच-बीच मे पत्तियो की मरमर-ध्वनि के साथ घबराकर अपनी जडे चश्मे के बर्फीले पानी मे डुबो देते हैं, मानो रात की उस खूबसूरत हवा से नाराज हो जो चुपके से रेगकर उन पर चढ जाती है और उन्हे चूम लेती है। समस्त दृश्यावली सोयी हुई है। ऊपर आसमान सास ले रहा है, हर वस्तु भव्य तथा शातचित्त है। मन मे एक उत्कृष्ट भावना उमडती है और उसकी गहराइयो मे से कितनी ही झिलमिलाती

जो पिटाई करना चाहती थीं उससे वह बच गयी। इन बुढ़ियों को भी कैसी-कैसी बातें सूझती हैं! लोग यह भी कहते हैं कि वह डूबी हुई लड़की रोज़ रात को अपनी सारी औरतों को जमा करती है और यह पता लगाने के लिए उनके चेहरों को घूर-घूरकर देखती है कि उनमें से वह चुड़ैल कौन-सी है; लेकिन अभी तक वह उसका पता नहीं लगा पायी है। और अगर कोई ज़िंदा आदमी उसके चंगुल में फंस जाता है तो वह फ़ौरन उसे डूबो देने की धमकी देकर यह अटकल लगाने के लिए मजबूर करती है कि उनमें से वह चुड़ैल कौन-सी है। तो, मेरी प्यारी हान्ना, बूढ़े लोग यही सब बकवास करते रहते हैं! .. उस घर का मौजूदा मालिक वहां शराब की भट्ठी लगाना चाहता है और उसे चलाने के लिए उसने एक शराब बनानेवाले को ख़ास तौर पर वहां भेजा भी है... रुको, मुझे कुछ आवाज़ें सुनायी दे रही हैं। छोकरे गा-बजाकर लौट रहे हैं। अच्छा, हान्ना, मैं चलता हूं! सुख की नींद सोना – बुढ़ियों की इन कहानियों को बिल्कुल भूल जाना!"

यह कहकर उसने कसकर उसे सीने से लगाया, उसे प्यार किया और चला गया।

"अलविदा, लेव्को!" हान्ना ने अपनी विचारमग्न आंखें अंधेरे जंगल की ओर फेरते हुए जवाब दिया।

उसी क्षण चांद के बड़े-से दमकते हुए गोले ने क्षितिज के पीछे से बड़ी शान से उभरना शुरू किया। उसका आधा हिस्सा अभी तक छिपा हुआ था लेकिन उसकी जादू-भरी रोशनी सारी दुनिया में फैल गयी थी। तालाब ज़िंदा होकर झिलमिला रहा था। अंधकारमय पृष्ठ-भूमि पर पेड़ों की परछाइयां साफ़ पहचानी जा सकती थीं।

"अलविदा, हान्ना!" उसे अपने पीछे से किसी की आवाज़ सुनायी दी और इन शब्दों के साथ ही किसी ने उसे चूम लिया।

"तुम वापस आ गये!" उसने पीछे मुड़कर देखते हुए कहा; लेकिन अपने सामने एक बिल्कुल अजनबी को देखकर उसने फिर मुंह फेर लिया।

"अलविदा, हान्ना!" उसे फिर सुनायी दिया, और किसी ने उसके गाल पर एक और चुंबन जड़ दिया।

"एक और ढीठ बदमाश!" उसने झल्लाकर कहा।

"अलविदा, मेरी प्यारी हान्ना!"

"अब एक और!"

"अलविदा! अलविदा! अलविदा, हान्ना!" और चारो ओर से उस पर चुबनो की बौछार होने लगी।

"यह तो पूरा गरोह है!" हान्ना ने उसे चूमने को बेताब नौजवानों की भीड के बीच से झपटकर बाहर निकलते हुए चिल्लाकर कहा। "ये लोग चूमते-चूमते कभी थकते भी नही? हे भगवान, इस तरह तो जल्दी ही मैं सडक पर मुह दिखाने लायक भी नही रह जाऊगी!"

यह कहकर उसने दरवाज़ा धड से बद कर लिया और लोहे की कुडी सरकाने की आवाज़ के अलावा कुछ भी सुनायी नही दिया।

२

मुखिया

आप उक्राइना की रात को जानते हैं? नही, आप उक्राइना की रात को नही जानते! उसे ध्यान से देखिये। आकाश के बीचोबीच चाद झाक रहा है। व्योम का अनत विस्तार और भी फैल गया है और उसके आयाम पहले से भी अधिक असीम हो गये है। वह झिलमिला रहा है और सास ले रहा है। नीचे धरती रुपहली रोशनी मे सजी हुई है, स्वच्छ निर्मल वायु शीतल और मादक है, मिठास से भरी हुई और सुगध के सागर मे नहायी हुई। कैसी दिव्य रात है! मत्रमुग्ध कर देनेवाली रात! रात के अधेरे मे भरे हुए जगल निश्चल, सचेतन खडे हुए है और अपने सामने विशाल छायाए डाल रहे है। तालाब चुप और शात हैं, बागो के चारो ओर की काही रग की चारदीवारिया उदास भाव से पानी की ठडक और अधेरे को घेर लेती है। बर्ड-चेरी और चेरी के जगली पेडो के अछूते झुरमुट बीच-बीच मे पत्तियो की मरमर-ध्वनि के साथ घबराकर अपनी जडे चश्मे के बर्फीले पानी मे डुबो देते हैं, मानो रात की उस खूबसूरत हवा से नाराज़ हो जो चुपके से रेगकर उन पर चढ जाती है और उन्हे चूम लेती है। समस्त दृश्यावली सोयी हुई है। ऊपर आसमान सास ले रहा है, हर वस्तु भव्य तथा शातचित्त है। मन मे एक उत्कृष्ट भावना उमडती है और उसकी गहराइयो मे से कितनी ही झिलमिलाती

हुई कल्पनाएं उभरती हैं। दिव्य रात! मंत्रमुग्ध कर देनेवाली रात! सहसा हर चीज़ सजीव हो उठती है: जंगल, तालाव और स्तेपी। उक्राइनी वुलवुल का मधुर संगीत कानों में रस घोलता है और आकाश के वीच में चांद ऐसा ध्यान में डूवा हुआ ठहर जाता है मानो वह भी उसका गीत सुन रहा हो... ऊंचाई पर वसा हुआ गांव ऐसे सो रहा है जैसे किसी ने उस पर जादू कर दिया हो। झोपड़ियों के झुरमुट चांद की रोशनी में चांदी की तरह चमक रहे हैं; उनकी नीची-नीची दीवारों की सफ़ेद रूपरेखा चारों ओर के अंधकार की पृष्ठभूमि पर और भी उभरकर सामने आ जाती है। गीत शांत हो गये हैं। चारों ओर सन्नाटा है। सभी धर्मभीरु नेक ईसाई गहरी नींद सो रहे हैं। कहीं-कहीं रोशनी की पतली-सी धज्जी झरोखे में से झांक लेती है। एक-दो झोपड़ियों के सामनेवाली खुली जगह में कोई मंदगामी विलंवी परिवार रात गये अपना भोजन समाप्त कर रहा है।

"अरे नहीं, ऐसे नहीं नाचा जाता है होपक नाच! उन लोगों की ताल ही ठीक नहीं पड़ रही थी! वह उसका भाई क्या कह रहा था?.. इस तरह है उसकी ताल: ता थै-या! ता थै-या! ता, ता, ता!" यह वातचीत नशे में चूर एक वूढ़ा किसान सड़क पर नाचते हुए अपने आप से कर रहा था। "क़सम खाकर कहता हूं, यह होपक नाचने का कोई तरीक़ा नहीं है! भगवान क़सम, ऐसे नहीं! मैं झूठ क्यों वोलूं? ऐसे विल्कुल नही! आ जाओ! ता थै-या! ता थै-या! ता, ता, ता!"

"इसका तो दिमाग़ उतर गया पटरी पर से! अगर कोई नौजवान आदमी होता तो समझ में भी आने की वात थी, लेकिन देखो तो इस खूसट वूढ़े को, आधी रात को वीच सड़क पर वेवक़ूफ़ों की तरह नाच रहा है!" उसी की उम्र की एक औरत ने, जो हाथ में पयाल का गट्ठा लिये चली जा रही थी, चिल्लाकर कहा। "अव घर वापस जाओ! सोने का वक़्त हो गया!"

"जाता हूं!" किसान ने रुककर कहा। "जाता हूं। और मुखिया की मुझे परवाह ही क्या है। यह क्यों समझता है वह, उसके वाप के सिर पर भूत चढ़े, कि वह मुखिया है तो वह कड़ाके की सर्दी में लोगों को ठंडे पानी से नहला सकता है और ऐंठता फिर सकता है! वड़ा आया मुखिया कहीं का! मैं अपना मुखिया खुद वनूंगा, मुझे

करो! हा, भगवान को साक्षी जानकर कहता हू, मैं खुद अपना मुखिया हू! यही मेरा कहना है, और वह.." वह सबसे पास की झोपडी के दरवाजे की ओर जाते हुए कहता रहा और खिडकी के पास जाकर खडा हो गया। दरवाजे का हैंडिल खोजने की कोशिश मे वह काच को खुरचता रहा। "ऐ, सुनती है, दरवाजा खोल दे! जल्दी कर, सुनती है कि नही, खोल दे! इस बूढे कज़ाक को नीद लगी है!"

"कहा जा रहे हो, कलेनिक? वह तुम्हारा घर नही है!" गा-बजाकर घर लौटती हुई लडकियो की एक टोली ने ठहाका मारकर उसके पीछे से पुकारकर कहा। "घर का रास्ता दिखा दें तुम्हें?"

"हा, मुझे रास्ता दिखा दो, छबीली सलोनियो!"

"छबीली सलोनियो? सुनती हो इसकी बाते?" उनमे से एक ने दोहराया, "बडा भला आदमी है, हमारा कलेनिक। इसके बदले तो इसका कुछ उपकार करना ही पडेगा लेकिन नही, पहले एक नाच दिखा दो!"

"नाच? अरे, नटखट लडकियो!" हसकर उनकी ओर अपनी उगली हिलाते हुए कलेनिक ने धीरे-धीरे कहा। "पहले," वह पीछे की ओर झोका खाकर बोला क्योकि उसकी टागे इतनी बुरी तरह लडखडा रही थी कि उससे एक जगह खडा नही हुआ जा रहा था, "पहले एक चुम्मी देने के बारे मे क्या ख्याल है, क्यो? मैं तुम सबका प्यार लूगा, एक-एक का!" वह लडखडाकर उनकी ओर लपका।

लडकिया चीखने लगी और तितर-बितर हो गयी, लेकिन जब उन्होंने देखा कि कलेनिक के पाव ठीक से उसका साथ नही दे रहे है तो उनकी हिम्मत बढी और वे कुलेले भरती हुई सडक के उस पार चली गयी।

"वह रहा तुम्हारा घर!" उन्होंने भागते-भागते एक घर की तरफ इशारा करके पुकारकर कहा, जो बाकी सब घरो से बडा था और गाव के मुखिया का था। कलेनिक चुपचाप उनकी बात मानकर उसी ओर चल पडा और लगातार मुखिया को बुरा-भला कहता रहा।

लेकिन आखिर यह मुखिया है कौन जिसे लोग इतनी गालिया देते है? ओहो, यह मुखिया गाव का बहुत बडा आदमी है। जितनी देर कलेनिक अपना रास्ता तै कर रहा है उतनी देर मे हम कुछ शब्द मुखिया के बारे में बता दे। सारा गाव उसे देखते ही अपनी टोपी

उतार लेता है और जवान से जवान लड़कियां भी कहती हैं : "सलाम, चौधरी!" हर नौजवान मुखिया बनने के सपने देखता है! मुखिया को पूरी छूट होती है कि गांव में जिसकी जितनी नसवार चाहे ले ले ; हट्टे-कट्टे किसान बड़े आदर के भाव से हाथ में अपनी टोपी लिये खड़े रहते हैं और मुखिया अपनी मोटी-मोटी भद्दी उंगलियों से रंग-बिरंगे चित्रों से सजी हुई उनकी डिबियों में से नसवार निकालता रहता है। गांव की पंचायत में, या ग्राम-सभा में, इस बात के बावजूद कि उसकी सत्ता दो-चार वोटों के बल पर ही है, मुखिया का पलड़ा हमेशा भारी रहता है और वह जिसे भी चाहता है उसे सड़क चौरस करने या खाइयां खोदने जैसे कामों पर लगा देता है। मुखिया की सूरत हमेशा मनहूस लगती है, देखने में वह हर दम झल्लाया रहता है, और उसे ज़्यादा बोलना पसंद नहीं है। बहुत दिन हुए, बहुत पहले की बात है, जब हमारी महारानी कैथरीन, भगवान उनकी आत्मा को शांति दे, क्रीमिया की यात्रा* पर गयी थीं, तो उसे उनके मार्गदर्शक का काम करने के लिए चुना गया था ; उसने पूरे दो दिन तक अपना यह काम किया था और उसे शाही बग्घी पर महारानी के कोचवान के पास बैठने का भी सुअवसर मिला था। तब से मुखिया की आदत पड़ गयी थी कि वह विचारमग्न होकर, रोबदार सूरत बनाये, अपनी लंबी-लंबी नीचे ऐंठी हुई नुकीली मूंछों पर ताव देता हुआ सिर झुकाकर चलता था, और भवों के नीचे से चारों ओर बाज़ जैसी दृष्टि से देखता जाता था। और तभी से, चाहे जिस विषय पर चर्चा क्यों न हो रही हो, मुखिया इस बात का ज़िक्र करने का कोई मौक़ा न चूकता कि किस तरह उसने महारानी को यात्रा करायी थी और शाही बग्घी पर कोचवान के पास बैठा था। मुखिया कभी-कभी यह ढोंग करने की कोशिश करता है कि वह बहरा है, ख़ास तौर पर उस वक़्त जब वह कोई ऐसी बात सुनता है जो उसके कानों को अच्छी नहीं लगती। मुखिया बहुत भड़कीले कपड़े पहनने का शौक़ीन नहीं है ; वह हमेशा घर के बुने हुए कपड़े का सादा-सा काला कोट पहनता है जिस पर वह एक रंगीन ऊनी कमरबंद बांधे रहता है ; किसी को याद नहीं पड़ता कि उसने उसे

---

* संकेत कैथरीन महान (१७६२–१७९६) की क्रीमिया की यात्रा की ओर है, जिस पर रूस ने १७८३ में अधिकार कर लिया था। – सं०

किमी दूसरे लिवास में देखा हो, अलावा उम वक्त के जब महारानी की सवारी क्रीमिया जाते हुए उधर मे गुजरी थी और मुखिया ने कज़ाकों जैसा नीला जुपान* पहना था। लेकिन मुझे तो इसमें भी शक है कि गाव में कोई आदमी ऐमा वचा होगा जिसे उस अवसर की याद हो, और वह उस जुपान को मदूक मे ताला बद करके रखता है। मुखिया की वीवी मर गयी है लेकिन उसकी साली उसके घर मे रहती है, उसके लिए खाना पकाती है, वेचे साफ करती है, दीवारो की लिपाई-पुताई करती है, उमकी कमीजो के लिए सूत कातती है और गृहस्थी की देखभाल करती है। गाव मे जिन लोगों की जवान चलती है वे तो यहा तक बताते है कि वह उसकी कोई रिश्तेदार है ही नही, लेकिन, जैसा कि हम पहले ही देख चुके है, मुखिया की वुराई चाहनेवाले वहुत-से लोग है, जो उमके बारे मे तरह-तरह की बुरी बाते फैलाकर खुश होते है। मुमकिन है इस अफवाह की वजह यह हो कि साली को यह बात कभी अच्छी नही लगती है कि मुखिया खेतों मे उम वक्त जाता है जव लडकिया वहा दवरी के लिए जाती हैं, या वह हर उस कज़ाक के यहा जाता है जिसके जवान वेटी हो। मुखिया के एक ही आख है, लेकिन उसकी यह इकलौती आख बला की तेज़ है और मील-भर दूर से मुदर लडकी को देख लेती है। लेकिन पहले से इस वात का पक्का यकीन किये बिना कि उसकी साली देख तो नही रही है वह किसी सुदर मुखडे पर अपनी नजर जमाता नही। तो हमने आपको मुखिया के बारे मे जानने लायक सारी जरूरी बाते बता दी, इस बीच नशे मे चूर कलेनिक अभी आधी दूर ही पहुचा है और उसे मुखिया को चुन-चुनकर वे सारी गालिया देने का मौका मिलेगा जो उसकी आलसी और लद्धड जवान पर आ सके।

३

अप्रत्याशित प्रतिद्वद्वी। पड्यत्र

"नही, यारो, नही, मैं इस चक्कर मे नही पडता! वस, बहुत हो चुका! तुम लोग अपनी इन शरारतो से थक नही जाते? यो भी

---

* उक्राइनी और पोलिस्तानी मर्दों का छोटे कफ्तान जैसा एक पहनावा। – स०

सारा गांव समझने लगा है कि हम वड़े उपद्रवी हैं। चलो, सोने का वक़्त हो गया है!" यह था अपने ऊधमी दोस्तों को लेव्को का जवाव जव उन्होंने अपनी नयी शरारतों के लिए उसे भी अपने साथ ले चलने की कोशिश की। "अच्छा, मैं तो चला, दोस्तो! तुम सव लोगों को सलाम!" उसने पुकारकर कहा और तेज़ क़दम वढ़ाता हुआ सड़क पर चल दिया।

"क्या मेरी मृगनयनी हान्ना इस वक़्त सो रही होगी?" चेरी के पेड़ोंवाले घर के पास पहुंचकर उसने सोचा। चारों ओर की निस्तब्धता में उसे कुछ आवाज़ों की धीमी-धीमी मरमर-ध्वनि सुनायी दी। लेव्को ठिठक गया। उसे पेड़ों के वीच से एक सफ़ेद ब्लाउज़ साफ़ दिखायी दे रहा था... "क्या हो रहा है?" दवे पांव कुछ और पास जाकर एक पेड़ के पीछे छिपकर वह सोचने लगा। उसके सामने लड़की के चेहरे पर चांदनी चमक रही थी... हान्ना! लेकिन यह लंवा-सा आदमी कौन था जो उसकी ओर पीठ किये खड़ा था? वह उसे झांककर देखने का व्यर्थ प्रयास करने लगा: परछाइयों के वीच वह आदमी विल्कुल पहचाना नहीं जा रहा था। सिर्फ़ सामने से उस पर कुछ रोशनी पड़ रही थी; लेकिन ज़रा-सा भी आगे क़दम वढ़ाने पर लेव्को देखा जाता। चुपचाप एक पेड़ का सहारा लेकर उसने जहां वह था वहीं रुके रहने का फ़ैसला किया। उसने साफ़ सुना कि लड़की ने उसका नाम लिया।

"लेव्को? लेव्को तो अभी दुध-मुंहा है!" उस लंवे आदमी ने भर्रायी हुई दवी आवाज़ में कहा। "अगर मैंने कभी उसे तुम्हारे साथ पकड़ लिया तो मैं उसकी माथे की लट ऐसी खींचूंगा कि याद करेगा!"

"कुछ पता तो चले कि आख़िर यह सूअर है कौन जो माथे की लट खींचना चाहता है!" लेव्को हर शब्द सुनने की उत्सुकता में अपनी गर्दन सारस की तरह आगे वढ़ाकर मुंह ही मुंह में वड़वड़ाया। लेकिन वह अजनवी इतने चुपके-चुपके वातें करता रहा कि उसकी समझ में कुछ भी नहीं आया।

"तुम ऐसी वात कैसे कह सकते हो!" उसकी वात पूरी हो जाने पर हान्ना ने गुस्से से कहा। "तुम झूठ वोल रहे हो; तुम मुझे धोखा दे रहे हो; तुम मुझसे प्यार नहीं करते; और मैं कभी इस वात पर यक़ीन नहीं करूंगी कि तुम मुझसे प्यार करते हो!"

"मैं जानता हूं," लंवा आदमी कहता रहा, "लेव्को ने तुमसे दुनिया-भर की ख़ुराफ़ात वातें वतायी हैं और तुम्हारा दिमाग़ फेर दिया

है," (यहा पर लेव्को को ऐसा लगा कि उसने वह आवाज पहले कही सुनी है)। "लेकिन मैं भी लेव्को को बता दूंगा कि मैं किस मिट्टी का बना हू!" वह अजनबी कहता रहा। "वह समझता है कि मैं उसके हथकडे जानता नही। मैं उस बदमाश को दिखा दूगा कि मैं अपने घूसो से क्या काम ले सकता हू!"

उसकी यह आखिरी बात सुनकर लेव्को अपने गुस्से पर काबू न रख सका। तीन कदम आगे बढकर उसने अपना मुक्का पीछे की ओर ताना, अजनबी को एक ऐसा घूसा जड देने की तैयारी मे जो उसके तगडे डीलडौल के बावजूद उसे ज़मीन चटा देता, लेकिन उसी क्षण रोशनी की एक किरन उस आदमी के चेहरे पर पडी और लेव्को खुद अपने बाप को सामने खडा पाकर हक्का-बक्का रह गया। उसने अपना आश्चर्य बस इस तरह व्यक्त किया कि वह *अनायास* ही सिर हिलाकर और सीटी बजाने की हल्की-सी आवाज निकालकर रह गया। उनके पास ही कुछ शोर सुनायी दिया, हान्ना तेज़ी से झपटती हुई अपने घर मे वापस चली गयी और अदर जाकर उसने दरवाज़ा बद कर लिया।

"अलविदा, हान्ना!" उसी क्षण लडको मे से एक ने चुपके से आगे बढकर मुखिया को सीने से लगा लिया और ऊचे स्वर मे कहा; मुखिया की कड़े बालोवाली मूछो का स्पर्श होते ही वह सहमकर पीछे हट गया।

"अलविदा, मेरी सुदरी!" एक दूसरे लड़के ने आवाज़ दी और मुखिया का जोर का घूसा खाकर वह लडखडाता हुआ दूर जा गिरा।

"अलविदा, अलविदा, हान्ना!" कई लडके एक साथ चिल्लाये और मुखिया की गर्दन मे बाहे डालकर लटक गये।

"भागो यहा से, आवारा बदमाश कही के!" मुखिया उन पर हाथ चलाकर और पाव पटककर ज़ोर से चिल्लाया। "मैं तुम लोगो की हान्ना कब से बन गया? जाओ, तुम लोग भी जाकर अपने-अपने बाप की तरह फासी चढ जाओ, शैतान की औलादो! देखो तो, ऐसे टूट पडे जैसे शीरे पर मक्खिया टूट पडती है चलो, भागो यहा से! नही तो मैं अभी तुम्हे हान्ना बना दूगा!"

"मुखिया! मुखिया! यह तो मुखिया है!" लडके चिल्लाते हुए जल्दी-जल्दी तितर-बितर हो गये।

"अच्छा, पापा!" इस रहस्योद्‌घाटन के आघात का प्रभाव दूर होने पर लेव्को ने मुखिया को लंबे-लंबे डग भरते हुए और चारों ओर गालियों की बौछार करते हुए जाते देखकर कहा। "तो ये हरकतें हैं तुम्हारी! अच्छा चक्कर चला रखा है! और मैं यह समझने के लिए सिर खपाता रहा कि जब भी मैं शादी की बात करता हूं तो वह मेरी बात अनसुनी क्यों कर देता है। ठहर जा, खूसट बूढ़े, मैं तुझे नौजवान छोकरियों की खिड़कियों के सामने मंडलाने का मज़ा चखाता हूं, मैं बताता हूं तुझे कि दूसरों की लड़कियां उड़ा ले जाने का क्या मतलब होता है! सुनते हो, यारो! यहां आओ! इधर आओ!" उसने हाथ हिलाकर अपने साथियों को पुकारा, जो फिर गरोहबंद हो गये थे। "यहां तो आओ! मैंने ही तुमसे जाकर सो जाने को कहा था, लेकिन अब मैंने अपना इरादा बदल दिया है और मैं तुम लोगों के साथ चलकर रात-भर हंगामा मचाने को तैयार हूं।"

"यह हुई बात!" चौड़े कंधोंवाले एक तगड़े-से लड़के ने कहा, जो आम तौर पर गांव का सबसे बड़ा बांका-छैला समझा जाता था। "मैं समझता हूं कि जब तक जमकर धूम न मचायी जाये और कुछ असली हंगामे न किये जायें तब तक बेकार रात बर्बाद होगी। ऐसा लगता है जैसे किसी चीज़ की कमी रह गयी है। जैसे हैट या पाइप खो गया हो: लगता ही नहीं कि असली कज़ाक हो।"

"आज रात मुखिया की अच्छी तरह खबर लेने के बारे में क्या ख्याल है?"

"मुखिया की?"

"मैं कहता हूं, आखिर वह अपने आपको समझता क्या है? हमारे ऊपर ऐसे हुक्म चलाता है जैसे कहीं का सुलतान हो। जिस तरह हम लोगों को हांकता रहता है वही क्या कम था कि अब हमारी लड़कियां भी हमसे छीनने की कोशिश करने लगा। मुझसे पूछो तो गांव में एक भी खूबसूरत लड़की ऐसी नहीं है जिस पर मुखिया ने डोरे न डाले हों।"

"हां, यह तो सच है!" सब लड़कों ने एक स्वर से कहा।

"भला हम क्यों उसके ग़ुलामों जैसे हैं? क्या हम लोग उससे किसी बात में कम हैं? भगवान की कृपा से हम सभी आज़ाद कज़ाक हैं! तो आओ, यारो, उसे दिखा दें कि हम आज़ाद कज़ाक हैं!"

"चलो, दिखा दे!" दूसरो ने हाथो हाथ यह नारा उठा लिया। "और मुखिया की खबर लेते वक्त मुंशीजी को भी उसके साथ लपेट मे ले लिया जाये!"

"मुंशीजी को भी धरेगे, फ़िकर न करो! है यह कि मेरे पास मुखिया के बारे मे एक बहुत बढिया बना-बनाया गाना है। आओ, मैं तुम लोगो को सिखाये देता हू," लेव्को ने बदूरा छेडते हुए अपनी बात जारी रखी। "और सुनो, हम सब लोग भूतो का भेस बनाकर जायेगे!"

"जरा सभलके, लोगो, कज़ाक आते है!" तगडे-से लडके ने अपने पाव पटककर तालिया बजाते हुए कहा। "कैसा अच्छा लगता है! आज़ादी! खुलकर धूम मचाने मे कैसा मजा आता है—जैसा पुराने ज़माने मे होता होगा। ऐसा लगता है कि हम हवा की तरह आज़ाद है, और हमारी आत्मा आसमान पर पहुच गयी है। चलो, दोस्तो! देखे चलकर कहा है वह!"

हुल्लड मचानेवालो का गरोह सडक पर कूदता-फांदता चल पडा। धर्मभीरु बूढी औरतो ने, जिनकी आख यह शोर सुनकर खुल गयी थी, अपनी खिडकिया खोली और नीद मे झोके खाते हुए अपने सीने पर सलीब का निशान बनाकर कहा, "आज रात लडके सचमुच मस्ती मे है!"

४

लडके मस्ती मे

सडक के छोर पर सिर्फ़ एक घर मे बत्तिया जल रही थी। यही मुखिया का घर था। मुखिया खाना तो कब का खा चुका था और बेशक वह बहुत पहले सो गया होता, लेकिन उसके यहा एक मेहमान आया हुआ था, एक शराब बनानेवाला, उसे एक ज़मींदार ने आज़ाद कज़ाको के खेतो के बीच अपने ज़मीन के छोटे-से टुकडे पर शराब की भट्ठी लगाने के लिए भेजा था। मेहमान देव-प्रतिमाओ के नीचे सम्मान के स्थान पर बैठा था। वह छोटे कद का, मोटा-सा आदमी था, जिसकी छोटी-छोटी आखो के चारो ओर लगातार मुस्कराते रहने की वजह से झुर्रिया

पड़ी रहती थीं; अपने छोटे-से पाइप का कश लगाकर उसे जो ख़ुशी होती थी वह उसकी आंखों में झलकती हुई मालूम होती थी; जब पाइप में से राख निकलने लगती थी तो बार-बार उसे पाइप पीना बंद करके थूकना पड़ता था और पाइप में तंबाकू की राख को थपथपाकर दबाना पड़ता था... पाइप के धुएं के बादल जल्दी ही उड़ने लगते थे और कुछ-कुछ नीला-सा कुहासा उसके चारों ओर छा जाता था। वह आदमी बिल्कुल ऐसा लग रहा था जैसे शराब की भट्ठी की मोटी-सी चिमनी ने छत पर अड्डा जमाये-जमाये थककर अपनी टांगें सीधी करने का फ़ैसला किया हो और आकर मुखिया की मेज़ पर बैठ गयी हो। शराब बनानेवाले के ऊपरवाले होंठ पर छोटी-सी घनी मूंछ उगी हुई थी, लेकिन पाइप के घने धुएं के पार वह इतनी धुंधली-धुंधली दिखायी देती थी कि मूंछ के बजाय ऐसा लगता था कि शराब बनानेवाले ने बखार की बिल्ली की इजारेदारी में दख़ल देकर एक चूहा पकड़ लिया था जिसे वह अपने मुंह में दबाये हुए था। घर के मालिक की हैसियत से मुखिया सिर्फ़ क़मीज़ और लिनेन का पतलून पहने बैठा था। उसकी बाज़ जैसी आंख डूबते सूरज की तरह झुकने और मद्धिम पड़ने लगी थी। गांव का एक पुलिसवाला, जो मुखिया के गरोह का आदमी था, मेज़ के सिरे पर बैठा पाइप पी रहा था; अपने मेज़बान का उचित सम्मान करने के लिए उसने पेटीदार लंबा कोट पहन रखा था।

"क्या ख़्याल है," मुखिया ने शराब बनानेवाले की ओर मुड़कर और जम्हाई लेने के लिए खुले हुए अपने मुंह के सामने सलीब का निशान बनाते हुए पूछा, "शराब की भट्ठी कब तक बनकर तैयार हो जायेगी?"

"भगवान ने चाहा तो इस पतझड़ तक शराब खिंचनी शुरू हो जायेगी। मैं अपनी आख़िरी दमड़ी तक दांव पर लगाने को तैयार हूं कि इंटरसीज़न का त्योहार आने पर, चौधरी, तुम गांव की बड़ी सड़क पर जलेबी बनाते हुए टेढ़े-टेढ़े चल रहे होगे।"

यह वाक्य बोलते समय शराब बनानेवाले की छोटी-छोटी आंखें कान तक फैली हुई झुर्रियों में खोकर रह गयीं; उसका सारा शरीर मस्ती-भरी हंसी से हिल उठा और एक क्षण के लिए पाइप पर उसके चुलबुले होंठों की पकड़ ढीली पड़ गयी।

"हम मनाते हैं कि ऐसा ही हो," मुखिया ने कहा और उसके

चेहरे पर मुस्कराहट-सी दौड गयी। "आजकल, भगवान की कृपा से, आस-पास तो शराब की भट्टिया कम ही हैं। लेकिन मुझे याद है कि पुराने जमाने में जब मैं महारानी की शाही सवारी के साथ पेर्यास्लाव्लवाली सडक से गया था, तब बेजबोरोद्को* भी, भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दे "

"कैसी बातें करते हो, चौधरी, तुम्हारी याद को क्या हो गया है! उन दिनों तो क्रेमेनचुग से रोमनी तक शराब की दो भट्टिया भी नही थी। लेकिन अब कुछ सुना, उन कमबख्त जर्मनो ने क्या तरकीब सोची है? कहते हैं कि जल्दी ही वह दिन आनेवाला है जब शराब लकड़ी की आच पर नही खीची जायेगी, जैसा कि सभी भले ईसाई अब तक करते आये हैं, बल्कि उसके लिए कोई शैतानी भाप इस्तेमाल की जायेगी।" यह कहकर शराब बनानेवाला विचारमग्न होकर मेज़ को और उस पर रखे हुए अपने हाथो को देखने लगा। "भगवान ही जाने भाप से वे लोग कैसे यह काम करते हैं!"

"भगवान कसम, ये जर्मन भी निरे काठ के उल्लू हैं!" मुखिया ने कहा। "उन सबकी तो डडे से खबर ली जानी चाहिये, कुत्ते कही के! भला आज तक किसी ने सुना है कि कोई चीज़ भाप से उबाली जाती हो?!"

"मगर यह तो बताओ, भैया," मुखिया की साली ने, जो अलाव-घर के पासवाली बेंच पर टागे मोडे बैठी थी, पूछा, "कब तक अपनी घरवाली को लाये बिना तुम यहा ऐसे ही रहोगे?"

"घरवाली का यहा क्या करूगा? अगर उसकी शक्ल-सूरत होती भी तो बात दूसरी थी।"

"क्या वह सुदर नही?" मुखिया ने उस पर बाज़ जैसी नजर जमाकर पूछा।

"ऐसी सुन्दर कि क्या कहा जाये! वह बिल्कुल चुडैल है, और उसके थोबडे पर इतनी झुर्रिया पडी हुई हैं, जैसे खाली बटुआ हो।" शराब बनानेवाले का छोटा-सा शरीर ज़ोर के ठहाके से हिलने लगा।

---

* बेजबोरोद्को, अलेक्साद्र अंद्रेयेविच (१७४७-१७९९) – १७७५ से कैथरीन महान के सचिव, विदेश मत्री की हैसियत से वह महारानी की क्रीमिया-यात्रा पर उनके साथ गये थे। – स०

उसी वक़्त किसी के दरवाजे को खुरचने जैसी आवाज़ हुई; दरवाज़ा खुला और एक किसान अपनी टोपी उतारे बिना चौखट पार करके अंदर आया। वह कमरे के बीच में आकर खड़ा हो गया; वह विचारों में खोया हुआ लग रहा था, उसका मुंह खुला हुआ था, जबड़े नीचे लटके हुए थे और आंखें छत को घूर रही थीं। यह कोई और नहीं – हमारा वही पुराना दोस्त कलेनिक था।

"तो आख़िरकार मैं घर पहुंच ही गया!" उसने दरवाज़े के पास पड़ी हुई बेंच पर बैठते हुए कमरे में मौजूद दूसरे लोगों की ओर कोई ध्यान दिये बिना कहा। "उफ़्फ़ोह, उस चमरौधे खूसट शैतान ने सचमुच सड़क को कितना लंबा फैला दिया है! मीलों तक चली गयी है, लगता ही नहीं है कि कभी ख़त्म भी होगी! मेरी बूढ़ी टांगें ऐसी दुख रही है जैसे किसी ने तोड़ दिया हो उन्हें। अरी, भलीमानस, जरा वह कोट लाकर यहां मेरे लेटने के लिए बिछा दे। मैं वहां अलावगार के चबूतरे पर तेरे पास नहीं आनेवाला, इस फेर में न रहना; टांगों के मारे मेरी जान निकली जा रही है! ला, उठा दे, वहां कोने में पड़ा है; तनिक ध्यान रखना, तंबाकू की हंडिया न उलट देना कहीं। अच्छा, तू रहने दे, रहने दे! आज तूने शायद पी रखी है... जाने दे, मैं आप ही उठाये लाता हूं।"

कलेनिक ने उठने की कोशिश की लेकिन किसी अदम्य शक्ति ने उसे बेंच से जकड़े रखा।

"यह भी अच्छी रही!" मुखिया बोला। "दूसरे के घर में घुसकर उसे अपनी बपौती बना लिया! चल, निकल यहां से, भाग जा! .."

"रहने दो, चौधरी, आराम करने दो उसे!" शराब बनानेवाले ने मुखिया को रोकते हुए कहा। "बहुत काम का आदमी है; इसके जैसे कुछ और लोग आस-पास हों तो हमारा कारोबार चमक उठेगा..."

लेकिन उसने ये शब्द मानवीय दया-भाव से प्रेरित होकर नहीं कहे थे। शराब बनानेवाला अंधविश्वासी आदमी था, और वह समझता था कि जो आदमी तुम्हारे घर आकर बैठ चुका हो उसे खदेड़कर निकाल देना अपनी तबाही बुलाना है।

"बुढ़ापा भी कैसे चुपके-चुपके आकर धर दबोचता है! .." कलेनिक बेंच पर लेटते हुए बड़बड़ाया। "अगर मैं पिये होता तब भी कोई बात थी, लेकिन इस वक़्त तो मैं बिल्कुल नशे में नहीं हूं। भगवान क़सम,

मैं नशे मे नही! मैं भला झूठ क्यो बोलने लगा? खुद मुखिया के सामने मैं कसम खाने को तैयार हू। मैं कोई मुखिया से डरता हूं? मैं तो यही मनाता हू कि वह मर जाये, कुत्ते का पिल्ला! मैं थूकता हू उस पर! भगवान करे, वह गाडी के नीचे कुचला जाये, काना दज्जाल! वह आखिर समझता क्या है कि वह क्या कर रहा है, पाले मे ठिठुरते हुए लोगो पर पानी डाल रहा है "

"हुह! सूअर को घर मे घुसने दो तो वह सिर पर चढ आता है," मुखिया ने गुस्से मे उठकर खडे होते हुए कहा, लेकिन उसी क्षण एक बडा-सा पत्थर खिडकी के काच को चकनाचूर करता हुआ उसके पांव के पास आकर गिरा। मुखिया चौक पडा। "अगर पता चला गया कि किस बदमाश ने यह फेका है," वह पत्थर उठाकर गुस्से से खौलता हुआ बोला, "तो मैं उसे अभी पत्थर फेकना सिखा दूगा। आखिर यह सब हो क्या रहा है!" वह पत्थर को गुस्से से घूरते हुए कहता रहा। "यही पत्थर गले मे फसे और दम घुट जाये उसका "

"नही, नही, ऐसा नही कहते! भगवान तुम्हे बनाये रखे, भैया!" शराब बनानेवाले ने उसकी बात काटकर कहा, दहशत के मारे उसका रग बिल्कुल सफेद पड गया था। "भगवान तुम्हे बनाये रखे, इस लोक मे भी और परलोक मे भी, किसी को इस तरह नही कोसते!"

"तुम उसका पक्ष क्यो लेना चाहते हो? भगवान करे, उसके कीडे पडे! "

"ऐसी बात सोचना भी न, भैया! तुम्हे तो मालूम ही होगा मेरी स्वर्गवासी सास को क्या हुआ था?"

"तुम्हारी सास को?"

"हा, सास को। एक रात, इससे कुछ पहले का वक्त होगा, सब लोग खाना खाने बैठे मेरी स्वर्गवासी सास, मेरे स्वर्गवासी ससुर, हरवाहा, हरवाहे की घरवाली और कोई पाच बच्चे। मेरी सास ने बडे बर्तन मे से कुछ गलुश्की* ठडी करने के लिए चमचे से निकालकर तश्तरी मे रखी। काम के बाद सभी लोग बेहद भूखे थे और उनके ठडा होने का इतजार नही कर रहे थे। वे लकडी की लबी-लबी तीलियो

* दूध या शोरबे मे उबाली हुई लोई।—स०

से कोंचकर गलूश्की निकाल-निकालकर खाने लगे। अचानक एक आदमी आ टपका—भगवान जाने वह कहां से आया था—और मेज़ पर उन लोगों के साथ बैठकर खाने के लिए कहने लगा। कोई भला भूखे आदमी को मना भी कैसे करता? एक तीली उसे भी दे दी गयी। लेकिन यह नया मेहमान तो इतनी जल्दी-जल्दी गलूश्की पर हाथ साफ़ करने लगा जैसे गाय चारा खा रही हो। जब बाक़ी सब लोगों ने अपनी पहली गलूश्की खत्म करके दूसरी के लिए तश्तरी में तीली डाली तो पता चला कि वह तो गवर्नर साहब की कोठी के सामनेवाले मैदान की तरह सफ़ाचट हो चुकी थी। मेरी सास ने कुछ और निकालकर रख दीं, उन्होंने सोचा था कि मेहमान का तो पेट भर चुका होगा और वह कुछ दूसरों के लिए छोड़ देगा। मगर मजाल है जो एक टुकड़ा भी छोड़ा हो उसने। इस बार वह पहले से भी जल्दी सब ठूंस गया! और दूसरी तश्तरी भी साफ़ कर दी उसने! 'भगवान करे यही गलूश्की खाकर दम घुट जाये इसका!' मेरी सास ने मन ही मन उसे कोसा; और अगले ही क्षण उस मेहमान की सांस अटकने लगी और वह लुढ़क गया। सब लोग लपककर उसके पास पहुंचे लेकिन वह टें हो चुका था। गलूश्की से उसका दम घुट गया था।"

"अच्छा हुआ, वह था ही इस लायक़, लालची सुअर!" मुखिया ने कहा।

"तुम ऐसा सोचते होगे, मगर बात यहीं पर खत्म नहीं हो गयी: उसके बाद से मेरी सास को कभी चैन नहीं मिला। रात होते ही उस आदमी का भूत आता था। दांतों में गलूश्की दबाये वह मनहूस शैतान आकर चिमनी पर बैठ जाता था। दिन-भर बिल्कुल शांति रहती थी, और कहीं उसका नाम तक नहीं होता था; लेकिन जैसे ही अंधेरा होने लगता था, जब छत की ओर आंख उठाकर देखो वह पिशाच चिमनी पर टांगें लटकाये बैठा है।"

"दांतों में गलूश्की दबाये?"

"दांतों में गलूश्की दबाये।"

"बड़े अचरज की बात है, भैया! मैंने भी स्वर्गवासी महारानी के बारे में ऐसा ही एक क़िस्सा सुना था..."

इतना कहकर मुखिया बीच में ही रुक गया। खिड़की के बाहर बहुत-सी आवाज़ों का शोर और नाचनेवालों के पांवों की धमक सुनायी

"बहुत बढ़िया गाना है, चौधरी!" शराब बनानेवाले ने अपना सिर एक ओर झुकाकर फड़ककर कहा। उसने मुड़कर मुखिया की ओर देखा, जो ऐसी अपमान-भरी बातें सुनकर हक्का-बक्का रह गया था। "अव्वल दर्जे का! बस, इतनी बात बुरी है कि इन लोगों ने अपने मुखिया की चर्चा कुछ भले ढंग से नहीं की है..." एक बार फिर उसने अपने हाथ मेज़ पर रख लिये और आंखों में कोमलता का भाव लिये सुनने के लिए तन्मय होकर बैठ गया, क्योंकि खिड़की के बाहर से "एक बार फिर गाओ! एक बार फिर सुनाओ!" की आवाज़ें आ रही थीं। लेकिन थोड़ी-सी भी गहरी नज़र रखनेवाला आदमी फ़ौरन यह देख सकता था कि मुखिया अब अचरज की वजह से अपनी जगह जमा नहीं खड़ा था। पुरानी तजुर्बेकार बिल्ली नौसिखिये चूहे को इसी तरह अपनी पूंछ के पास कूदने-फांदने देती है; उसी बीच वह जल्दी-जल्दी यह तरकीब सोचती रहती है कि उसका भागकर बिल में घुस जाने का रास्ता कैसे रोका जाये। मुखिया की अच्छीवाली आंख अभी तक खिड़की पर जमी थी, लेकिन उसका हाथ, जिससे उसने पुलिसवाले को इशारा कर दिया था, दरवाज़े के लकड़ी के हैंडिल पर पहुंच चुका था। अचानक बाहर सड़क पर बहुत ज़ोर से शोर मचने लगा... शराब बनानेवाले ने, जिसके बहुत-से दूसरे गुणों में उत्सुकता का गुण भी शामिल था, जल्दी-जल्दी अपने पाइप में तंबाकू भरी और भागकर बाहर जा पहुंचा, लेकिन तब तक सारे छोकरे नौ दो ग्यारह हो चुके थे।

"तुम इतनी आसानी से मेरे पंजे से बचकर नहीं निकल सकते!" मुखिया एक नौजवान की, जिसने भेड़ की खाल का कोट उलटकर पहन रखा था, बांह पकड़कर खींचते हुए चिल्लाया। शराब बनानेवाला इस उपद्रवी की सूरत और नज़दीक से देखने के लिए लपककर वहां पहुंचा लेकिन लंबी-सी दाढ़ी और रंगा हुआ भयानक मुखौटा देखते ही वह सहमकर पीछे हट गया। "अरे, मुझसे बचकर नहीं जा सकते!" मुखिया अपने क़ैदी को खींचकर घर में लाते हुए दहाड़ा; क़ैदी भी चुपचाप उसके पीछे-पीछे ऐसे चला आया मानो अपने ही घर में जा रहा हो।

"कार्पो, ज़रा अंधेरी कोठरी का दरवाज़ा तो खोलना!" मुखिया ने पुलिसवाले से कहा। "इसे अंधेरी कोठरी में बंद कर देंगे! और

फिर चलकर मुशीजी को जगाते हैं, सारे पुलिसवालो को जमा करते हैं और इन सब लोगों को पकड़कर अभी यही मजा चखाते है।"

पुलिसवाले ने एक छोटा-सा ताला खड़खड़ाकर कोठरी खोल दी। उसी क्षण कैदी ने बडे कमरे मे अधेरे का फायदा उठाया और भरपूर जोर लगाकर अपने आपको छुड़ा लिया।

"भागकर जायेगा कहा ?" मुखिया उसका कालर पकड़कर गरजा।

"मुझे छोड दो! अरे, मैं हू!" किसी ने महीन ऊची आवाज मे दुहाई दी।

"नही, बच्चू, यह तरकीब काम नही आने की! तुम औरत या शैतान की तरह भी चिचियाओ तब भी मुझे चकमा नही दे सकते!" और यह कहकर उसने उसे इतने जोर से कोठरी मे ढकेल दिया कि अभागा कैदी कराहता हुआ फर्श पर जा गिरा। फिर मुखिया पुलिसवाले को साथ लेकर मुशीजी के घर की ओर चल पडा और शराब बनानेवाला रेल के इजन की तरह धुआ उड़ाता हुआ उनके पीछे हो लिया।

तीनो विचारों मे खोये हुए सिर झुकाये चले जा रहे थे कि अचानक जब वे एक अधेरे नुक्कड़ पर मुडे तो तीनो के सिर जोर से किसी सख्त चीज से टकराये और वे चिल्ला पडे। उनकी चीखो के जवाब मे उतने ही जोर की तीन और चीखें सुनायी दी। मुखिया ने अपनी अच्छीवाली आख सिकोड़कर देखा और मुशीजी को दो पुलिसवालो के साथ देखकर दंग रह गया।

"अरे, मैं तो आप ही के पास आ रहा था, मुशीजी।"

"मैं आपकी सेवा मे हाजिर हू, मुखियाजी।"

"बड़ा अजीब चक्कर चल रहा है, मुशीजी।"

"अधेर मचा हुआ है, मुखियाजी।"

"क्यो, क्या हुआ ?"

"छोकरो ने ऊधम मचा रखा है! गरोह बाधकर दुद मचाते फिरते हैं। मुखियाजी, आपकी शान मे तो ऐसी-ऐसी बाते कहते है कि उन्हे दोहराते भी मुझे शर्म आती है, कोई शराबी रूसी भी अपनी मनहूस जबान से वैसी बाते निकालने से पहले दो बार सोचेगा।" (दुबले-पतले सीकिया मुशीजी, जिन्होने एक ढीली-ढाली गाढे की पतलून और खमीर के रग की मटमैली वास्कट पहन रखी थी, ये बाते कहते समय अपनी गर्दन आगे-पीछे हिलाते जा रहे थे।) "मेरी

आंख अभी लगी ही थी कि इन कमवख़्त वदमाशों का शोर और उनके शर्मनाक गाने सुनकर मेरी आंख खुल गयी! मैं तो वाहर जाकर उनकी धज्जियां विखेर देता, लेकिन जितनी देर में मैं अपनी पतलून और वास्कट पहनूं-पहनूं उतनी देर में वे सव रफ़ूचक्कर हो गये। लेकिन उनका सरग़ना भागकर न जा सका। अव वह उस हवालात की हवा खा रहा है जहां क़ैदियों को वंद किया जाता है। मैं तो यह जानने के लिए वेचैन था कि देखूं तो वह पंछी है कौन, लेकिन उसने अपने चेहरे पर इतनी कालिख मल रखी है कि विल्कुल उस शैतान लोहार जैसा लगता है जो गुनहगारों के लिए जहन्नुम में कीलें वनाता होगा।"

"कपड़े क्या पहन रखे हैं उसने, मुंशीजी?"

"उसने भेड़ की खाल का काला कोट उलटकर पहन रखा है, मुखियाजी।"

"पक्की वात है, झूठ तो नहीं कर रहे हैं, मुंशीजी? अगर इसी वक़्त यही वदमाश मेरी झोपड़ी में वैठा हो तव आप क्या कहेंगे?"

"नहीं, मुखियाजी। आपने खुद, भगवान मुझे ऐसी वात कहने के लिए क्षमा करे, थोड़ी-सी झूठी वात कही है।"

"अच्छी वात है, लालटेन देना मुझे! चलकर देखते हैं!"

लालटेन लायी गयी, दरवाज़ा खोला गया और मुखिया अपनी साली को सामने खड़ा देखकर हक्का-वक्का रह गया।

"माफ़ करना, मैं एक वात पूछती हूं," उसने आगे वढ़कर मुखिया के पास आते हुए कहा, "तुम्हारा जो थोड़ा-वहुत दिमाग़ है वह भी तो नहीं ख़राव हो गया है? जव तुमने मुझे उस कोठरी में ढकेला था तव तुम्हारी उस कानी खोपड़ी में रत्ती-भर भी अक़्ल वची थी कि नहीं? वह तो कहो तुम्हारी क़िस्मत अच्छी थी कि मेरा सिर जाकर उस लोहे के कुंडे से नहीं टकराया। तुमने मुझे चिल्ला-चिल्लाकर यह कहते नहीं सुना था कि अरे, यह मैं हूं? तुमने किसी वावले रीछ की तरह मुझे अपने फ़ौलादी पंजों में जकड़कर अंदर ढकेल दिया! मैं तो मनाती हूं कि नरक की अंधेरी कोठरी में तुम्हें भी शैतान ऐसे ही ढकेल दे! .."

यह आखिरी वात उसने किसी निजी काम से वाहर जाते हुए दरवाज़े पर से की।

"हां, अव मेरी समझ में आया कि वह तुम थीं!" मुखिया ने

अपने होश-हवास ठीक होने पर कहा। "क्या कहते हैं, मुंशीजी, वह कमबख्त उत्पाती सचमुच बड़ा बदमाश था, मानते हैं न?"

"सचमुच, बड़ा बदमाश था, मुखियाजी।"

"उन बेवकूफों को कड़ी सजा देने का वक्त आ गया है, है न? उन लोगों को किसी ढंग के काम में लगाना चाहिये।"

"हां, बिल्कुल ठीक है, मुखियाजी।"

"उन बेवकूफों ने समझ रखा है अरे, यह हंगामा क्या हो रहा है? मुझे ऐसा लगा कि सड़क पर से मुझे अपनी साली के चीख़ने की आवाज़ सुनायी दी, उन लोगों ने समझ रखा है कि मैं उनके बराबर का हूं। वे समझते हैं कि मैं भी उन्हीं जैसा हूं, सीधा-सादा कज़ाक!" इतना कहकर मुखिया ने थोड़ा-सा अपना गला साफ़ किया और अपनी भवें सिकोड़कर घूरना शुरू किया जिससे साफ़ जाहिर था कि वह किसी गंभीर समस्या के बारे में बोलने की तैयारी कर रहा है। "सन् अट्ठारह सौ लानत है, ये कमबख्त तारीख़ें मेरी जबान से कभी ठीक से निकलती ही नहीं, ख़ैर, उस साल उस ज़माने के कमिश्नर* लेदाची को यह काम सौंपा गया कि वह सारे कज़ाकों में से एक ऐसा आदमी चुने जो सबसे बढ़कर तेज़ और समझदार हो। वाह!" – और इस "वाह!" का उच्चारण मुखिया ने अपनी उंगली ऊपर उठाकर किया, "जो सबसे बढ़कर तेज़ और समझदार हो! महारानी के साथ रास्ता दिखानेवाले की हैसियत से जाने के लिए।"

"हां, हां, मुखियाजी। यह बात कौन नहीं जानता। हम सभी जानते हैं कि महारानी की कृपादृष्टि के लिए आपको कैसे चुना गया था। लेकिन इस वक्त तो आपको मानना पड़ेगा कि आपकी बात ठीक नहीं थी आपने थोड़ा-सा झूठ बोला था न, जब आपने कहा था कि भेड़ की खाल का उल्टा कोट पहने हुए इस बदमाश को आपने पकड़ा था?"

"जहां तक उल्टा कोट पहननेवाले उस बदमाश का सवाल है, उसके साथ तो हमें ऐसा सलूक करना चाहिये कि दूसरों के लिए नसीहत रहे ज़ंजीरों में जकड़कर उसकी अच्छी तरह पिटाई की जानी चाहिये। उन्हें भी पता चले कि यहां किसका कोड़ा चलता है! ये लोग भूल

---

* कर वसूल करनेवाला सरकारी अधिकारी।

न जायें कि मुखिया को खुद ज़ार वादशाह तैनात करता है। उसके बाद हम दूसरे वदमाशों से निवट लेंगे: मुझे वह बात भूली नहीं है जव इन कमबख़्त वदमाशों ने मेरे सब्ज़ियों के खेत में सुअर हांक दिये थे और वे मेरी सारी वंदगोभियां और खीरे चर गये थे; मैं वह बात भी नहीं भूला हूं जब इन शैतान के बच्चों ने मेरे अनाज की दांवनी करने से इंकार कर दिया था; न वह बात भूला हूं... लेकिन भाड़ में जायें ये सब लोग, इस वक़्त तो मुझे यह पता करना है कि वह उल्टे कोटवाला चालवाज़ कौन है।"

"सच कहता हूं, बड़ा चलता-पुर्ज़ा पंछी है वह!" शराव वनानेवाले ने कहा, जो इस पूरी बातचीत के दौरान अपने गालों में घिरे हुए क़िले की तोप की तरह धुआं भरता रहा था, और अब उसने छोटे-से पाइप पर अपने होंठों की पकड़ ढीली करके धुएं का एक पूरा फ़व्वारा छोड़ दिया था। "बुरा ख़्याल नहीं है, अगर इस तरह के आदमी को शराव की भट्ठी में काम पर लगा दिया जाये, और उससे भी अच्छा तो यह होगा कि सड़क के रोशनी के खंभे के वजाय उसे वलूत के पेड़ से लटका दिया जाये।"

शराव बनानेवाले को अपना यह चुटकुला सरासर बेवक़ूफ़ी की बात नहीं लगा, और दूसरों की दाद पाने का इंतज़ार किये बिना उसने ख़ुद अपनी पीठ ठोंकने के लिए जोर का ठहाका लगाया।

इसी बीच वे लोग एक छोटी-सी झोपड़ी के पास पहुंच चुके थे, जो लगभग बिल्कुल ढह चुकी थी; हमारे यात्रियों की उत्सुकता बहुत बढ़ गयी थी। वे दरवाज़े पर भीड़ लगाकर खड़े हो गये। मुंशीजी ने चाभी निकालकर उसे ताले में लगाकर कई बार झटका दिया, लेकिन चाभी उसके संदूक़ की निकली। उन सबकी अधीरता बढ़ती जा रही थी। जेब में हाथ डालकर मुंशीजी ने टटोलना और कोसना शुरू किया, लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ। "यह रही!" उसने आख़िरकार झुककर अपनी पतलून की थैले जैसी जेब की तली में से चाभी निकालते हुए कहा। यह बात सुनकर हमारे सूरमाओं के दिल; एक तरह से, आपस में मिलकर एक ही दिल बन गये, और यह बड़ा-सा दिल इतने ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा कि उसकी बेसुरी धड़कन ताले की खड़खड़ाहट में भी नहीं दब सकी। दरवाज़ा खुला और... मुखिया का रंग बिल्कुल सफ़ेद पड़ गया; शराव बनानेवाले को अचानक ठंडी हवा के तेज़

झोके की मार का आभास हुआ और उसे ऐसा लगा कि उसके बाल उडकर आसमान पर पहुच जाना चाहते है। मुशीजी के चेहरे पर आतक का भाव छा गया, पुलिसवाले जमीन पर गडे रह गये और उनके मुह एकसाथ ऐसे खुले कि फिर उन्होंने बद होने का नाम न लिया· उनके सामने मुखिया की साली खडी थी।

उसे भी उन लोगो से कुछ कम आश्चर्य नही हो रहा था, लेकिन उसके होश-हवास कुछ ठिकाने आये, और उसने उनकी तरफ कदम बढाने की तैयारी की।

"रुक जाओ!" मुखिया बदहवास होकर चिल्लाया और उसने धड से दरवाजा उसके मुह पर बद कर दिया। "भाइयो! यह तो शैतान है!" वह कहता रहा। "आग लाओ! जल्दी से आग लाओ! झोपडी सरकारी सपत्ति है तो हुआ करे, मुझे इसकी परवाह नही! फूक दो इसे, जलाकर राख कर दो, ताकि इस धरती पर उस शैतान की बच्ची का नाम-निशान बाकी न रह जाये!"

मुखिया की साली दरवाजे के पीछे से यह भयानक फैसला सुनकर दहशत के मारे चीख पडी।

"क्या कह रहे हो, भाइयो!" शराब बनानेवाला बीच मे बोला। "हे दयानिधान! तुम लोगो के बाल न जाने कब के पक गये और अभी तक रत्ती-भर अकल नही आयी मामूली आग से कही चुडैल जलती है! चुडैलो और भूतो को तो बस पाइप की आग जला सकती है। रुको, मैं अभी सब ठीक किये देता हू!"

यह कहकर उसने अपने पाइप मे से कुछ दहकती हुई चिगारिया मुट्ठी-भर पयाल पर उलटकर उसे खूब फूका। तब तक मुखिया की साली बिल्कुल निराश हो चुकी थी, और वह उनकी मिन्नत-खुशामद करने लगी।

"भाइयो, जरा ठहरो! हो सकता है कि हम जो कुछ करने जा रहे है वह पाप हो, कौन जाने वह शैतान हो ही नही?" मुशीजी ने कहा। "अगर वह, जो कोई भी वहा अदर है, सलीब का निशान बनाने को तैयार हो जाये तो वह इस बात का पक्का सबूत होगा कि वह शैतान नही है।"

दूसरे लोगो को भी यह सुझाव पसद आया।

"मुझसे दूर हट जा!" मुशी दरवाजे की दरार के पास मुह

करके अपनी बात कहता रहा। "अगर तू जहां है वहीं रहेगा तो हम दरवाज़ा खोल देंगे।"

उन लोगों ने दरवाज़ा खोल दिया।

"सलीब का निशान बना!" मुखिया ने जल्दी से अपने पीछे नज़र डालते हुए कहा, मानो जरूरत पड़ने पर जल्दी से भाग जाने के लिए कोई सुरक्षित जगह चुन रहा हो।

मुखिया की साली ने अपने सीने पर सलीब का निशान बनाया।

"शैतान, मेरा ठेंगा! यह तो मुखियाजी की साली ही है!"

"तुझे इस झोपड़ी में कौन-सा भूत-प्रेत खींच लाया?"

मुखिया की साली ने सिसकियां ले-लेकर बयान किया कि किस तरह लड़कों ने उसे सड़क पर पकड़ लिया था और, उसके लाख विरोध करने पर भी उसे खिड़की में से अंदर ढकेलकर उसके पल्ले कीलों से जड़ दिये थे। मुंशीजी ने जाकर देखा: सचमुच पल्ले क़ब्ज़ों पर से उखाड़ लिये गये थे और उन्हें ऊपरवाले चौखटे पर एक तख़्ता लगाकर कीलों से जड़ दिया गया था।

"और तू, काना शैतान कहीं का!" वह आगे बढ़कर मुखिया के पास आकर जोर से चीखी; मुखिया सहमकर पीछे हट गया और अपनी अच्छीवाली आंख से उसे बड़े ध्यान से देखता रहा। "मैं तेरी सारी चाल जानती हूं; तू मुझे ज़िंदा जला देना चाहता था। तू यह मौक़ा देखते ही लपक पड़ा ताकि तुझे गांव की छोकरियों का पीछा करने की खुली छूट मिल जाये, ताकि कोई यह देखनेवाला न रह जाये कि नाना कैसे बुड्ढू बन रहे हैं। तू समझता है कि मैं जानती नहीं कि आज शाम को हान्ना पर क्या डोरे डाले जा रहे थे? अरे, मुझे रत्ती-रत्ती सब मालूम है। तेरी गोबर-भरी खोपड़ी में जितनी अक़्ल है उससे कहीं ज़्यादा अक़्ल चाहिये मुझे बेवक़ूफ़ बनाने के लिए। मैंने बहुत बर्दाश्त किया है, लेकिन किसी दिन मैं तुझे इसका मज़ा चखाऊंगी..."

यह कहकर उसने मुखिया को धमकाते हुए मुक्का दिखाया और उसे वहीं भौचक्का खड़ा छोड़कर पांव पटकती हुई चली गयी। "नहीं, इसमें कोई शक नहीं है कि इसमें शैतान का गंदा हाथ था," मुखिया ने अपना सिर खुजाकर सोचा।

"पकड़ लिया!" पुलिसवालों ने उसी समय भागकर आते हुए कहा।

"किसे पकड़ लिया?" मुखिया ने पूछा।

"उसी उल्टे कोटवाले शैतान को।"

"जरा लाना तो इधर, मैं अभी उसकी खबर लेता हूं!" मुखिया ने कैदी की बाहों को पकड़ते हुए कहा। "तुम लोगों का दिमाग तो खराब नहीं हो गया है यह तो वह शराबी कलेनिक है!"

"क्या मुसीबत है?! लेकिन हमें पक्का मालूम है कि हमने उसे पकड़ा था, मुखियाजी!" पुलिसवालों ने जवाब दिया। "उन कमबख्त बदमाशों ने हम लोगों को सड़क पर घेर लिया था, वे नाच रहे थे, हमें धक्के दे रहे थे, जीभ निकालकर हमें चिढ़ा रहे थे, हमारी बाहें खींच रहे थे और उसके बजाय इस कौए को हमने कैसे पकड़ लिया, भगवान ही जाने!"

"अपने अधिकार के बल पर और सारी जनता के अधिकार के बल पर मैं हुक्म देता हूं," मुखिया ने एलान किया, "कि इस अपराधी को फौरन पकड़ा जाये, और जो लोग भी सड़क पर घूमते हुए पाये जायें उनके साथ भी यही सलूक किया जाये और उन्हें सजा देने के लिए मेरे सामने हाजिर किया जाये! "

"अरे नहीं, ऐसा न कीजिये मुखियाजी!" कई पुलिसवाले मुखिया के सामने बहुत झुककर गिड़गिड़ाये। "हम लोगों पर दया कीजिये आपने उन लोगों के मनहूस चेहरे देखे होते भगवान जानता है, जबसे हम पैदा हुए हैं, या जबसे हमारा नामकरण हुआ है, तबसे हममें से किसीने ऐसे डरावने थोबड़े नहीं देखे हैं। उनको देखते ही आप तो ऐसा डर जाते, मुखियाजी, कि फिर कोई बुढ़िया भी मोम का पुतला बनाकर आपका डर न निकाल पाती।"

"अगर तुमने ज्यादा चू-चपड़ की तो अभी मैं तुम्हारा मोम का पुतला बना दूंगा! कमबख्तो जैसा तुमसे कहा जाता है वैसा करो! मुझे तो लगता है कि उन लोगों के साथ तुम्हारी मिलीभगत है! क्या तुम लोग बगावत कर रहे हो? यह है क्या? आखिर बात क्या है? तुम लोग दंगा मचाना चाहते हो! तुम लोग मैं कमिश्नर साहब से शिकायत कर दूंगा! अभी इसी वक्त! सुन लिया? फौरन, इसी दम! अब भागो यहां से, बिल्कुल सरपट! और मुझे तुम लोगों की सूरत न दिखायी दे इतना ख्याल रखना कि तुम "

वे सब वहां से दौड़ते हुए चले गये।

५

डूबी लड़की

जिस आदमी ने यह सारा हंगामा खड़ा किया था वह दुनिया की सारी चिंताओं से मुक्त, अपने पीछे होनेवाली सारी चीख़-पुकार से बेख़बर, उस पुराने मकान और तालाव की ओर चला जा रहा था। मुझे आप लोगों को यह वताने की तो शायद ज़रूरत नहीं कि यह आदमी कोई और नहीं अपना लेव्को ही था। उसके भेड़ की खाल के काले कोट के वटन खुले हुए थे। वह अपना हैट हाथ में लिये हुए था। उसके चेहरे पर पसीना वह रहा था। चांद की ओर अपना भव्य गंभीर चेहरा किये मेपल का जंगल उसके सामने फैला हुआ था। शांत तालाव की ओर से ताज़ा हवा के झोंके हमारे थके हुए राही की ओर आ रहे थे; उनका आनंद लेने के लिए वह थोड़ी देर को तालाव के किनारे की ठंडी-ठंडी घास पर आराम करने के लिए लेट गया। चारों ओर निस्तब्धता छायी हुई थी, जो वीच-वीच में वस वुलवुलों की दूर जंगल से आती हुई सुरीली आवाज़ से भंग हो जाती थी। वड़ी तेज़ी से उस पर सो जाने की प्रवल इच्छा छा गयी; उसकी पलकें झपकने लगीं, उसके थके हुए अंग शिथिल पड़ गये, उसका सिर एक ओर को झुक गया... "नहीं, मैं यहां नहीं सो सकता!" उसने उठकर खड़े होते हुए आंखें मलकर कहा। उसने चारों ओर देखा: रात की छटा और भी निखर आयी थी। चंद्रमा के प्रकाश में एक विचित्र, मंत्रमुग्ध कर देनेवाली चमक पैदा हो गयी थी। उसने ऐसा नयनाभि-राम दृश्य पहले कभी नहीं देखा था। आस-पास हर जगह रुपहला कुहरा छा गया था। हवा में सेव के बौर और रात के फूलों की सुगंध वसी हुई थी। आश्चर्यचकित होकर उसने तालाव के शांत जल को देखा। पुरानी हवेली का उल्टा प्रतिविंव पानी में दिखायी दे रहा था, उसमें नयी चमक-दमक और भव्यता पैदा हो गयी थी। उसके अंधेरे दरवाज़ों की जगह चमचमाते हुए कांचवाली खिड़कियां और दरवाज़े लग गये थे। उनके निर्मल शीशों में सोने की चमक थी। फिर उसे लगा कि खिड़की खुल रही हैं। वह दम साधे हुए था, तनिक भी हिलने-डुलने की उसकी हिम्मत नहीं हो रही थी और वह अपनी नज़रें तालाव पर जमाये था। उसे ऐसा लगा कि तालाव उसे अपनी गहराई की ओर

खींचे लिये जा रहा है। वह एकटक देखता रहा : पहले खिड़की में एक गोरी-गोरी कुहनी दिखायी दी, फिर गहरे सुनहरे रंग के बालों की लहरों के बीच झमकता हुआ चमकदार आंखोंवाला एक नौजवान चेहरा आकर कुहनी पर टिक गया। वह टकटकी बांधे देख रहा था; उस सुंदरी ने अपने सिर को हल्का-सा झटका दिया, हाथ हिलाया और हंस दी... उसका दिल धक से रह गया पानी में हिलोरें उठीं और खिड़की फिर बंद हो गयी। वह धीरे-धीरे कदम बढ़ाता हुआ तालाब के पास से चला आया और नज़रें उठाकर उसने हवेली की ओर देखा अंधेरे दरवाज़े खुले हुए थे और खिड़कियों के शीशे चांदनी में चमक रहे थे। "इससे यही पता चलता है कि लोग कैसी बकवास करते हैं," उसने सोचा। "घर बिल्कुल नया है; रंग-रोगन ऐसा ताज़ा है जैसे आज ही लगाया गया हो। और इसमें कोई रहता भी है।" वह चुपचाप घर के और पास चला गया, लेकिन घर में कोई आवाज़ सुनायी नहीं दी। उसके चारों ओर बुल-बुलों के मधुर गीतों की तेज़ गूंज पूरे वैभव से सुनायी दे रही थी, और आखिरकार जब इन गीतों ने मद पड़ते-पड़ते बिल्कुल दम तोड़ दिया मानो स्वयं उनकी भरपूर मिठास ने उनका गला घोंट दिया हो, तो उनकी जगह झींगुरों की रीं-रीं और तालाब के झिलमिलाते हुए पानी में अपनी चिकनी चोंच डुबोते हुए दलदली पक्षियों के कर्कश स्वर ने ले ली। लेव्को के हृदय में मधुर निस्तब्धता और स्वतंत्रता की भावना छा गयी। अपने बंदूरे के तार छेड़ते हुए उसने गाना शुरू किया

दूर गगन के चांद रुपहले
झिलमिल तारे, जगमग तारे,
धरती पर तुम चमको आकर!
उस कुटिया पर ज्योति बिखेरो,
बरसाओ उस सुंदर मुखड़े पर
आकर अपनी कांति मनोहर!

खिड़की धीरे से खुली और वही सुंदर मुखड़ा, जिसका प्रतिबिंब उसने तालाब में देखा था, बाहर झांककर उसका गीत सुनने लगा। उसकी लंबी-लंबी पलकें अधझुकी थीं। उसका उदास चेहरा चांद की रोशनी की तरह सफ़ेद था, लेकिन कैसा सुंदर-सलोना मुखड़ा था!

वह हंसी... लेव्को कांप उठा।

"बांके कज़ाक, मुझे एक गीत सुना दो ना!" उसने अपना सिर एक ओर को ढलकाकर और अपनी लंबी-लंबी पलकें झुकाकर धीरे से पुकारकर कहा।

"कौन-सा गीत सुनोगी, सुंदर बाला?"

उसके उदास चेहरे पर आंसू ढलकने लगे।

"मेरे मीत," वह बोली, उसके स्वर में एक ऐसा भाव था जिसने उसके हृदय को छू लिया। "मेरे मीत, मेरी सौतेली मां को कहीं से खोज लाओ! तुम जो चाहोगे वह मैं करूंगी। मैं तुम्हें इनाम दूंगी। मैं तुम्हें बहुत अच्छा, बहुत सुंदर इनाम दूंगी। मेरे पास कढ़े हुए रेशमी कफ़ों का जोड़ा है, मेरे पास मूंगे के दाने हैं और हार हैं। मैं तुम्हें मोती टंका हुआ कमरबंद दूंगी। मेरे पास ढेरों सोना है... मेरे मीत, मेरी सौतेली मां को ढूंढ लाओ! वह भयानक चुड़ैल है: उसने मुझे दुनिया में कभी चैन नहीं लेने दिया। वह मुझे बहुत सताती थी, मुझसे बांदियों की तरह काम लेती थी। मेरी सूरत देखो: उसने अपने मनहूस जादू के असर से मेरे गालों का सारा रंग निचोड़ लिया। मेरी गोरी-गोरी गर्दन को देखो: यह देखो—ये कभी नहीं धुल सकते। ये कभी नही धुल सकते! उसके फ़ौलादी पंजों के ये नीले-नीले निशान किसी चीज से नहीं धुल सकते। मेरी इन गोरी-गोरी टांगों को देखो: ये चलते-चलते थककर चूर हो गयी हैं; मुलायम क़ालीनों पर नहीं तपती हुई रेत पर, गीली ज़मीन पर, वे नुकीले कांटों पर चलती रही हैं; मेरी आंखों को देखो: वे आंसुओं से धुंधला गयी हैं... उसे खोज लाओ, मेरे मीत, मेरी सौतेली मां को कहीं से खोजकर मुझे ला दो!.."

यह कहते-कहते उसकी आवाज़ अचानक ऊंची हुई, फिर वह चुप हो गयी। उसके पीले गालों पर आंसुओं की नदियां बह चलीं। नौजवान का सीना दया और करुणा की पीड़ाजनक भावना के बोझ से दबने लगा।

"मैं तुम्हारे लिए कुछ भी करने को तैयार हूं, ऐ सुंदर बाला!" उसने उत्कंठित स्वर में कहा, "लेकिन मुझे यह तो बताओ कि मैं उसका पता कहां और कैसे लगाऊं?"

"देखो! वह देखो!" वह जल्दी से बोली, "यह रही वह!

वह तालाब के किनारे मेरी सहेलियो के साथ घूमर नाच नाच रही है और चादनी मे नहा रही है। लेकिन वह बहुत दुष्ट और चालाक है। उसने एक डूबी हुई औरत का भेस बना लिया है ; लेकिन मैं जानती हू, मैं महसूस करती हू कि वह यही है। उसकी वजह से मैं बेचैन रहती हू और मेरा दम घुटता रहता है। उसकी वजह से मैं तेज़ी से और *आज़ादी के साथ मछली की तरह तैर भी नही सकती। मैं डूब जाती हू और भारी चाभी की तरह तली मे पहुच जाती हू। मेरी ख़ातिर* उसे खोजकर ला दो, मेरे मीत।"

लेव्को ने तालाब के किनारे की ओर नज़रे घुमायी रुपहले धुधलके मे उसे कुमुदनी जैसे सफेद ढीले वस्त्र पहने कुछ परछाइया-सी दिखायी दी, उनके गले मे सोने के हार, सोने के सिक्को की हमेले चमक रही थीं ; लेकिन खुद उनका रग पीला था, उनके शरीर, ऐसा लगता था, मानो झीने-झीने बादलो से गढकर बनाये गये हो और रुपहली चादनी की चमक उनके पार साफ दिखायी देती थी। नाच का घेरा उसके पास आता जा रहा था। उसे उनकी आवाज़े सुनायी दे रही थी।

"आओ, कौआ-डुबकी खेले, आओ, कौआ-डुबकी खेले।" वे सब शोर मचाकर कहने लगी, उनकी आवाज़े ऐसी लग रही थीं जैसे रात के सन्नाटे मे हवा के झोके अपनी नर्म-नर्म सासो से तालाब के किनारे सरकडे की झाडियो को छेडते हुए गुज़र रहे हो।

"मगर कौआ कौन बनेगा?"

उन्होने हत्थी कटायी और एक लडकी निकल आयी। लेव्को ने उसे ध्यान से देखा। उसका चेहरा, उसका पहनावा – उसकी हर चीज बिल्कुल दूसरी लडकियो जैसी थी। हालाकि उसे साफ दिखायी दे रहा था कि उसे कौआ बनना पसद नही था। नाचती हुई लडकियो का झुरमुट थिरकते-थिरकते पात बनाकर कौए के आगे तेज़ी से भागा और कौआ तेज़ी से अपने शिकार की ओर झपटा।

"नही, मैं कौआ नही बनूगी।" आखिरकार उस लडकी ने थककर हापते हुए कहा। "मुझे मा-मुर्गी पर इतना तरस आता है कि मैं उसके बच्चो पर झपट्टा नही मार सकती।"

"तुम चुडैल नही हो सकती।" लेव्को ने सोचा।

"फिर कौआ कौन बनेगा?"

लड़कियां एक बार फिर हत्थी कटाने को तैयार हुईं।

"मैं बनूंगी कौआ!" उनमें से एक लड़की ने पुकारकर कहा।

लेव्को ने ध्यान से उसकी सूरत देखी। वह बिना झिझके तेजी से भागती हुई लड़कियों की पांत पर झपटी और अपने शिकार को घेरने के लिए तीर की तरह तेजी से इधर-उधर भागने लगी। अचानक लेव्को ने देखा कि उसका शरीर दूसरों की तरह चांदनी में चमक नहीं रहा था: उसके शरीर के अंदर एक काली गुठली जैसी दिखायी दे रही थी। हवा में एक चीख गूजी: कौआ एक लड़की पर झपटा और उसने उसे पकड़ लिया। लेव्को को ऐसा लगा कि उसने उसके हाथों से नुकीले पंजे जैसे बाहर को निकले हुए देखे और उसके चेहरे पर दुष्टता-भरी खुशी चमक उठी।

"यही है चुड़ैल!" वह उसकी ओर उंगली से इशारा करते हुए घर की ओर मुड़कर चिल्लाया।

नौजवान जल-परी हंस पड़ी और लड़कियां विजयोल्लास से चिल्लाती हुई उस कलमुंहे कौए को खींचकर ले चलीं।

"मैं तुम्हें क्या इनाम दूं, मेरे मीत? मैं जानती हूं कि तुम्हें सोना नहीं चाहिये, तुम्हें अपनी हान्ना से प्यार है, लेकिन तुम्हारा निर्दयी बाप तुम्हें उससे ब्याह नहीं करने देता। वह अब तुम्हें नहीं रोकेगा: यह पर्चा ले जाकर उसे देना..."

उसने अपना गोरा-गोरा हाथ बढ़ाया, उसका चेहरा जादुई आभा से चमक उठा... उत्कंठित उल्लास से कांपते हुए लेव्को का दिल जोर से धड़कने लगा, उसने लपककर पर्चा ले लिया और... जाग पड़ा।

६

जब आंख खुली

"क्या यह सचमुच सपना था?" लेव्को मन ही मन सोचने लगा। "ऐसा सच्चा, बिल्कुल जीता-जागता!.. कैसी अजीब बात है, कैसी अजीब बात है!.." उसने चारों ओर नज़र डालकर कई बार दोहराया।

चांद को देखने से, जो अब सीधे उसके सिर के ऊपर आकर ठहर

गया था, पता चलता था कि आधी रात का समय हो गया है; चारो ओर निस्तब्धता का राज था, तालाब की ओर से ठंडी हवा चल रही थी, ऊपर वह टूटा-फूटा पुराना घर अपने तख्ते जड़े हुए किवाड़ों के पीछे उदास भाव से खड़ा था, उस पर जमी हुई काई और हर जगह उगे हुए घास-फूस से पता चल रहा था कि उसमें बसनेवाले आखिरी इसान उसे बहुत पहले छोड़कर चले गये थे। उसने अपनी उगलिया फैलायी, जिन्हे उसने सोने समय भीच रखा था और अपने हाथ में पर्चे का स्पर्श अनुभव करके वह आश्चर्य से चिल्ला पड़ा। "कितना अच्छा होता अगर मैं इसे पढ पाता!" उसने पर्चे को हाथ में उलट-पुलटकर देखते हुए भुभलाकर सोचा। उसी क्षण उसे अपने पीछे कुछ आवाजे सुनायी दी।

"डरो नही, आगे बढकर उसे पकड लो! इतना डर किसलिए रहे हो! हम दस आदमी हैं! मैं शर्त लगाता हू कि वह इसान ही है, शैतान तो नही!" लेव्को ने मुखिया को चिल्लाकर अपने साथियो से कहते हुए सुना, और इसके फौरन बाद लेव्को ने महसूस किया कि बहुत-से हाथो ने उसे कसकर पकड रखा है, जिनमे से कई हाथ डर के मारे बुरी तरह काप रहे हैं। "आओ, यार, अब अपना यह बदसूरत मुखौटा उतार दो! बस, आज भर को बहुत शरारत कर चुके!" मुखिया ने उसका कालर पकड़कर आदेश दिया। इसके बाद के शब्द उसके होठों पर जमकर रह गये, उसकी अच्छीवाली आख अपने कोटर में से बाहर निकली पड रही थी। "बेटा लेव्को!" उसने आश्चर्य से पीछे हटते हुए कहा और उसके हाथ शिथिल होकर नीचे गिर पड़े। "अच्छा, तू था, कुत्ते के पिल्ले! लानत है मुझ पर, तू शैतान की औलाद! और मैं सोच रहा था कि कौन बदमाश है, कौन जहन्नुमी कीडा यह सारी शरारत कर रहा है! अब पता चला कि तू था, तेरे बाप के गले मे कच्ची खिचडी फसकर उसका दम घुट जाये, तू सडक पर यह सारा ऊधम मचा रहा था, और वे गीत गा रहा था? अच्छा, अच्छी बात है, अच्छी बात है, लेव्को! तो अब क्या चाहता है तू? क्या तू चाहता है कि तेरी खाल खिचवा ली जाये? बाध दो इसे!"

"ठहरो, पापा! मुझसे यह पर्चा तुम्हे देने को कहा गया है," लेव्को बोला।

"मेरे पास कोई पर्चा-वर्चा देखने का वक़्त नहीं है, छोकरे! बांध दो इसे!"

"ठहरिये, मुखियाजी!" मुंशीजी ने पर्चा खोलते हुए कहा, "यह तो कमिश्नर साहब के हाथ का लिखा हुआ है!"

"कमिश्नर साहब?"

"कमिश्नर साहब?" पुलिसवालों ने यंत्रवत् दोहराया।

"कमिश्नर साहब? ताज्जुब है! मुझे तो यक़ीन नहीं आता!" लेव्को ने मन ही मन सोचा।

"पढ़ो, पढ़ के सुनाओ!" मुखिया ने कहा, "कमिश्नर साहब ने क्या लिखा है?"

"सुनें तो कमिश्नर साहब ने क्या लिखा है!" शराब बनानेवाले ने अपना पाइप दांतों से दबाकर दियासलाई जलाते हुए कहा।

मुंशीजी ने गला साफ़ करके पढ़ना शुरू किया :

"'फ़रमान मुखिया येवतुख़ माकोगोनेंको के नाम। बूढ़े गधे, हमें मालूम हुआ है कि पुराना बक़ाया जमा करने और गांव का इंतज़ाम ठीक से चलाने के बजाय तुम्हारा दिमाग़ बिल्कुल पिलपिला हो गया है और तुम्हारी हरकतों से सारा गांव तंग आ चुका है...'"

"मुझे कुछ सुनायी नहीं दे रहा है!" मुखिया ने बीच में टोककर कहा। "भगवान क़सम, कुछ भी नहीं!"

मुंशीजी ने फिर से पढ़ना शुरू किया :

"'फ़रमान मुखिया येवतुख़ माकोगोनेंको के नाम। बूढ़े गधे, हमें मालूम हुआ है कि...'"

"बस, बस, रहने दो! दोबारा मत पढ़ो!" मुखिया ने चिल्लाकर कहा, "मैंने सुना भले ही न हो लेकिन मैं जानता हूं कि इसका उस मामले से कोई संबंध नहीं है जिसे हम इस वक़्त निबटा रहे हैं। आगे पढ़ो!"

"'लिहाज़ा मैं तुम्हें हुक्म देता हूं कि फ़ौरन अपने बेटे लेव्को माकोगोनेंको की शादी तुम अपने ही गांव की कज़ाक लड़की हान्ना पेत्रिचेंकोवा के साथ कर दो, और इसके अलावा बड़ी सड़क के पुलों की मरम्मत भी करवा दो और मेरी इजाज़त के बिना मुक़ामी मिल्कियत के घोड़े तहसीलदारों को न दिया करो, चाहे वे सीधे सरकारी दफ़्तर से ही सफ़र करके क्यों न आ रहे हों। अगर अपने अगले दौरे के वक़्त

मुझे मालूम हुआ कि मेरे इन हुक्मों की तामील नहीं की गयी है तो मैं सीधे तुम्हें ही जिम्मेदार ठहराऊंगा। कमिश्नर लेफ्टिनेंट कोज्मा देर्काच-द्रिग्मानोव्स्की, रिटायर।'"

"तो, यह बात है!" मुखिया ने कहा, उसका मुह खुला का खुला रह गया। "सुन लिया? मुखिया हर बात के लिए जवाबदेह होता है, इसलिए जैसा मैं कहू वैसा ही करो! मेरे हर हुक्म की तामील होनी चाहिये! वरना मैं तुम्हारे साथ ऐसा सलूक करूगा कि याद करोगे और जहा तक तुम्हारा सवाल है," उसने लेव्को की ओर मुड़कर अपनी बात जारी रखी, "कमिश्नर साहब की हिदायत के मुताबिक़, हालाकि कमबख्त मेरी समझ में नही आता कि उन्हें इस बात का पता कैसे चला — मैं तुम्हारी शादी तो कर दूगा, लेकिन पहले तुम्हें मेरे कोड़े का मज़ा चखना पड़ेगा! उस कोड़े का जो देव-प्रतिमाओं के स्थान के पास मेरी दीवार पर टगा है। मैं कल उसे आज़माऊगा यह पर्चा तुम्हें कहा मिला?"

उसके भाग्य ने अचानक जो आश्चर्यजनक पलटा खाया था उसके बावजूद लेव्को में इतनी हाज़िरदिमागी बाकी थी कि उसने बिल्कुल ही दूसरा जवाब गढ़ लिया और पर्चा उसके हाथ लगने की सच्ची कहानी पर परदा डाले रहा।

"कल शाम को मैं शहर गया था," वह बोला, "और वहा जब कमिश्नर साहब अपनी बग्घी पर से उतर रहे थे तो उनसे मेरी मुलाकात हो गयी थी। जब उन्होंने सुना कि मैं अपने इस गाव का हू, तो उन्होंने मुझे यह पर्चा दिया और, बापू, तुम्हें यह भी बता देने के लिए मुझसे कहा कि वापसी पर वह हमारे यहा आयेंगे और खाना खायेंगे।"

"यह कहा था उन्होंने?"

"बिल्कुल कहा था!"

"सुन लिया?" मुखिया ने सीना फुलाकर अपने साथियो की ओर मुड़ते हुए कहा, "कमिश्नर साहब खुद हम जैसे नाचीज लोगो मे से एक के यहा, मतलब यह कि मेरे यहा, खाना खाने आयेंगे!" इतना कहकर मुखिया ने एक उगली और अपना सिर एक ओर को झुकाया मानो कुछ सुन रहा हो। "कमिश्नर साहब, सुन लिया, कमिश्नर साहब मेरे यहा खाना खाने आ रहे हैं! क्या समझते हैं,

मुंशीजी, और तुम भी, भैया, यह कोई मामूली इज़्ज़त की बात नहीं है! या है, बोलो?"

"जहां तक मुझे याद पड़ता है," मुंशीजी ने सहमति प्रकट करते हुए कहा, "आपसे पहले किसी मुखिया ने कमिश्नर साहब को अपने यहां खाना नहीं खिलाया है।"

"मुखिया मुखिया में फ़र्क़ होता है!" मुखिया ने आत्म-संतोष के भाव से एलान किया। उसने मुंह टेढ़ा करके भर्राये हुए दमदार ठहाके की आवाज़ निकाली, जैसे दूर कहीं बादल गरज रहे हों। "क्या राय है आपकी, मुंशीजी, क्या मैं अपने नामी-गिरामी मेहमान की ख़ातिर यह फ़रमान जारी कर दूं कि हर परिवार को देग के लिए एक मुर्ग़ा, एक थान कपड़ा, और शायद कुछ और भी देना पड़ेगा... क्यों?"

"ज़रूर, मुखियाजी!"

"तो शादी कब होगी, बापू?" लेव्को ने पूछा।

"शादी? मैं बताऊं कि मैं तुम्हारी शादी के सिलसिले में क्या करनेवाला हूं!.. तो जैसा कि हमारे नामी-गिरामी मेहमान ने फ़रमाइश की है... हम लोग कल ही पुरोहित से कहकर तुम्हारा बंदोबस्त करवाये देते हैं। जहन्नुम में जाओ तुम! कमिश्नर साहब भी देख लें कि हम अपना फ़र्ज़ कैसे निभाते हैं! अच्छा, लोगो, अब सोने का वक़्त हो गया! जाओ तुम लोग!.. आज जो कुछ हुआ उससे मुझे वह ज़माना याद आता है जब मैं..." यह बात कहते हुए मुखिया ने अपने सुननेवालों को हमेशा की तरह बड़े रोब से भवें सिकोड़कर देखा।

"चल पड़ा मुखिया का चर्ख़ा कि वह महारानी की सवारी के साथ कैसे गया था!" लेव्को ने कहा और बहुत ख़ुश होकर तेज़ क़दमों से चेरी के छोटे-छोटे पेड़ोंवाले घर की ओर चल पड़ा। "मेरी नेक सुंदरी, भगवान तुम्हें हमेशा हर चिंता से दूर रखे!" उसने मन ही मन सोचा। "अगले जनम में भी तुम सदा पाक फ़रिश्तों के बीच मुस्कराती रहो! आज रात जो चमत्कार हुआ है उसके बारे में मैं किसी को नहीं बताऊंगा; यह भेद मैं बस एक आदमी को बताऊंगा, हान्ना को। बस वही मेरी बात पर विश्वास करेगी और हम दोनों उस अभागी डूबी हुई लड़की की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करेंगे!"

यह कहते-कहते वह घर के पास पहुंच गया: खिड़की खुली हुई थी; चांद की चमकती किरणें खिड़की के पार जाकर सोती हुई हान्ना

के शरीर पर पड रही थी ; उसके गालो पर नर्म-नर्म लाली की दमक थी, उसके होठ हिल रहे थे और बुदबुदाकर उसका नाम ले रहे थे। "मोओ, मेरी मोतियो की खान! तुम्हे सारी सुदर-सुदर अच्छी-अच्छी चीज़ो के सपने आये, लेकिन हमारा जागरण तुम्हारे इन सारे सपनो से भी सुखद होगा!" उसके ऊपर सलीब का निशान बनाकर उसने खिडकी बद कर दी और चुपके से वहा से चला आया। कुछ ही मिनट बाद गाव मे हर चीज़ सो रही थी, बस अकेला चाद वैभवशाली उक्राइनी आकाश के अनत विस्तार पर अपनी पूरी जादुई छटा के साथ चमकता रहा। ऊपर आकाश पर इसी वैभव का राज रहा, और रात, दिव्य रात, उसकी भव्यता मे जगमगाती रही। नीचे उसकी रुपहली ज्योति मे नहायी हुई धरती भी उतनी ही सुदर लग रही थी, लेकिन अब इस सुदरता को सराहनेवाला कोई भी आस-पास नही था सभी लोग गहरी नीद सो रहे थे। बस कभी-कभार बीच-बीच मे कुत्तो के भूकने और शराबी कलेनिक की आवाज़ से यह निस्तब्धता भग हो जाती थी, जो अपनी झोपडी की तलाश मे सोयी हुई सडको पर भटक रहा था।

नाक

१

सेंट पीटर्सवर्ग में २५ मार्च को एक अत्यंत असाधारण घटना हुई। वोज़्नेसेंस्की एवेन्यू में रहनेवाला हज्जाम इवान याकोव्लेविच (उसका कुलनाम तो कहीं खो गया है और वह उसकी दुकान के साइनवोर्ड पर भी नहीं लिखा है जिसमें गालों पर साबुन का वहुत-सा झाग लगाये हुए एक सज्जन की तस्वीर वनी है और साथ ही यह सूचना भी लिखी हुई है: "यहां फ़स्द भी खोली जाती है"), तो हज्जाम इवान याकोव्लेविच एक दिन वहुत सवेरे उठा और उसकी नाक में गरम-गरम रोटी की खुशबू आयी। विस्तर पर लेटे-लेटे ही उसने थोड़ा-सा सिर उठाकर देखा कि उसकी वीवी, जो निहायत शरीफ़ औरत थी और कॉफ़ी की वेहद शौक़ीन थी, तंदूर में से ताज़ी सिंकी हुई रोटियां निकाल रही थी।

"प्रस्कोव्या ओसिपोव्ना, आज मैं कॉफ़ी नहीं पिऊंगा," इवान याकोव्लेविच ने एलान किया, "उसके वजाय मैं प्याज़ के साथ एक गरम-गरम रोटी खाना चाहूंगा।"

(सच पूछिये तो इवान याकोव्लेविच पीना तो कॉफ़ी भी चाहता था लेकिन वह जानता था कि दोनों चीज़ें एक साथ मांगना वेकार होगा, क्योंकि प्रस्कोव्या ओसिपोव्ना इस तरह की सनक को वहुत नापसंद करती थी।) "खाने दो इस खूसट वेवक़ूफ़ को रोटी, मेरा क्या जाता है," उसकी वीवी ने सोचा, "मुझे कॉफ़ी का एक प्याला पीने को और मिल जायेगा।" और उसने एक रोटी मेज़ पर फेंक दी।

शिष्टता के नाते इवान याकोव्लेविच ने रात को पहनने की क़मीज़ के ऊपर एक कोट डाल लिया, और मेज पर वैठकर कुछ नमक निकाला, दो प्याज छीले, एक छुरी ली और वेहद संजीदगी के साथ अपनी रोटी को काटने लगा। रोटी को दो टुकड़ों में काटकर उसकी नज़र

अदर जो पडी तो उसमे कोई सफेद-सफेद चीज़ देखकर वह चकरा गया। बडी सावधानी से उसने उस चीज को छुरी से कुरेदा और उगली से दबाकर देखा। "ठोस मालूम होती है " उसने सोचा, "कमबख्त क्या चीज हो सकती है?"

उसने उगली गडाकर उसे खीचकर बाहर निकाला–एक नाक थी!.. यह देखते ही उसके हाथ नीचे झूल गये, फिर उसने अपनी आखे मली और उस चीज को टटोलकर देखा हा, नाक ही थी, इसमे कोई शक ही नही था! और ऊपर से तुर्रा यह कि जानी-पहचानी नाक लगती थी। इवान याकोव्लेविच के चेहरे पर दहशत की लहर दौड़ गयी। लेकिन उसकी शरीफ बीवी को जो गुस्सा आया उसके मुकाबले मे यह दहशत कुछ भी नही थी।

"यह नाक कहा काटी, कसाई?" वह गुस्से से लाल होकर चिल्लायी। "बदमाश! शराबी! मै जाकर पुलिस मे तेरी शिकायत करूगी। सरासर मुजरिमाना हरकत है! तीन आदमी मुझे पहले ही बता चुके है कि दाढी बनाते वक्त तू उनकी नाक को इतने ज़ोर से खीचता है कि ताज्जुब ही है कि वे अपनी जगह कायम रहती है।"

लेकिन इवान याकोव्लेविच को तो साप सूघ गया था। उसने पहचान लिया था कि वह नाक किसी और की नही–कालिजिएट असेसर कोवालेव की थी, जिसकी दाढी वह हर बुधवार और इतवार को बनाता था।

"सुनो तो, प्रस्कोव्या ओसिपोव्ना! मै इसे कपडे मे लपेटकर वहा एक कोने मे रखे देता हू वहा इसे कुछ देर रखा रहने दो, फिर मै इसे ले जाऊगा।"

"खबरदार, जो अब कुछ कहा! तू समझता है कि मै एक कटी हुई नाक अपने कमरे मे रहने दूगी? अहमक कही का! तुझे तो बस अपना उस्तुरा तेज़ करना आता है, और वह वक्त दूर नही है जब तू अपना काम भी ठीक से नही कर पायेगा, निकम्मा, बेवकूफ! बदमाश कही का! तू समझता है कि मै पुलिस के सामने तेरी पैरवी करूंगी? इस ख्याल मे भी न रहना, न किसी काम का न धाम का, काठ का उल्लू! ले जा इसे! ले जा! जहा तेरा जी चाहे, बस अब फिर कभी मुझे यह दिखायी न दे!"

इवान याकोव्लेविच हक्का-बक्का खडा रहा। वह बिल्कुल बौखलाया

हुआ अपने दिमाग़ पर ज़ोर डालकर सोच रहा था।

"भगवान जाने, यह हुआ कैसे," उसने आख़िरकार अपने कान के पीछे खुजाते हुए कहा। "शायद कल रात मैं पिये हुए घर आया था, या शायद न पी रखी हो, कह नहीं सकता। लेकिन देखने में तो यह बिल्कुल अजीब बात मालूम होती है; मतलब यह कि रोटी तो पकायी जाती है और नाक तो ऐसी कोई चीज है नहीं कि उसे पकाया जाये। मेरी समझ में तो कुछ भी नहीं आता!.."

इवान याकोव्लेविच चुप हो गया। यह सोचकर कि पुलिस वह नाक उसके पास देखेगी और उसे गिरफ़्तार कर लेगी, वह सहम उठा। अपने दिमाग़ में उसे साफ़ दिखायी दे रहा था गोट पर बढ़िया रुपहली डोरी लगा हुआ वह कालर, वह तलवार... और वह सिर से पांव तक कांप उठा। आख़िरकार उसने अपनी बनियाइन और जूते उठाये, उन्हें जैसे-तैसे पहना और प्रस्कोव्या ओसिपोव्ना के गाली-कोसनों के बीच उसने नाक को एक कपड़े में लपेटा और बाहर सड़क पर निकल गया।

वह उसे कहीं चुपचाप छिपा देना चाहता था, फाटक के पास लगे हुए पत्थर के पीछे डाल दे या अनजाने ही उसे कहीं गिराकर सबसे पासवाली गली में खिसक जाये। लेकिन दुर्भाग्यवश हर बार उसे कोई-न कोई जान-पहचानवाला मिल जाता था और उस पर सवालों की बौछार कर देता था: "कहां जा रहे हो?" या: "इतने सवेरे-सवेरे किसकी हजामत करने निकल पड़े?" और इवान याकोव्लेविच को अपना मंसूबा पूरा करने का मौक़ा ही नहीं मिल पाता था। एक बार तो उसने उसे गिरा भी दिया था, लेकिन वहां ड्यूटी पर तैनात पुलिस-वाले ने उसे पुकारा और अपने फरसे से इशारा करके कहा: "ऐ, सुनो! तुम्हारी कोई चीज़ गिर गयी है!" और इवान याकोव्लेविच को चुपचाप नाक उठाकर अपनी जेब में रख लेनी पड़ी थी। वह बिल्कुल निराश होता जा रहा था क्योंकि जैसे-जैसे दुकानें खुलती जा रही थीं वैसे-वैसे सड़क पर लोगों की आवाजाही बढ़ती जा रही थी।

उसने इसाकियेव्स्की पुल की ओर जाने का फ़ैसला किया, जहां, अगर क़िस्मत ने साथ दिया तो वह उसे नेवा नदी में फेंक देगा... लेकिन यहां पर मुझसे एक छोटी-सी चूक हो गयी है कि मैने अभी तक आपको इवान याकोव्लेविच के बारे में कुछ नहीं बताया है, जिसकी

कई मामलो मे बडी साख थी।

अपनी इज्जत का ख्याल रखनेवाले हर रूसी दस्तकार की तरह इवान याकोव्लेविच भी बला का शराबी था। और हालाकि रोज वह दूसरो की दाढी मूडता था लेकिन उसकी अपनी दाढ़ी हमेशा बढी रहती थी। इवान याकोव्लेविच का दो-पाखा कोट (क्योकि इवान याकोव्लेविच कभी फ्रॉक-कोट नही पहनता था) चितकबरा था, मतलब यह कि वह काला तो था लेकिन उस पर पीलाहट लिये हुए कत्थई रग के और सुरमई धब्बे पडे थे, उसका कालर चीकट होकर चमकने लगा था, और तीन बटनो की जगह उसके सामने सिर्फ धागे लटकते रहते थे। इवान याकोव्लेविच बहुत नकचढा था, और जब कालिजिएट असेसर कोवालेव दाढी बनवाते वक्त उससे कहता "इवान याकोव्लेविच तुम्हारे हाथो से हमेशा बदबू आती है!" तो इवान याकोव्लेविच तड से जवाब देता "कोई वजह तो मेरी समझ मे आती नही कि उनमे बदबू क्यो आये।" – "यह तो मै जानता नही, बडे मिया, लेकिन आती है," कालिजिएट असेसर कहता, और इवान याकोव्लेविच एक चुटकी नसवार नाक मे चढाकर इसके जवाब मे उसके गालो पर, उसकी नाक के नीचे, उसके कानो के पीछे, और उसकी ठोडी के नीचे, मतलब यह कि जहा भी उसके मन मे आता, साबुन मल-मलकर झाग उठाता रहता।

तो यह बदा अब इसाकियेव्स्की पुल पर पहुच चुका था। सबसे पहले तो उसने *अपने चारो ओर नज़र दौडायी*, फिर वह जगले के ऊपर से इस तरह झुककर पुल के नीचे झाकने लगा मानो यह पता लगा रहा हो कि आज नदी मे मछलिया बहुत आयी है कि नही, और फिर उसने चुपके से वह कपडा जिसमे नाक लिपटी हुई थी नीचे गिरा दिया। उसे ऐसा लगा कि उसके कधो पर से कई मन का बोझ उतर गया है, इवान याकोव्लेविच किलकारी मारकर हस भी पडा। सरकारी अफसरो की हजामत करने के लिए जाने के बजाय उसने अपने कदम एक ऐसे प्रतिष्ठान की ओर मोडे जिसके सामने साइनबोर्ड लगा हुआ था 'खाद्य-सामग्री और चाय', वहा जाकर वह एक गिलास पच मगाकर पीने का इरादा कर ही रहा था कि पुल के दूसरे छोर पर उसे बहुत रोबदार शक्ल-सूरत के, गलमुच्छोवाले पुलिस के एक सुपरिटेडेट तिकोनी टोपी लगाये हुए और कमर मे तलवार लटकाये दिखायी दिये।

वह ठिठककर रह गया ; इतने में पुलिस सुपरिंटेंडेंट ने उसकी ओर अपनी उंगली टेढ़ी करके इशारा किया और कहा : "इधर आओ, भले आदमी !"

ऐसी परिस्थितियों में उचित आचरण क्या होना चाहिये, यह जानते हुए इवान याकोव्लेविच ने काफ़ी दूर से ही अपनी टोपी उतार ली और उनकी ओर लपकता हुआ बोला :

"सलाम, हुजूर !"

"नहीं, नहीं, मेरे दोस्त, यह 'हुजूर-वुजूर' छोड़ो, मुझे तो यह बताओ कि तुम वहां पुल पर क्या कर रहे थे, क्यों ?"

"भगवान क़सम, सरकार, मैं तो अपने एक गाहक के यहां जा रहा था ; जाते-जाते मैंने सोचा कि देखूं तो नदी कितनी तेज़ बह रही है।"

"झूठ बोलते हो! यह न समझना कि ऐसे बचकर निकल जाओगे। सच-सच बताओ, क्या बात है !"

"मैं हफ़्ते में दो बार, बल्कि तीन बार, हुजूर की दाढ़ी बिना किसी चूं-चपड़ के बना दिया करूंगा," इवान याकोव्लेविच ने जवाब दिया।

"नहीं, मेरे दोस्त, इससे काम नहीं चलेगा। मेरी दाढ़ी बनाने के लिए तीन हज्जाम पहले ही से लगे हुए हैं, और वे सभी इसे अपने लिए बड़ी इज़्ज़त की बात समझते हैं। इस वक़्त तो यह बताओ कि तुम वहां कर क्या रहे थे ?"

इवान याकोव्लेविच का रंग फ़क़ हो गया ... लेकिन यहां पहुंचकर घटनाओं पर कुहरे का एक परदा-सा पड़ गया है और हमें कुछ भी नहीं मालूम है कि इसके बाद क्या हुआ।

२

कालिजिएट असेसर कोवालेव काफ़ी सवेरे उठा और सांस बाहर छोड़ते हुए ज़ोर की आवाज़ निकाली : "ब्र-र्-र्-र् ! .." जैसा कि वह जागने पर हमेशा करता था, हालांकि ऐसा करने की कोई वजह वह ख़ुद भी नहीं जानता था। उसने अंगड़ाई लेकर सिंगार-मेज़ पर रखा हुआ छोटा आईना मंगाया। वह उस फुंसी को देखना चाहता था जो

उसकी नाक पर पिछली रात निकल आयी थी; लेकिन यह देखकर तो उसके आश्चर्य की कोई सीमा न रही कि जहा पर उसकी नाक होनी चाहिये थी वहा एक चौरस जगह थी! डरकर उसने थोडा-सा पानी मगवाया और तौलिये से अपनी आखे धोयी, बात सच थी, उसकी नाक गायब थी! इस बात का पक्का यकीन करने के लिए कि वह अभी तक सो नही रहा है उसने अपने चुटकी काटी। लेकिन पता यह चला कि वह सो नही रहा। कालिजिएट असेसर कोवालेव बिस्तर से उछलकर खडा हो गया और उसने अपने बदन को झझोडा· नाक नदारद! उसने फौरन अपने कपडे मगवाये और पुलिस कमिश्नर के दफ्तर की ओर लपका।

लेकिन इस बीच हम पाठक का परिचय कोवालेव से करा दे ताकि वह खुद समझ सके कि हमारा कालिजिएट असेसर किस किस्म का आदमी था। जो कालिजिएट असेसर विद्योपार्जन के विभिन्न प्रमाणपत्रों की सहायता से यह पद प्राप्त करते है उनकी तुलना उन कालिजिएट असेसरो से कदापि नही की जानी चाहिये जो यह पद काकेशस मे प्राप्त करते हैं। ये दो बिल्कुल ही अलग कोटिया होती हैं। विद्वान कालिजिएट असेसर और लेकिन रूस ऐसी असाधारण जगह है कि अगर आप एक कालिजिएट असेसर के बारे मे कुछ कहे तो रीगा से कमचात्का तक निश्चित रूप से सभी उसे अपने ऊपर आक्षेप मानेगे। यही बात सभी पदो और ओहदो के बारे मे सच है। कोवालेव काके-शियाई कालिजिएट असेसर था। उसे इस पद पर आये अभी दो ही साल हुए थे, और इसलिए वह अभी तक अपनी इस नवप्राप्त प्रतिष्ठा के नशे मे बिल्कुल चूर था, अपना महत्व और रोब बढाने के लिए वह अपने आपको कालिजिएट असेसर कहने के बजाय हमेशा मेजर कहता था। सडक पर कोई कमीज बेचनेवाली मिल जाती तो वह उससे कहता "सुन, भलीमानस, मेरे यहा आ जाना मेरा फ्लैट सदोवाया स्ट्रीट मे है, किसी से पूछ लेना मेजर कोवालेव कहा रहते है, वह बता देगा।" और अगर कोई खास तौर पर सुदर-सलोनी छोकरी दिखायी पड जाती तो वह उसे बडी राजदारी से इतनी हिदायत और देता "मेरी मैना, तुम बस मेजर कोवालेव का घर पूछ लेना।" – इसलिए इसके बाद हम भी अपने कालिजिएट असेसर को मेजर कहेगे।

मेजर कोवालेव को रोज नेव्स्की एवेन्यू पर टहलने की आदत

थी। उसकी क़मीज़ का कॉलर हमेशा दूध की तरह सफ़ेद और कलफ़ किया हुआ होता था। उसके गलमुच्छे उस ढंग के थे जैसे अब भी ज़िले के सर्वेयर, आर्किटेक्ट, रेजिमेंट डाक्टर, तरह-तरह के पुलिसवाले, और आम तौर पर वे सभी शरीफ़ लोग रखते हैं जिनके भरे-भरे लाल गाल होते हैं और जिन्हें वोस्टन खेलने का शौक़ होता है: ये गलमुच्छे ठीक गाल के बीच तक चले जाते हैं और वहां से बिल्कुल नाक तक पहुंच जाते हैं। मेजर कोवालेव के पास बहुत-सी कार्नेलिया की मुहरें थीं जिनमें से कुछ पर ताज बने हुए थे, कुछ पर दिनों के नाम: बुध-वार, गुरुवार, सोमवार आदि खुदे हुए थे। मेजर कोवालेव एक खास काम से सेंट पीटर्सबर्ग आया था, यानी अपनी हैसियत के मुताबिक़ कोई ओहदा पक्का करने। अगर वह कामयाब हो जाता तो यह ओहदा नायब-गवर्नर के स्तर का होता, अगर न होता तो वह किसी महत्वपूर्ण विभाग में प्रशासक का ही काम करने पर राज़ी हो जाता। मेजर कोवा-लेव शादी करने के विचार के भी खिलाफ़ नहीं था; लेकिन बस इस शर्त पर कि उसकी दुल्हन के पास दो लाख की पूंजी हो। इसलिए पाठक अब खुद अंदाज़ा लगा सकता है कि औसत आकार की ऐसी नाक के बजाय जो कोई खास बदसूरत भी नहीं थी, एक हास्यास्पद, खाली और चिकनी जगह का वर्णन करते समय हमारे इस मेजर की मनोदशा क्या होती होगी।

दुर्भाग्य से सड़क पर एक भी घोड़ागाड़ी नहीं दिखायी दे रही थी, इसलिए मजबूर होकर उसे अपना लबादा लपेटे हुए और अपने चेहरे को रूमाल से ढके पैदल ही चलना पड़ा, उस आदमी की तरह जिसके नकसीर फूटी हो। "लेकिन हो सकता है कि यह सब मेरा वहम हो: नाक ऐसे तो ग़ायब नहीं हो सकती है।" वह खास तौर पर आईना देखने के इरादे से पेस्ट्री की एक दुकान में गया। सौभाग्य से उस समय दुकान में कोई नहीं था: वेटर कमरों में झाड़ू लगा रहे थे और कुर्सियां ठीक से रख रहे थे; उनमें से कुछ गरम-गरम टिकियों की ट्रे लेकर आ रहे थे; कॉफ़ी के धब्बे पड़े हुए कल के अख़बार मेज़ों पर और कुर्सियों पर इधर-उधर पड़े थे। "चलो, भगवान की कृपा से यहां कोई है नहीं," उसने कहा, "अब मैं देख सकता हूं।" वह डरते-डरते आईने की ओर बढ़ा और उसमें झांकने लगा: "क्या मनहूस लानत है!" उसने थूकते हुए कहा। "नाक की जगह कुछ तो होता, लेकिन

इस तरह बिना किसी चीज़ के रह जाना!. "

झुंझलाकर अपने होंट काटते हुए वह पेस्ट्री की दुकान से निकल आया और उसने फैसला किया कि अपने दस्तूर के खिलाफ वह न किसी की तरफ देखेगा, न किसी को देखकर मुस्करायेगा। अचानक एक दरवाज़े के पास पहुचने पर एक ऐसा अत्यत अविश्वसनीय दृश्य उसकी आखो के सामने आया कि वह ठिठककर रह गया एक गाडी फाटक के सामने आकर रुकी, दरवाज़े खुले, एक अफसर झुककर फुर्ती से कूदकर नीचे उतरा और भागता हुआ सीढिया चढ गया। आप कोवालेव के विस्मय और आश्चर्य की कल्पना कीजिये जब उसने पहचाना कि वह आदमी कोई और नही उसकी अपनी नाक था! यह असाधारण दृश्य देखकर वह हैरत से चकरा गया और अपने पाव भी बड़ी मुश्किल से ही टिकाये रख सका, लेकिन उसने फैसला किया कि हर कीमत पर वह नाक के अपनी गाडी के पास वापस आने की राह देखेगा और वह ऐसे कापता रहा जैसे उसे बुखार हो। वही हुआ, दो मिनट बाद नाक महाशय निकले। वह सख्त और ऊचे कालर की सुनहरी झालरोंवाली वर्दी पहने थे, उन्होंने स्वेड की पतलून पहन रखी थी और उनकी कमर के एक तरफ तलवार लटकी थी। उनके परदार हैट से जाहिर था कि वह स्टेट काउसिलर बनते थे। उनकी चाल-ढाल से यह भी साफ था कि वह किसी से मिलने जा रहे थे। उन्होंने चारो ओर नजर डालकर कोचवान को आवाज़ दी "इधर!", गाडी मे सवार हुए और गाडी सरपट चल दी।

बेचारे कोवालेव के तो मानो होश उड गये। उसकी समझ मे न आता था कि इस अत्यत असाधारण घटना का क्या मतलब लगाये। और सचमुच, इस बात की वजह बतायी भी क्या जा सकती थी कि एक नाक जो अभी कल तक उसके चेहरे पर लगी हुई थी, जो न गाडी पर चल सकती थी न पैदल, इस वक्त वर्दी पहने हुए थी! वह गाडी के पीछे चल पडा, जो सौभाग्य से थोडी ही दूर जाकर कज़ान कैथीड्रल के सामने रुक गयी।

वह जल्दी से कैथीड्रल मे घुसा और बूढी भिखारिनो की कतारो के बीच से, जिन्होंने आखो के लिए दो पतली-पतली दरारे छोडकर अपने चेहरे चीथडो मे लपेट रखे थे, जिस दृश्य को देखकर पहले उसे हमेशा बहुत मज़ा आता था, गिरजाघर के अदर जा पहुचा। अदर

वहुत ज़्यादा उपासक नहीं थे और वे सव दरवाज़े के पास ही झुंड वनाये खड़े थे। कोवालेव इतना परेशान था कि वह प्रार्थना भी नहीं कर सकता था; उसने वड़ी उत्सुकता से गिरजाघर में चारों ओर नज़र दौड़ायी कि शायद कहीं वह वर्दीवाले महाशय दिखायी पड़ जायें। आखिरकार उसने उन्हें एक ओर खड़े देखा। नाक महाशय ने अपना चेहरा पूरी तरह अपने ऊंचे सख़्त कालर में छिपा रखा था और वह असीम भक्ति-भाव से प्रार्थना कर रहे थे।

"मैं उनके पास जाऊं कैसे?" कोवालेव ने सोचा। "उनकी वर्दी और हैट से तो लगता है कि वह स्टेट काउंसिलर होंगे। हे भगवान, अव मैं करूं तो क्या करूं!"

वह उनके पास पहुंचकर खांसा, लेकिन नाक महाशय पर कोई असर नहीं हुआ और वह अपनी वगुला भगतवाली मुद्रा वनाये वेदी के सामने झुक-झुककर शीश नवाते रहे।

"मेहरवान ..." कोवालेव ने जान की वाज़ी लगाकर साहस वटोरते हुए कहा, "मेहरवान ..."

"क्या वात है?" नाक ने मुड़कर देखते हुए पूछा।

"मुझे ताज्जुव है, जनाव ... मैं समझता हूं ... आपको अपनी जगह मालूम होनी चाहिये। और देखिये, आपको मैंने पाया कहां – गिरजाघर में। यह तो आपको भी मानना पड़ेगा ..."

"माफ़ कीजियेगा, लेकिन आप जो कुछ कह रहे हैं उसका सिर-पैर कुछ मेरी समझ में नहीं आ रहा है ... आप अपनी वात समझाकर कहिये।"

"मैं कैसे समझाऊं?" कोवालेव ने सोचा, और एक वार फिर दिल कड़ा करके कहना शुरू किया:

"वात यह है कि मैं ... दरअसल मैं एक मेजर हूं। और मुझे यक़ीन है कि आप भी मानेंगे कि मेरे लिए विना नाक के फिरते रहना ज़रा नामुनासिव है। वोस्क्रेसेंस्की पुल पर वैठकर छिले हुए संतरे वेचने-वाली किसी औरत के लिए तो यह कोई वेजा वात न होती; लेकिन चूंकि मुझे तरक़्क़ी पाने की उम्मीद है ... और चूंकि इसके अलावा मेरी पहचान कई जाने-माने घरानों की शरीफ़ औरतों से है: स्टेट काउंसिलर चेख़्तार्योव की वीवी से, और दूसरी औरतों से ... आप ख़ुद फ़ैसला कीजिये ... मेरी समझ में नहीं आ रहा है, जनाव, कि मैं अपनी वात

कैसे कहू " (इतना कहकर मेजर कोवालेव ने अपने कधे विचकाये।) "माफ कीजियेगा, अगर आप इसे खालिस फर्ज और इज्जत की नजर मे देखे तो आपको मानना पडेगा "

"कुछ समझ में नही आया," नाक ने जवाब दिया। "इतनी मेहरबानी कीजिये कि अपनी बात साफ-साफ कहिये।"

"मेहरबान " कोवालेव ने बडी गरिमा के साथ कहा, "दर-असल है यह कि आपकी बात समझने मे मुझे कुछ मुश्किल हो रही है . मुझे तो सारी बात बिल्कुल साफ मालूम होती है या आप चाहते हैं कि बात यह है कि आप मेरी अपनी नाक हैं।"

नाक ने अपनी मुद्रा मे कुछ नाराजगी लाते हुए मेजर की ओर देखा।

"आप भूल कर रहे है, मेहरबान। मेरी खुद अपनी एक हस्ती है। इसके अलावा, हमारे बीच कोई नजदीकी रिश्ता हो भी नही सकता। आपकी वर्दी के बटन देखने मे मालूम होता है कि आप किसी दूसरे विभाग मे काम करते होंगे।"

यह कहकर नाक ने मुह फेर लिया और प्रार्थना करने का सिलसिला जारी रखा।

कोवालेव की समझ मे अब बिल्कुल ही नही आ रहा था कि वह क्या करे या क्या सोचे भी। उसी वक्त उसे किसी औरत के लिवास की सुखद सरसराहट सुनायी दी काफी बडी उम्र की एक महिला लैसो के ढेर मे सजी-बनी चली आ रही थी, उनके साथ एक दुबली-पतली युवती थी, वह सफेद लिबास पहने हुए थी, जो उसके छरहरे बदन पर बहुत फबता था, और उसने स्पज-केक जैसा हल्का बसती रग का हैट लगा रखा था। उनके पीछे बडे-बडे गलमुच्छों और पूरे दर्जन-भर कालरोंवाला एक लबा-सा अर्दली खडा था, जो नसवार की डिबिया खोल रहा था।

कोवालेव खिसककर कुछ और नजदीक आ गया, उसने अपनी कमीज का कैम्ब्रिक का कालर ऊपर उठाया, अपनी सोने की जजीर मे लगी हुई मुहरों को ठीक किया और दाहिने-बायें मुस्कराहट बिखरते हुए अपना ध्यान उस कोमलागी महिला की ओर मोडा, जो कुमुदिनी जैसे सफेद अपने हाथ की लगभग पारदर्शी उगलियों को अपने माथे की ओर उठाते हुए बसत के फूलो की तरह थोडा-सा आगे को झुक आयी

थी। उसके हैट के नीचे एक गोल मलाई जैसी ठोड़ी और उसके गाल के एक हिस्से की झलक देखकर, जिस पर वसंत के पहले गुलाब का रंग थोड़ा-सा छुआ दिया गया था, कोवालेव की बाछें खिल गयीं। लेकिन अचानक वह पीछे हट गया मानो किसी गरम-गरम चीज़ से जल गया हो। उसे याद आ गया कि जहां उसकी नाक होनी चाहिये थी, वहां कुछ भी नहीं था, और उसकी आंखों में आंसू निकल आये। उन वर्दीधारी सज्जन को साफ़-साफ़ शब्दों में यह बता देने के लिए वह तेज़ी से मुड़ा कि वह स्टेट काउंसिलर होने का महज़ ढोंग कर रहे हैं, कि वह सरासर जालिये और बदमाश हैं और यह कि वह ख़ुद उसकी अपनी नाक से न कुछ ज्यादा हैं न कम... लेकिन नाक महाशय तो ग़ायब हो चुके थे : इस बीच वह वहां से खिसक गये थे, यक़ीनन किसी और से मिलने चले गये होंगे।

यह देखकर कोवालेव घोर निराशा में डूब गया। वह बाहर गया और एक मिनट के लिए बरामदे में खड़ा होकर इस उम्मीद से चारों ओर नज़र दौड़ाने लगा कि शायद नाक कहीं दिखायी दे जाये। उसे बिल्कुल अच्छी तरह याद था कि वह पर लगे हुए हैट और सुनहरी झालरवाली वर्दी पहने थे ; लेकिन उसने उनका वर्दी-कोट ध्यान से नहीं देखा था, न ही उनकी घोड़ागाड़ी का रंग देखा था, न उनके घोड़ों का, न ही यह बात कि उनके साथ कोई अर्दली था कि नहीं, और अगर था तो वह कैसी वर्दी पहने था। इसके अलावा, वहां इतनी बहुत-सी घोड़ागाड़ियां इतनी तेज़ी से इधर-उधर आ-जा रही थीं कि वह उन्हें अलग-अलग पहचान भी नहीं सकता था और पहचानकर करता भी क्या, वह उन्हें रोक तो सकता नहीं था। शानदार धूप निकली हुई थी। नेव्स्की एवेन्यू पर लोगों की भीड़ थी ; पोलित्सेइस्की पुल से अनिचकिन पुल तक सड़क के किनारे की पटरियों पर फूलों जैसी महिलाओं का एक झरना बह रहा था। उधर दूर उसकी जान-पहचान का एक आदमी उसे दिखायी दिया, एक ऑलिक काउंसिलर जिसे वह लेफ़्टिनेंट-कर्नल कहकर संबोधित करता था, ख़ास तौर पर दूसरे लोगों के सामने। उन लोगों में उसे यारीगिन दिखायी दिया, जो उसका बहुत अच्छा दोस्त था और सीनेट के किसी विभाग का प्रधान था ; बोस्टन खेलते हुए जब भी वह अट्ठे पर दांव लगाता था तो हार जाता था। पास ही एक दूसरे मेजर ने, जिसने अपना असेसर

का पद काकेशस में हासिल किया था, उसे इशारा करके बुलाया ..

"लानत है!" कोवालेव ने कहा। "ऐ गाडीवाले, मुझे सीधे पुलिस कमिश्नर साहब के यहा ले चलो!"

कोवालेव गाडी पर चढ गया और वहां बैठकर गाडीवाले पर चिल्लाता रहा "सरपट भगाओ, जल्दी करो!"

"कमिश्नर साहब घर पर हैं?" उसने ड्योढी में दाखिल होते हुए चिल्लाकर पूछा।

"साहब तो नहीं हैं," दरबान ने जवाब दिया, "अभी-अभी बाहर गये हैं।"

"लानत है!"

"हा," दरबान कहता रहा, "बहुत देर नहीं हुई, लेकिन वह चले गये हैं। कोई मिनट-भर पहले भी आप आ जाते तो मुलाकात हो जाती।"

कोवालेव तमाम वक्त अपने चेहरे पर रूमाल रखे रहा, फिर गाडी पर बैठ गया और ऊचे स्वर में चिल्लाकर बोला "चलो, आगे चलो!"

"कहा?" गाडीवाले ने पूछा।

"सीधे आगे!"

"सीधे कैसे जा सकता हू? आगे दो सडके हैं बाये चलू या दाहिने?"

इस सवाल पर कोवालेव को मजबूरन रुककर सोचना पडा। उसकी जैसी हालत में तो पुलिस के सार्वजनिक व्यवस्था-मडल की तरफ ही रुख करना सबसे अच्छा रहेगा, इसलिए नहीं कि उसका सीधा सबध पुलिस के साथ था, बल्कि इसलिए कि वह दूसरे अधिकारियो के मुकाबले काम ज्यादा जल्दी करवा देता था, उसी जगह, जहा नाक महाशय काम करने का दावा करते थे, अपनी शिकायत दूर कराने की कोशिश करना सरासर नासमझी की बात होगी। खुद नाक के अपने बयानो से जाहिर था कि यह जीव किसी भी चीज़ को खातिर में नहीं लाता था और इस वक्त भी वह वैसे ही झूठ बोलेगा जैसे वह उस वक्त झूठ बोला था जब उसने दावा किया था कि उसने मेजर कोवालेव की कभी सूरत भी नहीं देखी थी। कोवालेव गाडीवाले को पुलिस के सार्वजनिक व्यवस्था-मडल की ओर ले चलने का आदेश देने जा ही रहा था कि

इतने में एक दूसरा विचार उसके दिमाग़ में आया, यानी यह कि यह वदमाश और दग़ावाज, जो उनकी पहली ही मुलाक़ात में इतनी चाल-वाज़ी से पेश आया था, कहीं शहर छोड़कर नौ दो ग्यारह न हो गया हो। उस हालत में उसे खोजने की तमाम कोशिशें या तो विल्कुल ही बेकार सावित होंगी, या फिर, भगवान न करे, पूरे महीने-भर चलती रहेंगी। आखिरकार, जैसे उसे कोई दैवी प्रेरणा मिली – उसने सीधे अख़वार के दफ़्तर जाने और ब्योरे के साथ उसके सारे गुण वयान करते हुए जल्दी से जल्दी एक इश्तहार छपवाने का फ़ैसला किया ताकि अगर कोई उसे देखे तो वापस लाकर उसके पास पहुंचा दे, या कम से कम उसका अता-पता वता दे। इस फ़ैसले पर पहुंचकर उसने गाड़ीवाले से सीधे अखवार के दफ़्तर चलने को कहा, और सारे रास्ते चिल्लाते हुए उसकी पीठ पर घूंसों की वौछार करता रहा: "और तेज़ चल, वदमाश! और तेज़, लुच्चे!" – "उफ़, साहव!" गाड़ीवाले ने अपना सिर हिलाते हुए और कुत्ते जैसे झवरे वालोंवाले घोड़े की रास को झटका देते हुए गुर्राकर कहा। आखिरकार घोड़ागाड़ी रुकी और कोवालेव हांपता हुआ भागकर छोटे-से स्वागत-कक्ष में पहुंचा जहां सफ़ेद वालोंवाला एक क्लर्क चश्मा लगाये और पुराना टेल-कोट पहने एक मेज़ के सामने वैठा था और चिड़िया के पर का अपना क़लम होंठों में दवाये सिक्कों का ढेर गिन रहा था जो उसके सामने लाकर रख दिये गये थे।

"यहां इश्तहार कौन लेता है?" कोवालेव ने चिल्लाकर पूछा। "ओह, सलाम!"

"सलाम," सफ़ेद वालोंवाले क्लर्क ने क्षण-भर के लिए आंखें उठाकर कहा और फिर उसने सिक्कों की गड्डियों पर अपनी नज़रें झुका लीं।

"मैं छपवाना चाहता हूं कि..."

"ज़रा रुकिये। मेहरवानी करके थोड़ा सब्र कीजिये," क्लर्क ने अपने दाहिने हाथ से कोई गिनती लिखकर वायें हाथ से गिनतारे पर दो गोलियां सरका दीं।

एक अर्दली, जिसने सुनहरी गोट लगी हुई वर्दी पहन रखी थी और जिसकी सूरत ही वताती थी कि वह किसी रईस के यहां काम करता है, मेज़ के पास हाथ में एक पर्चा लिये खड़ा था, और कुछ ज़रूरत से ज़्यादा वेतकल्लुफ़ी दिखाना अपने लिए ज़रूरी समझकर वह वोला:

"जानते हैं, साहब, वह कमबख्त कुत्ता अस्सी कोपेक का भी नहीं है, मैं तो उसके लिए पीतल का एक बटन भी न दूं; लेकिन काउंटेस को उससे प्यार है, बेहद प्यार करती हैं उसे, और इसलिए वह उसका पता लगानेवाले को सौ रूबल ईनाम तक देने को तैयार हैं! अगर आप मेरी सच्ची राय पूछें तो लोगों की पसंद तरह-तरह की है; अब अपने शिकारी को ही ले लीजिये, उसे शिकार का सुराग लगानेवाले या शिकार ढूंढकर लानेवाले कुत्ते के लिए पांच सौ तो क्या हज़ार रूबल भी देने में कोई एतराज़ नहीं होगा, लेकिन वह एक अच्छे कुत्ते की क़ीमत चुका रहा होता है।"

क्लर्क महोदय बड़ी गंभीर मुद्रा बनाये उसका प्रवचन सुनते रहे और साथ ही यह गिनकर हिसाब भी लगाते रहे कि जो इश्तहार उनके पास लाया गया है उसमें कितने अक्षर हैं। उनके चारों ओर बहुत-सी बुढ़िया, गुमाश्ते और दरबान पर्चियां लिये हुए मंडला रहे थे। किसी में एक ऐसे कोचवान को नौकरी की तलाश थी जो शराब नहीं पीता था, किसी में १८१४ में पेरिस में खरीदी गयी ऐसी घोड़ा-गाड़ी बेचने का इश्तहार था जो बहुत कम इस्तेमाल हुई थी, किसी और में एक उन्नीस साल की ऐसी वधक नौकरानी के लिए नौकरी की ज़रूरत की बात कही गयी थी जिसने कपड़ों की धुलाई का काम सीखा था, लेकिन दूसरे काम भी कर सकती थी, किसी को एक ऐसी मज़बूत घोड़ागाड़ी के लिए खरीदार की ज़रूरत थी जिसकी एक कमानी गायब थी, किसी को सुरमई चित्तियोंवाले सत्रह साल के फुर्तीले नौजवान घोड़े के लिए, किसी को लंदन से मंगाये गये शलजम और मूली के बीजों के लिए, किसी को ज़मीन के एक बड़े-से टुकड़े पर बने हुए बंगले के लिए जिसमें दो घोड़ों के लिए अस्तबल भी थे और जो बर्च या फर के बाग लगाने के लिए बहुत अच्छी जगह थी। एक और इश्तहार में उन सब लोगों का ध्यान आकर्षित किया गया था जो जूतों के पुराने तले खरीदना चाहते हों और उन्हें किसी भी दिन सवेरे ८ बजे से शाम के ३ बजे तक नीलामघर में आने का निमंत्रण दिया गया था। वह कमरा जिसमें ये सब लोग जमा थे उसकी लंबाई-चौड़ाई बहुत कम थी और उसमें हवा बेहद घुटन-भरी थी, लेकिन कालिजिएट असेसर को वातावरण का कुछ भी आभास नहीं था, क्योंकि वह अपने चेहरे पर रूमाल रखे हुए था और बहरहाल उसकी नाक इस वक़्त

भगवान जाने कहां थी।

"मेहरबान, सच कहता हूं, आप इसे तो कर ही दीजिये... बहुत ज़रूरी है," उसने अधीर होकर कहा।

"अभी, पल भर में! दो रूबल तैंतालीस कोपेक! अभी करता हूं! एक रूबल चौंसठ कोपेक!" काग़ज़ की पर्चियां बुढ़ियों और दरबानों के मुंह पर फेंकते हुए सफ़ेद बालोंवाले क्लर्क ने कहा। "आपको क्या चाहिये?" आख़िरकार उसने कोवालेव की ओर मुड़कर कहा।

"मैं चाहता हूं कि..." कोवालेव ने कहा, "बहुत बड़ी ग़द्दारी की नीच हरकत की गयी है, अभी तक मेरी समझ में नहीं आता कि हुआ क्या है। मैं चाहता हूं कि आप यह छाप दीजिये कि जो आदमी इस बदमाश को मेरे पास पकड़ लायेगा उसे बहुत-सा ईनाम दिया जायेगा।"

"क्या मैं आपका नाम जान सकता हूं?"

"जी नहीं, आपको मेरे नाम की क्या ज़रूरत? वह मैं आपको नहीं बता सकता। मेरे बहुत-से जाननेवाले हैं: चेख़्तार्योवा, स्टेट काउंसिलर की बीवी, पलागेया ग्रिगोर्येव्ना पोद्तोचिना, स्टाफ़ अफ़सर की बीवी... उनकी नज़र इस पर पड़ सकती है, भगवान न करे! आप सिर्फ़ इतना लिख दीजिये: एक कालिजिएट असेसर, या, इससे भी अच्छा होगा, मेजर के ओहदे के एक सज्जन।"

"और जो आदमी भाग गया है वह आपका बंधक नौकर था?"

"क्या कहा, मेरा बंधक नौकर? जी नहीं, इससे भी बुरी बात है! लापता मेरा नौकर नहीं हुआ है... जी नहीं – बल्कि लापता है नाक..."

"अच्छा! कैसा अजीब नाम है। और यह नाक महाशय आपको बहुत बड़ी रक़म की चोट देकर चंपत हो गये हैं?"

"जी नहीं, नाक महाशय नहीं... आप ग़लत समझे! मेरे जिस्म का नाक जैसा हिस्सा, मेरे अपने जिस्म का, न जाने कहां ग़ायब हो गया। शैतान मेरे साथ कोई भयानक खिलवाड़ कर रहा है!"

"लेकिन वह ग़ायब कैसे हो गया? माफ़ कीजियेगा, मेरी समझ में तो कुछ भी नहीं आया।"

"समझ में तो ख़ुद मेरी भी नहीं आता; लेकिन असल बात यह है कि इस वक़्त वह स्टेट काउंसिलर का भेस बनाये शहर में घूम रहा

है। इसलिए मै आपसे यह प्रार्थना करते हुए इश्तहार छाप देने को कह रहा हू कि जिस किसी की पकड मे वह आ जाये वह उसे फौरन जरा-सी भी देर किये बिना मेरे पास ले आये। आप खुद ही सोचिये' मै अपने जिस्म के ऐसे प्रमुख हिस्से के बिना कैसे रह सकता हू? —ऐसा तो है नही कि मेरे पाव की कोई उगली कट गयी हो, और इससे पहले कि कोई यह देख पाये कि वह नदारद है मै अपना पाव जूते मे डाल लू। हर गुरुवार को मै स्टेट काउसिलर चेख्तार्योव की बीवी से मिलने जाता हू, पलागेया ग्रिगोर्येव्ना पोद्तोचिना एक स्टाफ अफसर की बीवी है और उसके एक बहुत खूबसूरत बेटी है, और वे दोनो मेरी बहुत अच्छी दोस्त हैं, इसलिए आप खुद समझ सकते है कि मै कैसे धर्मसकट मे फस गया हू अब मै उनके सामने मुह भी नही दिखा सकता।"

क्लर्क एक क्षण के लिए चितामग्न हो गया, जैसा कि उसके कसकर भिचे हुए होठो से साफ जाहिर था।

"नही, मै ऐसा इश्तहार अखबार मे नही छाप सकता," उसने काफी देर चुप रहने के बाद आखिरकार कहा।

"क्या कहा? क्यों नही छाप सकते?"

"नही छाप सकता। अखबार की बदनामी होने का डर है। अगर हर आदमी यह लिखने लगे कि उसकी नाक भाग गयी है, तो सोचिये . यो ही लोग कहते हैं कि अखबार दुनिया-भर की बकवास और झूठी खबरें छापते रहते है।"

"लेकिन इसमें बकवास क्या है? बिल्कुल आईने की तरह साफ बात है।"

"ऐसा तो आपको लगता है। लेकिन पिछले हफ्ते का यह मामला ले लीजिये। जिस तरह आज आप आये हैं उसी तरह एक अफसर एक पर्चा लेकर आया था, जिसे छापने का खर्च दो रूबल तिहत्तर कोपेक आता था और इस इश्तहार मे सिर्फ इतनी बात कही गयी थी कि काले बालोवाला एक पूडल कुत्ता भाग गया है। देखने मे तो कोई ऐसी गैरमामूली बात नही थी। लेकिन आखिर मे इस बात पर मानहानि का मुकद्दमा चला, क्योंकि वह पूडल कुत्ता किसी सस्था का खजाची था, सस्था का नाम तो मुझे याद नही रहा।"

"लेकिन मै तो किसी पूडल कुत्ते के बारे में इश्तहार नही छपवा रहा हू; यह तो मेरी अपनी नाक का मामला है, जो लगभग वैसी

थे। इस वक़्त सुपरिंटेंडेंट की बावर्चिन उसके लंबे जूते उतारने में व्यस्त थी; उसकी तलवार और दूसरा सारा फ़ौजी ताम-झाम बड़ी शांति से कमरे के अलग-अलग कोनों में लटका दिया गया था और उसका तीन साल का बेटा अपने बाप की डरावनी तिकोनी टोपी से खेल रहा था, जबकि वह सूरमा ख़ुद दिन-भर लड़ाई में जूझने के बाद अब शांति के सुख का आनंद लेने को तैयार था।

कोवालेव को उसके सामने ठीक उस वक़्त पेश किया गया जब ज़ोर की अंगड़ाई लेकर और मज़े से गुर्राकर वह एलान कर रहा था: "वाह, दो घंटे डटकर सोने को मिल जाये तो मज़ा आ जाये!" इस तरह हम देखते हैं कि कालिजिएट असेसर ने वहां पहुंचने के लिए बहुत बुरा वक़्त चुना था। और मुझे तो यह भी शक है कि अगर वह अपने साथ कुछ पौंड चाय और कपड़े का थान भी लाया होता तब भी उसका स्वागत बड़े तपाक से न किया गया होता। सुपरिंटेंडेंट कला और वाणिज्य दोनों ही के सभी रूपों का बहुत बड़ा प्रशंसक था, लेकिन सबसे ज़्यादा पसंद उसे सरकारी बैंक के नोट थे। "यह चीज है जो मुझे पसंद है," वह कहा करता था। "इनमें से किसी का भी जवाब नहीं है: आपको खाना इसे नहीं खिलाना पड़ता, जगह यह बहुत कम घेरता है, जेब में इसके लिए हमेशा जगह रहती है, और अगर गिर पड़े तो टूटता नहीं।"

सुपरिंटेंडेंट बड़ी बेरुख़ी से कोवालेव से मिला और बोला कि खाने के बाद का वक़्त छानबीन करने के लिए नहीं होता, ख़ुद क़ुदरत ने यह क़ानून बनाया है कि पेट-भर खाना खाने के बाद आदमी को थोड़ा आराम करना चाहिये (जिससे कालिजिएट असेसर को अंदाज़ा हो गया कि पुलिस सुपरिंटेंडेंट पुराने ज्ञानियों से भी परिचित था); उसने यह राय ज़ाहिर की कि किसी भी बा-इज़्ज़त आदमी को इतनी बेरहमी से उसकी नाक से अलग नहीं किया जा सकता और यह कि इस दुनिया में भांति-भांति के मेजर होते हैं, कुछ के पास तो ढंग का अंडरवियर भी नहीं होता और वे बेहद बदनाम जगहों में जाते रहते हैं।

यह, बदक़िस्मती से, कोवालेव की दुखती हुई रग थी! हम यह बता दें कि कालिजिएट असेसर बहुत तुनकमिज़ाज आदमी था। ख़ुद उसके बारे में चाहे जो कह दिया जाता उसे वह बर्दाश्त कर लेता, लेकिन अपने ओहदे या पद का अपमान वह कभी बर्दाश्त नहीं कर सकता

था। उसकी दलील यह भी थी कि नाटकों के अभिनय में मातहतों के बारे में तो कुछ भी कहने की इजाज़त दी जा सकती है, लेकिन स्टाफ़ अफसरों पर कोई चोट नहीं की जा सकती। सुपरिटेंडेंट के इस तरह उसका स्वागत करने पर उसे ऐसा धक्का लगा कि उसने अपना सिर हिलाया और अपनी बाहें फैलाकर बड़ी गरिमा के साथ एलान किया: "मुझे अफसोस है कि आपके मुह से ऐसी जली-कटी बातें सुनने के बाद मैं और कुछ कह ही नहीं सकता" और यह कहकर वह चला गया।

वह अपने घर लौट आया, उससे ठीक से खड़ा भी नहीं हुआ जा रहा था। *शाम का झुटपुटा छाने लगा था। इस नयी और व्यर्थ खोज* के बाद उसे अपना फ्लैट सूना और बिल्कुल नीरस लग रहा था। जब वह ड्योढ़ी में घुसा तो उसने देखा कि उसका अर्दली इवान चमड़े की गद्दी कोच पर लेटा मुह भर-भरकर थूक निशाना लगाकर छत पर एक खास लक्ष्य की ओर उछाल रहा था, और उस लक्ष्य पर निशाना लगाने में उसे काफी सफलता भी मिल रही थी। उस आदमी की इस काहिली पर कालिजिएट असेसर को बेहद गुस्सा आया, अपनी टोपी से उसके सिर पर ज़ोर की धप मारते हुए *उसने चिल्लाकर कहा* "तू हमेशा वाहियात बातों में वक्त बर्बाद करता रहता है, सुअर कहीं का!"

इवान फौरन उछलकर खड़ा हो गया और लबादा उतारने में मदद देने के लिए झपटकर अपने मालिक की बगल में पहुच गया।

अपने कमरे में पहुचकर मेजर निढाल होकर उदास भाव से एक आरामकुर्सी पर ढेर हो गया और कुछ आहें भरने के बाद आखिरकार बोला

"हे भगवान, मेरे भगवान! मैंने ऐसा क्या किया था जो मुझे यह सजा मिली? अगर मेरी बाह या टाग कट गयी होती तो कहीं अच्छा था, या मेरे कान ही कट गये होते – तकलीफ तो होती लेकिन कम से कम बर्दाश्त तो की जा सकती थी, लेकिन नाक के बिना तो आदमी कुछ रह ही नहीं जाता न इसान रह जाता है न जानवर, बल्कि भगवान ही जाने क्या हो जाता है! बस वह किसी तरह का कूड़ा हो जाता है जिसे खिड़की के बाहर फेंक दिया जाये! और अगर लड़ाई में या किसी द्वंद्व-युद्ध में उसे मुझसे छीन लिया जाता, या अगर

अपनी किसी ग़लती की वजह से मैंने उसे खो दिया होता, तव भी कोई वात थी; लेकिन उसके ग़ायव हो जाने की कोई वजह ही नहीं थी, कोई तुक ही नहीं थी, वस यों ही!.. लेकिन नहीं, ऐसा नहीं हो सकता," उसने एक क्षण सोचने के वाद कहा। "नाक का इस तरह ग़ायव हो जाना विल्कुल अनहोनी वात है, क़तई नामुमकिन है। या तो मैं सपना देख रहा हूं, या यह मेरा वहम है; शायद पानी के वजाय मैंने वह वोद्का पी ली होगी जो मैं दाढ़ी वनाने के वाद अपने चेहरे पर मलता हूं। उस वुड्ढ़ इवान ने उसे हटाया नहीं होगा और मैंने उसे उठा लिया होगा।"

इस वात का पक्का यक़ीन कर लेने के लिए कि उसने पी नहीं रखी मेजर ने इतने ज़ोर से अपने चुटकी काटी कि वह दर्द के मारे चिल्ला उठा। इस पीड़ा से उसे पूरा विश्वास हो गया कि वह पूरी तरह जागा हुआ है। वह चुपके से दवे पांव आईने के पास गया और आंखें सिकोड़कर उसने इस उम्मीद से देखा कि उसकी नाक अपनी जगह वापस आ गयी होगी; लेकिन आईने में अपनी सूरत देखकर वह उछलकर पीछे हट गया और वेचैन होकर चिल्लाया: "कैसा हास्यास्पद दृश्य है!"

वात सचमुच समझ के वाहर थी। ऐसा तो था नहीं कि कोई वटन, या चांदी का कोई चम्मच, घड़ी या उस तरह की कोई चीज़ खो गयी हो; लेकिन नाक का खो जाना, और सो भी ख़ुद उसके अपने फ़्लैट में!.. मेजर कोवालेव ने सारी परिस्थितियों पर अच्छी तरह सोच-विचार करने के वाद फ़ैसला किया कि इस सारे मामले के लिए क़सूरवार कोई दूसरा नही वल्कि सिर्फ़ स्टाफ़ अफ़सर पोद्तोचिन की वीवी थी, जो चाहती थी कि वह उसकी वेटी से शादी कर ले। दरअसल उसे उस लड़की से इश्क़ लड़ाने में तो मज़ा आता था, लेकिन कोई पक्का वादा करने से वह साफ़ कतरा जाता था। जव स्टाफ़ अफ़सर की वीवी ने खुले शब्दों में एलान कर दिया कि वह अपनी वेटी की शादी उसके साथ करना चाहती है तो वह वहुत-सी चिकनी-चुपड़ी वातों की वौछार करके साफ़ वच निकला था; उसने कह दिया था कि अभी वह वहुत कम-उम्र है, कि उसे अभी पांच साल नौकरी और करनी होगी तव कहीं जाकर वह वयालीस साल की सही उम्र को पहुंचेगा। और इसलिए स्टाफ़ अफ़सर की वीवी ने ज़ाहिर-वज़ाहिर

बदला लेने के इरादे से, उसे तबाह कर देने का फैसला किया था और इस काम के लिए चुडैलों की मदद का सहारा लिया था, क्योंकि यह बात तो सोची भी नही जा सकती थी कि उसकी नाक काट ली गयी होगी उसके कमरे मे कोई आया नही था, उसके हज्जाम इवान याकोव्लेविच ने आखिरी बार उसकी दाढी बुध को बनायी थी और बुधवार तथा गुरुवार के पूरे दिन भी उसकी नाक सही-सलामत थी,—यह बात उसे अच्छी तरह याद थी और उसे इस बात का पक्का यकीन था; और फिर, उसे दर्द भी तो होना चाहिये था, और इस बात का तो कोई सवाल ही नही है कि घाव इतनी जल्दी भर जाता और बिल्कुल चपाती की तरह चिकना हो जाता। वह योजनाए बनाने लगा क्या वह बाकायदा सरकारी कार्रवाई के जरिये स्टाफ अफसर की बीवी को अदालत मे ले जाकर खडा कर दे या जाकर उससे खुद मिले और उसके मुंह पर उस पर इल्जाम लगाये। दरवाजे की दरारो मे से रोशनी ने आकर विचारो के इस क्रम को भग कर दिया, और उसे सूचना दी कि इवान ने सामनेवाले कमरे मे मोमबत्ती जला दी है। थोडी ही देर मे इवान खुद अपने सामने मोमबत्ती लिये हुए आ गया और पूरे कमरे मे रोशनी फैल गयी। कोवालेव की पहली प्रतिक्रिया यह हुई कि झट से रूमाल लेकर उस खाली जगह को ढक ले, जहा अभी कल तक नाक हुआ करती थी, ताकि वह बौडम नौकर मुह बाये खडा देखता न रहे।

इवान अभी अदर आया ही था कि बैठक मे कोई अजनबी आवाज यह पूछती हुई सुनायी दी "क्या कालिजिएट असेसर कोवालेव यही रहते हैं?"

"अदर आ जाइये। मेजर कोवालेव आपकी खिदमत मे हाजिर हैं," कोवालेव ने लपककर दरवाजा खोलते हुए कहा।

दरवाजे से एक पुलिसवाला अदर आया, जिसके गलमुच्छे न बहुत हल्के रग के थे, न बहुत गहरे रग के और जिसके गाल काफी भरे-भरे थे—यह वही पुलिस का अफसर था जो हमे इस कहानी के शुरू मे इसाकियेव्स्की पुल पर मिला था।

"क्या मेरा यह ख्याल सही है कि हुजूर की नाक गुम हो गयी है?"

"बिल्कुल सही है।"

"अब उसका पता चल गया है।"

"क्या कह रहे हैं आप?" मेजर कोवालेव चिल्लाया। फिर ख़ुशी से अवाक् होकर वह अपने सामने खड़े हुए पुलिसवाले को फटी-फटी आंखों से घूरता रहा, जिसके भरे-भरे होंठ और गाल मोमबत्ती की तेज़ रोशनी में नाचते हुए मालूम हो रहे थे। "उसे कैसे पाया आपने?"

"बिल्कुल इत्तफ़ाक़ से: वह भागने ही वाली थी कि हमने उसे पकड़ लिया। वह स्टेज कोच पर बैठ चुकी थी और रीगा जा रही थी। उसके पास किसी अफ़सर के नाम से एक पुराना पासपोर्ट था। एक और अजीब बात यह है कि पहले मैं उसे आदमी समझा था। लेकिन ख़ुशक़िस्मती से मेरा चश्मा मेरे पास था और मैंने फ़ौरन देख लिया कि वह तो नाक है। बात यह है कि मेरी नज़र कमज़ोर है और अगर आप ठीक मेरे सामने भी खड़े हों तो मैं सिर्फ़ इतना देख पाऊंगा कि आपके एक चेहरा है लेकिन मैं नाक या दाढ़ी जैसी चीज़ अलग से नहीं पहचान पाऊंगा। मेरी सास भी, मेरा मतलब है मेरी बीवी की मां भी, कुछ नहीं देख पातीं।"

कोवालेव ख़ुशी के मारे फूले नहीं समा रहा था। "लेकिन वह है कहां? कहा है आख़िर? मैं अभी चलता हूं।"

"आपको परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। यह सोचकर कि आपको उसकी ज़रूरत होगी मैं उसे अपने साथ ही लेता आया हूं। और अजीब बात यह है कि इस मामले में सबसे बड़ा अपराधी वोज़्नेसेंस्काया स्ट्रीट का वह पाजी हज्जाम है जो इस वक़्त थाने में बैठा हुआ है। मुझे बहुत दिन से उस पर शक था कि वह शराबी और चोर है; अभी दो ही दिन पहले की बात है कि उसने एक दुकान से एक दर्जन बटन उड़ा लिये थे। आपकी नाक बिल्कुल वैसी ही है जैसी कि वह आपके जिस्म से अलग होने के वक़्त थी।"

यह कहकर पुलिसवाले ने अपनी जेब में हाथ डालकर काग़ज़ में लिपटी हुई नाक निकाली।

"वही है!" कोवालेव ख़ुशी से चिल्लाया। "बिल्कुल वही! आप मेरे साथ चाय पीजिये।"

"बड़ी मेहरबानी आपकी, लेकिन मैं रुक नहीं सकता: यहां से मुझे सीधे जेलख़ाने जाना है... क़ीमतें तो भयानक तेज़ी से बढ़ती जा रही हैं... सास हमारे साथ ही रहती हैं—मेरा मतलब है, मेरी बीवी की मां, और फिर बच्चे भी हैं; सबसे बड़ावाला बहुत होनहार है:

बेहद तेज लड़का है लेकिन हमारे पास उसे पढ़ाने के लिए एक कोपेक भी नहीं है ..."

कोवालेव फौरन समझ गया कि उसका इशारा किस ओर है, और उसने मेज़ पर से दस रूबल का एक नोट उठाकर पुलिसवाले के हाथ में रख दिया, पुलिसवाला बहुत झुककर सलाम करते हुए दरवाज़े से बाहर निकल गया और अगले ही क्षण कोवालेव को सड़क पर उसकी आवाज़ सुनायी दी, वह किसी बुद्धू की मरम्मत कर रहा था जो अपनी गाड़ी सड़क की पटरी पर चढ़ा लाया था।

पुलिसवाले के चले जाने के बाद कालिजिएट असेसर कुछ क्षण तक स्तब्ध बैठा रहा, अचानक भाग्य के इस तरह पलटा खाने पर वह इतना खुश था कि काफी समय बीत जाने के बाद ही उसे फिर से अपने चारों ओर की चीज़ों का आभास हुआ। आखिरकार, उसने बड़ी सावधानी से अपनी बरामद की हुई नाक को दोनों हाथों में लेकर एक बार फिर उसे बहुत गौर से देखा।

"वही है, बिल्कुल वही!" वह बोला। "बायीं तरफ वही फुंसी है जो कल निकल आयी थी।"

खुशी के मारे मेजर की हंसी फूटी पड़ रही थी।

लेकिन इस ज़िंदगी में कोई चीज़ बहुत देर तो रहती नहीं, दूसरे ही मिनट हमारा हर्षोन्माद उतना तीव्र नहीं रह जाता जितना पहले मिनट में होता है, तीसरे मिनट में उसकी लहर बिल्कुल उतर जाती है और हमारी आत्मा अपनी सामान्य स्थिति में आ जाती है, ठीक वैसे ही जैसे ककरी फेंकने पर पैदा हो जानेवाली छोटी-छोटी लहरें थोड़ी देर बाद अपने चारों ओर के समतल पानी में विलीन हो जाती हैं। कोवालेव सोचने लगा और उसने महसूस किया कि मामला अभी पूरी तरह तै नहीं हुआ है नाक मिल तो गयी थी, लेकिन उसे अभी चिपकाना था, उसे उसकी असली जगह पर वापस लगाना था।

"और अगर वह न चिपकी तो?"

अपने आप से यह सवाल करते ही मेजर के चेहरे का रंग उड़ गया।

बौखलाकर वह सिंगार-मेज़ की ओर लपका और उसने आईना अपने और पास खींच लिया, इस बात का पक्का यकीन कर लेने के लिए कि वह नाक सीधी ही लगाये। उसके हाथ कांप रहे थे। बड़ी

सावधानी से उसने उसी जगह पर उसे लगाया जहां वह पहले हुआ करती थी। ग़ज़ब हो गया! नाक किसी तरह चिपक ही नहीं रही थी!.. अपने मुंह के पास लाकर उसने उसे अपनी सांस से गरमाया और एक बार फिर उसे अपने दोनों गालों के बीच की सपाट जगह पर रखा; लेकिन नाक थी कि एक क्षण को भी अपनी जगह टिकती ही नहीं थी।

"बस, बहुत हो गया! टिकी रह, बेवक़ूफ़!" उसने आदेश दिया। लेकिन नाक लकड़ी की तरह सख़्त थी और वह एक अजीब आवाज पैदा करती हुई मेज पर गिरी, मानो काग की बनी हुई हो। मेजर का चेहरा रह-रहकर फड़कने लगा। "चिपकना तो इसे जरूर चाहिये," उसने डरकर कहा। लेकिन जितनी बार उसने उसे उसकी जगह पर लगाया, हर बार उसकी कोशिश बेकार रही।

उसने इवान को बुलाकर डाक्टर के पास भेजा, जो उसी मकान में सबसे नीचे की मंजिल पर सबसे बढ़िया फ़्लैट किराये पर लेकर रहता था। यह डाक्टर देखने में बहुत प्रतिष्ठित आदमी था, उसके शानदार गलमुच्छे बिल्कुल कोयले जैसे काले थे और उसकी बीवी बहुत सलोनी, फूल जैसी ख़ूबसूरत थी; वह सवेरे ताजे सेब खाता था, रोज़ सुबह वह कम से कम पौन घंटे तक ग़रारे करता था और पांच अलग-अलग क़िस्म के ब्रशों से अपने दांत साफ़ करता था। डाक्टर फ़ौरन आ पहुंचा। यह पूछने के बाद कि इस दुर्घटना को हुए कितना समय बीता है, उसने ठोड़ी पकड़कर मेजर कोवालेव का सिर ऊपर उठाया और अपना अंगूठा इतने ज़ोर से उसके चेहरे के उस हिस्से पर दबाया जहां पहले नाक हुआ करती थी कि मेजर तिलमिला उठा और उसका सिर जाकर दीवार से टकरा गया। डाक्टर ने कहा कि कोई बात नहीं और उससे दीवार के पास से हट आने को कहा। इसके बाद उसने उससे अपना सिर पहले दाहिनी ओर झुकाने को कहा और उस जगह को टटोलने के बाद जहां नाक हुआ करती थी, बोला: "हुं!" फिर उसने उससे अपना सिर बायीं ओर झुकाने को कहा और एक बार फिर "हुं!" कहकर अपना अंगूठा ज़ोर से गड़ाया, जिससे तिलमिलाकर मेजर कोवालेव अपना सिर उस घोड़े की तरह झटकने लगा जिसके दांतों की जांच की जा रही हो। इस जांच के बाद डाक्टर ने सिर हिलाकर कहा:

"नहीं, यह काम नहीं हो सकता। बेहतर यही होगा कि उसे ऐसे

ही रहने दीजिये, नहीं तो मामला और बिगड़ जायेगा। इसे चिपकाया तो जा सकता है, और मैं यह काम अभी कर सकता हूं, लेकिन मैं यकीन दिलाता हूं कि आपके लिए वह और बुरा ही होगा।"

"यह भी अच्छी कही! और नाक के बिना मैं रहूंगा कैसे?" कोवाल्येव ने विरोध किया। "अब जो हालत है उससे बुरी तो हो नहीं सकती। भगवान ही जानता है कि यह क्या माजरा है! ऐसी शर्मनाक हालत में मैं कहां अपना मुंह दिखाऊं? मैं सबसे अच्छे किस्म के लोगों के बीच उठता-बैठता हूं, और आज ही रात को मुझे दो दावतों में जाना है। मेरे बहुत-से जाननेवाले हैं स्टेट काउंसिलर चेख्तार्योव की बीवी, पोद्तोचिना, स्टाफ अफसर की बीवी हालांकि उसकी इस हरकत के बाद मैं अब उससे कोई वास्ता नहीं रखूंगा, अलावा पुलिस की मार्फत। मैं आपके हाथ जोड़ता हूं," उसने गिड़गिड़ाकर कहा। "क्या यह काम बिल्कुल हो ही नहीं सकता? इसे किसी भी तरह चिपका दीजिये, बला से बहुत टिकाऊ न भी हो, बस किसी तरह टिकी रहे, खतरनाक मौकों पर मैं इसे अपने हाथ का सहारा देकर रोके भी रख सकता हूं। मैं यह भी बता दूं कि नाचता मैं हूं नहीं इसलिए लापरवाही से झोंका खाने की वजह से इसके गिर पड़ने का कोई डर नहीं है। आप यकीन कीजिये कि मैं आपके आने का पूरी तरह शुक्राना अदा करूंगा, अपनी हैसियत भर "

"यकीन मानिये," डाक्टर ने ऐसी आवाज में कहा जो न बहुत ऊंची थी न बहुत धीमी, लेकिन उसमें बेहद आग्रह और आकर्षण था "मैं निजी फायदे की नीयत से कभी किसी का इलाज नहीं करता। यह मेरे उसूल और मेरे हुनर के खिलाफ है। यह सच है कि जब मैं किसी के यहां जाता हूं तो फीस लेता हूं, लेकिन सिर्फ इसलिए कि मेरे इंकार करने से मेरे मरीज कहीं बुरा न मान जायें। जाहिर है, मैं आपकी नाक लगा सकता हूं, लेकिन अगर आपको मेरी बात का भरोसा नहीं है तो मैं अपनी इज्जत की कसम खाकर कहता हूं कि इसका नतीजा आपके लिए और भी बुरा होगा। बेहतर यही होगा कि कुदरत ने जो कुछ किया है उस पर भरोसा करके उसे मान लीजिये। बार-बार ठंडे पानी से मुंह धोया कीजिये, और मैं यकीन दिलाता हूं कि नाक के बिना भी आप उतने ही तनदुरुस्त रहेंगे जितने कि नाक होने पर होते। और मैं आपको यह सलाह दूंगा कि अपनी नाक स्पिरिट की

एक अचारी में संभालकर रख दीजिये या इससे भी अच्छा यह होगा कि उसमें दो बड़े चम्मच भरकर मिर्चोंवाली वोद्का और गरम सिरका भी डाल दीजिये – तब आपको उसकी बहुत अच्छी क़ीमत मिल जायेगी। अगर दाम बहुत ज़्यादा न हुए तो मैं ख़ुद ख़रीद लूंगा।"

"नहीं, नहीं! मैं उसे किसी क़ीमत पर नहीं बेचूंगा!" मेजर कोवालेव घोर निराशा से चिल्लाया। "मैं उसे सड़ जाने दूंगा लेकिन बेचूंगा नहीं!"

"माफ़ कीजियेगा," डाक्टर ने विदा लेते हुए कहा, "मैं तो बस आपकी कुछ सेवा करना चाहता था... ख़ैर, ऐसे ही सही! बहरहाल, आप यह नहीं कह सकते कि मैंने कोशिश नहीं की।"

यह कहकर डाक्टर बड़ी गरिमा के साथ कमरे के बाहर चला गया। कोवालेव ने उसकी सूरत तक नहीं देखी थी, और स्तब्धता जैसी अपनी हालत में उसने उसके काले टेल-कोट की आस्तीनों में से झांकते हुए बर्फ़ के गालों जैसे सफ़ेद कफ़ ही देखे थे।

अगले ही दिन उसने बाक़ायदा शिकायत दर्ज कराने से पहले स्टाफ़ अफ़सर की बीवी को ख़त लिखकर यह पूछने का फ़ैसला किया कि जिस चीज़ का वह जायज़ हक़दार था वह उसको वापस कर देने के लिए वह राज़ी होंगी कि नहीं। ख़त इस तरह था:

"आदरणीय मादाम अलेक्सांद्रा ग्रिगोर्येव्ना,

आपके आचरण की विचित्रता समझने में मैं असमर्थ हूं। आप यह जान लीजिये कि इस तरह की हरकतों से आपका कोई फ़ायदा नहीं होगा और आप किसी भी तरह मुझे इस बात के लिए मजबूर नहीं कर सकेंगी कि मैं आपकी बेटी से शादी कर लूं। मेरी बात का विश्वास कीजिये, मुझे अच्छी तरह मालूम है कि मेरी नाकवाला यह सारा मामला क्या है और मैं जानता हूं कि इस पूरे मामले का कर्त्ता-धर्त्ता आपके अलावा कोई और नहीं है। उसका अचानक अपने उचित स्थान से अलग हो जाना, उसका भाग जाना और भेस बदल लेना, पहले एक सरकारी अफ़सर के रूप में और फिर ख़ुद अपने रूप में, ये सारी बातें जादू-टोने की उन हरकतों के नतीजों के अलावा कुछ भी नहीं हैं, जो ख़ुद आपने या ऐसी ही कलाओं का अभ्यास करनेवाले दूसरे लोगों ने की हैं। जहां तक मेरा सवाल है, मैं आपको यह चेतावनी दे देना अपने लिए ज़रूरी समझता हूं कि अगर मेरी वह नाक, जिसका ऊपर

उल्लेख किया गया है, आज अपने उचित स्थान पर वापस न आ गयी तो मै कानून का सरक्षण प्राप्त करने और उसकी शरण लेने पर मजबूर हो जाऊगा।

तदपि आपके प्रति हार्दिकतम सम्मान की भावना रखते हुए, मै हूं आपका तुच्छ सेवक

प्लातोन कोवालेव।"

"आदरणीय श्रीमान प्लातोन कुज़मीच,

मै आपका पत्र पाकर अत्यधिक चकित हुई। मै बिल्कुल स्पष्ट कहू कि उसमें कोई सर्वथा अप्रत्याशित बात थी, खास तौर पर आपने अकारण जो निराधार लाछन लगाये हैं उनमें। मै आपको विश्वास दिलाती हू कि आपने जिस अफसर का उल्लेख किया है वह मेरे घर कभी नही आया, न भेस बदलकर और न अपने असली रूप मे। अलबत्ता, फिलीप इवानोविच पोताचिकोव हमसे मिलने कई बार आये है। और यह तो सच है कि उन्होंने मेरी बेटी से शादी करने की इच्छा प्रकट की थी, और वह स्वय बहुत अच्छे, सतुलित स्वभाव के और बहुत विद्वान आदमी हैं, लेकिन मैंने कभी उनका उत्साह नही बढाया। आपने किसी नाक का भी जिक्र किया है। अगर इससे आपका मतलब यह है कि मै, एक तरह से, आपको नाक चढाकर देखती हू, अर्थात् आपको मैंने छूटते ही ठुकरा दिया है, तो मुझे आश्चर्य है कि आपने स्वय यह बात उठायी है, क्योकि, जैसा कि आप जानते हैं, मेरी राय ठीक इसकी उल्टी थी, और अगर आप अब भी मेरी बेटी से शादी करने की इच्छा उचित ढग से प्रकट करे तो मै तुरत आपकी प्रार्थना स्वीकार कर लेने को तैयार हू, क्योकि यही सदा से मेरी हार्दिकतम इच्छा का लक्ष्य रहा है, जिस आशा के साथ मै हू सदा आपकी सेवा के लिए उपस्थित

अलेक्सान्द्रा पोद्तोचिना।"

"नही," कोवालेव ने पत्र रखते हुए कहा। "वह बिल्कुल दोषी नही है। वह हो ही नही सकती! जो किसी अपराध का दोषी हो वह ऐसा खत लिख ही नही सकता!" कालिजिएट असेसर इन सब बातो का बहुत जानकार था क्योकि काकेशस मे नौकरी करते समय उसने

कुछ मुक़द्दमों की कार्रवाई में हिस्सा लिया था। "आखिर यह सब कुछ हुआ कैसे? भगवान ही जानता है!" आख़िरकार उसने निराशा से अपने हाथ ढीले छोड़ते हुए कहा।

इसी बीच इस असाधारण घटना के बारे में अफ़वाहें राजधानी में फैल गयी थीं, और, जैसा कि आम तौर पर होता है, उनमें कुछ मिर्च-मसाला भी लगा दिया गया था। उन दिनों लोगों के दिमाग़ हर प्रकार की असाधारण घटनाओं पर सहज ही विश्वास कर लेने को तैयार रहते थे: इससे कुछ समय पहले सारे शहर पर चुंबकत्व के बारे में प्रयोग करने का भूत सवार था। इसके अलावा हाल ही में कोन्यूशेन्नी स्ट्रीट में नाचनेवाली कुर्सियों के बारे में एक क़िस्से की घर-घर चर्चा थी; इसलिए इसमें कोई ताज्जुब की बात नहीं थी कि जल्दी ही यह अफ़वाह फैल गयी कि कालिजिएट असेसर कोवालेव की नाक रोज़ ठीक तीन बजे नेव्स्की एवेन्यू पर टहलने निकलती है। रोज़ उत्सुक तमाशबीनों की बहुत बड़ी भीड़ वहां जमा होने लगी। किसी ने कहा कि नाक जुंकर की दुकान में देखी गयी थी, और दुकान के चारों ओर ऐसी ज़बर्दस्त भीड़ जमा हो गयी कि पुलिस बुलवानी पड़ी। एक सूझ-बूझवाले आदमी ने, जिसकी सूरत-शक्ल में शरीफ़ोंवाली हर बात थी, यहां तक कि उसने गलमुच्छे भी रख छोड़े थे, और जो थियेटर के फाटक पर तरह-तरह की सूखी मिठाइयां बेचता था, ख़ास तौर पर कुछ बहुत बढ़िया लकड़ी की मज़बूत बेंचें बनवा लीं जिन पर वह पब्लिक के उत्सुक सदस्यों को अस्सी कोपेक में खड़े होकर तमाशा देखने के लिए जगह देता था। एक बहुत बा-इज़्ज़त कर्नल साहब अपने घर से ख़ास तौर पर बहुत सवेरे निकले और बड़ी मुश्किल से भीड़ को चीरते हुए वहां जा पहुंचे; लेकिन उनको बहुत झुंझलाहट हुई जब उन्होंने देखा कि दुकान की खिड़की में नाक नहीं बल्कि एक मामूली ऊनी जर्सी सजी हुई थी और एक तस्वीर लगी थी जिसमें एक लड़की को अपना लंबा मोज़ा ठीक करते हुए दिखाया गया था और उसे पेड़ के पीछे से एक छैला देख रहा था, जो बांकी वास्कट पहने था और जिसकी ठोड़ी पर छोटी-सी दाढ़ी थी—यह तस्वीर उसी जगह दस साल से ज़्यादा से टंगी हुई थी। वह वहां से झल्लाकर चले आये और नाराज़ होकर बोले: "आखिर लोगों को इस तरह की मसखरेपन की और बेबुनियाद अफ़वाहें फैलाने की इजाज़त ही क्यों दी जाती है?"

इसके बाद एक अफवाह यह फैली कि मेजर कोवालेव की नाक नेव्स्की एवेन्यू पर नही बल्कि तव्रीचेस्की गार्डन मे टहलने जाती है, और यह कि वह बहुत अर्से से ऐसा करती रही है; और यह भी कि जब फारस के राजदूत खुसरो मिर्ज़ा वहा रहते थे तो उन्हे कुदरत का यह अनोखा अजूबा देखकर बेहद ताज्जुब हुआ था। सर्जिकल अकादमी के कुछ छात्र इस जगह के लिए रवाना हुए। एक कुलीन सम्मानित महिला ने पार्क के वार्डन को खत लिखकर खास फरमाइश की कि वह उनके बच्चो को यह अद्भुत घटना दिखा दे, और अगर हो सके तो कम उम्र लोगो के लिए शिक्षाप्रद और उपदेशमूलक व्याख्या भी प्रदान करे।

हर दावत मे देखे जानेवाले और समाज मे मिलने-जुलनेवाले वे सभी लोग, *जिन्हे औरतो का मन बहलाने मे बहुत मज़ा आता है*, इन तमाम बातो से बेहद खुश हुए क्योकि मनोरजन के उनके सारे साधन बिल्कुल खत्म हो चुके थे। बहुत ही थोडे-से बा-इज़्ज़त और कानून के पाबद शहरी बेहद नाराज़ थे। एक साहब ने तो झल्लाकर यहा तक कहा कि उनकी समझ मे नही आता कि जागृति के वर्तमान युग मे इस तरह की मसखरेपन की मनगढत बाते लोगो मे फैल कैसे जाती हैं, और यह कि उन्हे इस बात पर हैरत थी कि सरकार इस मामले की ओर कोई ध्यान क्यो नही दे रही है। यह सज्जन स्पष्टत नागरिको के उस वर्ग के थे जो चाहते है कि सरकार हर बात मे दखल दे, यहा तक कि अपनी बीवियो के साथ उनके रोज़मर्रा के झगडो मे भी। इसके बाद लेकिन यहा पहुचकर इस घटना पर कुहरे की एक चादर-सी पडी हुई है, और इसके बाद जो कुछ हुआ उसका कुछ भी पता नही है।

३

ज़िदगी मे बेहद ऊटपटाग बाते होती रहती है। कभी-कभी तो वे सभावना के किसी भी कायदे-कानून की कसौटी पर खरी नही उतरती एक दिन हुआ यह कि वही नाक जो स्टेट काउसिलर का भेस बनाये गाडी पर घूमती फिर रही थी और जिसने शहर मे इतना तहलका मचा रखा था फिर प्रकट हो गयी, मानो कुछ हुआ ही न हो अपने

उचित स्थान पर, यानी मेजर कोवालेव के दोनों गालों के ठीक बीचों-बीच। यह घटना सात अप्रैल को हुई। आंख खुलने पर मेजर कोवालेव की नज़र इत्तफ़ाक़ से आईने पर जो पड़ी तो देखता क्या है – नाक! उसने उसे धर दबोचा – हां, उसकी नाक ही थी! "या-हू!" कोवालेव खुश होकर चिल्लाया और अगर इवान के अचानक वहां आ जाने से उसका जोश ठंडा न पड़ गया होता तो खुशी के मारे वह वहीं कमरे में नंगे पांव नाचने लगता। उसने फ़ौरन अपना मुंह-हाथ धोने का सामान मंगवाया, और मुंह-हाथ धोकर एक बार फिर आईने में अपनी सूरत देखी: नाक मौजूद थी! तौलिये से मुंह पोंछकर उसने एक बार फिर आईना देखा: वह वहीं मौजूद थी – उसकी नाक!

"ज़रा, इवान, इधर आकर देखना तो, शायद मेरी नाक पर फुंसी निकल आयी है," उसने कहा और फिर मन ही मन सोचा: अगर इवान ने यह कह दिया तो क्या होगा: "कहीं नहीं, साहब, फुंसी तो क्या नाक ही नहीं है!"

लेकिन इवान ने कहा: "कहीं नहीं, कोई भी फुंसी नहीं है, आपकी नाक तो बिल्कुल उबले अंडे की तरह साफ़ है!"

"बाज़ी मार ली!" मेजर ने मन ही मन कहा और चुटकी बजायी। उसी वक़्त हज्जाम इवान याकोव्लेविच ने दरवाज़े में से झांककर देखा, लेकिन उस बिल्ली की तरह सहमे हुए जिसकी अभी-अभी गोश्त की बोटी चुराने पर पिटाई हो चुकी हो।

"पहले तो यह बताओ कि तुम्हारे हाथ साफ़ हैं?" हज्जाम अभी थोड़ी दूर ही था कि कोवालेव ने चिल्लाकर पूछा।

"हैं तो।"

"झूठा कहीं का!"

"क़सम खाकर कहता हूं, साहब, बिल्कुल साफ़ हैं।"

"साफ़ न हुए तो तेरी ख़ैर नहीं है।"

कोवालेव बैठ गया। इवान याकोव्लेविच ने उसकी गर्दन में तौलिया लपेट दिया और पल-भर में ब्रश की मदद से उसकी सारी दाढ़ी और गालों के कुछ हिस्सों को फेंटी हुई क्रीम जैसे झाग से पोत दिया, जिस तरह की क्रीम बड़े-बड़े व्यापारियों के घरों में जन्मदिन की पार्टियों में मेहमानों के सामने पेश की जाती है।

"मुझे तो गुमान भी नहीं हो सकता था!" नाक को देखकर

इवान याकोव्लेविच ने मन ही मन कहा, और फिर अपना सिर घुमाकर नाक को बगल की ओर से देखा: "ज़रा देखो तो! यह बात भला कौन सोच सकता था!" वह नाक को गौर से देखकर कहता रहा। आखिरकार उसने नाक का सिरा पकड़ने की तैयारी में इतनी नरमी से और इतनी सावधानी के साथ अपनी दो उंगलियां उठायीं कि सोचा भी नहीं जा सकता था। इवान याकोव्लेविच का यही तरीका था।

"बस, बस, ज़रा सम्भलकर!" कोवालेव चिल्लाया।

यह सुनते ही इवान याकोव्लेविच ने अपना हाथ नीचे कर लिया, वह इतना डर गया और सहम गया जैसा इससे पहले अपनी ज़िंदगी में कभी नहीं डरा था। आखिरकार, कुछ सावधानी से उसने मेजर की ठोड़ी के नीचे उस्तुरा चलाना शुरू किया, और हालांकि उसके लिए अपने गाहक की नाक पकड़े बिना दाढ़ी बनाना ज़रा भी आसान या सुविधाजनक नहीं था, फिर भी उसने सारी बाधाओं पर काबू पाने के लिए किसी तरह अपना खुरदुरा अंगूठा मेजर के गाल और निचले मसूढ़े पर अड़ाकर काम चला लिया और उसकी दाढ़ी बनाने का काम पूरा कर दिया।

यह काम निबट जाने के बाद कोवालेव ने जल्दी-जल्दी कपड़े पहने, एक गाड़ी बुलवायी और उस पर बैठकर सीधा पेस्ट्री की दुकान में गया। दरवाज़े पर से ही वह चिल्लाया "वेटर, एक प्याला चाकलेट!" और फौरन आईने की तरफ लपका नाक मौजूद थी! बहुत खुश होकर वह पीछे मुड़ा और आंखें सिकोड़कर उसने दो अफसरों पर व्यंगभरी नज़र डाली, जिनमें से एक की नाक वास्कट के बटन से बड़ी नहीं थी। इसके बाद वह सीधा उस विभाग के दफ्तर की ओर चल पड़ा जहां वह नायब-गवर्नर के पद के लिए, और अगर वह न मिल सके तो प्रशासक के पद के लिए, बातचीत कर रहा था। स्वागत-कक्ष में से होकर जाते हुए उसने कनखियों से आईने में देखा नाक अपनी जगह पर मौजूद थी। फिर वह एक और कालिजिएट असेसर से मिलने गया, जो उसी की तरह मेजर था और फिकरे चुस्त करने में बहुत उस्ताद था, जिसकी चुटीली बातों के जवाब में आम तौर पर वह इतना ही कहता था "बस, बस, अब डंक मारने बंद करो!" रास्ते में उसने सोचा "मुझे देखते ही अगर मेजर हंसते-हंसते लोट-पोट न हो गया तो यह इस बात का पक्का सबूत होगा कि सब कुछ

ठीक-ठाक है और हर चीज़ अपनी जगह पर है।" लेकिन कालिजिएट असेसर ने पलक तक नहीं झपकायी। "बहुत उम्दा बात है, लानत है हर चीज़ पर!" कोवालेव ने अपने मन में सोचा। रास्ते में उसे स्टाफ़ अफ़सर की बीवी पोद्‌तोचिना अपनी बेटी के साथ मिल गयीं; उसने झुककर उन्हें सलाम किया और उन दोनों ने ख़ुशी से चिल्लाकर उसका स्वागत किया: साफ़ ज़ाहिर था कि उसकी शक्ल-सूरत में कोई ख़राबी नहीं पैदा हुई थी। वह बड़ी देर तक उनसे बातें करता रहा; उसने अदबदाकर अपनी नसवार की डिबिया निकाली और सबको दिखाकर अपने दोनों नथुनों में नसवार चढ़ाते हुए वह बराबर सोचता रहा: "तुम दोनों भी देख लो, मुर्ग़ियों की जोड़ी! और बेटी से शादी तो मैं किसी भी हालत में नहीं करूंगा। रहा थोड़ा-बहुत इश्क़ लड़ाना – सो ज़रूर करूंगा!" और उसके बाद से मेजर कोवालेव सारा कामकाज ऐसे करता रहा जैसे कुछ हुआ ही न हो; वह नेव्स्की एवेन्यू पर टहलता था, थियेटर देखने जाता था, हर जगह अपनी सूरत दिखाता था। और उसकी नाक, जैसे कभी कुछ हुआ ही न हो, उसके चेहरे पर चिपकी रही, और उसने इस बात का कोई संकेत नहीं दिया कि वह कभी उखड़ भी गयी थी। इसके बाद से मेजर कोवालेव हमेशा ख़ुश-मिजाज रहने लगा; वह मुस्करा-मुस्कराकर हर ख़ूबसूरत लड़की का पीछा करने लगा, यहां तक कि एक बार वह मैडल का फ़ीता ख़रीदने के लिए 'गोस्तीनी द्वोर' की एक दुकान पर भी रुक गया था, हालांकि इसकी कोई पक्की वजह नहीं मालूम हो सकी क्योंकि वह ख़ुद किसी क़िस्म का सूरमा नहीं था कि मैडल लगाये।

और इस तरह की घटना हमारे विस्तृत देश की उत्तरी राजधानी में हुई! अब जाकर, जब हम इस पूरे क़िस्से पर ग़ौर करते हैं तो हमारी समझ में आता है कि इसमें कितनी ही बातें ऐसी हैं जो बिल्कुल असंभव मालूम होती हैं। नाक के इतने अजीब और अस्वाभाविक ढंग से कटकर अलग हो जाने और जगह-जगह स्टेट काउंसिलर के भेस में उसके दिखायी देने के अलावा – कोवालेव की समझ में यह बात क्यों नहीं आयी कि कटी हुई नाकों के बारे में अख़बारों में इश्तहार नहीं दिये जाते? इससे मेरा मतलब यह क़तई नहीं है कि अख़बार के इश्तहारों को मैं बेकार की फ़ज़ूलख़र्ची समझता हूं – यह बकवास है, और मैं कोई कंजूस भी नहीं हूं। लेकिन यह भद्दी बात है, बेजा बात है,

गलत बात है! और फिर वह नाक ताज़ी सिंकी हुई रोटी मे कैसे पहुच गयी, और पहली बात तो यह कि इसकी क्या वजह है कि इवान याकोव्लेविच ने नहीं, यह बात मेरी समझ में नहीं आती, रत्ती-भर समझ मे नही आती! लेकिन इसमे भी अजीब बात यह है, जिसे समझना सबसे ज्यादा मुश्किल है, कि लेखक इस तरह की घटनाओ को अपना विषय बनाये ही क्यो। मै यह मानने पर मजबूर हू कि यह बात मेरी समझ में बिल्कुल नही आती, मै बिल्कुल नहीं, यह बात मेरी समझ मे ही नही आती। पहली बात तो यह कि इससे कौम को कोई भी फायदा नही होता; दूसरे नहीं, दूसरे भी इससे कोई फायदा नही होता। मेरी समझ मे ही नही आता कि इसका मतलब क्या है

मगर फिर भी, हर बात पर सोच-विचार कर लेने के बाद, हम शायद थोडा-बहुत, जहा-तहा कुछ फुटकर बाते मान लेने को तैयार हो जाये, और शायद यह भी मेरा मतलब है, हर वक्त अजीब-अजीब बाते होती रहती हैं, होती रहती हैं न? और अगर आप सोचने पर आये तो आपको मानना पडेगा कि इस सबमे भी कोई बात है जरूर, है न? आप कुछ भी कहे, लेकिन ऐसी घटनाए होती है, कभी-कभार ही सही, लेकिन होती जरूर हैं।

तस्वीर

भाग १

जैसी भीड़ें श्चुकिन बाज़ार की तस्वीरों की दुकान पर लगी रहती थीं वैसी कहीं और दिखायी नहीं देती थीं। कारण यह कि इस दुकान में विविधतम प्रकार की विचित्र चीज़ों का संग्रह हर समय मौजूद रहता था: चित्रों में ज़्यादातर तैल-चित्र होते थे, जिन पर गहरे हरे रंग की वार्निश पुती रहती थी और जो गहरे पीले रंग के भड़कीले फ़्रेमों में जड़े होते थे। सफ़ेद पेड़ोंवाला सर्दी का दृश्य, गहरा लाल सूर्यास्त आग की तरह दहकता हुआ, मुंह में पाइप लगाये टेढ़ी बांहवाला फ़्लांडर्स का किसान, जो देखने में इंसान से ज़्यादा एक ऐसा मुर्ग़ा मालूम होता था जिसे कमीज़ पहना दी गयी हो—आम तौर पर यही उन चित्रों के विषय होते थे। इसके अलावा कुछ नक़्क़ाशी की तस्वीरें भी होती थीं: भेड़ की खाल की टोपी पहने मिर्ज़ा ख़ुसरो की तस्वीर, तोते की चोंच जैसी नाकोंवाले तिकोनी टोपियां पहने जरनैलों की तस्वीरें। और, अंततः, इस तरह की दुकान के दरवाज़ों पर भी आम तौर पर उन भोंडी तस्वीरों की गड्डियां वंदनवार की तरह टंगी रहती थीं जो रूसियों की सराहनीय सहज प्रतिभा का प्रमाण होती हैं। एक तस्वीर में महारानी मिलिकत्रीसा किर्बीत्येव्ना को दिखाया गया था, एक और तस्वीर में येरूशलम का शहर दिखाया गया था, जिसके मकानों पर बेहूदा तरीक़े से लाल धारियां पोत दी गयी थीं, जो छलककर ज़मीन को और दस्ताने पहने प्रार्थना करते हुए दो रूसी किसानों की आकृतियों को काटती चली गयी थीं। आम तौर पर इन कलाकृतियों के ख़रीदार तो बहुत थोड़े ही होते थे लेकिन देखनेवालों की कोई कमी नहीं होती थी। वहां आपको कोई कामचोर नौकर तस्वीरों को मुंह बाये देखता हुआ ज़रूर मिल जाता, अपने हाथों पर ढकी हुई तश्तरियां संभाले जिनमें वह अपने आश्वस्त मालिक के लिए किसी ढाबे से खाना

ले जा रहा होता, जो अभी थोडी ही देर मे अपने आपको ऐसा सूप पीता हुआ पायेगा, जो केवल नाममात्र को ही गरम होगा। उसके सामने आपको पाबदी से कबाडी बाजार का चक्कर लगानेवाला लबा कोट पहने कोई सिपाही दो चाकुओ का मोल-तोल करता दिखायी देता; फिर बकसे मे जूते भरे ओख्ता की कोई ऐसी औरत होती जो अपना सारा वक्त बाजारो मे बिताती थी। हर आदमी जो कुछ देखता उसकी तरफ प्रतिक्रिया अलग-अलग ढग की होती थी किसान आम तौर पर उंगली उठाकर इशारा करते थे, फेरीवाले माल को बडी सजीदगी से देखते-भालते थे, घरो और दुकानो मे नौकरी करनेवाले छोकरे खीसे निकालकर हसते थे और छेडने के लिए एक-दूसरे की तुलना किसी न किसी बदसूरत तस्वीर से करते थे, नमदे के लबे कोट पहने बूढे नौकर सिर्फ इसलिए देखते रहते थे कि उन्हे थोडी-सी जम्हाई लेने का मौका मिल जाये, और बाजार मे अपना वक्त काटनेवाली नौजवान रूसी गृहिणिया अपने सहज स्वभाव से प्रेरित होकर जल्दी से लोगो की गप-शप सुनने के लिए और जो कुछ वे देख रहे होते थे उसे देखने के लिए लपक पडती थी।

नौजवान चित्रकार चर्तकोव कही आगे जाते हुए अनायास ही उस दुकान पर रुक गया। बाबा आदम के ज़माने के उसके ओवरकोट और बेढगे कपडो से पता चलता था कि वह उस तरह का आदमी है जो अपने काम मे इतनी लगन से डूबा रहता है कि उसे अपनी बाहरी वेश-भूषा की ओर ध्यान देने के लिए समय ही नही मिलता हालाकि नौजवान लोगो मे कपडो के प्रति एक रहस्यमय आकर्षण होता है। वह दुकान के सामने ठहर गया और वहा प्रदर्शित कुरूप चित्रो को देखकर मन ही मन मुस्कराने लगा, फिर वह सोचने लगा कि ये तस्वीरे किस तरह के लोगो को पसद आती होगी। उसे इसमे कोई ताज्जुब की बात नही मालूम हुई कि रूसी लोग येरुस्लान लाजारेविच की तस्वीरो को, या "वह ढेरो खाता-पीता था" को, या फोमा और येर्योमा* को निहारे इनके विषय सीधे-सादे लोगो की समझ मे आसानी से आ जाते थे, लेकिन इन भडकीले, गदे लीपा-पोती जैसे तैल-चित्रो को कौन खरीदेगा? फ्लाडर्स के इन किसानो की, इन लाल-नीले

---

* रूसी लोक-कथाओ के नायक।

प्राकृतिक दृश्यों की किसको ज़रूरत हो सकती है, जिनमें कला के किसी उच्चतर स्तर का दावा किया जाता है, लेकिन वास्तव में जो केवल कला को सरासर कलंकित करने में ही सफल हो पाते हैं? ऐसा लगता था कि ये किसी ऐसे बच्चे की कृतियां नहीं थीं जिसने चित्रकला स्वयं सीखी हो। वरना, कुल मिलाकर उनमें जो सपाटपन था और व्यंग-चित्र जैसा उनका जो प्रभाव था वह युवा उत्साह की वजह से कुछ हद तक तो कम हो ही जाता। लेकिन यहां तो सिर्फ़ बेढंगेपन, प्रभावहीन और स्थूल घटियापन की छाप दिखायी देती थी, जो बड़ी ढिठाई से कला होने का दावा करती थी, जबकि वास्तव में उसका स्थान कहीं निम्न कोटि के हस्तशिल्पों में था; इनमें एक ऐसा अभाव था जिसने अपने स्वभाव के अनुसार स्वयं कला को गिराकर निकृष्ट व्यापार के स्तर पर पहुंचा दिया था। इन सभी चित्रों में एक जैसे रंग, एक जैसी शैली, एक ही घिसे-पिटे हाथ की छाप दिखायी देती थी, जो किसी इंसान का न होकर किसी भोंडे स्वचालित यंत्र का हाथ मालूम होता था!.. वह बड़ी देर तक इन गंदी तस्वीरों के सामने खड़ा रहा, और उसके विचार आखिरकार भटककर कहीं और पहुंच गये। दुकान का मालिक, जो नमदे का ओवरकोट पहने हुए एक ऊलजलूल-सा आदमी था, जिसकी दाढ़ी कम से कम पिछले इतवार के बाद नहीं बनायी गयी थी, उसे लगातार तंग कर रहा था। यह मालूम किये बिना कि उसे क्या चीज़ पसंद है या वह क्या चाहता है, वह उससे मोल-तोल कर रहा था और उसे अलग-अलग चीज़ों की क़ीमतें बता रहा था।

"तो इन बढ़िया किसानों और इस छोटे-से प्राकृतिक दृश्य के मैं पच्चीस ही ले लूंगा। ज़रा ब्रश का काम देखिये! देखते ही जी खुश हो जाता है; अभी ईज़िल पर से उतारी गयी है, वार्निश तक नहीं सूखी है। या जाड़े की इस सीनरी को ले लीजिये! पंद्रह रूबल में लाजवाब चीज़ है! इतने का तो अकेला फ़्रेम ही है। क्या शानदार जाड़े की सीनरी है!" यह कहकर दुकानदार ने कैनवस को धीरे से थपथपाया मानो उसके जाड़े की ख़ूबी दिखा रहा हो। "लपेटकर आपके घर भिजवा दूं? कहां भिजवाना है? अरे लड़के, थोड़ी-सी डोरी तो लाना।"

यह देखकर कि मौक़े का पूरा फ़ायदा उठाने के लिए दुकानदार

ने तस्वीरो को एक साथ बधवाना भी शुरू कर दिया है, चित्रकार ने हडबडाकर कहा "रुकिये तो, बडे मिया, ऐसी जल्दी न कीजिये।" उसे कुछ खिसियाहट हो रही थी कि दुकान मे इतना वक्त ख़र्च करने के बाद भी उसने कुछ नही ख़रीदा था, इसलिए उसने कहा

"जरा ठहर जाइये, मै देख लू कि इसमे शायद मेरी पसद की कोई चीज़ हो," और यह कहकर वह झुका और उसने फ़र्श पर से कुछ टूटी-फूटी, गर्द से अटी पुरानी तस्वीरे उठा ली जिन्हे स्पष्टत दो कौडी का समझकर एक जगह ढेर कर दिया गया था। उनमे कुछ पुराने पारिवारिक चित्र थे, जिनके वशजो का शायद अब इस दुनिया मे कही नाम-निशान भी बाकी नही रह गया था, कुछ ऐसी तस्वीरें थी जो बिल्कुल काली पड चुकी थी और जिनके कैनवस फट चुके थे, कुछ फ्रेम ऐसे थे जिनकी सुनहरी पालिश बिल्कुल उतर चुकी थी, मतलब यह कि पुराने कचरे का एक ढेर था। लेकिन चित्रकार उन्हे उलट-पुलटकर देखते हुए सोचने लगा "शायद इसमे कोई काम की चीज़ मिल जाये।" उसने ऐसे लोगो के कितने ही किस्से सुन रखे थे जिन्हे कबाडी की दुकान के कचरा माल मे पुराने चोटी के चित्रकारो की अमर कलाकृतिया मिल गयी थी।

दुकानदार ने जब यह देखा कि उसने किधर अपना ध्यान मोडा है, तो उसे उसमे कोई दिलचस्पी नही रह गयी और वह फिर बडे रोब से आकर दरवाजे के पास अपनी जगह बैठ गया जहा से वह गाहको को घेरता था और उन्हे पुकारकर अपनी दुकान मे बुलाता था

"इधर आइये, मेहरबान, आकर इन तस्वीरो को देखिये तो! आइये तो, बिल्कुल अभी ईज़िल पर से उतरकर आयी हैं।" इसी तरह बेकार चिल्लाते-चिल्लाते और सामने अपनी दुकान के दरवाज़े मे खडे हुए कबाडी से बाते करते-करते जब वह थक गया, तब आख़िरकार उसे याद आया कि उसकी दुकान मे एक गाहक भी है, और दुकान के सामने मे गुज़रती हुई दुनिया की तरफ पीठ करके वह अदर चला गया। "तो, जनाब, मिली कोई चीज?" लेकिन चित्रकार कुछ देर से किसी आदमी की बडी-सी तस्वीर के सामने बुत बना खडा था, जिसका फ्रेम किसी ज़माने मे बहुत शानदार रहा होगा लेकिन अब उस पर सुनहरी पालिश का कही नाम-निशान भी बाकी नही रह गया था।

वह एक ऐसे बूढे की तस्वीर थी जिसके सावले चेहरे की हड्डी-

हड्डी दिखायी देती थी और ऐसा लग रहा था कि उसके चेहरे की तस्वीर ऐसे वक़्त बनायी गयी थी जब वह बेहद उत्तेजित था और उसे देखकर किसी दक्षिणी शक्ति का आभास होता था। उसके चेहरे पर दक्षिण के तेज़ सूरज की छाप थी। वह ढीला-ढाला एशियाई लिबास पहने था। तस्वीर की धूल से अटी ख़स्ता हालत के बावजूद चर्तकोव को उसके चेहरे पर से मैल साफ़ करने पर स्पष्ट दिखायी दे रहा था कि वह किसी श्रेष्ठ कलाकार की कृति है। ऐसा लगता था कि वह तस्वीर पूरी नहीं हो पायी थी; लेकिन चित्रकार की तूलिका की शक्ति सराहनीय थी। उसकी सबसे असाधारण विशेषता थी उसकी आंखें: उनके चित्रण में कलाकार ने अपने भरपूर उत्साह और काफ़ी प्रतिभा का परिचय दिया था। वे देखनेवाले को बिल्कुल जीती-जागती आंखों जैसी तीव्रता के साथ ऐसे पलटकर घूरती थीं कि चित्र का सारा सामंजस्य ही नष्ट हो जाता था। जब वह तस्वीर को दरवाज़े के पास लाया तो आंखें उसे और भी तेज़ी से घूरने लगीं। आम देखनेवालों पर भी उनका लगभग ऐसा ही प्रभाव होता था। एक औरत, जो उसके पीछे आकर खड़ी हो गयी थी, चिल्ला पड़ी: "वह देख रहा है!" और फ़ौरन पीछे हट गयी। चित्रकार के मन में एक विचित्र भावना उठी, एक ऐसी भावना जिसकी व्याख्या वह स्वयं नहीं कर सकता था; उसने तस्वीर ज़मीन पर रख दी।

"तो, यह तस्वीर आप ले रहे हैं?" दुकानदार ने कहा।

"कितने की है?" चित्रकार ने पूछा।

"अरे, भला इसके मैं ज़्यादा क्या लूंगा? पचहत्तर कोपेक में दे दूंगा!"

"नहीं।"

"तो, आप कितने देंगे?"

"बीस," चित्रकार ने चलने की तैयारी करते हुए कहा।

"वाह, यह भी कोई रक़म हुई? बीस कोपेक में तो आपको फ़्रेम भी नहीं मिलने का। तो, क्या आप कल आकर ख़रीदना चाहते हैं? रुकिये तो, साहब, इधर तो आइये! दस कोपेक और दे दीजिये तो तस्वीर आपकी। अच्छी बात है, बीस में ही ले जाइये। बोहनी करनी है, पहला गाहक ख़ाली लौटाना नहीं चाहता।"

उसने मामला निबटाते हुए हाथ इस तरह हिलाया मानो कह रहा

हो "ज़रा सोचिये, बीस कोपेक मे तस्वीर दे दी!"

इस तरह चर्तकोव ने बिल्कुल कोई इरादा न रखते हुए पुरानी तस्वीर खरीद ली और ऐसा करते हुए मन ही मन सोचने लगा: "मैंने इसे खरीदा क्यो? इसका मै करूगा क्या?" लेकिन अब बच निकलने का कोई रास्ता नही था। उसने जेब मे बीस कोपेक निकालकर दुकानदार को दिये और तस्वीर अपनी बगल मे दबाकर चल दिया। रास्ते मे उसे याद आया कि उसने जो बीस कोपेक चुकाये थे वे उसके आखिरी पैसे थे। अचानक उसके दिमाग पर धुधलका छा गया और पूर्ण उदासीन-ता के साथ मिली हुई झुझलाहट की लहर उसके सारे शरीर मे दौड गयी। "लानत है इस सडी हुई ज़िदगी पर!" उसने ऐसी घोर निराशा से कहा जिसका शिकार मुसीबत के दिन आने पर हर रूसी हो जाता है। और वह हर चीज से बेखबर लगभग अनायास ही तेज कदम बढाता हुआ चलता रहा। आधे आसमान पर अभी तक सूर्यास्त की लालिमा छायी हुई थी, जिन इमारतो का सामना इस दिशा मे था उन पर उसका हल्का-हल्का गर्म रग झलकता रहा और दूसरी तरफ चाद की ठडी नीली-नीली रोशनी की चमक बढती गयी। इमारतो और राहगीरो की शाम के वक्त की अर्ध-पारदर्शी परछाइया ज़मीन पर बिछी हुई थी। चित्रकार ने झिलमिलाती हुई कल्पनातीत रोशनी मे नहाये हुए आसमान को ध्यान से देखा और लगभग एक साथ ही कहा "कैसी सुदर आभा है!" और "कैसी झुझलाहट होती है कमबख्त इसको देखकर!" और तस्वीर को सभालते हुए जो बार-बार उसकी पकड से फिसली जा रही थी, उसने अपने कदम तेज कर दिये।

थककर चूर और पसीने मे नहाया हुआ वह किसी तरह गिरता-पडता वसीलेव्स्की द्वीप पर पद्रहवी लाइन मे पहुचा। हापते हुए वह गदी सीढियो पर चढा जिन पर मैला पानी चारो ओर फैला हुआ था और कुत्तो और बिल्लियो ने अपने नित्यकर्म से जहा-तहा उन्हे सजा रखा था। उसने दरवाज़ा खटखटाया तो कोई जवाब नही मिला, घर पर कोई नही था। वह धीरज से बडी देर तक इतजार करने की तैयारी मे खिडकी के सहारे टिककर खडा हो गया, इतने मे उसे अपने पीछे नीली कमीज पहने हुए एक लडके के कदमो की आहट सुनायी दी, जो उसका नौकर भी था, उसके लिए मॉडल भी बन जाता था, तस्वीर बनाने के रग भी मिलाता था और झाडू-बुहारी भी करता था, सच

तो यह है कि वह फ़र्श को झाड़ू से साफ़ करने में उतना होशियार नहीं था, जितना कि अपने मैले जूतों से उसे गंदा करने में था। लड़के का नाम निकीता था और जितनी देर उसका मालिक बाहर रहता था उतना सारा वक़्त वह सड़क पर बिताता था। निकीता बड़ी देर तक चाभी लगाने की कोशिश करता रहा तब कहीं जाकर वह उसे सूराख़ में डाल पाया, जो अंधेरे में मुश्किल से ही दिखायी देता था। आख़िरकार दरवाज़ा खुला। चर्तकोव ने ड्योढ़ी में क़दम रखा, यहां हर कलाकार के घर की तरह असह्य सर्दी थी, जिसका कलाकारों पर कोई असर नहीं होता। अपना कोट उतारकर उसे निकीता को देने की भी चिंता किये बिना वह सीधा अपने स्टूडियो में चला गया, जो नीची-सी छत और धुंधले कांच की खिड़कियोंवाला एक बड़ा-सा चौकोर कमरा था; उसमें कलाकारोंवाला दुनिया-भर का काठ-कबाड़ जमा था: प्लास्टर की बांहों के खंड, तस्वीरें बनाने के लिए तैयार किये हुए कैनवस, बनाना शुरू करके छोड़ दिये गये चित्रों की रूपरेखाएं, कुर्सियों पर लटके हुए कपड़े। थकन ने उसे आ दबोचा; उसने अपना कोट उतार फेंका, तस्वीर को अनमनेपन से दो छोटे-छोटे कैनवसों के बीच टिका दिया और उस पतले-से सोफ़े पर ढेर हो गया जिसके बारे में सच्चाई के साथ यह तो नहीं कहा जा सकता था कि उस पर चमड़ा मढ़ा हुआ था, क्योंकि तांबे की कीलों की वह क़तार जो किसी ज़माने में उस चमड़े को अपनी जगह रोके रहती थी, न जाने कब की चमड़े के उस ग़िलाफ़ के चंगुल से आज़ाद हो चुकी थी। यह चमड़े का ग़िलाफ़ अब लटक रहा था, जिसकी वजह से निकीता को अब उसके नीचे काले मोज़े, कमीज़ें और दूसरे मैले कपड़े ठूंस देने की सुविधा हो गयी थी। थोड़ी देर बैठने और इतने पतले-से सोफ़े पर जितनी देर लेटना मुमकिन था लेटने के बाद उसने आख़िरकार मोमबत्ती मंगवायी।

"मोमबत्ती कोई है ही नहीं," निकीता ने कहा।

"कैसे नहीं है?"

"अजी, वह तो कल ही नहीं थी," निकीता ने कहा।

चित्रकार को याद आया कि सचमुच कल भी कोई मोमबत्ती नहीं थी; वह शांत होकर चुप हो गया। उसने अनमनेपन से कपड़े उतरवाये और अपना झीना ड्रेसिंग-गाऊन पहन लिया।

"हा, एक बात और है, मकान-मालिक आया था," निकीता ने कहा।

"पैसे लेने आया होगा, मै जानता हू," चित्रकार ने कंधे बिचकाकर टिप्पणी की।

"और वह अकेला भी नही आया था," निकीता बोला।

"किसके साथ आया था?"

"मालूम नहीं किसी पुलिसवाले के साथ।"

"पुलिसवाले को क्या काम था?"

"मालूम नही, कुछ फ्लैट के बकाया किराये की बात कर रहा था।"

"और अब वे लोग क्या करेगे?"

"अब वे लोग क्या करेगे, यह तो मै जानता नही, लेकिन वह कह रहा था कि अगर किराया नही देना चाहता तो फ्लैट खाली कर दे, कह गये हैं कि कल फिर आयेगे वे दोनो।"

"आने दो," चर्तकोव ने निरीह भाव मे कहा और गहरी उदासीनता मे डूब गया।

नौजवान चर्तकोव प्रतिभाशाली कलाकार था, जिसमे आगे चलकर बहुत कुछ कर दिखाने की सभावनाए थी उसकी कलाकृतियो मे बहुधा सूक्ष्म अवलोकन, कुशाग्रता और प्रकृति के निकट पहुंचने की उत्सुकता की झलक मिलती थी। "सुनो, भाई," उसका प्रोफेसर अकसर उससे कहा करता था, "तुममे प्रतिभा है और बहुत ही पाप की बात होगी अगर तुम उसे नष्ट कर दोगे। लेकिन तुम अधीर हो। तुम्हारे दिमाग मे कोई एक विचार आता है, कोई एक चीज़ तुम्हारे दिमाग पर छा जाती है और बस फिर तुम्हारे पास और किसी चीज़ के लिए वक्त ही नही रहता, हर चीज़ तुम्हे कूड़ा लगती है, और तुम उसकी ओर देखना भी नही चाहते। ध्यान रखना, कही तुम भी उन फैशनेबुल चित्रकारो जैसे न बन जाना। तुम्हारी तस्वीरो के रग अभी से कुछ-कुछ चटकीले हो चले है। तुम्हारी रेखाओ मे काफी दृढता नही है कभी-कभी तो वे इतनी क्षीण हो जाती हैं कि रेखा दिखायी ही नही देती। तुम्हे अपनी तस्वीरो मे रोशनी के प्रचलित प्रभाव पैदा करने की, दृष्टि को तुरत अपनी ओर आकर्षित कर लेनेवाले ढग से तस्वीरे बनाने की बहुत चिता रहती है – अगर तुमने सावधानी न बरती तो आखिर मे चलकर तुम भी अग्रेज़ो की शैली मे चित्र बनाने लगोगे। सावधान रहना तुम्हारे अदर समाजी

तड़क-भड़क की तरफ़ झुकाव पैदा होता जा रहा है; कभी-कभी मैंने तुम्हें भड़कीला स्कार्फ़, चमकीला हैट पहने देखा है... बहुत जी ललचाता है, मैं जानता हूं, और बड़ी आसानी से ऐसा हो सकता है कि तुम बहुत पैसा लेकर फ़ैशनेबुल चित्र और समाज के प्रतिष्ठित लोगों की तस्वीरें बनाने लगो। लेकिन यह तुम्हारे लिए अपनी प्रतिभा को विकसित करने का नहीं बल्कि उसे नष्ट करने का तरीक़ा होगा। धीरज से काम लो। हर चित्र के बारे में ठीक से सोचो, और बांकेपन को भूल जाओ: उस तरह से पैसा कमाने का काम दूसरों को करने दो। वक़्त आने पर तुम्हें अपनी मेहनत का फल मिलेगा।"

कुछ बातों की दृष्टि से प्रोफ़ेसर का कहना ठीक था। यह सच है कि हमारे चित्रकार के मन में कभी-कभी बन-ठनकर रंगरलियां करने की – यानी अपने जवान ख़ून को खुली छूट दे देने की – लालसा पैदा होती थी। लेकिन वह इन आवेगों पर क़ाबू पा लेता था। कभी-कभी ऐसा भी होता था कि हाथ में ब्रश उठा लेने के बाद वह हर चीज़ को भूल जाता था, और जब वह उससे अलग होता था तो ऐसा लगता था जैसे कोई बहुत सुहाना सपना देखते-देखते अचानक चौंककर जाग पड़ा हो। उसकी रुचि में व्यापकता आ गयी थी। वह अभी तक रफ़ाएल की पूरी गहराई तो नहीं समझ सका था, लेकिन गुइदो रेनी की प्रवाहमयी तूलिका की ओर वह आकर्षित होने लगा था, टिशियन के चित्रों पर मंत्रमुग्ध होने लगा था और फ़्लांडर्स के कला-प्रवीणों की कृतियों को सराहने लगा था। इन पुरानी कलाकृतियों के बारे में उसकी दृष्टि पर पहले जो परदा पड़ा हुआ था उसे वह पूरी तरह तो नहीं बेध सका था, लेकिन अब वे उसकी समझ में कुछ-कुछ आने लगी थीं, हालांकि अपने मन में वह प्रोफ़ेसर की इस राय से सहमत नहीं था कि ये पुराने धुरंधर कलाकार हमसे बहुत आगे थे; वह यह भी महसूस करता था कि कुछ बातों में उन्नीसवीं शताब्दी ने उनके मुक़ाबले में काफ़ी प्रगति की है, और यह कि प्रकृति का हमारा चित्रण उनकी तुलना में कहीं अधिक स्पष्ट, सजीव और मूल के निकट होता है; दूसरे शब्दों में, इस मामले में वह उसी तरह सोचता था जैसे वे सभी नौजवान सोचते हैं जो कुछ नया उपलब्ध कर चुके होते हैं और उन्हें बड़े गर्व से इसका आभास रहता है। कभी-कभी उसे बहुत झुंझलाहट होती थी जब वह देखता था कि किसी विदेशी चित्रकार ने, किसी फ़्रांसीसी या जर्मन

ने, जो बहुधा तो अपने व्यवसाय की दृष्टि से चित्रकार होता ही नहीं था, केवल अभ्यास से, तूलिका से हाथ की कोई सफ़ाई दिखाकर और जीते-जागते रंगों की मदद से सनसनी पैदा कर दी और आनन-फ़ानन ढेरों पैसा बटोर लिया। झुंझलाहट की यह भावना उसे उस समय बिल्कुल परेशान नहीं करती थी जब वह अपने काम में पूरी तरह डूबा होता था, उस वक्त तो वह खाना-पीना तक भूल जाता था; यह भावना केवल तब पैदा होती थी जब उसकी हालत इतनी खस्ता हो जाती थी कि ब्रशों और रंगों तक के लिए उसके पास पैसे नहीं रह जाते थे, और उसका ज़िद्दी मकान-मालिक दिन में दस बार किराये का तकाज़ा करने आता था। तब उसकी कल्पना धनी कलाकारों के सौभाग्य के बारे में ईर्ष्या से सोचने लगती थी, तब उसके मन में वह ज्वार उठता था जिसका शिकार रूसी अकसर हो जाता है सब कुछ ठुकरा दे और पागलों की तरह सब कुछ अनाप-शनाप लुटा दे। इस समय वह लगभग ऐसा ही महसूस कर रहा था।

"हुंह, धीरज रखो, धीरज रखो!" उसने चिढ़कर कहा। "धीरज रखने की भी हद होती है। धीरज रखो! और कल मैं अपना पेट भरने के लिए खाना कहां से ख़रीदूंगा? कोई मुझे कर्ज भी तो नहीं देगा। और अपनी सब तस्वीरें और रेखाचित्र बेचने की कोशिश करने से कोई फ़ायदा नहीं सारी तस्वीरों के बीस कोपेक मिलेंगे। अलबत्ता उनसे फ़ायदा हुआ है उनमें से हर एक ने किसी न किसी तरह मेरी मदद की है, मुझे कुछ न कुछ सिखाया है। लेकिन सचमुच वे किस काम की हैं? —वे सभी अभ्यास के लिए बनाये गये प्राथमिक चित्रों और रेखाचित्रों की शक्ल में हैं, और वे कभी पूरी नहीं होंगी। और मेरा नाम जाने बिना उन्हें ख़रीदेगा कौन? किसे ज़रूरत है मेरे आर्ट स्कूल के दिनों के अभ्यास-चित्रों की, या साइकी के प्रेम के अधूरे चित्र की, या मेरे कमरे की तस्वीरों की, या मेरे निकीता की तस्वीर की, हालांकि वह उन फ़ैशनेबुल चित्रकारों की बनायी हुई तस्वीरों से कहीं अच्छी है? मैं परेशानी क्यों उठाऊं? मैं मुसीबत क्यों झेलूं, स्कूली बच्चे की तरह क-ख-ग में ही क्यों सिर खपाता रहूं जबकि मैं उन्हीं जैसा प्रतिभाशाली सफल चित्रकार बन सकता हूं और पैसा कमा सकता हूं?"

यह कहकर चित्रकार अचानक सिहर उठा और उसका रंग पीला

पड़ गया: फ़र्श पर टिके हुए कैनवस में से उसने एक विकृत सरसामी चेहरे को अपनी ओर घूरते देखा। दो डरावनी आंखें उसे ऐसे वेध रही थीं जैसे उसे ज़िंदा ही खा जायेंगी; उस चेहरे के होंट चुप रहने का भयावह आदेश व्यक्त कर रहे थे। डरकर उसने निकीता को पुकारना चाहा, जिसके कान के परदे फाड़ देनेवाले ख़र्राटे ड्योढ़ी में से सुनायी दे रहे थे; लेकिन अचानक वह रुक गया और हंस पड़ा। उसकी डर की भावना तुरंत ग़ायव हो गयी। यह वही तस्वीर थी जो उसने अभी कुछ देर पहले ख़रीदी थी और जिसे वह तव से भूल भी चुका था। कमरे में छिटकी हुई चांदनी की आभा में उस तस्वीर में सप्राणता का एक विचित्र भाव पैदा हो गया था। वह उसे ध्यान से देखने लगा और उसकी गर्द झाड़ने लगा। उसने स्पंज का टुकड़ा पानी में भिगोकर कई वार तस्वीर को पोंछा, और उस पर गर्द और मैल की जो परत जम गयी थी उसे लगभग पूरी तरह साफ़ कर दिया, उसे अपने सामने दीवार पर टांग दिया और पहले से भी ज़्यादा हैरत से उस सराहनीय कलाकृति को एकटक देखने लगा: पूरे चेहरे में जैसे जान पड़ गयी थी और उसकी आंखें उसे ऐसी वेधती हुई नज़रों से घूर रही थीं कि वह आख़िरकार सिहरकर पीछे हट गया और उसने चकित स्वर में कहा: "यह मुझे देख रहा है, मुझे विल्कुल इंसानों जैसी आंखों से देख रहा है!" तव उसे लियोनार्दो द विंची की वनायी हुई एक तस्वीर का क़िस्सा याद आया जो उसने वहुत पहले अपने प्रोफ़ेसर से सुना था; प्रवीण कलाकार ने उस चित्र को वनाने में कई वर्ष लगाये थे, लेकिन वह उसे अभी तक अधूरा ही समझता था जवकि वाज़ारी के शब्दों में वह विल्कुल निष्कलंक और उत्कृष्ट कलाकृति थी। उस चित्र की सवसे सराहनीय विशेषता थी उसकी आंखें, जिन्हें देखकर कलाकार के समकालीन चकित रह गये थे; कलाकार की दृष्टि महीन से महीन डोरों को देखने से नहीं चूकी थी और वे सभी उस चित्र में अंकित थे। लेकिन इस समय जो चित्र उसके सामने था उसमें कोई वहुत ही विचित्र वात थी। वह कला की परिधि से परे थी: वह स्वयं उस चित्र के सामंजस्य को ही भंग कर रही थी। ये आंखें जीती-जागती, इंसानी आंखें थीं! वे इस तरह देखती थीं जैसे किसी के सिर में से निकालकर उस तस्वीर में जड़ दी गयी हों। इस चित्र का मनन करने से आत्मा का उस प्रकार उत्कर्ष नहीं होता था जैसा कि सच्ची कलाकृति

मे होना चाहिये, उमका विषय कितना ही भयानक क्यो न हो; इम चित्र को देखकर एक अस्वस्थ, रुग्ण प्रतिक्रिया होती थी। "यह क्या चीज़ हो सकती है?" कलाकार मन ही मन अपने मे प्रश्न कर रहा था। "कुछ भी हो, यह है तो प्रकृति ही, सच्ची, जीती-जागती प्रकृति: इसलिए मेरे मन मे यह विचित्र भावना क्यों उठ रही है? कही ऐसा तो नही है कि प्रकृति का ऐसा अधा, ऐसा हूबहू चित्रण करना गलत हो, और वह हमे अप्रिय और असगत लगता हो? या इसका मतलब यह है कि अगर किसी वस्तु का चित्रण निर्मम अलगाव की भावना से, बिना किसी सहानुभूति के किया जाये तो वह केवल स्वय अपनी भयानक वास्तविकता के रूप मे सामने आयेगी, उसमे उस ज्योति का लेश भी नही होगा जो उसमे उस समय उत्पन्न होती है जब उसका चितेरा उसमे किसी अजय विचार का समावेश कर देता है। यह तो उस प्रकार की वास्तविकता है जो उस दशा मे प्रकट होती है जब आप किसी उदात्त व्यक्ति के आतरिक सत्त्व तक पहुचने की कोशिश मे चाकू लेकर उसे चीर डाले और उसकी आतो का वीभत्स दृश्य खोलकर सामने रख दे। ऐसा क्यो होता है कि एक कलाकार सीधी-सादी, सपाट प्रकृति का चित्रण इस तरह करता है कि वह एक प्रकार की *दिव्य आभा से आलोकित हो उठती है, कि उसके सपाटपन का आभास* सर्वथा लुप्त हो जाता है और, इसके विपरीत, आप उल्लसित अनुभव करते है और उसके बाद आपको अपने चारो ओर की हर चीज़ अधिक सुगमता से और अधिक शात भाव से प्रवाहित होती हुई लगती है, जबकि कोई दूसरा कलाकार उसी विषय को लेता है और उसे निकृष्ट तथा वीभत्स रूप मे प्रस्तुत करता है, हालाकि वह पूरी तरह यथार्थनिष्ठ रहता है। लेकिन नही, वह उसमें कोई आतरिक आभा नही उत्पन्न कर पाता। वह बस एक बहुत अच्छे दृश्य के समान होता है वह कितना ही भव्य क्यो न हो, फिर भी अगर सूरज न चमकता हो तो ऐसा लगता है कि उसमे किसी चीज़ का अभाव है।"

वह फिर से उन आश्चर्यजनक आखो को ध्यान से देखने के लिए तस्वीर के पास गया और एक *बार फिर उसे वही डरावना आभास* हुआ कि वे उसे देख रही हैं। यह प्रकृति का कोई प्रतिरूप नही था, यह तो वह विचित्र, जानदार भाव था जो कब्र मे से निकल आनेवाले मुर्दे के चेहरे पर देखने की उम्मीद की जा सकती है। शायद यह स्वप्न

जैसी सरसामी हालत चांदनी की वजह से पैदा हो रही थी, जो हर चीज़ को अपनी मायावी ज्योति से नहलाये दे रही थी, और दिन की रोशनी में दिखायी देनेवाली आकृतियों को मिथ्या रूप प्रदान कर रही थी; या शायद यह कोई दूसरी ही चीज़ थी, लेकिन अचानक उसे कमरे में अकेले बैठते डर लगने लगा। वह चुपचाप तस्वीर के पास से चला आया, और एक तरफ़ मुड़कर उसकी ओर न देखने की कोशिश करने लगा, लेकिन उसकी आंखें थीं कि बरबस उसी ओर मुड़ी जा रही थीं। नौबत यहां तक पहुंची कि उसे कमरे में चलते भी डर लगने लगा; उसे ऐसा लगा कि कोई उसके पीछे आ रहा है और वह डरा-डरा-सा सिर पीछे घुमाकर अपने कंधे के ऊपर से देखने लगा। वह डरपोक क़िस्म का आदमी नहीं था; लेकिन उसकी कल्पना और उसकी तंत्रिकाएं संवेदनशील थीं और उस रात इस अनायास भय का कारण खुद उसकी समझ में नहीं आ रहा था। वह कोने में बैठा था, लेकिन सहसा उसे आभास हुआ कि कोई उसके कंधे पर झुककर उसका चेहरा देख रहा है। ड्योढ़ी में से आती हुई निकीता के खर्राटों की गूंज उसके इस भय को दूर न कर सकी। आखिरकार वह डरते-डरते उठा, इस बात का ध्यान रखकर कि वह अपनी नज़रें ऊपर न उठाये, परदे के पीछे गया और बिस्तर पर लेट गया। परदे की एक दरार में से उसे दिखायी दे रहा था कि कमरे में चांदनी छिटकी हुई है और उसमें वह तस्वीर दीवार पर टंगी हुई है। वे आंखें पहले से भी ज़्यादा एकाग्रता से, पहले से भी ज़्यादा भयानक ढंग से उसे बेध रही थीं, मानो वे बाक़ी हर चीज़ को तिरस्कार की दृष्टि से देखती हों। अकथनीय व्याकुलता अनुभव करते हुए उसने बहुत कोशिश करके किसी तरह पलंग पर से उठकर चादर ली और कमरे के पार जाकर तस्वीर को उस चादर से पूरी तरह ढक दिया।

इसके बाद पहले से कुछ शांत अनुभव करते हुए वह लेट गया और कलाकार की दरिद्रता और दुर्दशा के विचारों में, उसे इस दुनिया में जिन कांटों-भरे पथ पर चलना पड़ता है उसके विचारों में खो गया, लेकिन उसकी आंखें चादर से ढकी हुई तस्वीर को देखने के लिए बार-बार परदे की दरार की ओर मुड़ती रहीं। चांदनी में चादर की सफ़ेदी और उजागर हो उठी थी और उसे ऐसा लग रहा था कि वे भयानक आंखें कपड़े के पार भी दिखायी देने लगी हैं। डर के मारे उसने और

भी घूरकर देखा मानो अपने आपको यह विश्वास दिलाना चाहता हो कि यह सब कुछ बकवास है! लेकिन अतत. उसने देखा कि यह सच है उसे बिल्कुल साफ दिखायी दे रहा था: चादर वहा नही थी.. तस्वीर बिल्कुल खुली थी और हर चीज के पार सीधे उसकी ओर एकटक देख रही थी, और उसकी वेधती हुई तीखी नज़रें उसके शरीर की गहराई मे पैठती जा रही थी उसका खून जम गया। उसने देखा कि बूढा हिला और उसने फ्रेम को दोनो हाथो से पकड लिया। फिर उसने अपना शरीर ऊपर की ओर उठाया और दोनो टागे बाहर निकालकर फ्रेम के बाहर कूद पडा अब परदे की दरार मे से उसे सिर्फ खाली फ्रेम दिखायी दे रहा था। कमरा कदमो की चापो के शोर से गूज रहा था जो परदे के पास आते जा रहे थे। बेचारे कलाकार का दिल धडकने लगा। ज़िदा से ज्यादा मुर्दा हालत मे वह परदे के पीछे से बूढे का चेहरा दिखायी देने का इतज़ार करने लगा। थोडी देर बाद वह सचमुच दिखायी दिया, वही सावला चेहरा जिसकी बडी-बडी आखे अब कमरे मे चारो ओर मडरा रही थी। चर्तकोव ने चिल्लाने की कोशिश की लेकिन उसकी आवाज़ ने उसका साथ नही दिया, उसने हिलने-डुलने की कोशिश की लेकिन उसके हाथ-पाव बिल्कुल निष्क्रिय हो चुके थे। ढीला-ढाला एशियाई ढग का लिबास पहने हुए इस लबे कद के भयानक प्रेत को वह मुह बाये घूरता रहा और इतज़ार करता रहा कि देखे अब वह क्या करता है। बूढा उसकी पायती बैठ गया और अपने लबादे की सिलवटो के नीचे से कोई चीज निकालने लगा। वह एक थैला था। उसने थैले की डोरी खोली और उसके दोनो कोने पकडकर उसमे जो कुछ था उसे झटककर बाहर उलट दिया कई लबे-लबे, भारी बेलन जैसे बडल थप-थप की आवाज़ करते हुए ज़मीन पर गिर पडे, हर बडल नीले कागज मे लिपटा हुआ था और उस पर लिखा हुआ था १०,००० रूबल। चौडी-चौडी आस्तीनो मे से अपना लबा हडीला हाथ बाहर निकालकर बूढे ने बडलो पर लिपटा हुआ कागज़ खोलना शुरु किया और उनके अदर से सोने की चमक दिखायी दी। कलाकार अपनी अपार व्यथा और नि सज्ञ कर देनेवाले भय के बावजूद सोने के इन सिक्को की ओर से अपनी नज़रे न हटा सका और जैसे-जैसे बडल खुलते गये वह मत्रमुग्ध होकर उनकी चमक को और बूढे के हडीले हाथो मे उनकी दबी-दबी खनक को सुनता रहा,

और आख़िरकार उन्हें फिर काग़ज़ में लपेट दिया गया। उसी वक़्त उसने देखा कि एक बंडल फ़र्श पर लुढ़ककर पलंग के सिरहाने की ओर चला गया था। वह उन्मादियों की तरह उसकी ओर झपटा और घबराकर देखने लगा कि बूढ़े ने उसे देख तो नहीं लिया है। लेकिन बूढ़ा अपने ही काम में खोया हुआ लग रहा था। उसने अपने सारे बंडल बटोरे, उन्हें थैले में वापस रखा और कलाकार की ओर एक नज़र भी देखे बिना परदे के पीछे ग़ायब हो गया। उसके वापस लौटते हुए क़दमों की चाप सुनकर चर्तकोव का दिल और भी ज़ोर से धड़कने लगा। उसने अपना बंडल और भी कसकर पकड़ लिया, वह सिर से पांव तक कांपने लगा और अचानक उसके क़दमों की चाप फिर परदे की ओर आती हुई सुनी। बूढ़े को शायद याद आया कि वह एक बंडल भूल गया है। घोर निराशा में डूबकर चित्रकार ने बंडल अपनी सारी ताक़त से दबोच लिया, अपने क़दम आगे बढ़ाने की कोशिश की, चिल्लाया – और उसकी आंख खुल गयी।

उसके ठंडा पसीना छूट रहा था; उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था: उसका सीना कसकर इतना सिकुड़ गया मानो उसकी आख़िरी सांस किसी तरह उसमें से निकल जाने की कोशिश कर रही हो। "क्या यह सब कुछ सचमुच एक सपना था?" उसने अपना सिर दोनों हाथों से पकड़ते हुए कहा; लेकिन जो कुछ उसने देखा था वह सब ऐसा जीता-जागता था कि वह सपने जैसा बिल्कुल लगता ही नहीं था। आंख खुलने पर उसने देखा कि बूढ़ा तस्वीर के फ़्रेम में वापस जा रहा है; उसे उसके ढीले-ढाले लबादे के छोर की एक झलक भी दिखायी दी, और उसे अपने हाथ पर किसी ऐसी भारी चीज़ के स्पर्श का आभास हुआ जिसे वह अभी एक मिनट पहले ही पकड़े हुए था। कमरे में भरपूर चांदनी फैली हुई थी और उसके अंधेरे कोनों में पहुंचकर किसी कैनवस पर, प्लास्टर ऑफ़-पेरिस की बनी हुई किसी बांह पर, कुर्सी पर बिछे हुए कपड़े पर, पतलून पर और कीचड़ में सने बूट पर अपनी रोशनी बिखेर रही थी। अब जाकर उसे इस बात का आभास हुआ कि वह अपने पलंग पर नहीं लेटा हुआ बल्कि उस तस्वीर के सामने सीधा खड़ा है। वह यहां कैसे पहुंचा यह उसकी समझ में बिल्कुल नहीं आ रहा था। यह देखकर उसे और भी हैरत हुई कि तस्वीर खुली हुई है और उस पर कोई चादर नहीं पड़ी हुई

है। डर के मारे वह स्तब्ध रह गया और तस्वीर को घूरता रहा, उसने देखा कि उसकी जीती-जागती आखे सचमुच उसे बेध रही है। उसके चेहरे पर ठडे पसीने की बूदे छलक आयीं; वह वहा से हट आना चाहता था लेकिन उसने महसूस किया कि उसकी टागे ज़मीन में गड गयी है। और तब उसने देखा – और अब यह कोई सपना नही था – कि बूढे का चेहरा गतिमान हो उठा और उसकी ओर देखकर वह अपने होंट इस तरह भीचने लगा मानो वह उसे चूस लेना चाहता हो... वह डर के मारे चीखकर उछल पडा और उसकी आख खुल गयी।

"कही यह भी तो सपना नही था?" उसका दिल इतनी तेज़ी से धडक रहा था जैसे अभी फट जायेगा, उसने हाथ बढाकर अपने आस-पास टटोलकर देखा। हा, वह अपने बिस्तर पर अब भी उसी हालत मे लेटा हुआ था जिस हालत मे वह रात को सोया था। उसके सामने परदा था कमरे मे चादनी फैली हुई थी। परदे की दरार में से उसे तस्वीर दिखायी दे रही थी, उसी तरह चादर से ढकी हुई जैसा कि उसे होना चाहिये था – ठीक उसी हालत में जैसा कि उसने उसे छोडा था। तो यह भी सपना था! लेकिन अब भी उसे अपनी भिची हुई मुट्ठी मे कोई चीज़ होने का आभास हो रहा था। उसका दिल बेहद तेजी से धडक रहा था, उसके सीने में असह्य भारीपन था। वह दरार के पार चादर को एकटक देखता रहा। उसी वक्त उसने चादर को खिसकते हुए बिल्कुल साफ देखा, जैसे उसके नीचे से किसी के हाथ उसे उतार फेकने की कोशिश कर रहे हो। "हे भगवान, यह क्या हो रहा है!" वह घबराकर चिल्लाया, आतकित होकर उसने अपने ऊपर सलीब का निशान बनाया और जाग पडा।

यह भी सपना था! वह उछलकर बिस्तर से नीचे उतर आया, उसके होश-हवास पूरी तरह ठिकाने नही थे और वह समझ नही पा रहा था कि उसे आखिर हो क्या रहा है क्या उसने कोई बुरा सपना देखा था जिसका यह असर था, या कोई दैत्य था, बुखार की सरसामी हालत थी या जीवन की वास्तविकता? अपनी उद्विग्नता को शात करने के लिए और खून की तूफानी गर्दिश को धीमा करने के लिए उसने खिडकी के पास जाकर उसका पल्ला खोल दिया। हवा के ठडे झोके से उसके होश-हवास ठीक हुए। मकानों की छते और सफेद दीवारे अभी तक चादनी मे नहायी हुई थी, हालाकि काले-काले बादलों

के छोटे-छोटे टुकड़े आसमान पर तेजी से दौड़ रहे थे। चारों ओर खामोशी छायी हुई थी: उसके कानों में वस कभी-कभी दूर से किसी गली में धीरे-धीरे चलती हुई घोड़ागाड़ी की खड़खड़ाहट की आवाज़ आ जाती थी, जिसका कोचवान अपनी सीट पर सो रहा होगा और उसका मरियल घोड़ा अपनी लद्धड़ चाल से गाड़ी खींच रहा होगा और दोनों किसी भूली-भटकी सवारी के मिल जाने का इंतज़ार कर रहे होंगे। वह वड़ी देर तक खिड़की के वाहर सिर निकाले वहां खड़ा रहा। आनेवाले तड़के की पहली दमक आसमान पर दिखायी देने लगी थी; आखिरकार चुपके-चुपके नींद ने उसे आ घेरा और यह महसूस करके उसने खिड़की वंद की, वहां से चला आया और अपने विस्तर पर लेटकर गहरी नींद सो गया।

जब वह सुवह वहुत देर में सोकर उठा तो उसे ऐसा लग रहा था कि जैसे रात उसने वहुत पी ली हो और अव नशा उतर रहा हो; उसके सिर में धमक हो रही थी। उसके कमरे में हल्की-हल्की रोशनी फैली हुई थी और तस्वीरों और रंग की पहली परत लगाकर चौखटों पर मढ़े हुए कैनवसों से अटी हुई खिड़कियों की संदों में से रिस-रिसकर आनेवाली वाहर की हवा की नमी महसूस हो रही थी। वारिश में भीगे हुए चूज़े की तरह उदास और चिढ़ा हुआ वह अपने टूटे-फूटे सोफ़े पर वैठो सोच ही रहा था कि अव क्या करे कि इतने में उसे अपने सपने की याद आयी। दिमाग़ में लौटकर आने पर वह सपना उसे इतनी भयानक हद तक स्पष्ट लग रहा था कि उसे शक होने लगा कि वह सचमुच सपना या केवल सरसामी हालत का उन्माद था ही नहीं वल्कि कोई दिव्य-दर्शन था। चादर खींचकर हटा देने के वाद उसने दिन की रोशनी में उस विचित्र तस्वीर को वड़े ध्यान से देखा। वात सच थी, उसकी आंखें आश्चर्यजनक हद तक विल्कुल जीती-जागती आंखों जैसी थीं, लेकिन उसे उनमें कोई खास तौर पर डरावनी वात दिखायी नहीं दी; वस इतनी वात थी कि उन्हें देखकर उसके दिल में एक विचित्र और अरुचिकर संवेदना पैदा हुई। फिर भी वह अपने आपको पूरी तरह विश्वास न दिला सका कि उसने जो कुछ देखा था वह सपना था। वह कल्पना करने लगा कि उस सपने के साथ वास्तविकता का कुछ भयानक अंश मिला हुआ था। उस वूढ़े के चेहरे-मोहरे और हाव-भाव में कोई वात ऐसी थी जो मानो यह कह रही थी कि पिछली

रात वह बूढ़ा उसके साथ था, उसके हाथ को ऐसा आभास हो रहा था कि जैसे अभी वह कोई भारी चीज़ पकड़े हुए था जो अभी एक क्षण पहले ही उससे छीन ली गयी थी। वह अनुभव कर रहा था कि अगर उसने उस बंडल को ज़रा और कसकर पकड़ा होता तो जागने के बाद वह उसके हाथ में ही होता।

"हे भगवान, काश उस रकम का थोड़ा-सा हिस्सा भी मेरे हाथ लग जाता!" उसने गहरी आह भरकर कहा, और अपनी कल्पना में उसने देखा कि सारे बंडल थैले के बाहर उड़ेले जा रहे हैं और उनमें से हर एक पर ये ललचानेवाले शब्द लिखे हैं १०,००० रूबल। बंडल खोले गये, सोने की जगमगाहट हुई और बंडल फिर लपेट दिये गये, वह एकटक शून्य में ताकता हुआ निश्चल बैठा रहा, अपने आपको वह *किसी तरह इस दृश्य से अलग नहीं कर पा रहा था*, जैसे कोई बच्चा मिठाई की तश्तरी के सामने ललचाया हुआ बैठा हो और दूसरों को उसे खाते हुए लाचारी से देख रहा हो। आखिरकार दरवाजे पर किसी की दस्तक सुनकर वह चौंक पड़ा और फिर होश में आ गया। मकान-मालिक एक पुलिस सार्जेंट को साथ लिये हुए अंदर आया, जिसकी सूरत देखना गरीब आदमी के लिए उससे भी ज़्यादा नागवार होता है जितना कि अमीरों के लिए किसी फरियादी की सूरत देखना होता है। चर्तकोव जिस छोटे-से मकान में रहता था उसका मकान-मालिक उस किस्म के लोगों में से था जो वसीलेव्स्की द्वीप की पंद्रहवीं लाइन, पीटर्सबर्ग की तरफवाले हिस्से या कोलोम्ना जैसे किसी सुदूर कोने के मकान-मालिकों में अक्सर पाये जाते हैं – उस किस्म के लोग जो रूस में बहुत आम हैं और जिनके चरित्र का वर्णन करना उतना ही मुश्किल है जितना घिसे हुए फ्राक-कोट के रंग का। अपनी जवानी के दिनों में यह मकान-मालिक एक बड़बोला कप्तान था, जिसे कभी-कभी ग़ैर-फ़ौजी कामों पर भी लगा दिया जाता था, वह कोड़े बरसाने में बहुत उस्ताद था, बेहद कारगुज़ार, छैल-चिकनिया और निरा बुद्धू, लेकिन बुढ़ापे में इन सारे गुणों ने एक-दूसरे में मिलकर चरित्र की एक धुंधली अस्पष्टता का रूप धारण कर लिया था। अब उसकी बीवी मर चुकी थी, वह रिटायर हो चुका था, छैल-चिकनिया नहीं रह गया था, न ही बड़बोला रह गया था और न ही जान पर खेल जानेवाला, उसे अब सिर्फ चाय पीने में और चाय पीते हुए गप लड़ाने में दिलचस्पी

रह गयी थी; वह अपने कमरे में टहल-टहलकर अपनी मोमबत्ती की भकभकाती हुई लौ काटकर ठीक करता रहता था; हर महीने के आखिर में पाबंदी के साथ किराया वसूल करने के लिए अपने किरायेदारों के यहां चक्कर लगाता था; अगर वह छत का मुआइना करने के लिए सड़क पर निकलता था तो चाभी अपने हाथ में लिये रहता था; घर का दरवान जब भी सोने के लिए चुपके से अपनी कोठरी में जाता वह उसे वहां से बार-बार खदेड़कर बाहर निकाल लाता; दूसरे शब्दों में, वह उस क़िस्म के पेंशनयाफ़्ता लोगों में से था जिनके पास बेलगाम जवानी बिताने के बाद और अपनी जिंदगी इस तरह काट देने के बाद जैसे गाड़ी पर बैठकर किसी ऊबड़-खाबड़ सड़क पर झटके खाते हुए जा रहे हों, टुच्चेपन की आदतों के अलावा कुछ भी नहीं बच जाता।

"आप ख़ुद ही देख लीजिये, वरूख कुज़मिच," उसने अपने हाथ फैलाकर पुलिस सार्जेंट को संबोधित करके कहा, "यह अपने फ़्लैट का किराया नहीं चुकाता, एक कोपेक भी नहीं देता।"

"जब मेरे पास पैसा है ही नहीं तो चुकाऊं कहां से? कुछ मोहलत दीजिये, मैं सब चुका दूंगा।"

"मैं इंतज़ार नहीं कर सकता, भले आदमी," मकान-मालिक ने उसकी तरफ़ चाभी हिलाते हुए गुस्से से कहा, "मेरे किरायेदारों में एक अफ़सर हैं, लेफ़्टिनेंट-कर्नल पोतोगोन्किन, वह सात साल से मुझसे जगह किराये पर लेते रहे हैं; और फिर आन्ना पेत्रोव्ना बुख़-मिस्तेरोवा हैं, जिन्होंने एक शेड और अस्तबल में दो थान भी किराये पर ले रखे हैं, उनके पास तीन नौकर हैं—इस तरह के किरायेदार हैं मेरे। मैं तुम्हें साफ़-साफ़ बता दूं कि मैं उस तरह का ठिकाना नहीं चलाता हूं जहां लोग किराया चुकाये बिना रह सकें। मेहरबानी करके मेरा किराया अभी चुका दो और घर ख़ाली कर दो।"

"हां, इस बात को देखते हुए कि तुमने किराया चुकाने की हामी भर ली है इसलिए बेहतर यही है कि तुम चुका ही दो," सार्जेंट ने एक उंगली अपनी वर्दी के कोट के सामने अटकाते हुए सिर को हल्का-सा झटका देकर कहा।

"यह तो आपका कहना ठीक है लेकिन मैं चुकाऊं किस चीज़ से? मेरे पास तो तांबे का एक कोपेक भी नहीं है।"

"उस हालत में तुम्हें किसी चीज़ की शक्ल मे, अपने धधे की पैदावार की शक्ल में इवान इवानोविच का भुगतान करना होगा," सार्जेंट ने कहा। "मुमकिन है वह तस्वीरो की शक्ल मे किराया लेने को तैयार हो जाये।"

"नहीं-नहीं, सार्जेंट साहब, शुक्रिया, लेकिन तस्वीरो की शक्ल मे नहीं। अगर किसी भली चीज की तस्वीरे होती जिन्हें दीवार पर टागा जा सकता तब बात दूसरी थी, कम से कम स्टारवाले किसी जनरल की या प्रिस कुतूज़ोव की तस्वीर होती, लेकिन यह तो अपने नौकर की तस्वीर बनाता है, फटी कमीज पहने उस छोकरे की जो इसके रग पीसता है। कोई सोच सकता है ऐसी बात कि उस सूअर की तस्वीर बनायी जाये — मै उसके ऐसे कान ऐठूगा कि याद करेगा. उसने मेरी तमाम चटकनियो की कीले उखाड डाली है, चोर कहीं का! जरा देखिये तो इन तस्वीरो को यह इसने अपने कमरे की तस्वीर बनायी है। अगर कोई साफ-सुथरा ढग का कमरा होता तब भी ठीक था, लेकिन इसने तो जिस हालत मे कमरा था उसी की तस्वीर बना दी, चारों तरफ कूड़ा-करकट और गदगी फैली हुई। जरा देखिये तो इसने मेरे कमरे की क्या दुर्गत की है. आप खुद ही देख लीजिये। और मेरे कुछ किरायेदार सात-सात साल से यहा रह रहे है, शरीफ किरायेदार, कर्नल, आन्ना पेत्रोव्ना बुख्मिस्तेरोवा नहीं, मै आपको साफ बता दू किसी कलाकार को किरायेदार रखने से बुरी तो कोई बात हो ही नही सकती, वह अपने कमरे को बिल्कुल सूअरो का बाडा बना देता है, ऐसे लोगो से तो भगवान ही बचाये।"

इस दौरान बेचारे चित्रकार को चुपचाप खडे रहकर यह सब कुछ सुनना पड रहा था। सार्जेंट ने तस्वीरो और अभ्यास के लिए बनाये गये खाको को ध्यान से देखना शुरू किया, और ऐसा करते हुए उसने इस बात का परिचय दिया कि उसका दिमाग मकान-मालिक से कहीं अधिक सजग है और कलात्मक प्रभाव ग्रहण करने की क्षमता से सर्वथा वचित नहीं है।

"अच्छा," उसने एक तस्वीर को, जिसमे एक नगी औरत को दिखाया गया था, उगली से कोचते हुए कहा, "यह है जरा क्या कहा जाये? मजेदार चीज। लेकिन उस तस्वीर मे नाक के नीचे काला धब्बा-सा क्यो है, नसवार गिर पडी है या और कुछ है?"

"वह परछाई है," चर्तकोव ने उसकी ओर देखे बिना रुखाई से जवाब दिया।

"खैर, लेकिन मेरी राय में तो उसे ठीक नाक के नीचे लगाने के बजाय कहीं और लगाना चाहिये था – आंख में खटकता है," सार्जेंट ने कहा। "और यह किसकी तस्वीर है?" वह बूढ़े की तस्वीर के पास आकर बोला। "कैसा बदसूरत चेहरा है। क्या वह ज़िंदगी में भी ऐसा ही बदसूरत था? देखो तो, देखता कैसे है – डर के मारे जान ही निकल जाये! है किसकी तस्वीर?"

"किसी की नहीं, वह तो बस यों ही..." चर्तकोव ने कहा, लेकिन किसी चीज़ के चटकने की ज़ोरदार आवाज़ से उसकी बात अधूरी ही रह गयी। सार्जेंट तस्वीर के फ़्रेम पर ज़रूरत से ज़्यादा ज़ोर डालकर टिक गया होगा; पुलिसवाले के तगड़े हाथों के बोझ से बग़लवाली पट्टियां टूटकर अंदर धंस गयी, उनमें से एक टूटकर ज़मीन पर भी गिर पड़ी और नीले काग़ज़ में लिपटा हुआ एक बंडल ज़ोरदार छनाके के साथ नीचे आ गिरा। उस पर लिखे शब्द पढ़कर चर्तकोव की आंखें चमक उठीं: १०,००० रूबल। वह झपटकर बंडल पर टूट पड़ा और उसे अपनी मुट्ठी में दबोच लिया।

"बिल्कुल सिक्कों के गिरने जैसी आवाज़ थी," किसी चीज़ के गिरने की आवाज़ सुनकर सार्जेंट ने कहा, लेकिन चर्तकोव इतनी तेज़ी से झपटा था कि वह देख नहीं पाया कि क्या चीज़ थी।

"आपको इससे क्या मतलब कि मेरे पास क्या है?"

"मुझे मतलब यह है कि तुम्हें अपने मकान-मालिक को फ़्लैट का किराया फ़ौरन अदा करना होगा; तुम्हारे पास पैसा है लेकिन तुम देना नहीं चाहते – बस यही मतलब है मुझे।"

"अच्छी बात है, मैं आज चुका दूंगा।"

"पहले क्यों नहीं चुका दिया, बिला वजह अपने मकान-मालिक के लिए इतनी मुसीबत पैदा की, और पुलिस के लिए भी?"

"क्योंकि मैं इस पैसे को देना नहीं चाहता था; मैं आज शाम को सारा हिसाब चुका दूंगा और कल फ़्लैट ख़ाली कर दूंगा, क्योंकि मैं ऐसे मकान-मालिक के यहां रहना ही नहीं चाहता।"

"तो, इवान इवानोविच, यह पैसे चुका देगा," सार्जेंट ने मकान-मालिक से कहा। "और अगर किसी वजह से आज शाम तक यह आपकी

तसल्ली न कर दे, तो हमें कोई सख्त कार्रवाई करनी पड़ेगी, समझ गये, कलाकार साहब?"

यह कहकर उसने अपनी तिकोनी टोपी पहन ली और दरवाज़े से बाहर निकल गया, मकान-मालिक भी सिर झुकाये विचारों में खोया हुआ-सा उसके पीछे हो लिया।

"चलो, जान छूटी!" ड्योढ़ी का दरवाज़ा बंद होने की आवाज़ सुनकर चर्तकोव ने कहा।

उसने ड्योढ़ी में नज़र डाली, निकीता को किसी काम से बाहर भेज दिया ताकि वह बिल्कुल अकेला रह जाये, निकीता के चले जाने पर दरवाज़ा अंदर से बंद कर लिया और कमरे में वापस आकर बंडल खोलने लगा, उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था। उस बंडल में दस-दस रूबल के सिक्के थे, हर एक सीधे टकसाल से ढलकर आया हुआ और आग की तरह दमकता हुआ। खुशी से पागल होकर वह सोने के ढेर के पास बैठा हैरत करता रहा और सोचता रहा कि कहीं यह सपना तो नहीं है। बंडल में ठीक एक हज़ार सिक्के थे, बाहर से देखने में बंडल बिल्कुल वैसा था जैसा उसने सपने में देखा था। कुछ देर वह उन्हें अपनी उंगलियों से छेड़ता रहा, उन्हें उलट-पलटकर ध्यान से देखता रहा, उसके हवास ठिकाने नहीं आ रहे थे। उसकी कल्पना में छिपे हुए ख़ज़ानों और चोर-तालोंवाली उन तिजोरियों के सारे क़िस्से मंडराते रहे, जो पूर्वज यह यकीन रखते हुए अपनी औलाद के लिए छोड़ जाते थे कि उनकी औलाद तबाह तो हो ही जायेगी और बाद में चलकर बिल्कुल कंगाल हो जायेगी। वह सोच रहा था "कहीं ऐसा तो नहीं है कि किसी दादा-परदादा ने अपनी औलाद के लिए तोहफ़ा छोड़ जाने के इरादे से परिवार की किसी तस्वीर के फ्रेम में यह रकम छिपा दी हो?" काल्पनिक भ्रमों के प्रवाह में वह यह भी सोचने लगा कि इस घटना का भी कहीं उसकी अपनी तकदीर के साथ तो कोई संबंध नहीं है, कहीं उसे इस तस्वीर का मिलना खुद उसके मुकद्दर के साथ तो नहीं जुड़ा हुआ है, और उस तस्वीर का उसके हाथ लगना कोई ऐसी बात तो नहीं जो पहले से उसके भाग्य में लिख दी गयी हो? वह बड़े ध्यान से तस्वीर के फ्रेम का निरीक्षण करने लगा। एक तरफ़ लकड़ी में एक गड्ढा बनाकर उसे इतनी सफ़ाई से लकड़ी के तख्ते से छिपा दिया गया था कि अगर वह फ्रेम पुलिस सार्जेंट के तगड़े

हाथ की वजह से टूट न गया होता तो वह रक़म अनंत काल तक वहीं पड़ी रहती। तस्वीर को ध्यान से देखने पर उसे उसकी कलात्मकता पर, आंखों के असाधारण चित्रण पर आश्चर्य हुआ; वे अब उसे भयानक नहीं लग रही थीं, बल्कि हर बार उन्हें देखने पर एक अरुचिकर भावना उसे आ दबोचती थी। "नहीं," उसने अपने मन में कहा, "मुझे इसकी परवाह नहीं कि तुम किसके पुरखे थे, लेकिन मैं सुनहरे फ़्रेम में तुम्हें कांच में मढ़वाऊंगा।" यह कहकर वह अपने सामने पड़े हुए सोने के ढेर की ओर बढ़ा और उसे छूते ही उसका दिल धड़कने लगा। "मैं इसका क्या करूंगा?" उसने आंखें गड़ाकर उसे घूरते हुए कहा। "अब मेरे पास कम से कम तीन साल का बंदोबस्त है, मैं अपने कमरे में बंद होकर काम कर सकता हूं। अब मेरे पास रंगों के लिए, खाने के लिए, चाय के लिए, अपनी रोजमर्रा की ज़रूरतों के लिए, अपने किराये के लिए काफ़ी पैसा है, अब कोई मेरे रास्ते में रुकावट नहीं बन सकता और न ही मुझे परेशान कर सकता है; अब मैं अपने लिए बहुत बढ़िया पुतला खरीदूंगा, प्लास्टर ऑफ़-पेरिस का धड़ मंगवाऊंगा, टांगों के मॉडल लाऊंगा, अपने लिए वीनस की मूर्ति लाऊंगा, पुराने कला-प्रवीणों की छपी हुई तस्वीरें जमा करूंगा। और अगर मैंने कोई जल्दबाज़ी किये बिना, बिक्री की कोई चिंता किये बिना, तीन साल काम कर लिया, तो मैं उन सबसे आगे बढ़ जाऊंगा, मैं महान कला-कार बन जाऊंगा।"

उसका विवेक उससे यह कह रहा था, लेकिन उसके अंतरतम में कहीं और गहराई से एक और आवाज़ सुनायी दे रही थी, जो ज़्यादा तेज़ थी और ज़्यादा आसानी से समझा-बुझाकर राज़ी कर लेनेवाली थी। उसने एक बार फिर सोने के सिक्कों के उस ढेर को देखा और अपनी बाईस वर्ष की उमड़ती हुई जवानी के वेग को और भी तीव्र रूप में अनुभव किया। अब उसके बस में वह सब कुछ था जिसे वह हमेशा से सराहता आया था और जिसके लिए वह दूर से ललचाता रहा था। उसके विचार से ही उसके खून की गर्दिश तेज़ हो गयी। फ़ैशनेबुल टेल-कोट पहनना, अपना बरसों पुराना संयम तोड़ना, एक शानदार नया फ़्लैट किराये पर लेना, फ़ौरन थिएटर की तरफ़, पेस्ट्री की दुकान की तरफ़ रुख़ करना... वग़ैरह-वग़ैरह, और अपना पैसा समेटकर वह सड़क पर निकल गया।

सबसे पहले वह दर्जी के यहा गया, सिर से पाव तक नये कपडो मे सज गया, और अपने आपको बाल-सुलभ आश्चर्य से ताकता रहा; उसने तरह-तरह के इत्र और क्रीमे खरीदी और नेव्स्की एवेन्यू पर जो पहला फ्लैट मिला उसे मोल-तोल किये बिना किराये पर ले लिया, बहुत ही बढिया घर था, आईने लगे हुए और चौडी-चौडी फ्रासीसी खिडकिया, बदहवासी मे उसने अपने लिए बिना कमानी का चश्मा खरीद लिया, और उतनी ही बदहवासी मे उसने ढेरो रेशमी गुलूबद खरीद लिये, अपनी जरूरत से कही ज्यादा, सैलून मे जाकर अपने बाल घुघराले कराये, किसी वजह के बिना ही गाडी पर बैठकर शहर के दो चक्कर लगाये, पेस्ट्री की दुकान मे जाकर इतनी मिठाइया छककर खायी कि जी मतलाने लगा और एक फ्रासीसी रेस्तरा मे गया जिसके बारे मे उसने उडती-उडती अफवाहे ही सुन रखी थी, और जिससे उसका उतना ही दूर का सबध था जितना चीन से। उसके सिर मे शराब पीने की वजह स कुछ धमक होने लगी और जब वह अकडता हुआ बाहर सडक पर निकला तो ऐसा महसूस कर रहा था कि अगर शैतान भी मुकाबले पर आ जाये तो उससे भी वह निबट लेगा। बिना कमानीवाले अपने चश्मे मे हर ऐरे-गैरे को घूरता हुआ वह सडक की पटरी पर ऐठता हुआ चला जा रहा था। पुल पर उसे अपना पुराना प्रोफेसर दिखायी दिया और वह बडी चालाकी से उनसे कतराकर निकल आया; प्रोफेसर साहब पुल पर हक्का-बक्का खडे रह गये और उनका चेहरा विकृत होकर सवालिया निशान की शक्ल का हो गया।

उसने अपनी सारी चीजे – ईजिल, कैनवस, तस्वीरे – उसी दिन शाम को अपने नये शानदार फ्लैट मे पहुचवा दी। अपनी सबसे अच्छी तस्वीरे उसने प्रमुख स्थानो मे लगा दी, जो बुरी थी उन्हे एक कोने मे झोक दिया और फिर अपने शानदार कमरो मे टहलने लगा, उसकी नजरे बार-बार आईनो की ओर मुड जाती थी। उसके हृदय मे यह अदम्य इच्छा उमडी आ रही थी कि उसी क्षण ख्याति की गर्दन पकडकर सारी दुनिया के सामने आ जाये! उसे अभी से यह शोर सुनायी देने लगा था "चर्तकोव, चर्तकोव! तुमने चर्तकोव की तस्वीर देखी? क्या नजाकत है इस चर्तकोव के ब्रश मे भी! कैसा जबर्दस्त कमाल का हुनर है!" वह बहुत उद्विग्न होकर अपने कमरे मे टहलता रहा, उसके

दिमाग़ में इस तरह के विचारों का ववंडर उठता रहा। अगले दिन सोने के दस सिक्के लेकर वह एक लोकप्रिय अख़वार के प्रकाशक के पास उसकी मदद लेने गया; पत्रकार ने वड़े तपाक से उसका स्वागत किया, फ़ौरन उसे "जनावे-आली" कहकर संवोधित किया, अपने हाथों में चर्तकोव के दोनों हाथ थामकर हाथ मिलाया, विस्तार के साथ उसका नाम, वाप का नाम, पता-ठिकाना पूछा, और अगले ही दिन एक नयी तरह की चर्वी की मोमवत्तियों के इश्तहार के नीचे इस शीर्पक से एक लेख छपा: 'चर्तकोव और उनकी सराहनीय कला'। उस लेख में कहा गया था: "हम शहर के पढ़े-लिखे नागरिकों को जल्दी से जल्दी एक सुखद और शानदार नयी उपलव्धि की सूचना दे देना चाहते हैं। इससे तो कोई इंकार नहीं करेगा कि हमारे समाज को कितने ही वहुत वढ़िया चेहरों-मोहरों और शानदार सूरतों पर नाज़ है, लेकिन अव तक हमारे पास ऐसे साधन नहीं थे कि हम आनेवाली पीढ़ियों की ख़ातिर उन्हें चमत्कारी कैनवसों पर उतार सकें; अव यह कमी पूरी हो गयी है: हमारे वीच एक ऐसा कलाकार उभरा है जिसमें ये सारे गुण मौजूद हैं। अव समाज की हर कोमलांगी ललना के लिए इस वात का आश्वासन हो गया है कि उसके सुकुमार सौंदर्य के सारे लालित्य को, उसकी आकर्पक, मुग्धकारी आभा सहित चित्र में उतारा जा सकेगा, वसंत के फूलों के वीच मंडलाती हुई तितलियों की तरह। परिवार के वड़े-वूढ़े अपने आपको अपने परिवार के प्रियजनों के वीच देख सकेंगे। सौदागर, सूरमा, सिपाही, आम नागरिक, राजनेता – सभी अपने-अपने उदात्त काम नये उत्साह से करते रह सकेंगे। जल्दी कीजिये, जल्दी कीजिये, चहलक़दमी छोड़िये, किसी दोस्त, रिश्तेदार के यहां या तड़क-भड़कवाली दुकान में जाने का काम फिर कभी के लिए उठा रखिये – आप जो भी काम कर रहे हों उसे रोक दीजिये, आप जहां कहीं भी हों फ़ौरन चले आइये। इस कलाकार के शानदार स्टूडियो में (नेव्स्की एवेन्यू, नंवर फ़लां-फ़लां) उसकी तूलिका के चमत्कार की कुछ उत्कृष्ट कृतियां प्रदर्शित हैं, उस तूलिका के चमत्कार की जिस पर वान डाइक और टिशियन जैसे कलाकारों को भी नाज़ होता। आप यह नहीं वता सकेंगे कि कौन-सी चीज़ अधिक प्रभावशाली है, उनका सत्याभास और मूल से उनकी समानता, या तूलिका का असाधारण रूप से ताज़ा और जीता-जागता काम। धन्य हो, कलाकार!

जीवन की लॉटरी में तुम्हारे टिकट का नंबर निकल आया है। ज़िंदाबाद, अंद्रेई पेत्रोविच !" (जैसा कि हम देख सकते हैं, पत्रकार को अपनेपन का पुट देना पसंद था।) "अपने आपको और हम सब लोगों को गौरवान्वित करो। हमसे तुम्हें उचित सराहना मिलेगी। हमारी कामना है कि तुम्हारे पास लोगों का ताता बंधा रहे, वे ढेरों पैसा लाकर तुम पर लुटायें, हालांकि हमारे कुछ साथी पत्रकार इसके खिलाफ हैं, और यही तुम्हारा पुरस्कार हो।'

हमारे चित्रकार ने मन ही मन संतोष अनुभव करते हुए यह लेख पढ़ा; उसका चेहरा सचमुच खिल उठा। उसकी ख्याति अखबारों तक पहुंच गयी थी: यह उसके लिए एक महान अवसर था उसने उन पंक्तियों को बार-बार पढ़ा। वान डाइक और टिशियन से अपनी तुलना की बात उसे विशेष रूप से संतोषप्रद लगी। "ज़िंदाबाद, अंद्रेई पेत्रोविच !" के नारे से भी वह बहुत खुश हुआ, छपे हुए अक्षरों में कोई उसका पहला नाम और बाप का नाम लेकर उसे संबोधित करे, यह उसके लिए ऐसा सम्मान था जिसकी उसने कभी आशा भी नहीं की थी। वह तेज-तेज कदमों से अपने कमरे में टहलने लगा और अपने बालों को उलझाता रहा, कभी आराम-कुर्सी पर बैठ जाता, और फिर कभी उछलकर खड़ा हो जाता और जाकर सोफे पर बैठ जाता और कल्पना करने लगता कि वह किस तरह अपने यहां आनेवाले सज्जनों और महिलाओं का स्वागत करेगा, वह चलकर अपनी बनायी हुई तस्वीर के पास जाता और ब्रश को तेज़ी से घुमाता ताकि उसके हाथ की गति में शालीनता आ जाये। अगले दिन उसके दरवाज़े की घंटी बजी। उसने भागकर दरवाज़ा खोला, एक महिला अंदर आयी। उनके आगे-आगे फर का कॉलर लगी हुई वर्दी पहने एक अर्दली था और महिला के साथ एक १८ साल की लड़की थी, जो उनकी बेटी थी।

"श्रीमान चर्तकोव ?" महिला ने पूछा, "आपके बारे में इतना कुछ लिखा गया है, लोग कहते हैं कि आपकी तस्वीरें निष्कलंक चित्रकला का चरमोत्कर्ष होती हैं।" यह कहकर उन्होंने अपनी नाक पर बिना कमानी का चश्मा चढ़ाया और दीवारों का मुआइना करने के लिए चल पड़ीं—पर हुआ कुछ ऐसा कि दीवारों पर एक भी तस्वीर नहीं थी। "लेकिन आपकी तस्वीरें हैं कहां?"

"अभी लायी जा रही हैं," चित्रकार ने कुछ सिटपिटाकर कहा, "इस फ़्लैट में मैं अभी आया हूं, इसलिए वे अभी रास्ते में हैं... अभी पहुंचीं नहीं।"

"आप इटली में थे?" महिला ने अपने विना कमानी के चश्मे से उसकी ओर देखते हुए पूछा, क्योंकि कोई और चीज़ थी ही नहीं जिसकी ओर वह देखतीं।

"जी नही, मैं था तो नहीं लेकिन... मैं वहां जाना ज़रूर चाहता हूं... दरअसल फ़िलहाल मैंने वहां जाने का इरादा कुछ दिन के लिए टाल दिया है... मेहरबानी करके इस आराम-कुर्सी पर वैठ जाइये, आप थक गयी होंगी..."

"शुक्रिया, वड़ी देर से अपनी गाड़ी में वैठी रही हूं। अच्छा, वह रहीं, आख़िरकार आपका कारनामा दिखायी दे ही गया!" महिला ने झपटकर सामनेवाली दीवार की ओर जाते हुए और जमीन पर रखे हुए अभ्यास-चित्रों, ख़ाकों, रेखाचित्रों और आकृति-चित्रों की ओर अपने बिना कमानी के चश्मे से देखते हुए कहा। "C'est charmant! Lize, Lize, venez ici!"* देखो, विल्कुल टेनियर जैसा कमरा है: देखो तो, हर चीज़ कैसी विखरी हुई, इधर-उधर वेतरतीब पड़ी है, मेज़ पर रखी हुई धड़ तक की मूर्ति, वांह, रंग की तख़्ती; देखो तो कितनी धूल है, देखो तो धूल की तस्वीर कैसी बनायी है! C'est charmant! और इस तस्वीर में इस औरत को देखो जो अपना मुंह धो रही है—quelle jolie figure!** वाह, किसान! Lize, Lize, रूसी कुरता पहने हुए किसान! देखो: किसान! तो आप सिर्फ़ पोर्ट्रेट नहीं बनाते हैं?"

"अरे, यह तो यों ही बकवास है... यों ही वक़्त काटने के लिए, हाथ साफ़ करने के लिए कुछ तस्वीरें बनायी हैं..."

"अच्छा, यह वताइये, आजकल के पोर्ट्रेट वनानेवालों के वारे में आपकी क्या राय है? यह वात सच है न कि अव टिशियन की टक्कर का कोई नहीं है? उनके रंगों में वह ज़ोर नहीं होता, और न ही वह... वड़े अफ़सोस की वात है कि मैं जो कुछ कहना चाहती हूं वह रूसी

---

* कितना मोहक है! लीज़ा, लीज़ा, यहां आओ! (फ़्रांसीसी)

** कितना सुन्दर चेहरा है! (फ़्रांसीसी)

में नहीं समझा सकती।" (वह महिला चित्रकला में थोड़ा-बहुत दखल रखती थी और अपने बिना कमानी के चश्मे में इटली की सारी गैलरियां देख चुकी थी।) "लेकिन, श्रीमान नॉल . वह बहुत ही लाजवाब चित्रकार है! कमाल का हुनर रखते हैं! मेरा तो ख्याल है कि उनके चेहरों में जैसा भाव मिलता है वैसा टिशियन के यहा भी नहीं दिखायी देता। आप श्रीमान नॉल को नहीं जानते?"

"यह नॉल कौन साहब हैं?"

"श्रीमान नॉल। अरे, क्या हुनर पाया है! उन्होंने इसकी तस्वीर बनायी थी जब यह बारह साल की थी। आप हमारे यहा जरूर आइयेगा। लीज़ा, श्रीमान को अपनी एल्बम तो दिखाओ। मैं आपको बता दू कि हम लोग यहा इसलिए आये हैं कि आप इसका पोर्ट्रेट बनाना फौरन शुरू कर दें।"

"क्यों नहीं, बेशक, मैं शुरू करने को तैयार हू।"

और पलक झपकते वह ईजिल पास खींच लाया जिस पर चौखटे पर मढ़ा हुआ कैनवस लगा था, अपनी रंग की तश्ती उठायी और लड़की के बेरंग चेहरे पर अपनी नज़र जमायी। अगर वह मानव स्वभाव का पारखी होता तो उसने उस लड़की के चेहरे के हाव-भाव से एक क्षण में अदाजा लगा लिया होता कि उसके हृदय में कमसिन लड़कियों-वाली नाचने की उमग पैदा होने लगी थी, रात के खाने के समय तक और खाने के बाद की लंबी अवधि के प्रति उकताहट और असतोष की भावना, नयी पोशाक पहनकर टहलने के लिए बाहर निकल जाने की इच्छा जागृत होने लगी थी, दिमाग और चेतनाओ को निखारने के लिए मा के जबर्दस्ती करने पर विभिन्न कलाओं की ओर जी न चाहते हुए भी ध्यान देने की गहरी छाप दिखायी देने लगी थी। लेकिन उस छोटे-से नाजुक चेहरे में चित्रकार जो कुछ देख सका वह थी बस उसकी कलात्मक रहस्यमयी पारदर्शिता, जैसी बढ़िया चीनी के बर्तनो में होती है, एक आकर्षक कोमल क्लाति, एक पतली-सी गोरी-गोरी गर्दन और अभिजात वर्ग की नज़ाकत। उसे अभी से अपनी विजय का पूर्वाभास होने लगा था, वह अपनी तूलिका की सुकोमलता और प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए कृतसकल्प था, जिसे अब तक अपनी अभिव्यक्ति के लिए केवल उसके मॉडलों के कठोर चेहरों, प्राचीन काल की आकृतियो और क्लासिकी उत्कृष्ट कलाकारों की कृतियो की नकल का ही माध्यम

मिल पाया था। उसे अपनी कल्पना में अभी से दिखायी देने लगा था कि जब इस सुंदर मुखड़े की तस्वीर बनकर तैयार होगी तब वह कैसी लगेगी।

"देखिये, बात यह है," महिला ने कुछ चिंतित होकर माथे पर बल डालते हुए कहा, "मैं चाहती हूं कि आप इसकी तस्वीर इस तरह बनाइये: इस वक़्त यह एक पोशाक पहने है; सच पूछिये तो मेरा जी चाहता है कि वह साधारण आधुनिक पोशाक न पहने होती; मैं चाहती हूं कि वह कोई सीधा-सादा लिबास पहने किसी पेड़ की छांव में बैठी हो, पृष्ठभूमि में खेत हो, जिसमें बहुत दूर भेड़ों का गल्ला हो, या पेड़ों का झुरमुट हो... ताकि देखने से यह न लगे कि वह किसी नाच में या किसी फ़ैशनेबुल पार्टी में जा रही है। मैं तो कहती हूं कि हमारे नाच आत्मा को इतनी बुरी तरह नष्ट कर देते हैं, वे भावनाओं को इतनी बुरी तरह कुचलकर मुर्दा कर देते हैं... मैं सादगी चाहती हूं, ज़्यादा सादगी।"

अफ़सोस की बात है कि मां और बेटी दोनों ही की मोम जैसी सूरतों से साफ़ लगता था कि वे ठीक इसी तरह की नाच की महफ़िलों में अपनी न जाने कितनी रातें नाच-नाचकर बिता चुकी हैं।

चर्तकोव काम मे जुट गया; उसने मॉडल को बिठाकर अपनी कल्पना में दृश्य का एक चित्र बनाया। उसने हवा में अपना ब्रश हिलाकर कुछ कल्पित बिंदु निर्धारित किये, एक आंख सिकोड़कर पीछे हटा और दृश्य को ध्यान से देखने लगा – और एक ही घंटे के अंदर उसने तस्वीर का खाका बनाना शुरू भी किया और ख़त्म भी कर दिया। परिणाम से संतुष्ट होकर उसने फ़ौरन चित्र बनाना शरू किया और अपने काम में बिल्कुल खो गया। वह बाक़ी हर चीज को भूल चुका था, यह भूल चुका था कि वह अभिजात वर्ग की महिलाओं के बीच था, और उसने कलाकारों की कुछ सनकीपन की हरकतें भी करनी शुरू कर दी थीं; वह अजीब ढंग से बुदबुदाने लगा और कोई गीत गुनगुनाने लगा, जैसा कि काम में पूरी तरह डूबे होने पर कलाकार करते हैं। झटके के साथ अपना ब्रश हिलाते हुए उसने बड़ी बेतकल्लुफ़ी से मॉडल से अपना सिर ऊपर उठाने को कहा, इससे पहले कि वह आख़िरकार कुनमुनाने लगती और थक जाने की शिकायत करने लगती।

"बस, बहुत हो गया, पहली बार के लिए इतना काफ़ी है,"

महिला ने एलान किया।

"ज़रा-सी और," कलाकार ने अपने आपको भूलते हुए कहा।

"नहीं, अब रहने दो! लीजा, तीन बज गया है!" महिला ने अपनी पेटी में सोने की जंजीर से लटकी हुई छोटी-सी घड़ी हाथ में लेकर कहा और फिर अधीर होकर बोली "अरे, वक्त तो देखो!"

"बस, एक मिनट और," चर्तकोव ने सहज भाव से बच्चों जैसे विनीत स्वर में कहा।

ऐसा लग रहा था कि महिला इस बार उसकी कलाकारोंवाली झक को पूरा करने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं थीं, लेकिन उन्होंने अगली बार उसे और ज्यादा समय देने का वादा किया।

"सचमुच, मुझे बहुत अफसोस हो रहा है," चर्तकोव ने सोचा, "हाथ में प्रवाह तो अब आया है।" और उसे याद आया कि जब वह वसीलेव्स्की द्वीप पर अपने स्टूडियो में काम करता था तब किसी ने कभी उसे टोका नहीं था और न ही बीच में उसका काम रोका था, निकीता एक ही मुद्रा में बिल्कुल निश्चल बैठा रहता था, जितनी देर चाहो उसकी तस्वीर बनाते रहो, उसे जिस मुद्रा में बिठा दिया जाता था उसी में वह सो भी जाया करता था। झुंझलाकर उसने अपना ब्रश और रंगों की तख्ती कुर्सी पर रख दी और उदास भाव से कैनवस के सामने खड़ा रहा। जब उन भद्र महिला ने उसकी प्रशंसा में कुछ शब्द कहे तब जाकर उसका ध्यान भंग हुआ। उन्हें रास्ता दिखाने के लिए वह दरवाज़े की ओर झपटा, और सीढ़ियों पर पहुंचने पर उसे अगले हफ्ते किसी दिन उनके यहां खाना खाने के लिए आने का निमंत्रण मिला। वह अपने आपमें बहुत खुश होकर कमरे में वापस आया। इन भद्र महिला ने उसे बिल्कुल मंत्रमुग्ध कर लिया था। अब तक वह इस तरह की हस्तियों को अपनी परिधि के बाहर समझता था, जिनका जन्म सिर्फ इसलिए होता है कि वे वर्दी पहने हुए अर्दलियों और भड़कीले कोचवानों के साथ शानदार गाड़ियों में घूमती फिरें और अपना फटीचर ओवरकोट पहने सड़क पर पैदल जाते हुए अभागे राह-गीरों पर उचटती हुई नज़रें डालती रहें। और अब इसी तरह की एक हस्ती उसके अपने कमरे में आयी थी, वह उसकी तस्वीर बना रहा था और उसे एक रईसाना घर में खाने की दावत दी गयी थी। उस पर संतोष की अपूर्व भावना छा गयी, बेहद खुश होकर उसने

अपने आपको इनाम देने के लिए बहुत शानदार खाना खाया, उसके बाद थिएटर देखने गया और एक बार फिर गाड़ी पर बैठकर शहर में निरुद्देश्य घूमता रहा।

अगले कुछ दिनों तक वह अपने रोज़मर्रा के काम की ओर ध्यान ही नहीं दे सका। वह हर वक़्त बेचैनी से कान लगाये सुनता रहता था, उस क्षण की राह देखता रहता था जब दरवाज़े की घंटी बजे। आख़िरकार वह भद्र महिला अपनी पीली बेटी को साथ लेकर आयीं। उसने उन्हें बिठाया, फ़ैशनेबुल अंदाज़ अपनाने की कोशिश करते हुए बड़ी नजाकत से कैनवस आगे खींचा और तस्वीर बनाने लगा। खिली हुई धूप और तेज़ रोशनी से उसे बहुत मदद मिल रही थी। उसे अपने दुबले-पतले नाज़ुक मॉडल में बहुत कुछ ऐसा दिखायी दे रहा था जिसे अगर वह कैनवस पर उतार पाता तो उसकी तस्वीर काफ़ी सराहनीय बन सकती थी; वह समझ रहा था कि मॉडल के बारे में उसकी जो कल्पना है उसे अगर वह पूरी तरह व्यक्त कर सके तो वह बहुत शानदार चीज़ पेश कर सकता है। यह महसूस करके कि वह एक ऐसी चीज़ को व्यक्त करने जा रहा है जिसे दूसरे लोग देख भी नहीं पाये हैं उसका दिल बल्लियों उछलने लगा। उसका काम उसके दिमाग़ पर पूरी तरह छा गया; उसने अपने आपको अपने ब्रश की गति में पूरी तरह लीन कर दिया और एक बार फिर अपने मॉडल की अभिजातवर्गीय उत्पत्ति को बिल्कुल भुला दिया। दम साधे हुए वह बड़ी बेचैनी से उस सत्रह साल की लड़की के नाज़ुक नाक-नक़्शे और लगभग पारदर्शी शरीर को कैनवस पर उभरते देखता रहा। उसने हर बारीकी को पकड़ लिया, उसकी त्वचा की पीतवर्ण आभा, आंखों के नीचे की नीलिमा – हर चीज़ को, और वह उसके माथे के छोटे-से मुंहासे को तस्वीर में जोड़ने जा ही रहा था कि अचानक उसे कहीं ऊपर से उसकी मां की आवाज़ सुनायी दी। "अरे, उसे क्यों बना रहे हैं? उसकी कोई ज़रूरत नहीं है," महिला ने कहा। "और यहां भी देखिये, कई जगह... कुछ पीलापन भी आ गया है न, और यहां कुछ गहरे धब्बे भी हैं।" चित्रकार ने समझाना शुरू किया कि उन धब्बों और पीलेपन से कुल मिलाकर बहुत अच्छा असर पैदा होता है, चेहरे का स्वाभाविक और आकर्षक रूप उभर आता है। लेकिन उसे बताया गया कि उनसे न तो कोई रूप उभरता है और न ही कुल मिलाकर कोई अच्छा असर पैदा

होता है, और यह कि ये सारी बाते बस उसकी कल्पना की उपज हैं। "बस मुझे एक जगह पीले रग का एक हल्का-सा हाथ मार लेने दीजिये। मै आपके हाथ जोडता हू," चित्रकार ने भोलेपन से कहा। लेकिन उसे उसकी भी इजाजत नही दी गयी। सूचना दी गयी कि उस दिन लीज़ा कुछ उखडी-उखडी हुई थी और उसके चेहरे की रगत मे कभी कोई पीलापन नही रहा था, बल्कि इसके विपरीत उसके चेहरे मे कमाल की ताजगी थी। उदास भाव से वह उन खूबियो पर रग फेरने लगा जिन्हे कैनवस पर उतार लाने मे उसके ब्रश को सफलता मिली थी। कई ऐसी बारीकिया जो मुश्किल से ही दिखायी देती थी गायब हो गयी और उनके साथ ही चित्र का सत्याभास भी बहुत कुछ जाता रहा। बेजान हाथो से वह तस्वीर पर वे घिसे-पिटे रग लगाने लगा जिन्हे कोई भी चित्रकार आखे मूदकर लगा सकता है, और जो जीती-जागती आकृतियो को भी बेजान और नीरस बना देते हैं, जैसा कि चित्रकला की पाठ्य-पुस्तको मे देखने को मिलता है। लेकिन महिला बहुत सतुष्ट थी कि आखो मे खटकनेवाले वे रग मिटा दिये गये थे, और उन्होंने बस इस बात पर आश्चर्य प्रकट किया कि तस्वीर पूरी करने मे इतना ज्यादा वक्त लग रहा था, और साथ ही यह भी जोड दिया कि उन्होंने तो सुन रखा था कि वह दो बैठको मे तस्वीर पूरी कर सकता है। चित्रकार से इसका कोई जवाब देते न बन पडा। महिलाए उठकर चल देने को तैयार हुई। उसने अपना ब्रश रख दिया। उनके साथ दरवाज़े तक गया और उनके चले जाने के बाद बडी देर तक अपनी बनायी हुई तस्वीर के सामने निश्चल खडा उदास भाव से उसे घूरता रहा, वह स्तभित रह गया था, उसे चेहरे की वे नारी-सुलभ विशेषताए, रगो की वे कोमल आभाए और उनके वे अलौकिक उतार-चढाव याद आ रहे थे जिन्हे वह चित्र मे उतार लाने मे सफल हो गया था और जिन्हे उसे बडी बेरहमी से नष्ट कर देना पडा था। इस तरह के विचारो मे डूबकर उसने तस्वीर को एक तरफ हटा दिया और साइकी का वह रेखाचित्र ढूढ निकाला जो उसने बहुत पहले बनाया था। चेहरा बडी दक्षता से बनाया गया था लेकिन वह बिल्कुल नीरस और सपाट था, उसमे केवल अमूर्त्त आकार थे, जान बिल्कुल नही थी। करने को कुछ और न होने की वजह से वह उस तस्वीर पर काम करने लगा, और उसे उसने रगो के वे सारे उतार-चढाव प्रदान कर दिये

जो उसने चित्र बनवाने के लिए बैठनेवाली उस अभिजात्य लड़की के चेहरे में देखे थे। जो आकार, जो आभाएं और रंगों के जो उतार-चढ़ाव उसकी कल्पना ने ग्रहण किये थे उन्हें इस चित्र में उसने उस शुद्ध रूप में स्थानांतरित कर दिया, जो केवल तभी संभव होता है जब चित्रकार बहुत देर तक प्रकृति का गहन अवलोकन करने के बाद उससे अलग हट जाता है और उतनी ही निर्विकार कलाकृति का सृजन करता है। धीरे-धीरे साइकी जीवित हो उठी, और वह विचार जिसका बोध भी मुश्किल से ही होता था अब ठोस रूप धारण करने लगा। उस फ़ैशनेबुल लड़की के चेहरे के सारे लक्षण अनायास ही साइकी के चेहरे को प्रदान कर दिये गये, जिससे उसमें एक असाधारण भाव पैदा हो गया और उस चित्र को एक मौलिक कृति कहलाने का अधिकार मिल गया। ऐसा लगता था कि उसने अपने मॉडल से जो कुछ पाया था उसे उसने अलग-अलग और सामूहिक रूप से इस्तेमाल किया था, और वह अपने काम में पूरी डूब गया था। लगातार कई दिन तक वह पूरी तरह अपने इस चित्र में खोया रहा और उसकी नव-परिचित अभिजात्य महिलाओं ने उसे तल्लीनता की इसी अवस्था में पाया। वह इसके लिए तैयार नहीं था, उसे तस्वीर को ईज़िल पर से हटाने का भी समय न मिल पाया। दोनों महिलाएं हर्ष-विभोर होकर चिल्ला पड़ीं और तालियां बजाने लगीं।

"लीज़ा, लीज़ा! वाह, कैसी हूबहू तस्वीर खींची है! Superbe, superbe!* उसे यूनानी लिबास पहनाने का विचार कैसी अनूठी प्रेरणा है! वाह, कैसा चमत्कार है!"

कलाकार की समझ में नहीं आ रहा था कि उन महिलाओं के दिमाग़ से यह रुचिकर भ्रम कैसे दूर करे। शरमाते हुए सिर झुकाकर उसने बताया:

"यह साइकी है।"

"साइकी का रूप दे दिया है? अरे, c'est charmant!" मां ने मुस्कराकर कहा और बेटी ने भी उसी मुस्कराहट को प्रतिबिंबित किया। "देखो तो, लीज़ा, साइकी के रूप में तुम्हारा यह चित्र कैसा फबता है! Quelle idée délicieuse!** लेकिन क्या काम है! बिल्कुल

* लाजवाब, शानदार! (फ़्रांसीसी)
** कितना अच्छा विचार है! (फ़्रांसीसी)

कार्रेजियो जैसा लगता है। मै मानती हू कि मैंने आपके बारे मे पढा और सुना तो था लेकिन मुझे यह नही मालूम था कि आप मे इतनी प्रतिभा है। नही, अब तो आपको मेरी तस्वीर भी बनानी पडेगी।"

मालूम यह हुआ कि वह महिला भी किसी साइकी के रूप मे दिखायी देना चाहती थी।

"अब मै इनका क्या करू?" कलाकार ने सोचा। "अगर वे ऐसा ही चाहती हैं तो साइकी को जिसका भी प्रतिरूप चाहें समझ ले," और उसने ऊचे स्वर मे कहा

"मेहरबानी करके थोडी देर के लिए बैठ तो जाइये, मै जरा इसकी नोक-पलक ठीक कर दू।"

"अरे नही, मुझे डर लगता है कि कही आप जैसी है वैसी ही बहुत अच्छी है।"

कलाकार को ऐसा लगा कि महिलाओ को शायद पीलेपन का डर है, उसने उन्हे आश्वस्त कर दिया कि वह केवल आखो को अधिक चमकदार और भावपूर्ण बनाना चाहता है। जबकि सच तो यह था कि वह बहुत लज्जित अनुभव कर रहा था और चाहता था कि मूल से कुछ समानता तो पैदा हो जाये, वरना लोग उसे सरासर निकम्मा कहकर उसकी निंदा करेंगे। और सचमुच, धीरे-धीरे साइकी की आकृति मे उस पीली लडकी का नाक-नकशा पहचाना जाने लगा।

"बस, बस!" मा ने चिल्लाकर कहा, वह डर रही थी कि तस्वीर कही उनकी बेटी से बहुत ज्यादा न मिलने लगे।

इनाम मे चित्रकार को सब कुछ दिया गया मुस्काने, पैसा, प्रशसा के शब्द, तपाक से हाथ मिलाने का सौभाग्य और खाना खाने के लिए आने के निमत्रण, दूसरे शब्दो मे, उसे उसका जी खुश करने-वाले हजारो पुरस्कार मिले। उस तस्वीर से शहर मे तहलका मच गया। महिला ने उसे अपने मित्रो को दिखाया, वे सभी आश्चर्यचकित रह गये कि कलाकार ने कितनी दक्षता के साथ आकृति की समानता बनाये रखने के साथ ही अपने मॉडल के सौंदर्य मे एक नयी बात पैदा कर दी है। यह बादवाला मत व्यक्त करते समय बोलनेवाले के गाल पर ईर्ष्या की लाली दौड जाती थी। और अचानक कलाकार पर ऑर्डरो की बौछार होने लगी। ऐसा लगता था कि सारा शहर उससे अपनी तस्वीर बनवाना चाहता है। उसके दरवाजे की घटी निरन्तर बजने

लगी। एक तरह से यह अच्छी बात भी हो सकती थी, क्योंकि अलग-अलग चेहरों की तस्वीरें बनाने से उसे विविधता का अत्यधिक अभ्यास करने का अवसर मिलता था, लेकिन दुर्भाग्य की बात यह थी कि ये सभी उस क़िस्म के लोग थे जिन्हें खुश करना बहुत मुश्किल होता है, वे तो जल्दबाज़ थे, बहुत व्यस्त थे या वे ऊंचे समाज के लोग थे, जिसका मतलब यह था कि वे दूसरों से अधिक व्यस्त थे और इसलिए हद से ज़्यादा अधीर थे। हमेशा उनका पहला तक़ाज़ा यह होता था कि तस्वीर अच्छी हो और जल्दी बने। कलाकार समझ गया कि आदर्श स्थिति को प्राप्त करने का प्रयास त्याग देना होगा, और यह कि उसे केवल कलात्मक दक्षता और ब्रश की सफ़ाई से काम चलाना होगा। उसे सामान्य, आधारभूत भाव को ही पकड़ना था और अपने ब्रश को ब्योरे की बातों का चित्रण करने की दिशा में भटकने नहीं देना था; दूसरे शब्दों में, प्रकृति का पूर्णतः यथार्थ चित्रण करना बिल्कुल असंभव था। इसके साथ ही हम इतना और बता दें कि उसके यहां तस्वीर बनवाने के लिए आनेवालों के कई दूसरे तक़ाज़े भी होते थे। महिलाओं का आग्रह होता था कि वह बाक़ी सब चीज़ों को भूलकर उनकी आत्मा और उनके चरित्र का चित्रण करे, सारे तीखे कोणों में गोलाई पैदा कर दे, सारे दोषों को किसी तरह ढक दे – या उन्हें बिल्कुल ही ग़ायब कर दे। दूसरे शब्दों में, तस्वीर ऐसी हो जिसे आप चाव से देखते रह सकें, शायद, उससे प्यार भी करने लगें। नतीजा यह होता था कि जब वे तस्वीरें बनवाने बैठती थीं तो ऐसी मुद्रा धारण कर लेती थीं कि कलाकार बिल्कुल चकरा जाता था: कोई अपने चेहरे पर उदासी का भाव लाने की कोशिश करती थी, तो कोई स्वप्निलता का, तो कोई और अपना मुंह छोटा करने की कोशिश में उसे इतना कसकर भींच लेती थी कि वह पिन के माथे के बराबर बिंदु बनकर रह जाता था। और इन सब बातों के बावजूद उनका तक़ाज़ा यह होता था कि जो तस्वीर वह बनाये वह उनकी सूरत से बिल्कुल मिलती-जुलती हो और उसमें स्वाभाविक सहजता हो। जो सज्जन आते थे वे भी महिलाओं से किसी तरह बेहतर नहीं थे। किसी का तक़ाज़ा यह होता कि उसकी तस्वीर ऐसी बनायी जाये जिसमें उसके सिर की मुद्रा रोबदार हो; कोई दूसरा अपनी आंखें ऊपर उठा लेता जैसे प्रेरणा प्राप्त कर रहा हो; एक तीसरे आदमी का, जो गारद का लेफ़्टिनेंट था, तक़ाज़ा यह था

कि उसकी आंखों में फौजी कठोरता हो; ऊंचे ओहदे का कोई अफसर यह चाहता था कि उसके चेहरे पर अधिक स्पष्टवादिता और कुलीनता का भाव हो और उसका हाथ एक किताब पर रखा हो जिस पर साफ पढ़े जा सकनेवाले अक्षरों में लिखा हो "उसने सदा न्याय का पक्ष लिया"। शुरू में तो कलाकार का इन तकाज़ों से पसीना छूटता था: उसे बड़े ध्यान से इन सब बातों के बारे में सोचना पड़ता था और उसे अपना काम पूरा करने के लिए बहुत समय भी नहीं दिया जाता था। आखिरकार उसने इसका गुर सीख लिया, और उसे अब किसी समस्या का सामना नहीं करना पड़ता था। थोड़े ही से शब्दों में वह समझ जाता था कि उसका ग्राहक अपनी तस्वीर किस तरह की बनवाना चाहता है। जो लोग फौजी कठोरता चाहते थे उनके चेहरे को वह वही आकृति प्रदान कर देता था, जिनमें बायरन जैसा लगने की आकांक्षा होती उनकी मुद्रा वह बायरन जैसी बना देता। अगर महिलाएं कोरीन्ना, उन्दीना या अस्पासिया जैसी लगना चाहती तो वह उनकी इन लालसाओं को पूरा करने के लिए सदा तत्पर रहता, और उनके कहे बिना ही वह उनके चेहरे के सौंदर्य को बढ़ा देता, जिसका कोई कभी बुरा नहीं मानता और जिसके लिए कभी-कभी तो कलाकार का यह अपराध भी क्षमा कर दिया जाता है कि चित्र मूल जैसा नहीं है। शीघ्र ही उसे स्वयं अपनी तूलिका की चमत्कारी फुरती पर आश्चर्य होने लगा। यह तो बताने की ज़रूरत नहीं कि जो लोग उसके यहां तस्वीर बनवाने आते थे उनकी उमंगें लहरा उठती थीं और वे उसे जीनियस कहते थे।

चर्तकोव हर दृष्टि से फैशनेबुल चित्रकार बन गया। वह बाहर दावतों में जाने लगा, महिलाओं के साथ गैलरियों में और टहलने के लिए भी जाने लगा, भड़कीले कपड़े पहनने लगा और ऊंचे स्वर से आग्रह करने लगा कि कलाकार को सभ्य समाज का अंग होना चाहिये, उसे अपनी ख्याति बनाये रखना चाहिये कि आम कलाकार मोचियों जैसे कपड़े पहनते हैं, उन्हें शिष्ट आचरण नहीं आता, वे रख-रखाव नहीं जानते और उन्हें कोई शिक्षा तो बिल्कुल मिलती ही नहीं। उसने अपने घर और स्टूडियो को साफ-सुथरा रखने का पक्का बंदोबस्त कर लिया, दो रोबदार अर्दली रख लिये, छैला किस्म के नौजवान छात्रों को शागिर्द बना लिया, दिन में कई बार अपने कपड़े बदलने लगा, अपने बाल घुंघराले करवा लिये, मिलने आनेवालों की आवभगत करने

का शिष्टाचार अच्छी तरह सीखना शुरू कर दिया, और अपनी वाहरी सज-धज को हर तरह से निखारने में व्यस्त रहने लगा ताकि महिलाओं पर सबसे अच्छा असर पड़े; दूसरे शब्दों में, जल्दी ही उसे देखकर यह पहचानना भी असंभव हो गया कि यह वही विनम्र कलाकार है जो किसी ज़माने में दुनिया की नज़रों से ओझल रहकर वसीलेव्स्की द्वीप पर अपने छोटे-से फ़्लैट में काम करता था। वह अव वेझिझक होकर कलाकारों और उनके काम के वारे में अपनी राय देता था; उसका मत था कि पुराने उस्तादों को वहुत वढ़ा-चढ़ाकर आंका गया है, कि रफ़ाएल से पहले वे आदमियों के शरीर नमक-लगी हेरिंग मछलियों जैसे वनाते थे; कि उनकी कृतियों के चारों ओर जो एक पवित्र प्रभा-मंडल वना दिया गया है वह केवल सर्वसाधारण की कल्पना की उपज है; कि खुद रफ़ाएल की सारी तस्वीरें इतनी अच्छी नहीं हैं और उनके कई चित्रों की लोकप्रियता का कारण केवल उनकी ख्याति का रोव है; कि माइकेल एंजेलो वड़वोला था, क्योंकि वह शरीर-रचना के वारे में अपनी जानकारी का दिखावा करना चाहता था और उसमें रत्ती-भर भी लालित्य नहीं था, और यह कि वास्तविक प्रतिभा, कलात्मक शक्ति और असली रंग तो अव जाकर, इस शताव्दी में, देखने को मिलते हैं। और मानो अनायास ही इन वातों का सिलसिला स्वयं उसकी अपनी चर्चा पर आकर टूटता था।

"मेरी समझ में यह नहीं आता," वह कहा करता था, "कि लोग किसी कृति पर अनंतकाल तक वैठकर मेहनत करते रहने पर अपने आपको कैसे मजवूर कर लेते हैं। जो आदमी एक ही तस्वीर पर महीनों मेहनत कर सकता है वह, मेरी राय में, कलाकार नहीं घसियारा होता है। मैं नहीं मानता कि उसमें कोई प्रतिभा होती है। जो जीनियस होता है वह वहुत जल्दी और वड़ी हिम्मत से चीज़ वनाता है। अव इसी तस्वीर को ले लीजिये," वह अपने यहां आनेवालों की ओर मुड़कर कहता, "इसे मैंने दो दिन में वनाया था, यह चेहरा एक दिन में वनाया था, यह कुछ घंटों में, और यह तो एक घंटे से कुछ ही ज़्यादा वक़्त में वन गया था। जी नहीं, मैं... मैं सच कहता हूं, मैं किसी भी ऐसी तस्वीर को कला नहीं मानता जो एक-एक लकीर करके वड़ी मेहनत से वनायी गयी हो; वह व्यवसाय होता है, कला नहीं होती।"

इस तरह वह अपने मिलनेवालो का जी खुश करता, और वे भी उसकी तूलिका की शक्ति और स्फूर्ति पर चकित रह जाते, यह सुनकर कि उसकी कौन-सी तस्वीर कितनी जल्दी बनकर तैयार हो गयी थी, आश्चर्य के मारे उनके मुह से चीख निकल जाती और वे एक-दूसरे से कहते: "इसे कहते है हुनर, सच्चा हुनर! जरा उसकी बातें सुनो, देखो तो उसकी आखे कैसी चमकती हैं! Il y a quelque chose d'extraordinaire dans toute sa figure!*

ऐसी बाते सुनकर कलाकार का जी बेहद खुश होता। जब वह पत्रिकाओ मे अपनी कला की प्रशसा-भरी समीक्षा पढता तो वह बच्चो की तरह झूम उठता, हालाकि यह प्रशसा खुद उसके पैसे से खरीदी जाती थी। वह इनकी कतरने हर वक्त अपने साथ रखता था और कोई बहाना निकालकर अपने दोस्तो और जान-पहचानवालो को दिखाता था, और वह इतना भोला था कि इससे खुश भी होता रहता था। उसकी ख्याति फैलती गयी और उसे दिन-ब-दिन ज्यादा काम मिलने लगा। वह हमेशा एक जैसी तस्वीरो और मुद्राओ से तग आने लगा, जो अब तक उसे बिल्कुल ऊबा देनेवाली हो चुकी थी। उसे उन तस्वीरो को बनाने मे अधिकाधिक घृणा होती गयी, और जहा तक हो सकता था वह अब चेहरे का खाका बना देने से ज्यादा कुछ भी नही करता था और बाकी काम अपने शागिर्दो पर छोड देता था। पहले तो वह नयी-नयी मुद्राए खोजने, कोई आकर्षक और सशक्त प्रभाव पैदा करने की कोशिश भी करता था, लेकिन अब वह इससे भी उकताने लगा था। उसका दिमाग नये-नये विचार सोचकर ढूढ निकालने की लगातार कोशिश से थक गया था। उसके पास न इतनी शक्ति रह गयी थी और न ही इतना वक्त था समाज के जिस भवर में वह फैशन की कसौटी पर खरे उतरनेवाले आदमी की भूमिका अदा करने की कोशिश कर रहा था वह उसे बहाकर काम और विचारो से अधिकाधिक दूर खीचे लिये जा रहा था। उसकी शैली बेजान और नीरस होती गयी, और वह जाने बिना ही घिसी-पिटी और सपाट आकृतियों मे सीमित होकर रह गया। सरकारी और फौजी अफसरो के कठोर और फीके चेहरे-मोहरो मे, जो हमेशा बहुत सजे-सवरे होते थे और, यो समझ

* उसकी आकृति भी तो असाधारण है! (फ्रासीसी)

लीजिये, तसमों में कसे रहते थे, उसकी तूलिका को अपना चमत्कार दिखाने का बहुत मौक़ा नहीं मिलता था: उसकी तूलिका शानदार कपड़ों, आकर्षक मुद्राओं और भावावेशों को भूलने लगी, वर्ग की विशेषताओं, कलात्मक नाटकीयता और उसके उत्कृष्ट तनाव की तो बात ही जाने दीजिये। उसे अब सिर्फ़ किसी वर्दी, या किसी चोली, या किसी टेलकोट से सरोकार रह गया था, जिन चीज़ों से कलाकार का दिमाग़ ठिठुरकर रह जाता है और उसकी कल्पना का दम घुट जाता है। अब उसकी तस्वीरों में मामूली से मामूली ख़ूबियां भी बाक़ी नहीं रह गयी थीं, लेकिन फ़िलहाल उनकी ख्याति बनी हुई थी, हालांकि जो सच्चे पारखी और कलाकार थे वे उसकी नवीनतम कृतियों को देखकर बड़े अर्थपूर्ण ढंग से कंधे बिचका देते थे। उनमें से कुछ तो, जो चर्तकोव को पुराने ज़माने से जानते थे, यह नहीं समझ पाते थे कि उसने अपनी वह प्रतिभा कैसे खो दी, जो उसके कलाकार जीवन के शुरू में ही इतनी उभरकर सामने आयी थी, और वे व्यर्थ ही इस गुत्थी को सुलझाने की कोशिश करते रहते थे कि कोई आदमी ठीक ऐसे समय अपना कोई गुण कैसे खो देता है जब उसकी सारी क्षमताएं अपने विकास के शिखर पर पहुंच गयी हों।

लेकिन नशे में चूर हमारा कलाकार इन आलोचनाओं को अनसुना करता रहा। वह शरीर और आत्मा दोनों ही की शिथिलता की अवस्था में पहुंचता जा रहा था; उसका बदन भारी होता जा रहा था और पेट निकलता आ रहा था। पत्र-पत्रिकाओं में अब उसके नाम के साथ सम्मानसूचक विशेषण जोड़े जाने लगे थे: "हमारे प्रतिष्ठित अंद्रेई पेत्रोविच", "हमारे सुयोग्य अंद्रेई पेत्रोविच"। उसे सम्मानित पद दिये जाते थे, चित्रों को परखने के लिए बुलाया जाता था, समितियों का सदस्य बनाया जाता था। जैसा कि उन लोगों के साथ हमेशा होता है जो बूढ़े होने लगते हैं, वह भी अब रफ़ाएल और पुराने उस्तादों की ओर झुकने लगा था—इसलिए नहीं कि उसे उनकी प्रतिभा का पूरी तरह यक़ीन हो गया था बल्कि उन्हें नौजवान कलाकारों के ख़िलाफ़ एक हथियार की तरह इस्तेमाल करने के लिए। क्योंकि जैसी कि जीवन में उसकी उम्र के लोगों की आदत होती है, वह सभी नौजवानों को उनके नैतिक पतन और स्वच्छंद विचारों के लिए लताड़ता रहता था। वह विश्वास करने लगा था कि ज़िंदगी में हर चीज़ आसानी से मिल

जाती है, कि ऊपर से आनेवाली प्रेरणा जैसी कोई चीज़ नही होती और यह कि हर चीज़ को मर्यादा और समरूपता की एक ही कठोर प्रणाली मे अनुशासनबद्ध कर दिया जाना चाहिये। दूसरे शब्दों में, उसका जीवन उस अवस्था मे पहुच गया था जब हर स्वतस्फूर्त चीज़ आदमी के अदर सिमटकर रह जाती है, जब भावात्मक आवेग आत्मा तक अधिक क्षीण रूप मे पहुचते हैं और वे हृदय को बेधनेवाले स्वरों से आदोलित नही करते, जब सौदर्य के साथ सपर्क अछूती शक्तियो को अग्नि और ज्वाला मे रूपातरित नही करता, और जब भस्मीभूत चेतनाए सोने के सिक्कों की खनक को अधिक सहज रूप से स्वीकार करने लगती हैं, जब वह उनके मोहक सगीत पर बडी उत्सुकता से रीझने लगता है, और धीरे-धीरे, अनजाने ही, उनके प्रभाव से अपनी चेतनाओं को निसज्ञ हो जाने देता है। जिस आदमी ने छल-कपट से, योग्यता न रखते हुए भी ख्याति प्राप्त कर ली हो उसे ख्याति से कोई आनद नही मिल सकता; ख्याति तो उद्दीपन का निरतर स्पदन उसी व्यक्ति मे पैदा कर सकती है, जो उसके योग्य हो। इसलिए उसकी सारी भावनाओ और उसके सारे आवेगो की दिशा सोने के सिक्कों की ओर मुड गयी। उसकी लगन, उसका आदर्श, उसका भय, उसका आनद, उसका उद्देश्य सब कुछ सोना ही था। उसकी तिजोरियो मे नोटो की गड्डिया बढती गयी, और उन सभी लोगो की तरह जिनके भाग्य मे इस भयानक निधि को प्राप्त करना बदा होता है, सोने के अलावा हर चीज़ के प्रति उसकी चेतना भी मद पडती गयी और सवेदनहीन होती गयी, वह बिना किसी कारण के दौलत बटोरने लगा, बिना किसी उद्देश्य के उसे जमा करने लगा, वह लगभग बिल्कुल उन लोगो जैसा होता जा रहा था, जिनकी सख्या हमारे इस निष्प्राण जगत मे इतनी अधिक हो गयी है, जिनको जीवन और भावना से भरपूर लोग घृणा से देखते हैं, जिनको वे पत्थर के बने हुए चलते-फिरते ताबूतो जैसे लगते हैं जिनके अदर हृदय के स्थान पर एक मुर्दा होता है। लेकिन तभी एक ऐसी बात हुई जिसने उसे झझोडकर फिर उसकी आखे खोल दी।

एक दिन उसे अपनी मेज़ पर एक पत्र मिला जिसमें कला अकादमी ने उससे अनुरोध किया था कि वह उसके एक प्रतिष्ठित सदस्य की हैसियत से आकर एक नयी तस्वीर के बारे मे अपनी राय दे, जो इटली में काम सीखनेवाले एक रूसी कलाकार ने वहा से भेजी थी।

यह कलाकार पहले उसका दोस्त रह चुका था, उसके मन में बहुत छोटी उम्र से ही कला का बड़ा चाव था, एक सच्चे सेवक की लगन के साथ तन-मन से वह उसमें लीन हो गया था, अपने परिवारवालों, दोस्तों और प्रिय रुचियों से नाता तोड़कर वह भव्य आकाशों से आच्छादित कलाओं की उस मनोरम द्राक्ष-वाटिका की ओर, रोम के उस चमत्कारपूर्ण नगर की ओर चल पड़ा था, जिसके नाम से ही कलाकार के उत्साह-भरे हृदय में हिलोरें उठने लगती हैं। वहां वह तपस्वी की तरह परिश्रम में लीन हो गया, और किसी भी चीज़ से उसने अपनी साधना भंग नहीं होने दी। उसे इस बात की तनिक भी चिंता नहीं थी कि उसके चरित्र के बारे में, उसके फूहड़पन के बारे में, उसकी सामाजिक शिष्टाचार की अनभिज्ञता के बारे में, या उसके फटे-पुराने मैले-कुचैले कपड़ों से कला-जगत की जो बदनामी होती थी उसके बारे में लोग क्या सोचते थे। उसे इसकी रत्ती-भर भी परवाह नहीं थी कि उसके साथी उस पर झुंझलाते होंगे। हर चीज़ को त्यागकर वह कला को समर्पित हो गया। वह चित्रकला की गैलरियों में जाता, बड़े-बड़े उस्तादों की बनायी हुई तस्वीरों के सामने घंटों चुपचाप खड़ा उनकी तूलिका के चमत्कार का अध्ययन और विश्लेषण करता रहता। वह अपनी कोई तस्वीर उस समय तक पूरी न करता जब तक वह इन महान शिक्षकों की उपलब्धियों से उसकी तुलना करके उनके गुण-अवगुण देख न लेता और जब तक वह उनकी अमर कृतियों में से यह न खोज निकालता कि उनमें उसके लिए कौन-से अनकहे लेकिन अर्थपूर्ण निर्देश निहित हैं। वह कभी चिल्ला-चिल्लाकर की जानेवाली बहसों और तकरारों में नहीं उलझता था; वह शुद्धतावादियों का न समर्थन करता था, न उनकी निंदा। वह हर चीज को उसका उचित श्रेय देता था, और उसमें से केवल वही ग्रहण करता था जो सुंदर होता था, और अंततः उसने उनमें से केवल एक चित्रकार को, देवतुल्य रफ़ाएल को अपने शिक्षक के रूप में स्वीकार कर लिया, ठीक उसी तरह जैसे उस महान कवि-चित्रकार ने भव्य वैभव तथा सौंदर्य से परिपूर्ण अनेक महान कृतियां पढ़ने के बाद अंत में केवल एक पुस्तक अपने पास रखी थी, होमर की 'इलियड', क्योंकि वह इस निष्कर्ष पर पहुंच गया था कि उसमें वह सब कुछ था जिसकी किसी को ज़रूरत हो सकती है, और यह कि किसी भी दूसरी कृति में कोई चीज़ ऐसी नहीं थी जो उसमें अनूठे निर्वि-

कार रूप मे प्रतिबिंबित न हुई हो। इस प्रकार उसने अपनी इस शिक्षा से सृष्टि की उदात्त कल्पना, विचार का प्रबल सौंदर्य और उसकी दिव्य तूलिका का भव्य आकर्षण ग्रहण किया।

हॉल मे प्रवेश करने पर चर्तकोव ने देखा कि उस तस्वीर के सामने दर्शको की काफी बडी भीड जमा हो चुकी थी। वे गहरी चुप्पी साधे हुए थे, जैसा कि पारखियो के ऐसे जमाव मे बहुत कम होता है। उसने जल्दी से अपने आपको बहुत महत्वपूर्ण समझनेवाले विशेषज्ञ की मुद्रा बनायी और बढकर तस्वीर के पास चला गया—लेकिन, हे भगवान, वहा उसने क्या देखा!

उसके सामने एक तस्वीर टगी थी, नयी-नवेली दुल्हन जैसी शुद्ध, सुन्दर और पवित्र। चित्रकार की कृति विनम्र, दिव्य, निश्छल तथा सहज भाव से शुद्ध मेधावी प्रतिभा की तरह हर चीज़ से ऊपर उठ गयी थी। ऐसा लगता था कि जैसे चित्र मे अकित दिव्य आकृतिया इस बात से घबरा उठी हो कि इतनी बहुत-सी आखे उन्हे घूर रही है, और उन्होंने शरमाकर अपनी सुन्दर पलके झुका ली हो। कला-पारखी उस नये चित्रकार की तूलिका की चमत्कारी शक्ति देखकर दग रह गये थे। ऐसा लगता था कि उस चित्र मे सभी कुछ है उदात्त मुद्राओ मे प्रतिबिंबित रफाएल की प्रतिध्वनि, तूलिका की चमत्कारी दक्षता मे कार्रेजियो की प्रतिध्वनि। लेकिन चित्र मे सबसे अधिक प्रभावित करती थी वह सृजन-शक्ति जो कलाकार की आत्मा मे शामिल थी। वह चित्र की छोटी से छोटी ब्योरे की बातो मे व्याप्त थी, और हर जगह सतुलन और आतरिक शक्ति दिखायी देती थी। चित्रकार ने रेखाओ का वह द्रवित होता हुआ प्रवाहमय सुडौलपन अपनी तूलिका के वश मे कर लिया था जिसे प्रकृति मे केवल सच्चे कलाकार की दृष्टि ही देख सकती है और जिसे घटिया चित्रकार नुकीला बना देता है। यह स्पष्ट था कि चित्रकार बाह्य जगत की जिस चीज़ को भी अकित करता था उसे पहले वह अपनी आत्मा मे समा लेता था, जहा से वह सुमधुर और विजयोल्लास से ओत-प्रोत गीत की तरह ऐसे उमडकर बाहर आती थी जैसे वह आत्मा के किसी जलस्रोत से फूटी पड रही हो। अनजान से अनजान आदमी को भी यह बात साफ दिखायी देती थी कि सच्ची कलात्मक कृति और प्रकृति के प्रतिरूप के चित्रण मात्र मे कितना बडा अतर होता है। उस चित्र को मत्रमुग्ध होकर

देखनेवालों पर एक अकथनीय स्तब्धता छायी हुई थी, ज़रा-सी भी कोई सरसराहट या कोई शब्द बोले जाने की आवाज़ नहीं सुनायी दे रही थी, और प्रति क्षण वह चित्र और भी ऊंचा उठता हुआ प्रतीत हो रहा था; ऐसा लग रहा था कि वह अपने आपको आस-पास की हर चीज़ से अलग किये ले रहा है और निरंतर अधिक ज्योतिर्मय तथा उत्कृष्ट होता हुआ वह सहसा एक ऐसे क्षण के रूप में परिवर्तित हो गया है, जो दिव्य प्रेरणा का फल है, उस क्षण के रूप में, जिसके लिए मनुष्य का सारा जीवन केवल एक तैयारी के समान होता है। दर्शकों ने महसूस किया कि उनकी आंखों में आंसू छलकते आ रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता था कि सभी रुचियां, सुरुचियों के पथ से बिखरे हुए और गुमराह सभी भटकाव एक में घुल-मिल गये थे और उन्होंने इस दिव्य कलाकृति की वंदना में एक मूक स्तुति का रूप धारण कर लिया था। चर्तकोव मुंह बाये चित्र के सामने मूर्तिवत खड़ा रहा, और अंततः जब दूसरे दर्शकों और पारखियों ने धीरे-धीरे अपनी स्तब्धता से मुक्त होकर उस चित्र के गुणों की विवेचना शुरू की तो वह भी चौंक पड़ा; वह अपने भावों को उदासीनता की सामान्य मुद्रा में व्यवस्थित कर लेना चाहता था और इस तरह के घिसे-पिटे कलाकारों की आदत के अनुसार कुछ इस ढंग की बातें कहकर उस चित्र को चुटकियों में उड़ा देना चाहता था: "अलबत्ता, इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि कलाकार में प्रतिभा है; उसमें कुछ बात है; यह तो दिखायी देता है कि वह किसी बात को व्यक्त करना चाहता है; लेकिन जहां तक बुनियादी बात का सवाल है..." और इसके बाद वह प्रशंसा के कुछ उस प्रकार के क्षीण शब्द भी जोड़ देना चाहता था जो किसी भी कलाकार को ध्वस्त कर देने के लिए काफ़ी होते हैं। वह इस तरह की कोई प्रशंसा करना चाहता था लेकिन शब्दों ने उसका साथ न दिया, और जवाब देने के बजाय वह फूट-फूटकर रोने लगा और पागल की तरह झपटकर कमरे से बाहर निकल गया।

घर वापस पहुंचकर वह अपने शानदार स्टूडियो में निश्चल और निश्चेत खड़ा रहा। उसका सारा अस्तित्व, उसका जीवन फिर से जागृत हो गया था, मानो उसकी जवानी फिर से लौट आयी हो, मानो उसकी प्रतिभा की बुझी हुई चिंगारियां फिर से भड़क उठी हों। सहसा उसकी आंखों पर से पट्टी उतर गयी। हे भगवान! उसने अपनी जवानी के

मवसे अच्छे वर्ष बडी निर्ममता से लुटा दिये थे ; उस चिगारी को नष्ट कर दिया था, बुझा दिया था जो शायद उसके सीने मे सुलग रही थी, उम चिगारी को जो शायद अब तक अपने समस्त गौरव और वैभव के साथ प्रज्वलित हो चुकी होती, और शायद वह भी दूसरो को विस्मय और कृतज्ञता के भाव से रो पडने पर मजबूर कर देती ! यह सब कुछ नष्ट कर दिया गया था और तनिक भी अनुताप के विना नष्ट कर दिया गया था ! उस क्षण एक बार फिर उसने उत्तेजना और उत्कंठा की वही लहर उमडती हुई महसूस की जिससे वह किमी जमाने मे इतनी अच्छी तरह परिचित था। उसने ब्रश उठा लिया और बढकर कैनवस के पास तक गया। तनाव के कारण उसके माथे पर पसीने की बूदे छलक आयी, उसका सारा अस्तित्व एक विचार की ज्वाला से धधक-सा उठा था एक पतित फरिश्ते की तस्वीर बनाना। यह विचार उसकी मनोदशा के मवसे अधिक अनुरूप प्रतीत होता था। परतु, हाय दुर्भाग्य ! उमकी आकृतिया, मुद्राए, बिब-सयोजन और कल्पनाए चित्र मे उतरने के बाद जबर्दस्ती थोपी हुई और उखडी-उखडी लगती थी। उसकी शैली और कल्पना बहुत समय से एक लीक मे फसी थी और सीमाओ को तोड निकलने और अपने ही हाथो पहनायी हुई जजीरो को उतार फेकने की यह आकाक्षा अशक्य सिद्ध हुई, उसमे खोट और खोखलेपन की खनक थी। वह प्राथमिक ज्ञान प्राप्त करने के और भावी महानता प्राप्त करने के बुनियादी नियमो को जानने के लबे और चक्करदार दुर्गम मार्ग की उपेक्षा करता आया था। उसे झुझलाहट ने आ दबोचा। उसने अपनी हाल की सभी कृतियो को, अपनी सभी निर्जीव, फैशनेबुल तस्वीरो को, हुसारो, भद्र महिलाओ और स्टेट काउसिलरो के सभी पोर्ट्रेटो को अपने स्टूडियो से हटवा दिया। फिर उसने अपने आपको कमरे मे बद कर लिया और यह आदेश देकर कि किसी को अदर न आने दिया जाये वह काम मे जुट गया। वह धैर्यवान नवयुवक की तरह, एक नौजवान प्रशिक्षार्थी की तरह बैठकर काम करता रहा। लेकिन उसके परिश्रम का कोई भी फल ऐसा नही था जिससे उसे सतोष मिलता ! हर कदम पर सबसे आधारभूत तत्त्वो की जानकारी का अभाव उसे रोक देता था, उसका सारा उत्साह अपने ही विकसित किये हुए उन साधारण और खोखले कौशलो से टकराकर चकनाचूर हो जाता था, जो उसकी कल्पना के मार्ग मे एक अलघ्य

बाधा बन गये थे। उसकी तूलिका अनायास ही घिसी-पिटी आकृतियों के चित्रण की ओर मुड़ जाती थी, बांहें उसी अस्वाभाविक ढंग से बंधी हुई थीं, सिर किसी भी असाधारण ढंग से मुड़ने में असमर्थ रहा, कपड़ों की सिलवटें भी लकड़ी की तरह जड़ थीं और चित्रकार की इच्छा के अनुसार अपने आपको बदलने से इंकार करती थीं, वे शरीर की अपरिचित मुद्रा को सहज भाव से आच्छादित करने से इंकार करती थीं। यह सब कुछ वह स्वयं देख रहा था और महसूस कर रहा था!

"लेकिन क्या मुझमें सचमुच कभी कोई प्रतिभा थी?" अंततः उसने अपने आप से पूछा। "क्या मैं अपने आपको भ्रम में नहीं रख रहा था?" यह कहकर उसने अपनी वे शुरू की कलाकृतियां खोज निकालीं जिन पर उसने भीड़ से दूर रहकर, समृद्धि से और जीवन की चंचलताओं से दूर रहकर सबसे अलग-थलग वसीलेव्स्की द्वीप के अपने उस छोटे-से फ़्लैट में इतनी शुद्ध लगन से, किसी से कोई फ़ायदा उठाये बिना किसी ज़माने में काम किया था। वह अब उनके पास गया और उनमें से हर एक को बड़े ध्यान से जांचने लगा; उसके पुराने दरिद्रता-ग्रस्त जीवन की आकृतियां उसकी याद में उभरने लगीं। "हां," उसने घोर निराशा में डूबकर फ़ैसला किया, "निश्चित रूप से मुझमें प्रतिभा थी। उसके चिन्ह हर जगह दिखायी देते हैं..."

वहां खड़े-खड़े वह सिर से पांव तक सिहर उठा: उसकी आंखें दो और आंखों से मिलीं जो उसे एकटक घूर रही थीं। यह वही विचित्र तस्वीर थी जो उसने श्चुकिन की दुकान में ख़रीदी थी। अब तक वह दूसरी तस्वीरों के पीछे ढकी हुई पड़ी थी और उसे उसकी बिल्कुल याद ही नहीं रह गयी थी। जब उसने अपने स्टूडियो में अटी हुई सारी फ़ैशनेबुल तस्वीरों और पोर्ट्रेटों को हटाया था तो वह अब, मानो किसी योजना के अनुसार, उसकी जवानी की दूसरी कृतियों के साथ फिर निकल आयी थी। उसके विचित्र इतिहास को याद करके उसने महसूस किया कि एक तरह से यह विचित्र तस्वीर उसके अंदर होनेवाले इतने बड़े परिवर्तन का कारण थी, कि वह दौलत जो उसे इतने चमत्कारी ढंग से मिल गयी थी उसी ने उसको सारी बेकार की लालसाओं की दिशा में भटकाया था और इस प्रकार उसकी प्रतिभा को नष्ट कर दिया था; उसने महसूस किया कि उसकी आत्मा में रोष भरता जा रहा

है। उसने फौरन हुक्म दिया कि उस घृणित चित्र को तुरत वहा से हटा दिया जाये। लेकिन इससे उसकी उद्विग्न आत्मा को कोई शाति नही मिली उसकी सारी भावनाए और उसका सारा अस्तित्व जड तक हिल गया था, और उसने वह भयावह यातना अनुभव की जो कभी-कभी और असाधारण रूप से प्रकृति मे उस समय अभिव्यक्त होती है जब कोई निम्न स्तर की प्रतिभा अपनी मर्यादा से आगे बढने की कोशिश करती है और उसे अभिव्यक्ति नही मिल पाती, वह यातना जो एक नौजवान आदमी को तो महान उपलब्धियो की ओर ले जा सकती है, लेकिन एक ऐसे आदमी मे जो अपने स्वप्नो की अतिम सीमाओ तक पहुच गया हो वह केवल कभी न बुझ सकनेवाली प्यास ही बनकर रह जाती है, एक ऐसी असह्य पीडा जो मनुष्य मे भयानक कुकृत्यों की क्षमता पैदा कर देती है। उसके मन मे ईर्ष्या, भयानक ईर्ष्या उभर आयी। जब भी वह कोई ऐसी तस्वीर देखता जिस पर प्रतिभा की छाप होती तो उसका खून खौल उठता। वह अपने दात पीसने लगता और अपनी विष-भरी आग्नेय दृष्टि से उसे झुलस देता। उसकी आत्मा मे मनुष्य की सबसे नारकीय इच्छा उत्पन्न हुई और वह उन्मत्त होकर उस इच्छा को पूरा करने मे जुट गया। वह उन सारी कलाकृतियों को खरीदने लगा जिनमे प्रतिभा की तनिक भी झलक थी। बहुत कीमत देकर कोई तस्वीर खरीदने के बाद वह बहुत सभालकर उसे अपने कमरे मे ले जाता और उस पर बिफरे हुए शेर की तरह टूट पडता, उसे चीर-फाड डालता, उसके टुकडे-टुकडे करके उसे पावो तले रौदता, और यह सब कुछ करते समय खुशी से चिल्ला-चिल्लाकर हसता। उसने जो अकूत दौलत जमा कर रखी थी उसके बल पर वह अपनी इस पैशाचिक लालसा को पूरा कर सकता था। उसने अपनी सोने की सारी थैलिया और अपने खज़ाने की सारी तिजोरिया खोल दीं। इससे पहले अज्ञान के किसी दानव ने भी इतनी सुदर कलाकृतिया नष्ट नही की होगी जितनी कि उसने प्रतिशोध के अपने इस उन्मत्त प्रयास मे नष्ट कर डाली। जब भी वह किसी नीलाम मे पहुच जाता तो कोई दूसरा गाहक कोई कलाकृति खरीदने की बात सोच भी नही सकता था। ऐसा लगता था कि क्रोधोन्मत्त दैव ने स्वय इस भयानक अभिशाप को पृथ्वी पर उसका समस्त सामजस्य छीन लेने के लिए भेज दिया था। इस भयानक उन्माद के कारण उसकी पूरी मुद्रा विकृत

हो गयी: उसका चेहरा निरंतर ईर्ष्याग्रस्त रहने लगा। उसके एक-एक भाव पर संसार से घृणा और जीवन को नकारने का भाव था। वह साकार उस पिशाच जैसा था जिसका चित्रण पुश्किन ने अनूठे ढंग से किया है। उसके होंटों से ज़हर में वुझे शब्दों और निरंतर निंदा के अतिरिक्त कोई वात नहीं निकलती थी। वह सड़क पर मिल जाता तो ऐसा लगता कि किसी राक्षस से साक्षात हो गया हो; उसके दोस्त तक उसे दूर से ही देखकर मुंह फेर लेते थे और उससे मिलने से कतराते थे, और कहते थे कि उससे मुलाक़ात हो जाने पर उनका सारा दिन तवाह हो जाता है।

कला के लिए और सारी दुनिया के लिए यह सौभाग्य की वात थी कि अस्वाभाविक तनाव के इस स्तर पर विताया जानेवाला जीवन वहुत दिन तक नहीं चलता रह सकता था: उसके उन्माद का फैलाव इतना विशाल और असंतुलित था कि उसकी क्षीण शक्ति उसका भार वहन नहीं कर सकती थी। उन्माद के दौरों ने भयानक रोग का रूप ग्रहण कर लिया। वह तेज़ वुखार और तीव्र गति से वढ़नेवाले क्षय रोग के ऐसे भीपण संयोग में ग्रस्त हुआ कि तीन दिन तक इस हालत में रहने के वाद ही वह सूखकर विल्कुल कांटा हो गया। इसके साथ ही असाध्य पागलपन के भी सारे चिन्ह दिखायी देने लगे। कभी-कभी तो ऐसा होता कि कई आदमी मिलकर भी उसे क़ावू में रखने में असमर्थ रहते थे। वह अपनी कल्पना की दृष्टि से उस विलक्षण तस्वीर की जीती-जागती आंखों को देखने लगा था जिन्हें वह न जाने कव का भूल चुका था, और ऐसे क्षणों में उसका क्रोधोन्माद भयानक होता था। अपने पलंग के चारों ओर खड़े हुए सारे लोग उसे भयानक तस्वीरों जैसे दिखायी देते थे। उसे उस तस्वीर के दो-दो, चार-चार प्रतिरूप दिखायी देने लगे थे: ऐसा लगता था कि उसकी सभी दीवारों पर ऐसी तस्वीरें टंगी हुई थीं जिनकी जीती-जागती एक जगह पर जमी हुई आंखें उसे वेधती रहती थीं। पैशाचिक चित्र उसे छत पर से, फ़र्श पर से घूरते रहते थे; कमरा खिंचकर और फैलकर अनंत के छोर तक चला गया था, ताकि वे जमी हुई आंखें अधिक से अधिक संख्या में उसमें समा सकें। जिस डाक्टर ने उसका इलाज करने की ज़िम्मेदारी ली थी और जो उसके विचित्र जीवन-वृत्त से कुछ हद तक परिचित भी हो चुका था, उसने उसके मतिभ्रमों और उसके जीवन की घटनाओं

के आधारभूत पारस्परिक सबध का पता लगाने की भरपूर कोशिश की, लेकिन उसे कोई सफलता न मिल सकी। रोगी अपनी यातनाओं को छोड़कर न कुछ समझता था न महसूस करता था, और वह केवल भयानक चीखे मारता रहता था और बडबड करता रहता था जो किसी की समझ मे नही आती थी। आखिरकार पीडा की एक अंतिम मूक लहर उठी और उसकी जीवन-लीला समाप्त हो गयी। उसका शव भी देखने मे भयानक लगता था। उसकी अपार सपदा मे से कुछ भी न मिल सका, लेकिन जब लोगो ने उन महान कलाकृतियो के फटे हुए टुकडे देखे जिन्हे उसने करोडो की रकम लगाकर खरीदा था तब उनकी समझ मे आया कि इस धन-सपदा का कैसा भयानक दुरुपयोग किया गया था।

भाग २

बहुत-सी गाडिया, बग्घिया और बद घोडागाडिया एक मकान के फाटक के सामने खडी थी जिसमे उस प्रकार के महान कला-प्रेमियो मे से एक की जायदाद का नीलाम हो रहा था, जो जीवन-भर ज़ेफायर और क्यूपिड की अपनी तस्वीरो के बीच चैन की नीद सोते रहते है, और अपने मितव्ययी बाप की सचित की हुई या पहले कभी किये गये स्वय अपने श्रम से जोडी हुई करोडो की दौलत चित्रों पर लुटाकर अनजाने ही कलाओं के सरक्षक होने की ख्याति अर्जित करते रहते है। इन सरक्षकों की नस्ल का तो अब लोप हो गया है, और हमारी उन्नीस-वी शताब्दी ने उस महाजन की उकता देनेवाली आकृति को अपना लिया है जिसे केवल कागज़ पर लिखे हुए आकडो की शक्ल मे अपनी करोडो की दौलत से सुख मिलता है। लबे-से हॉल मे भाति-भाति के लोगो की भीड जमा हो गयी थी, जिस तरह लाश पर गिद्ध टूटकर आते है। उनमे बडी दुकानो के और यहा तक कि गुदडी बाज़ार के भी रूसी सौदागरो का एक गरोह गहरे नीले रग के अपने जर्मन कोट पहने वहा मौजूद था। ऐसे माहौल मे उनकी सूरत-शक्ल और उनका हाव-भाव न जाने क्यो कुछ ज़्यादा निश्चित और शात हो जाता था, और वे तावेदारी का वह चापलूसी-भरा भाव त्याग देते थे जो कि अपनी दुकान मे गाहक को माल दिखाते वक्त असली रूसी सौदागर के स्वभाव

की ख़ास पहचान होती है। यहां उनके आचरण में कोई चापलूसी बाक़ी नहीं रह गयी थी, हालांकि उसी कमरे में कई ऐसे ख़ानदानी रईस भी खड़े थे जिनके सामने उन्हें किसी दूसरी जगह में झुकने और नाक रगड़ने में कोई संकोच न होता। यहां वे हर बंधन से मुक्त थे और बड़ी बेतकल्लुफ़ी से किताबों और तस्वीरों को छू-छूकर और टटोल-टटोलकर उनकी मज़बूती का अंदाज़ा लगाने की उत्सुकता व्यक्त कर रहे थे, और बेधड़क होकर उपाधियों से विभूपित अपने विरोधियों की टक्कर पर बोली लगा रहे थे। वहां हर नीलाम में जानेवाले बहुत-से ऐसे लोग भी थे जो रोज़ नाश्ता करने के बजाय किसी न किसी नीलाम में ज़रूर जाते हैं; वहां ऐसे रईस पारखी भी थे, जो अपने संग्रहों में वृद्धि करने का कोई भी अवसर न चूकने को अपना कर्त्तव्य समझते हैं और जिनके पास बारह और एक बजे के बीच करने को इससे बेहतर कोई काम नहीं होता; और फिर वहां तार-तार कपड़ों और खाली जेबोंवाले वे शरीफ़ लोग भी थे जो धन के लाभ के किसी विचार की प्रेरणा के बिना ही रोज़ ऐसी जगहों पर पहुंच जाते हैं, जिनका एकमात्र उद्देश्य यह देखना होता है कि आख़िर में क्या हुआ, किसने सबसे ज्यादा क़ीमत चुकायी, किसने सबसे कम चुकायी, किसने किससे बढ़कर बोली लगायी और किसे क्या मिला। बहुत-सी तस्वीरें इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं; उन्हीं के बीच कुछ फ़र्नीचर की चीज़ें और ऐसी किताबें थी जिन पर उनके पिछले मालिकों के नामों की चिप्पियां चिपकी हुई थीं, जिनके बारे में यह संदेह किया जा सकता है कि उन्हें वह सराहनीय जिज्ञासा छू भी नहीं गयी थी जो उन्हें उन किताबों की विपयवस्तु की जानकारी प्राप्त करने को प्रेरित करती। चीनी गुलदान, मेज़ों के लिए संगमरमर के पटरे, नयी और पुरानी, कमान की तरह झुकी हुई टांगोंवाली मेज़-कुर्सियां जिनके पाये सजावट के लिए उक़ाब, नरसिंहोंवाली आकृतियों और शेर के पंजों की शक्ल के बने थे, जिनमें से कुछ पर सुनहरी पालिश की हुई थी और कुछ पर नहीं, फ़ानूस, तेल से जलनेवाले लैंप – यह सब कुछ अस्त-व्यस्त ढेरों में इधर-उधर पड़ा था और उनमें कोई उस प्रकार की व्यवस्था दिखायी नहीं देती थी जैसी कि दुकानों में पायी जाती है। देखनेवालों को वहां कलाओं का एक गड्ड-मड्ड ढेर ही दिखायी देता था। आम तौर पर नीलामों को देखकर हमारे मन में उदासी की भावनाएं जागृत होती हैं:

वहा की हर चीज मे जनाजे की बू बसी होती है। जिन बडे-बडे कमरो मे ये नीलाम होते है उनमे हमेशा अंधेरा रहता है; खिडकियो मे फर्नीचर और तस्वीरों का ढेर अटा रहने की वजह से उनमे बहुत ही थोडी रोशनी आती है, वहा लोगो के निस्तब्ध चेहरो और नीलाम करनेवाले की मातमी आवाज का विचित्र साक्षात होता है, जो हथौड़ी की चोट से बोली बद करके अभागी कलाकृतियो का मरसिया सुनाता है। इन सब बातो के मिलने से ऐसे अवसरो पर उत्पन्न होनेवाला भयावह वातावरण और भी भयावह हो उठता है।

ऐसा लग रहा था कि नीलाम पूरे जोर पर था। बहुत-से प्रतिष्ठित लोग झुड बाधकर आगे बढ आये थे और उत्तेजित होकर बोली लगा रहे थे। चारो ओर "एक रूबल, एक रूबल, एक रूबल" की आवाजे सुनायी दे रही थी, और इससे पहले कि नीलाम करनेवाले को भीड की ओर से लगायी जानेवाली बोलियो को दोहराने का समय मिल पाता, वे शुरू की कीमत से चार गुनी बढ चुकती थी। भीड एक ऐसी तस्वीर के लिए बोली लगा रही थी जो चित्रकला की तनिक भी समझ रखनेवाले को प्रभावित किये बिना नही रह सकती थी। उसमे सशक्त प्रतिभा स्पष्ट रूप से प्रदर्शित हो रही थी। साफ लग रहा था कि उस तस्वीर को कई बार सवारा-सुधारा गया था और उसमे ढीला-ढाला लबादा पहने हुए किसी एशियाई आदमी के सावले चेहरे का चित्रण किया गया था जिस पर अत्यत विचित्र और असाधारण भाव था, लेकिन जो बात दर्शक को सबसे अधिक प्रभावित करती थी वह थी उस तस्वीर की बिल्कुल जिदा आदमी जैसी आखे। आप उन्हे जितनी ज्यादा देर तक देखते थे वे आपको उतना ही अधिक बेधती चली जाती थी। वहा पर मौजूद लगभग सभी लोग उसके इस विचित्र गुण से, तैल-चित्रकला के इस चमत्कार से मत्रमुग्ध हो गये थे। कई लोगो ने तो बोली लगाना बद भी कर दिया था क्योकि वह बेहद बडी रकम तक पहुच गयी थी। बस दो नामी रईस और कला-प्रेमी ही बच गये थे, जो दोनो ही हर कीमत पर उस तस्वीर को अपनाने पर तुले हुए थे। उनका जोश बढता जा रहा था और उन्होने उसकी कीमत तर्क की सभी सीमाओ के पार पहुचा दी होती, अगर अचानक एक दर्शक ने बीच मे यह घोषणा न कर दी होती

"एक क्षण के लिए मुझे बोली लगाने के इस सिलसिले मे विघ्न

डालने की इजाज़त दीजिये क्योंकि इस तस्वीर को पाने का शायद जितना अधिकार मुझे है उतना किसी और को नहीं।"

सहसा सबका ध्यान ये शब्द कहनेवाले पर केंद्रित हो गया। वह लंबे-लंबे काले घुंघराले बालोंवाला लगभग पैंतीस साल का एक दुबला-पतला आदमी था। बेफ़िक्री की चमक से खिला हुआ उसका आकर्षक चेहरा एक ऐसी आत्मा का परिचय देता था जो इस संसार के अहंकार से बिल्कुल अपरिचित थी; उसके कपड़ों से तनिक भी फ़ैशन का संकेत नहीं मिलता था: उसकी हर चीज़ पुकार-पुकारकर उसके कलाकार होने का प्रमाण देती थी। और सचमुच वह था भी कलाकार ब० ही, जिसे वहां पर मौजूद बहुत-से लोग निजी तौर पर जानते थे।

"आप लोग सोचते होंगे कि मैं जो कुछ कह रहा हूं वह बहुत अजीब बात है," उसने सभी लोगों का ध्यान अपने ऊपर केंद्रित देखकर कहा, "लेकिन अगर आप लोग मेहरबानी करके मेरी दास्तान सुन लें तो शायद आपकी समझ में आ जायेगा कि मैंने जो कुछ कहा वह बिल्कुल ठीक है। सभी संकेतों से मुझे यक़ीन हो गया है कि यह वही तस्वीर है जिसे मैं खोज रहा था।"

वहां पर मौजूद सभी लोगों के चेहरे बिल्कुल स्वाभाविक जिज्ञासा से प्रज्वलित हो उठे, और नीलाम करनेवाला भी अपनी हथौड़ी हवा में ऊपर उठाये मुंह खोले जहां का तहां खड़ा रह गया, और उसकी बात सुनने को तैयार हुआ। क़िस्से के शुरू में उनमें से कई लोग बार-बार तस्वीर की ओर नज़रें फेरकर देखते रहे लेकिन जैसे-जैसे उसका क़िस्सा ज़्यादा दिलचस्प होता गया सारी नज़रें क़िस्सा बयान करनेवाले पर केंद्रित हो तो गयीं।

"आप सब लोग शहर के उस हिस्से को जानते हैं जिसे कोलोम्ना कहते हैं।" इस तरह उसने अपना वृत्तांत शुरू किया। "वहां की हर चीज़ सेंट पीटर्सबर्ग के दूसरे हिस्सों से अलग है; वह न राजधानी है, न छोटा क़स्बा; कोलोम्ना की सड़कों पर क़दम रखते ही आपको ऐसा लगता है कि आपकी सारी युवा इच्छाएं और आपका उत्साह आपका साथ छोड़ रहा है। वहां भविष्य कभी क़दम नहीं रखता, वहां शांति और विरक्ति का राज रहता है, राजधानी की सारी तलछट को वहां शरण मिल जाती है। वहां जाकर जो लोग बसते हैं उनमें आपको मिलेंगे रिटायर्ड सरकारी नौकर, विधवाएं, मामूली हैसियत

के लोग जिनकी मीनेट मे जान-पहचान है और इसलिए उन्होंने लगभग अपना सारा जीवन वहा बिताने की लानत अपने सिर ले ली है ; ऐसे बावर्ची जो नौकरी से रिटायर हो जाने के बाद तमाम दिन बाज़ार मे घूमने-फिरने, अपने पडोस की दुकान के दरबान से गप लडाने और रोज की बची हुई पाच कोपेक की कॉफी और चार कोपेक की शकर ख़रीदने मे बिता देते है, और फिर अत मे उन लोगो का पूरा वर्ग जिन्हे सुरमई के विशेषण से पूरी तरह बयान किया जा सकता है, वे लोग जिनका पहनावा, जिनके चेहरे, बाल और आखे उस दिन की तरह फीके सुरमई रग के होते है जब आसमान पर न तूफ़ान के बादल होते है न सूरज होता है, बल्कि कोई ऐसी चीज होती है जिसे सही-सही बयान नही किया जा सकता कुहरा-सा छा जाता है और हर चीज की रूपरेखा को धूमिल कर देता है। उन लोगो की सूची मे हम रिटायर्ड थिएटर चलानेवालो, रिटायर्ड टाइटलर काउसिलरो, बाहर को निकली पड रही आखो और जख्म के निशान लगे हुए होंटोवाले युद्ध के पुराने सूरमाओं को भी जोड सकते हैं। ये लोग बिल्कुल भावशून्य होते है चलते वक्त वे न किसी तरफ देखते हैं, न कुछ बोलते है, न सोचते। उनके कमरो मे आपको सामान के नाम पर ज्यादा कुछ नही मिलेगा, मुमकिन है वहा आपको एक बोतल ख़ालिस रूसी वोद्का के अलावा कुछ भी न मिले, जिसे वे दिन-भर यत्रवत् घूट-घूट करके पीते रहते है और उन्हे कभी यह महसूस नही होता कि खून उनके दिमाग को चढता जा रहा है, जिसका आनद नौजवान जर्मन दस्तकार लेते है जो उसकी अधिक तगडी ख़ुराक लेना पसद करते है, और सो भी उस वक्त जब मेश्चास्काया स्ट्रीट के ये बडे आदमी इतवार की अपनी भरपूर शराबख़ोरी के बाद आधी रात के बाद सडक के किनारे की पटरियो पर अकेले चहलकदमी कर रहे होते है।

"कोलोम्ना की जिदगी मे बेहद अकेलापन है घोडागाडी तो वहा कभी-कभार ही दिखायी देती है, शायद कभी आपको कोई भूली-भटकी गाडी अभिनेताओ को ले जाती हुई और अपनी गडगडाहट और खटर-पटर से वहा की चारो ओर की शाति को भग करती हुई दिखायी पड जाये। यहा पैदल चलनेवालो का राज है, गाडीवाले वहा सिर्फ सवारियो के बिना अपने झबरीले घोडो के लिए घास ले जाते हुए दिखायी देते है। पाच रूबल महीने पर आपको पूरा फ्लैट किराये

पर मिल सकता है, जिसमें सुबह की कॉफ़ी भी शामिल हो सकती है। वहां जो विधवाएं अपनी पेंशन पर रहती हैं वे उस समाज का सबसे अभिजात वर्ग होती हैं; उनका आचार-व्यवहार बहुत परिष्कृत होता है, वे अकसर अपने कमरों में झाड़ू लगाकर कूड़ा बाहर निकाल देती हैं, और अपनी सहेलियों से गोश्त और करमकल्ले की ऊंची क़ीमतों के बारे में बातें करने में उन्हें मजा आता है; उनकी मिल्कियत में आम तौर पर एक नौजवान बेटी होती है, जो शांत और आत्म-त्याग की भावना से परिपूर्ण जीव होती है और अकसर सूरत-शक्ल की भी अच्छी होती है; उनके पास एक बेहूदा छोटा-सा कुत्ता और एक दीवार की घड़ी होती है जिसका पेंडुलम बड़े उदास भाव से टिक-टिक करता रहता है। उनके बाद नंबर आता है अभिनेताओं का, जिनकी आर्थिक स्थिति उन्हे कोलोम्ना छोड़कर चले जाने की इजाजत नहीं देती, जो रंगमंच के सभी लोगों की तरह स्वतंत्रता-प्रेमी लोग होते हैं, जो केवल आनंद के लिए जिंदा रहते हैं। आप उन्हें अपना ड्रेसिंग गाऊन पहने रिवाल्वर ठीक करते हुए, दफ़्ती के टुकड़ों से घर के लिए कोई उपयोगी चीज़ बनाते, या मिलने आये हुए किसी दोस्त के साथ ड्राफ़्ट्स या ताश खेलते, और अपनी शामें ठीक सुबह की तरह ही बिताते देख सकते हैं, कभी-कभी बस इतना फ़र्क़ जरूर होता है कि शाम को वे पच पी लेते हैं। इनके बाद, जो कोलोम्ना का श्रेष्ठ वर्ग है, आम टुटपुंजिया लोग आते हैं। उन सबकी क़िस्में गिनाना उतना ही मुश्किल है जितना कि पुराने सिरके में पनपनेवाले कीड़ों की क़िस्में गिनाना। उनमें आपको पूजा-पाठ करनेवाली बूढ़ी औरतें मिलेंगी; शराब पीने-वाली बूढ़ी औरतें मिलेंगी; ऐसी बूढ़ी औरतें मिलेंगी जो पूजा-पाठ भी करती है और शराब भी पीती हैं; ऐसी बूढ़ी औरतें जो रहस्यमय तरीक़ों से अपना पेट पालती हैं, चींटियों की तरह फटे-पुराने कपड़े और चीथड़े घसीटकर पंद्रह कोपेक में बेचने के लिए कलींकिन पुल से गुदड़ी बाजार तक ले जाती हैं; दूसरे शब्दों में, मानव-जाति की सबसे अभागी तलछट, जिसकी हालत सुधारना परोपकारी से परोपकारी अर्थशास्त्री के लिए भी मुश्किल होता।

"मैंने उनकी चर्चा यहां यह बताने के लिए की है कि ऐसे लोगों को अकसर किस तरह आकस्मिक वक़्ती मदद के लिए अचानक कोई जरिया ढूंढने पर, क़र्ज़ का सहारा लेने पर मजबूर होना पड़ता है,

और इसकी वजह से उनके बीच खास किस्म के खून चूसनेवाले पैदा होते हैं और उन्हें बहुत ज्यादा कीमत की चीजें गिरवी रखने के लिए मजबूर करते हैं और सूद की ऊंची दर पर छोटी-छोटी रकमें कर्ज देते हैं। ये छोटे सूदखोर अकसर अपने पेशे के ऊंचे लोगों से ज्यादा बेरहम होते हैं, क्योंकि वे जिस तरह के चीथड़े पहननेवाले और कंगाल लोगों के बीच फूलते-फलते हैं वैसे दरिद्र और कंगाल लोगों से तो धनी सूदखोरों का कभी पाला ही नहीं पड़ता, जो सिर्फ गाड़ियों पर बैठनेवाले गाहकों से लेन-देन करते हैं। इस तरह मानवीय भावनाओं के बचे-खुचे अवशेष भी जल्द ही उनके दिलों से निकल जाते हैं। इन्हीं सूदखोरों में एक ऐसा था ... लेकिन यहां पर मैं आपको यह बता दूं कि जिस घटना को आपके सामने बयान करने का मैंने बीड़ा उठाया है वह पिछली शताब्दी की है, यानी उस जमाने की जब हमारी स्वर्गीय सार्वभौम महारानी कैथरीन द्वितीय राज करती थीं। जैसा कि आप समझ सकते हैं, उस वक्त से कोलोम्ना की शक्ल-सूरत और वहां की अदरूनी जिंदगी काफी बदल गयी होगी। तो, इन्हीं सूदखोरों में एक सूदखोर था जो हर तरह से कमाल का आदमी था और बहुत दिन से उस इलाके में रहा था। वह ढीले-ढाले एशियाई ढंग के कपड़े पहनता था, उसके सावले चेहरे से पता चलता था कि उसकी पैदाइश कहीं दक्षिण में हुई होगी, लेकिन ठीक-ठीक वह किस जाति का था, हिंदुस्तानी था, यूनानी था, या फारसी था, यह कोई यकीन के साथ नहीं बता सकता था। अपने लंबे कद, अपने बेहद भारी-भरकम डील-डौल, अपने सावले, चुसे हुए और घिनौनी रंगतवाले चेहरे, रहस्यमयी चमकवाली अपनी बड़ी-बड़ी आंखों और छज्जे की तरह आगे को निकली हुई घनी-घनी भवों की वजह से वह फीकी रंगतवाले नगर-निवासियों से देखने में बिल्कुल अलग लगता था। उसका घर भी चारों तरफ के छोटे-छोटे लकड़ी के घरों से बिल्कुल अलग ढंग का था। वह उस तरह की पत्थर की इमारत थी जैसी कि किसी जमाने में जेनोआ के सौदागर बहुत बड़ी संख्या में बनाते थे, जिनमें टेढ़ी-मेढ़ी, बेमेल खिड़कियां, लोहे की झिलमिलियां और चटकनियां होती थीं। यह सूदखोर अपने धंधे के दूसरे लोगों से इस बात में अलग था कि वह गरीब से गरीब भिखारिन से लेकर फजूलखर्च दरबारी तक किसी को भी जितनी रकम की उसे जरूरत हो दे सकता था। उसके घर के सामने अकसर

वेहद चमचमाती हुई गाड़ियां आकर रुकती थीं, जिनकी खिड़कियों में से आप ऊंचे समाज की किसी महिला की वनी-संवरी सूरत की झलक देख सकते थे। अफ़वाह थी कि उसके पास अकूत धन-दौलत, ज़ेवरों और गिरवी रखी गयी तरह-तरह की चीज़ों से भरे हुए लोहे के संदूक़ थे, लेकिन इतना सव होते हुए भी वह दूसरे सूदखोरों की तरह लालची नहीं था। वह खुशी-खुशी क़र्ज़ देता था, और उसकी अदायगी की शर्तें भी वहुत माक़ूल होती थीं। लेकिन हिसाव-किताव की कुछ विचित्र तिकड़मों से वह अपने क़र्ज़ पर वेहद ज़्यादा सूद वसूल कर लेता था। वहरहाल, अफ़वाह यही थी। लेकिन सबसे अजीव वात जिस पर सभी को हैरत होती थी, यह थी कि उसके सभी क़र्ज़दारों का अंजाम वुरा होता था; अंत में चलकर उन सभी की वड़ी दुर्दशा होती थी। यह तो यक़ीन के साथ अव तक नहीं कहा जा सकता कि यह सिर्फ़ आम लोगों की राय थी, वेसिर-पैर की अंधविश्वास पर आधारित हवाई वातें थी या जान-बूझकर उसे वदनाम करने की कोशिश थी। लेकिन इस तरह की कई जीती-जागती और विल्कुल खुली मिसालें थीं जो वहुत थोड़े ही अरसे में सवकी आंखों के सामने हुई थीं।

"उस ज़माने के एक सवसे रईस घराने के नौजवान वेटे की ओर सवका ध्यान गया, जिसने सरकारी नौकरी में नाम कमाया था, जिसने हर उत्तम और सचमुच मूल्यवान चीज़ का पक्का समर्थक होने का परिचय दिया था, जो कला और मानव प्रतिभा की सभी कृतियों का शौक़ीन था, और जिसमें इस वात के सभी चिन्ह मौजूद थे कि आगे चलकर वह कलाओं का संरक्षक वनेगा। जल्दी ही उसे स्वयं महारानी की ओर से मान्यता मिल गयी, जिन्होंने उसे एक ऊंचे पद पर तैनात कर दिया जो उसकी सारी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए काफ़ी था, एक ऐसे पद पर जहां रहकर वह विद्याओं को वढ़ावा देने के लिए और लोक-कल्याण के लिए भी वहुत वड़े-वड़े काम कर सका। उस नौजवान रईसज़ादे ने अपने चारों ओर कलाकारों, कवियों और विद्वानों को जमा किया। वह उन सव लोगों को काम और प्रेरणा देने को वेहद उत्सुक था। उसने निजी तौर पर वहुत-से उपयोगी प्रकाशनों में पैसा लगाने का ज़िम्मा लिया, वहुत-से काम करवाने का वीड़ा उठाया, प्रोत्साहन देने के लिए प्रतियोगिताएं करवायीं, इन सभी योजनाओं पर वड़ी-वड़ी रक़में खर्च कीं और खुद उसकी हालत विगड़ती गयी।

लेकिन उसमें परोपकार की ऐसी लगन थी कि वह इन कामों को छोड़ने के लिए तैयार नही था, उसने कर्ज़ जुटाने के हर तरह के उपाय किये और अंत में इस सूदखोर के पास पहुचा। उससे काफी बड़ी रकम कर्ज पाने के बाद यह नौजवान रईस कुछ ही दिनों में बिल्कुल बदल गया वह प्रतिभा के लिए अभिशाप बन गया और हर विकासशील बुद्धिवाले को दंड देने लगा। वह हर साहित्यिक कृति में कोई न कोई बुराई देखने लगा और जो शब्द भी वह पढ़ता था उसका अर्थ तोड़ने-मरोड़ने लगा। फिर, दुर्भाग्य से, फ्रास की क्राति हुई, और उससे उसे हर प्रकार का द्वेषपूर्ण प्रहार करने के लिए हथियार मिल गया। वह हर चीज़ में क्रातिकारी प्रवृत्तिया देखने लगा, जो कुछ भी वह पढ़ता था उसमें वह छिपा हुआ अर्थ देखने लगा। वह हर चीज को ऐसे सदेह से देखने लगा कि आखिरकार वह अपने आप पर भी शक करने लगा, भयानक और अनुचित निंदाए करने लगा और अपने चारो ओर दुःख फैलाने लगा। स्वाभाविक रूप से इन हरकतों की खबरें राज-दरबार तक पहुचे बिना न रह सकी। हमारी उदारमना महारानी उद्विग्न हो उठीं, और चूकि वह आत्मा के उन उदात्त गुणो से परिपूर्ण थीं जिनका राजाओं को वरदान होता है, इसलिए उन्होंने एक फरमान जारी किया, जिसके शब्द तो दुर्भाग्यवश हम लोगो तक पूरी तरह नही पहुच सके हैं, लेकिन जिसका गूढ़ तात्पर्य बहुतो के हृदयो पर अंकित हो गया है। महारानी ने कहा कि राजतात्रिक शासन मे ऐसा नही होता कि आत्मा के उदात्त और उत्कृष्ट आवेगो को कुचला जाये और मेधावी प्रतिभा, कविता और ललित-कला की कृतियों की उपेक्षा की जाये और उन्हे दंड का भागी बनाया जाये, बल्कि, इसके विपरीत, राजा-महाराजा उनके एकमात्र सच्चे सरक्षक रहे है, उनके उदारतापूर्ण सरक्षण मे इस दुनिया की शेक्सपियर और मोलिएर जैसी अनन्य प्रतिभाए पनपी हैं, जबकि दाते को अपने गणतात्रिक राज्य मे अपने लिए कोई सहारा नही मिल सका, कि सच्ची मेधावी प्रतिभाए उस समय उत्पन्न होती हैं जब राष्ट्र और उनके अधिपति अपनी सत्ता और अपने वैभव के शिखर पर होते है, न कि उस समय जबकि वे उन शर्मनाक राजनीतिक कार्रवाइयों और गणतात्रिक आतक का शिकार रहते हैं, जो आज तक एक भी कवि नही पैदा कर सके हैं, कि हमें कवियो और कलाकारो को ऊचे स्थान पर बिठाना चाहिये क्योंकि वे दूसरो की आत्माओ मे

उद्विग्नता और असंतोष का नहीं बल्कि निर्विघ्न सुख-शांति का संचार कर सकते हैं; कि विद्वान, कवि और सभी कलाओं के प्रतिनिधि राज-मुकुट के हीरे-मोती होते हैं; वे इन क्षेत्रों में सौंदर्य को चार चांद लगाने और महान सार्वभौम शासक के युग की चमक-दमक को बढ़ाने का ही काम करते हैं। ये शब्द कहने के बाद उस क्षण महारानी का वैभव दिव्य लग रहा था। मुझे याद है कि बूढ़े लोग जब इस बात की चर्चा करते थे तो उनकी आंखों में आंसू आ जाते थे। हर आदमी का इस मामले से गहरा संबंध हो गया। यह बात ध्यान में रखने की है कि राष्ट्रीय गौरव की हमारी भावना को इस बात का श्रेय है कि रूसी हृदय की यह विशेषता है कि उसमें दलित-पीड़ित आदमी का पक्ष लेने की सराहनीय प्रवृत्ति होती है। उस कुलीन पुरुष ने उस पर किये गये भरोसे के प्रति जो विश्वासघात किया था उसके लिए उसे उचित दंड दिया गया और उसे उसके पद से हटा दिया गया। लेकिन उससे भी भीषण दंड उसके देशवासियों के चेहरों पर अंकित था। यह दंड था उसके प्रति तिरस्कार की निर्णायक और सार्वत्रिक भावना। उसकी दंभपूर्ण आत्मा को जो यातना सहन करनी पड़ी उसे शब्दों में नहीं बयान किया जा सकता; उसके अभिमान, आहत अहंकार और छिन्न-भिन्न आशाओं ने मिलकर उसके जीवन की अवधि को पागलपन और सरसाम के भयानक दौरों के बीच समय से पहले ही समाप्त कर दिया।

"एक और ज्वलंत उदाहरण था जिसे सभी ने देखा था, वह उदाहरण था एक अनन्य सुंदरी का – जैसी उन दिनों हमारी उत्तरी राजधानी में बहुत-सी थीं – लेकिन वह अन्य सभी को मात करती थी। वह हमारे उत्तरी सौंदर्य और दक्षिण की खूबसूरती का मिला-जुला अनूठा रूप, उनके चमत्कारी समन्वय का साकार रूप थी, अनूठी चमक-दमक का एक रत्न। मेरे पिताजी खुद कहते थे कि उन्होंने अपनी ज़िंदगी में उसकी जैसी कोई सुंदरी नहीं देखी थी। वह हर चीज़ का सुचारु सम्मिश्रण प्रतीत होती थी: धन-दौलत, बुद्धि-विवेक और सुशील स्वभाव। उसके बहुत-से चाहनेवाले थे, जिनमें सबसे उल्लेखनीय था राजकुमार र०, जो बेहद अच्छा और कुलीन नौजवान था, बेहद खूब-सूरत और अत्यंत शौर्य के काम करने को सदा तत्पर। जैसे किसी उपन्यास से स्त्रियों का मनचाहा आदर्श पुरुष निकाल लिया

गया हो, हर दृष्टि से बिल्कुल ग्रैंडीसन जैसा। राजकुमार र० बुरी तरह प्रेम मे पागल हो उठा, इस प्रेम का जवाब भी ऐसे ही उत्कट प्रेम से दिया गया। लेकिन सगे-सबधी इस जोडी को बराबर की जोडी नही समझते थे। राजकुमार बहुत पहले अपनी पुश्तैनी जमीन खो चुका था, उसके परिवार की हालत बिगडती गयी थी, और उसकी दुर्दशा का सभी को पता था। अचानक राजकुमार कुछ समय के लिए राजधानी से यह बहाना करके चला गया कि वह अपने मामलात को ठीक करने जा रहा है, और जब वह लौटा तो उसके ठाठ ही निराले थे। वह शानदार नाच की पार्टियो और जलसो का आयोजन करने लगा और उसकी ख्याति दरबार तक पहुच गयी। उस सुदर लडकी का बाप उसे सराहना की दृष्टि से देखने लगा, और सारा शहर अत्यत रोमाच-कारी शादी की तैयारिया करने लगा। यह कोई भी यकीन के साथ नही बता सकता था कि दूल्हे के भाग्य ने कैसे यह पलटा खाया था, और यह दौलत कहा से मिली थी, लेकिन अफवाह फैल रही थी कि उसने किसी अजीब सूदखोर महाजन से कोई सौदा किया था और उसी से उसे यह कर्ज मिला था। बहरहाल, जो भी हो, सारे शहर मे इस शादी की चर्चा थी। दूल्हा और दुल्हन दोनो सभी की ईर्ष्या के पात्र थे। सभी जानते थे कि उन दोनो को एक-दूसरे से कितना गहरा और सच्चा प्रेम था, और यह भी कि दोनो को कितने लबे अर्से तक इतजार करने पर मजबूर किया गया था और दोनो मे कितनी खूबिया थी। उत्साही महिलाए अभी से कल्पना करने लगी थी कि यह नौजवान जोडी कैसे अलौकिक सुख का भोग करेगी। लेकिन घटनाओ ने कुछ दूसरी ही दिशा अपनायी। एक ही साल के अदर पति मे भयानक परिवर्तन आ गया। उसका चरित्र, जो अब तक उदात्त और शालीन था, शका और ईर्ष्या, असहिष्णुता और स्वेच्छाचारिता के विष से दूषित हो गया। वह अत्याचारी हो गया और अपनी पत्नी को यातनाए देने लगा, और, जिस बात की कोई पहले से कल्पना भी नही कर सकता था, वह अत्यत अमानुषिक काम करने लगा, यहा तक कि वह उसे कोडे भी लगाने लगा। साल ही भर बाद कोई उस औरत को पहचान भी नही सकता था, जिसके रोम-रोम से पहले उल्लास फूटा पडता था और जिसके पीछे आज्ञाकारी प्रशसको की भीड चलती थी। आखिरकार जब वह इन मुसीबतो को और ज्यादा बर्दाश्त न कर सकी तो पहले उसी

ने तलाक़ का सुझाव रखा। तलाक़ की बात सुनते ही उसके पति का गुस्सा भड़क उठा। भयंकर रोष से प्रेरित होकर वह छुरा चमकाता हुआ उसके कमरे में घुस आया और अगर उसे पकड़कर रोक न लिया गया होता तो उसने निश्चित रूप से उसके छुरा मार दिया होता। घोर निराशा का शिकार होकर उसने छुरे का रुख अपनी ओर मोड़ लिया और भयानक पीड़ा से छटपटाते हुए उसने अपना जीवन समाप्त कर दिया।

"इन दो वारदातों के अलावा, जो सबकी आंखों के सामने हुई थीं, निम्न वर्गों के लोगों के बारे में बहुत-सी घटनाओं के क़िस्से सुनाये जाते थे, जिनमें से लगभग सभी का बहुत भयानक अंत हुआ। ईमानदार और संजीदा लोगों को शराब पीने की लत पड़ गयी; एक दुकान के कारिंदे ने अपने मालिक को लूट लिया; एक घोड़ागाड़ीवाले ने, जो बरसों से ईमानदारी की रोज़ी कमाता आया था, चंद कोपेक के लिए अपनी एक सवारी को क़त्ल कर दिया। इस तरह की घटनाओं की वजह से, जो हमेशा मिर्च-मसाला लगाकर बयान की जाती थीं, कोलोम्ना के सीधे-सादे रहनेवालों के दिल में दहशत बैठ गयी। किसी को भी इस बात में शक नहीं रह गया कि उस आदमी में कोई अशुभ शक्ति है। अफ़वाह थी कि वह ऐसी शर्तों पर क़र्ज़ देता था कि सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते थे और जो भी अभागा आदमी उन शर्तों का शिकार हो जाता था वह कभी उन्हें किसी दूसरे पर लागू करने की हिम्मत नहीं कर सकता था; लोग कहते थे कि उसके सिक्कों में कोई चुंबकीय गुण था, वे अपने आप ही दहककर लाल हो जाते थे और उन पर कुछ विचित्र निशान होते थे... मतलब यह कि तरह-तरह की हास्यास्पद कहानियां सुनने को मिलती थीं। लेकिन कमाल की बात यह थी कि कोलोम्ना की सारी आबादी, कंगाल बुढ़ियों, छोटे-मोटे सरकारी नौकरों, मामूली अभिनेताओं की यह सारी दुनिया, सारांश यह कि वे सभी छोटे-मोटे लोग, जिनकी हम अभी चर्चा करते रहे हैं, इस दुष्ट सूदख़ोर के पास मदद के लिए जाने के बजाय बड़ी से बड़ी मुसीबतें बर्दाश्त कर लेना पसंद करते थे; इस तरह की भी मिसालें थीं जब कुछ बुढ़ियां भूखी मर गयी थीं, जिन्होंने अपनी आत्माओं को नष्ट करने के बजाय अपने शरीर को इस ढंग से घुला देना ज़्यादा पसंद किया था। लोग सड़क पर अचानक उससे मुठभेड़ हो जाने पर सहज

ही डर जाते थे। रास्ता चलते लोग बडी सावधानी से बचकर पीछे हट जाते थे और बडी देर तक उसे घूरते रहते थे, उसके भारी-भरकम डीलडौल को दूर आखो से ओझल होते देखते रहते थे। उसकी बाहरी चाल-ढाल में ही इतनी असाधारण बाते थी कि लोग यह मानने पर विवश थे कि उसमे कोई अलौकिक विद्वेष भरा हुआ है। उसके चेहरे पर बहुत गहरे अकित सहज ही ध्यान आकर्षित करनेवाले वे लक्षण जो किसी दूसरे के चेहरे पर नही पाये जाते, उसकी कासे की तरह चमकती हुई सूरत, उसकी भवो का बेहद घना झबरापन, उसकी दहकती हुई असह्य आखे, उसके ढीले-ढाले एशियाई पहनावे की सिलवटे— ये सभी चीजे मानो पुकार-पुकारकर कहती थी कि उसके सीने में जो मनोवेग धधक रहे थे उनकी तुलना मे साधारण मनुष्यो के मनोवेग बहुत मद थे। उससे मुठभेड हो जाने पर मेरे पिताजी हमेशा ठिठककर खडे रह जाते थे और कभी यह कहने मे नही चूकते थे 'पिशाच, बिल्कुल पिशाच!' लेकिन मै जल्दी से आपका परिचय पिताजी से करा दू, जिनके बारे मे लगे हाथ यह बता दिया जाये कि वही इस कहानी के नायक है।

"मेरे पिताजी कई बातो की दृष्टि से कमाल के आदमी थे। वह उन दुर्लभ कलाकारो मे से थे, उन चमत्कारी लोगो मे से थे, जिन्हे केवल रूस-माता की पवित्र कोख पैदा कर सकती है, वह स्वशिक्षित चित्रकार थे, किसी शिक्षक या पाठशाला का, किन्ही नियमो या मार्गदर्शक सिद्धातो का सहारा लिये बिना केवल अपनी आत्मा मे पथ-प्रदर्शन खोजते थे, केवल निष्कलकता प्राप्त करने की इच्छा से प्रेरित होते थे और ऐसे सिद्धातो का पालन करते थे जिनसे शायद वह स्वय भी परिचित नही थे, वह उसी मार्ग पर चलते थे जिसकी ओर उनकी आत्मा सकेत करती थी, वह प्रकृति की उन विलक्षण प्रतिभाओ मे से थे जिन्हे उनके समकालीन बहुधा बडे तिरस्कार से अज्ञानी ठहरा देते है लेकिन जो आलोचना और विफलता से निरुत्साह नही होते, बल्कि वे उनसे नया उत्साह और नयी शक्ति प्राप्त करते है और उन कृतियो से बहुत आगे बढ जाते हैं जिनकी वजह से उन्हे अज्ञानी की सज्ञा दी गयी थी। प्रत्येक वस्तु के आधारभूत अर्थ के बारे मे उनकी समझ बहुत गहरी थी, वह 'ऐतिहासिक चित्र' के वास्तविक महत्व को समझते थे, वह इस बात को समझते थे कि रफाएल, लियो-

नार्दो द विंची, टिशियन या कार्रेजियो की बनायी हुई कोई सीधी-सादी मुखाकृति, उनका बनाया हुआ कोई छवि-चित्र क्यों ऐतिहासिक चित्र कहलाया जा सकता है और किसी ऐतिहासिक विषय पर बनाया गया कोई विशाल चित्र कभी भी ऐतिहासिक कला के बारे में कलाकार के तमाम दावों के बावजूद शैलीगत चित्र से अधिक कुछ नहीं हो सकता। उनकी आंतरिक भावनाएं और उनकी निजी आस्थाएं दोनों ही उनकी तूलिका को ईसाई विषयों की ओर, उत्कृष्टता की सर्वोच्च और चरम सीमा की ओर ले जाती थीं। वह तिरस्कार या चिड़चिड़ाहट की उस भावना से सर्वथा मुक्त थे जो कई कलाकारों के स्वभाव में अंतर्निहित होती है। वह दृढ़ चरित्र के, ईमानदार और खरे आदमी थे, बल्कि कुछ हद तक अक्खड़ भी, बाहर से देखने में वह काफ़ी कठोर थे और आंतरिक स्वाभिमान से भी सर्वथा वंचित नहीं थे, वह लोगों के बारे में अपनी राय ऐसे शब्दों में व्यक्त करने के आदी थे जिनमें सहिष्णुता भी होती थी और तीखापन भी। 'उनकी बात सुनी ही क्यों जाये,' वह कहा करते थे, 'मैं कोई उनके लिए तो काम करता नहीं हूं। मैं अपनी तस्वीरें उनकी बैठकों के लिए तो बनाता नहीं हूं, वे तो गिरजा-घरों में लगायी जाती हैं। जो लोग मेरी तस्वीरों को समझेंगे वे मेरा आभार मानेंगे, और जो नहीं समझेंगे वे भी ईश्वर से प्रार्थना तो करेंगे ही। दुनिया के माया-मोह में फंसे हुए आदमी को कला की समझ न होने के लिए दोषी नहीं ठहराया जा सकता; अगर वह ताश की अच्छी बाजी खेलना जानता है, शराब और घोड़ों के बारे में दो-एक बातें जानता है, तो रईस को इससे ज्यादा कुछ जानने की जरूरत ही क्या है? सच तो यह है कि अगर उसके मन में कला के क्षेत्र में टांग अड़ाने की बात समा जाये, और वह अपने आपको बुद्धिजीवी जताने की कोशिश करने लगे तो वह सबके लिए एक मुसीबत बन जायेगा। जिसका काम उसी को भावे, हर आदमी को अपनी ही रुचि के अनुसार चलना चाहिये। निजी तौर पर मैं उस आदमी का ज्यादा सम्मान करता हूं जो साफ़-साफ़ कह देता है कि वह कुछ नहीं समझता, बजाय उस आदमी के जो ढोंगी होता है और उस बात को भी जानने का दावा करता है जिसे वह नहीं जानता और बस हर चीज़ की छीछालेदर कर देता है।' वह बहुत ही कम पैसे लेकर काम करते थे, बस उतना ही पैसा मांगते थे जितने की उन्हें अपने परिवार का भरण-

पोषण करने के लिए और अपने काम के आवश्यक साधन जुटाने के लिए जरूरत होती थी। इसके अलावा, वह कभी, किसी भी हालत मे, दूसरो की सहायता करने मे, अपने जरूरतमंद साथियो की ओर मदद का हाथ बढाने मे इकार नही करते थे, वह अपने पूर्वजों के सीधे-सादे पवित्र धर्म का पालन करते थे, और शायद यही कारण था कि सतो का चित्रण करते समय वह उनकी आकृति मे वह सौम्य भाव लाने मे सफल होते थे जो प्रतिभाशाली कलाकार भी नही ला पाते थे। अतत, अपने काम की निरतर उत्कृष्टता की वजह से और अपने चुने हुए मार्ग पर अडिग रूप से चलते रहने की वजह से उन्हे उन लोगों की ओर से भी सम्मान मिलने लगा जो उन्हे अज्ञानी और अनाडी कहा करते थे। गिरजाघरो की ओर से लगातार उन्हे चित्र बनाने का काम मिलने लगा और उनके पास काम की कभी कमी नहीं रहती थी। इसी तरह के एक काम मे वह विशेष रूप से बिल्कुल तल्लीन हो गये। मुझे अब यह तो ठीक-ठीक याद नही रह गया कि उसका विषय क्या था, लेकिन मै इतना जानता हू कि उस तस्वीर मे कही अधकार के दानव का चित्रण करने की जरूरत थी। बहुत देर तक वह सोचते रहे कि वह उसे क्या आकृति प्रदान करे, वह उस आकृति मे हर उस चीज़ को साकार कर देना चाहते थे जो उत्पीडक हो, हर वह चीज़ जो मनुष्य पर बोझ हो। इस प्रकार विचार करने के दौरान कभी-कभी उस रहस्यमय सूदखोर की सूरत उनके दिमाग मे आती थी और वह सोचने लगते थे 'उसी को मुझे अपने चित्र मे पिशाच के लिए नमूना बनाना चाहिये।' उनके आश्चर्य की कल्पना कीजिये कि एक दिन जब वह अपने स्टूडियो में काम कर रहे थे तो उन्हे किसी के दरवाजा खटखटाने की आवाज़ सुनायी दी, दरवाजा खुला तो वह भयानक सूदखोर अदर आया। अदर ही अदर उनके सारे शरीर मे सिहरन दौड गयी।

"'आप तस्वीरें बनाते है?' आगतुक ने किसी भूमिका के बिना मेरे पिताजी से पूछा।

"'बनाता तो हू,' मेरे पिताजी ने चकित होकर कहा, और सोचने लगे कि देखे अब आगे क्या होता है।

"'अच्छी बात है। मेरी तस्वीर बना दीजिये। शायद मै जल्दी ही मर जाऊगा, और मेरे कोई सतान भी नही है, लेकिन मै नही चाहता

कि मैं बिल्कुल ही मर जाऊं, मैं ज़िंदा रहना चाहता हूं। क्या आप ऐसी तस्वीर बना सकते हैं जो बिल्कुल जीती-जागती चीज़ जैसी हो?'

"मेरे पिताजी ने मन ही मन सोचा: 'इससे अच्छा और क्या हो सकता है? उसने ख़ुद आकर अपने आपको मेरे चित्र के पिशाच के लिए पेश किया है।' उन्होंने हामी भर ली। दोनों के बीच समय और पारिश्रमिक तै हो गया और अगले ही दिन मेरे पिताजी हाथ में रंग की तख़्ती और तूलिका लिये हुए अपने गाहक के घर पहुंच गये। चारों ओर ऊंचे जंगले से घिरा हुआ आंगन, कुत्ते, लोहे के फाटक और किवाड़, मेहराबदार खिड़कियां, पुराने ज़माने के बेहद ख़ूबसूरत क़ालीनों से ढकी हुई तिजोरियां और अंत में उस घर का असाधारण मालिक, जो उनके सामने निश्चल बैठा था—इन सब चीज़ों का उन पर विचित्र प्रभाव पड़ा। खिड़कियों में जान-बूझकर इतना बहुत-सा सामान ठूंस रखा गया था कि उनमें से सिर्फ़ ऊपर एक बहुत पतली-सी संद में से ही रोशनी आती थी। 'अरे, यही तो उसके चेहरे के लिए लाजवाब रोशनी है!' मेरे पिताजी ने ख़ुश होकर मन ही मन कहा और बड़ी उत्सुकता से चित्र बनाने लगे, मानो उनको डर लग रहा हो कि सौभाग्य से जो यह रोशनी मिली थी वह हमेशा नहीं रहेगी। 'कैसी प्रचंड शक्ति है इसमें!' उन्होंने मन ही मन दोहराया, 'अगर मैं अपने चित्र को उसका आधा भी प्रभावशाली बना सकूं जैसा वह देखने में लगता है तो वह मेरे सारे संतों और फ़रिश्तों को नष्ट कर देगा, वे उसके सामने मंद पड़ जायेंगे। कैसी पैशाचिक शक्ति है! अगर मैं उसकी आकृति की एक झलक भी ठीक ला सकूं तो वह चित्र में से कूदकर बाहर निकल आयेगा। कैसा असाधारण चेहरा-मोहरा है!' वह लगातार दोहराते रहे; जैसे-जैसे उन्हें कैनवस पर उस आकृति के कुछ लक्षण उभरते हुए दिखायी देने लगे वैसे-वैसे अपने चित्र के विषय के प्रति उनका उत्साह बढ़ता गया। लेकिन जैसे-जैसे वह उसकी पूर्ति के निकट पहुंचते गये वैसे-वैसे एक घुटन-भरी चिंता का आभास भी बढ़ता गया, जिसका कोई कारण वह स्वयं नहीं बता सकते थे। फिर भी इस चिंता के बावजूद उन्होंने अपने हर आवेश को वश में करके उस चेहरे की भाव-भंगिमा के हर उतार-चढ़ाव को अक्षरशः सही-सही अपने चित्र में उतार लेने का फ़ैसला किया। पहले-पहल उन्होंने आंखों की ओर सबसे अधिक ध्यान दिया। उन आंखों में इतनी अधिक शक्ति थी कि वह उन्हें

हूबहू अपने चित्र में उतार लाने की आशा नही कर सकते थे। फिर भी हर कीमत पर वह उनके लक्षण और उनके भाव के हर उतार-चढाव को खोज निकालने के लिए, उनके रहस्य की थाह पाने के लिए कृतमकल्प थे लेकिन जैसे ही उन्होंने अपनी तूलिका से उनकी गहराइयों मे उतरने की कोशिश की वैसे ही उनकी आत्मा ऐसी घृणा से, ऐसी विचित्र घुटन से भर उठी कि कुछ देर के लिए वह अपने चित्र से हाथ खीच लेने पर मजबूर हो गये। आखिरकार वह इसे और अधिक सहन न कर सके, उन्हे ऐसा महसूस होने लगा कि उसकी आखे उनकी आत्मा को भुलसे दे रही हैं और उनके अंदर ऐसा भय पैदा कर रही हैं जो उनकी समझ के बाहर था। अगले दिन उनकी दहशत और बढ गयी, और तीसरे दिन तो और भी गहरी हो गयी। वह भयभीत हो उठे, उन्होंने अपनी तूलिका फेक दी और साफ एलान कर दिया कि वह उस काम को जारी नही रख सकते। ये शब्द सुनकर उस विचित्र सूदखोर पर आश्चर्यजनक प्रतिक्रिया हुई। वह मेरे पिताजी के चरणो मे गिर पडा और गिडगिडाकर उनसे चित्र को पूरा कर देने की प्रार्थना करने लगा, उसने कहा कि इस पर उसकी सारी नियति और इस ससार मे उसका अस्तित्व निर्भर है, कि मेरे पिताजी ने उसकी सजीव आकृति के लक्षणो को अपनी तूलिका से छू लिया है और यह कि अगर वह उन्हे सच्चे रूप मे व्यक्त करने मे सफल हो जाये तो एक अलौकिक शक्ति के माध्यम से उसका जीवन उस चित्र मे सुरक्षित रह सकता है, कि उसकी बदौलत वह बिल्कुल मर जाने से बच जायेगा, क्योकि उसे इस दुनिया मे जीवित रहना है। ये शब्द सुनकर मेरे पिताजी पर आतक छा गया वे उनके कानो मे इतने विचित्र और भयानक लग रहे थे कि उन्होंने अपनी तूलिका और रगो की तख्ती दोनो ही को फेक दिया और झपटकर कमरे से बाहर चले गये।

"जो कुछ हुआ था उसकी याद उन्हे सारे दिन और सारी रात सताती रही, और अगले दिन सवेरे उस सूदखोर के यहा से वह चित्र एक औरत के हाथ उनके पास भिजवा दिया गया, उस सूदखोर के यहा नौकरी करनेवालो मे बस यही औरत थी, जिसने फौरन साफ एलान कर दिया कि उसके मालिक को वह चित्र नही चाहिये, वह उसके लिए कोई भुगतान नही करेगा और इसलिए उसने उसे वापस भिजवा दिया है। उसी दिन शाम को उन्हें पता चला कि वह सूदखोर मर गया

और उसे उसके धर्म के संस्कारों के अनुसार दफ़न कर देने की तैयारी की जा रही है। यह सब कुछ उनकी समझ के बाहर था। इसके साथ ही स्वयं उनके चरित्र में एक बड़ा परिवर्तन आया: उन पर चिंता की भावना छा गयी, जिसके कारण की थाह वह स्वयं भी नहीं लगा पाये, और शीघ्र ही उन्होंने एक ऐसा काम किया जिसकी उनसे कोई आशा नहीं कर सकता था। कुछ समय से उनके एक शिष्य की कृतियां कला-पारखियों और कला-प्रेमियों के एक छोटे-से समूह का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने लगी थीं। मेरे पिताजी को अपने उस शिष्य की प्रतिभा का हमेशा से आभास था और इसीलिए वह उसकी ओर विशेष ध्यान देते थे। अचानक वह उससे ईर्ष्या करने लगे। हर जगह इस चित्रकार में जो दिलचस्पी ली जा रही थी और उसकी कला की जो चर्चा हो रही थी वह उनके लिए असह्य हो उठी। आख़िरकार, इन सब बातों से बढ़कर उन्हें पता चला कि उनके शिष्य को हाल ही में बनाये गये एक धनी गिरजाघर के लिए एक चित्र बनाने का निमंत्रण दिया गया है। यह उनकी बर्दाश्त के बाहर था। 'नहीं, मैं चुपचाप बैठा रहकर उस छोकरे को इस तरह जीतने नहीं दूंगा!' उन्होंने एलान किया। 'अपने से बड़ों को धूल चटाने की इतनी जल्दी न करो, बच्चू! भगवान की कृपा से अभी मुझमें कुछ ताक़त बाक़ी है। देखना है कौन पहले धूल चाटता है।' और उस खरे और ईमानदार आदमी ने हर तरह की तिकड़म और जोड़-तोड़ के वे सारे हथकंडे अपनाये जिनसे वह हमेशा से नफ़रत करते आये थे; आख़िरकार मेरे पिताजी उस तस्वीर के लिए एक प्रतियोगिता कराने में सफल हो गये ताकि दूसरे चित्रकार भी अपने चित्र उसमें भेज सकें। इसके बाद वह अपने कमरे में बंद हो गये और तन्मय होकर काम में लग गये। ऐसा लगता था कि वह अपनी सारी शक्ति जुटाना चाह रहे थे, अपना सारा अस्तित्व उसमें लगा देना चाहते थे, और सचमुच उन्होंने अपनी एक श्रेष्ठतम कृति तैयार की। किसी को इसमें तनिक भी संदेह नहीं था कि इनाम उन्हीं को मिलेगा। तस्वीरें प्रतियोगिता में भेजी गयीं; उनकी कृति के मुक़ाबले अन्य सभी तस्वीरें दिन के सामने रात जैसी थीं। तब फ़ैसला करनेवालों में से एक ने, जो अगर मैं ग़लती नहीं करता तो एक पादरी था, एक ऐसी अप्रत्याशित आलोचना की जिसे सुनकर सभी दंग रह गये। 'इसमें तो शक नहीं कि कलाकार ने अपनी

कृति मे बडी प्रतिभा का परिचय दिया है,' वह बोले, 'लेकिन उसके चेहरो मे कोई पवित्रता का भाव नही है, बल्कि इसके विपरीत उन आकृतियो की आखो मे कोई पैशाचिक भाव है, मानो कलाकार ने किसी दूषित प्रभाव से प्रेरित होकर उन्हे बनाया हो।' चित्र को अधिक ध्यान से देखने पर सभी उपस्थित लोग वक्ता की बात से सहमत होने पर विवश हो गये। मेरे पिताजी अपनी बनायी हुई तस्वीर की ओर झपटे मानो स्वय इस अत्यत अपमानजनक टिप्पणी के सत्य होने की जाच करना चाहते हो और यह देखकर सहम उठे कि उन्होने लगभग सभी आकृतियो की आखे उस सूदखोर की आखो जैसी बनायी थी। वे उन्हे ऐसी पैशाचिक विनाशकारी शक्ति से देख रही थी कि वह अनायास ही सिहर उठे। उनका चित्र अस्वीकार कर दिया गया, और अकथनीय क्षोभ के साथ उन्होने देखा कि पुरस्कार उनके शिष्य को मिल गया। वह जिस तरह रोष से भरे हुए घर लौटे उसे शब्दो मे बयान नही किया जा सकता। वह मेरी मा पर लगभग टूट पडे, हम बच्चो को भगा दिया, अपनी तूलिकाए और ईज़िल तोड डाला, सूदखोर के चित्र को दीवार पर से उतारा, एक चाकू मगवाया और चूल्हे मे आग सुलगाने को कहा, उनका इरादा उस तस्वीर को काटकर टुकडे-टुकडे कर देने और जला देने का था। वह अपनी इस योजना को पूरा करने की तैयारी कर ही रहे थे कि इतने मे उनके एक परिचित कमरे मे आये, वह भी उन्ही की तरह चित्रकार थे जो हमेशा खुशमिजाज और सतुष्ट रहते थे और कभी किसी दूर की लालसा से चिंतित नही होते थे, जो काम भी मिल जाता था वही खुश होकर करते रहते थे और अपने दोस्तो के साथ बैठकर खाना खाने या शराब पीने मे उन्हे इससे भी ज्यादा सुख मिलता था।

" 'क्या कर रहे हो, किस चीज को जलाने की तैयारी कर रहे हो?' उन्होने तस्वीर की ओर बढते हुए पूछा। 'मेरे यार, यह तुम्हारी सबसे अच्छी कृतियो मे से है। उस सूदखोर की तस्वीर है न जो अभी कुछ ही दिन पहले मरा है, अरे, बिल्कुल उसी की सूरत है। हूबहू वही शक्ल है, ज़िदा से भी असली लगती है। किसी भी तस्वीर मे इस तरह की आखे नही मिलती।'

" 'अच्छा, अभी देखते है कि आग मे वे कैसी दिखायी देती हैं,' पिताजी ने उसे आग की लपटो मे झोक देने की तैयारी करते हुए कहा।

"'ठहरो, भगवान के लिए!' उनके मित्र ने चिल्लाकर कहा, 'अगर तुम उसे देखना भी गवारा नहीं कर सकते तो वह तस्वीर मुझे दे दो।'

"पहले तो पिताजी किसी हालत में ऐसा करने को राज़ी नहीं थे, लेकिन आखिरकार वह मान गये और उनके मस्तमौला दोस्त अपनी इस नयी उपलब्धि पर खुश होकर वह तस्वीर अपने साथ लेकर चले गये।

"उनके चले जाने के बाद मेरे पिताजी ने फ़ौरन अपने मन में शांति अनुभव की। उन्हें ऐसा लगा कि जैसे वह तस्वीर हट जाने से उनकी आत्मा पर से बहुत बड़ा बोझ उतर गया हो। जिस द्वेष और ईर्ष्या का उन्होंने परिचय दिया था, और उनके चरित्र में जो परिवर्तन आया था उस पर उन्हें स्वयं आश्चर्य था। अपने किये पर दुबारा दृष्टि-पात करके वह उदास हो गये और उन्होंने बहुत पछताते हुए कहा:

"'नहीं, यह ईश्वर की ओर से दिया गया दंड होगा; मैं इसी योग्य था कि मुझे उस तस्वीर के लिए इस तरह लज्जित किया जाये। वह मैंने अपने एक साथी चित्रकार को नष्ट करने के उद्देश्य से बनायी थी। मेरी तूलिका ईर्ष्या की पैशाचिक भावना से प्रेरित थी, और उस चित्र में इस दानवी प्रभाव का अभिव्यक्त होना अनिवार्य था।'

"वह तुरंत अपने भूतपूर्व शिष्य की खोज में निकल पड़े, उसे बड़े प्यार से गले लगाकर क्षमा मांगी, और उसके प्रति अपराध करने की जो भावना उनके मन में थी उसका यथासंभव प्रायश्चित्त करने की कोशिश की। उनकी चित्रकला फिर पूर्ववत् अपने निर्विघ्न मार्ग पर चलने लगी; लेकिन उनके चेहरे पर अब विचारमग्न रहने का भाव आ गया था। वह अब पहले से अधिक पूजा-पाठ करने लगे थे, पहले से बहुत कम बोलने लगे थे और अब लोगों के बारे में अपनी राय उतना खुलकर नहीं देते थे; उनके चरित्र का कठोर बाह्य रूप कोमल पड़ने लगा था। इसके कुछ ही समय बाद उन्हें एक और क्रूर आघात लगा। बहुत समय से वह अपने उस मित्र से नहीं मिले थे जिन्होंने उनसे वह तस्वीर मांगी थी। वह उनसे मिलने जाने की योजना ही बना रहे थे कि अचानक वह मित्र उनके कमरे में आ पहुंचे। थोड़ी देर शिष्टाचार की बातें होने के बाद मित्र ने कहा:

"'सच कहता हूं, भाई, तुम उस तस्वीर को जो जला देना

चाहते थे तो वह ठीक ही था। भगवान जाने उसमे कौन-सी ऐसी अजीब बात है मै जादू-टोने मे विश्वास नही रखता लेकिन, कसम खाकर कहता हू, उसमे कोई दुष्ट शक्ति छिपी हुई है...'

"'क्या मतलब तुम्हारा?' मेरे पिताजी ने पूछा।

"'अरे, जब से मैंने उसे अपने कमरे मे टागा तभी से मुझे इस घुटन का आभास होने लगा जैसे मै किसी की हत्या कर देना चाहता हू। जिदगी-भर कभी ऐसा नही हुआ कि मुझे रात को नीद न आती हो, लेकिन अब न सिर्फ यह कि मुझे नीद नही आती थी बल्कि ऐसे भयानक सपने भी दिखायी देते थे कि मै ठीक से यह भी नही कह सकता कि वे सपने ही होते या कुछ और. मुझे ऐसा लगता था कि जैसे कोई भूत मेरा गला घोटे दे रहा है और मुझे वह कमबख्त बूढा दिखायी देता रहता था। सचमुच, मेरी समझ मे नही आता कि मै अपने दिमाग की हालत कैसे बयान करू। आज तक कभी मैंने ऐसा नही महसूस किया। उन दिनो मै तमाम वक्त पागलो की तरह एक किस्म का डर महसूस करता हुआ, कोई भयानक बात होने की अरुचिकर आशका लिये इधर-उधर घूमता रहता था। मै किसी से कोई खुशी की या दिल से निकली हुई बात नही कह सकता था ऐसा लगता था जैसे कोई छिपकर मुझ पर नज़र रख रहा है। और जिस क्षण वह तस्वीर मैंने अपने एक भतीजे को दे दी, जिसने बडी खुशामद करके उसे मुझसे मागा था, मुझे ऐसा लगा कि जैसे मेरे कधो पर से किसी पत्थर का बोझ हट गया हो फौरन मेरी सारी जिदादिली लौट आयी, जैसा कि तुम देख सकते हो। हा, मेरे दोस्त, तुमने शैतान मे जान डाल दी थी!'

"*पिताजी ने बडे ध्यान से उनकी बात सुनी और अत मे पूछा*

"'तो अब वह तस्वीर तुम्हारे भतीजे के पास है?'

"'वह भी उसे बर्दाश्त नही कर पाया,' उनके मस्तमौला दोस्त ने जवाब दिया, 'ऐसा लगता है कि उस बूढे सूदखोर की आत्मा उस तस्वीर मे उतर आयी है वह झट से तस्वीर के फ्रेम के बाहर निकल आता था और कमरे मे इधर-उधर टहलने लगता था, और मेरे भतीजे ने जो बाते मुझे बतायी वे तो बिल्कुल समझ मे ही नही आती। अगर मुझे खुद उनका कुछ तजुर्बा न हो चुका होता तो मै समझ लेता कि वह पागल है। उसने तस्वीरे जमा करनेवाले किसी आदमी के हाथ

वह तस्वीर बेच दी, जो ख़ुद भी बहुत दिन तक उसे अपने पास नहीं रख सका और उसने किसी दूसरे के हाथ उसे बेच दिया।'

"इस वृत्तांत का मेरे पिताजी पर बहुत गहरा असर हुआ। वह सचमुच खोये-खोये-से रहने लगे, उन पर उदासी छा गयी और अंत में उन्हें पक्का विश्वास हो गया कि उनकी तूलिका ने शैतान के साधन का काम किया था, कि उस सूदख़ोर की ज़िंदगी का कुछ हिस्सा ज़रूर उस तस्वीर में प्रवेश कर गया था और वह अब लोगों को परेशान कर रहा था, उनमें पैशाचिक भ्रम पैदा कर रहा था, कलाकारों को भटका रहा था, उन्हें ईर्ष्या की भयानक यातना से त्रस्त कर रहा था, इत्यादि-इत्यादि। उन्हीं दिनों उनके परिवार पर जो तीन मुसीबतें आयीं, अचानक उनकी पत्नी, बेटी और नन्हे बेटे की मृत्यु, उनको उन्होंने अपने लिए दैवी दंड मान लिया और फ़ौरन इस संसार से वैराग्य ले लेने का फ़ैसला किया। जैसे ही मैं नौ साल का हुआ उन्होंने मुझे ललित-कला अकादमी में भरती करा दिया, और पहले अपने सारे क़र्ज़ चुकाकर दूर के किसी मठ की ओर चल दिये, जहां उन्होंने जल्दी ही मठ की दीक्षा ले ली। वहां उन्होंने अपने सभी साथियों को अपने जीवन के कठोर संयम से और मठ के सभी नियमों के विधिवत् पालन से चकित कर दिया। जब मठ के बड़े पादरी को पता चला कि वह पहले एक कुशल चित्रकार रह चुके हैं तो उन्होंने उनको गिरजाघर के लिए मुख्य देव-प्रतिमा का चित्रांकन करने का काम सौंपा। लेकिन एक विनम्र भिक्षु की तरह उन्होंने साफ़ कह दिया कि वह अपनी तूलिका उठाने के लिए अयोग्य हैं, कि उनकी तूलिका कलंकित हो चुकी है, कि उन्हें पहले कठोर परिश्रम करके और अपार आत्म-त्याग का परिचय देकर अपनी आत्मा को शुद्ध करना होगा ताकि वह एक बार फिर ऐसे काम का बीड़ा उठाने के योग्य बन सकें। उनके ऊपर कोई दबाव नहीं डाला गया और उन्होंने मठ में अपनी दिनचर्या के नियम-संयम को अधिकतम सीमा तक कठोर बना लिया। अंततः उन्हें लगा कि यह भी पर्याप्त नहीं है और यह अभी काफ़ी कठोर नहीं है। मठ के बड़े पादरी का आशीर्वाद लेकर वह आश्रम में चले गये ताकि वहां बिल्कुल अकेले रह सकें। वहां उन्होंने पेड़ों की टहनियों से अपने लिए एक कुटी बनायी, कंदमूल खाकर अपना पेट भरते रहे और पत्थर ढो-ढोकर एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाते रहे, एक जगह निश्चल खड़े रहकर दोनों हाथ

आकाश की ओर उठाकर सूर्योदय से सूर्यास्त तक प्रार्थना करते रहे। दूसरे शब्दों में, ऐसा प्रतीत होता था कि वह अपनी सहनशीलता की चरम परीक्षा ले रहे थे और उस असाधारण आत्मत्याग की सीमा तक पहुंच जाना चाहते थे जिसके उदाहरण आम तौर पर सतों के जीवन में ही मिलते हैं। इस तरह वह कई वर्ष तक अपने शरीर को कष्ट देते रहे और इसके साथ ही प्रार्थना की जीवनदायिनी शक्ति से उसका पोषण भी करते रहे। अतत एक दिन वह मठ मे लौट आये और बडी दृढता से वहा के बडे पादरी से बोले 'अब मैं तैयार हू। अगर भगवान की इच्छा हुई तो मैं अपना निर्दिष्ट काम पूरा करूंगा।' अपने चित्र के लिए उन्होंने जो विषय चुना वह था ईसा का जन्म। वह पूरे साल-भर उस चित्र पर काम करते रहे, वह कभी अपनी कोठरी से बाहर नही निकले, मुश्किल से ही वह मठ का साधारण भोजन करते थे और लगातार प्रार्थना करते रहते थे। वर्ष का अत होने पर चित्र बनकर तैयार हो गया। निस्सदेह वह कला का चमत्कार था। हालांकि ललित-कला का कोई विशेष ज्ञान न वहा के भिक्षुओ को था और न उनके बडे पादरी को, फिर भी वे उन आकृतियो की विलक्षण पवित्रता को देखकर आश्चर्यचकित रह गये। अपने बच्चे को झुककर निहारती हुई ईश्वर की माता के चेहरे पर दिव्य विनम्रता और कोमलता की दिव्य ज्योति, बाल-ईश्वर की आखो मे गहरी बुद्धिमत्ता, जो कही बहुत दूर कुछ देखती हुई प्रतीत होती थी, राजाओ की गम्भीर मूकता, जो इस दिव्य चमत्कार से विस्मित होकर श्रद्धा के भाव से प्रभु के चरणो मे शीश नवाये हुए थे, और फिर उस पूरे चित्र मे व्याप्त पवित्र, अकथनीय शाति – इन सब बातो को ऐसे सामजस्यपूर्ण सशक्त ढग से और ऐसे सप्राण रगो मे चित्रित किया गया था कि उसका प्रभाव किसी जादू से कम नही था। सभी भिक्षु इस नयी देव-प्रतिमा के सामने घुटने टेककर बैठ गये और मठ के विस्मय-विभोर बडे पादरी ने श्रद्धा-भाव से घोषणा की 'नही, ऐसा चित्र कोई मनुष्य केवल मानवीय कला की सहायता से नही बना सकता एक उच्चतर, पवित्र शक्ति तुम्हारी तूलिका का पथ-प्रदर्शन कर रही थी, और तुम्हारी इस कृति को देवलोक का आशीर्वाद प्राप्त है।'

"इसी समय मैंने अकादमी मे अपनी शिक्षा पूरी की और मुझे स्वर्ण-पदक मिला और इस पुरस्कार के साथ ही इटली की यात्रा करने

की उल्लासमय आशा भी जागृत हुई—जो हर बीसवर्षीय कलाकार का चिरपोषित स्वप्न होता है। मेरे लिए बस अपने पिता से विदा लेना बाक़ी रह गया था, जिनसे मैं बारह वर्ष पहले बिछुड़ा था। मैं मानता हूं कि उनकी आकृति भी बहुत पहले ही मेरी स्मृति में धुंधली पड़ गयी थी। मैं उनके कठोर संयम के जीवन की कुछ चर्चा सुन चुका था और मैंने अपने आपको एक संन्यासी की सूखी हुई सूरतवाले किसी आदमी से मिलने को तैयार किया, जो अपनी कोठरी और अपनी प्रार्थनाओं को छोड़कर इस संसार की अन्य सभी चीज़ों से विरक्त हो चुका था, जो निरंतर उपवास रखते-रखते और जागते-जागते बिल्कुल जर्जर हो गया था और मुरझा गया था। मेरे आश्चर्य की कल्पना कीजिये जब मैंने अपने सामने एक वैभवशाली, सौम्य धर्मात्मा को खड़ा पाया! उनके चेहरे पर कठोर तपस्या के कोई चिन्ह नहीं थे और वह नैसर्गिक उल्लास की आभा से चमक रहा था। उनकी बर्फ़ जैसी सफ़ेद दाढ़ी, और वैसे ही चांदी के रंग के महीन, लगभग पारलौकिक बाल बड़े मनोरम ढंग से उनके सीने पर और उनके काले चोगे की सिलवटों पर बिखरे हुए थे, और नीचे उनके मठ की सीधी-सादी पोशाक की कमर पर बंधी हुई डोरी तक आ गये थे। लेकिन मेरे लिए सबसे अधिक उल्लेखनीय उनके वे शब्द थे जो उन्होंने कला के बारे में कहे, वे शब्द और विचार जिनके बारे में मैं जानता हूं कि उन्हें बहुत समय तक मैं अपनी आत्मा में सुरक्षित रखूंगा और मेरी हार्दिक इच्छा है कि मेरे सभी साथी कलाकार ऐसा ही करें।

"'मैं तुम्हारी राह देखता रहा हूं, बेटा,' जब मैं उनका आशीर्वाद लेने गया तो उन्होंने कहा। 'तुम अब उस मार्ग पर अग्रसर होनेवाले हो जिस पर तुम्हें जीवन भर चलना है। तुमने जो मार्ग चुना है वह एक पवित्र मार्ग है, उससे कभी पथभ्रष्ट न होना। तुममें प्रतिभा है; प्रतिभा ईश्वर की सबसे बहुमूल्य देन है—उसे व्यर्थ नष्ट न करना। जो कुछ भी देखना उसे जांचना-परखना और उसका अध्ययन करना, हर चीज़ को अपनी तूलिका के वश में करना, लेकिन हर चीज़ के आंतरिक अर्थ को खोजना सीखना, और सबसे बढ़कर सृष्टि के अपार रहस्य की थाह पाने की चेष्टा करना। धन्य हैं वे गिने-चुने लोग जो इस रहस्य को जानते हैं। प्रकृति की कोई भी वस्तु उनके लिए तुच्छ नहीं होती। सृष्टा और कलाकार महत्वहीन चीज़ों में भी उतने ही

सशक्त रूप से प्रकट होता है जैसे महान चीजो मे, जो कुछ तुच्छ है उसमें भी उसकी कृति मे कोई तिरस्कार का भाव नही होता, क्योकि सृष्टा की सुदर आत्मा अदृश्य रूप से उसमें व्याप्त रहती है, और जो तुच्छ है वह उसकी आत्मा की आग मे तपकर उत्कृष्ट अभिव्यक्ति पाता है। समस्त कला मे मनुष्य के लिए दिव्यता का, पारलौकिक स्वर्ग का एक सकेत होता है, और इसी बात की बदौलत वह समस्त पदार्थ से परे पहुच जाती है। महान कलाकृति इस पृथ्वी की सभी चीज़ों से उसी प्रकार श्रेष्ठ होती है जिस प्रकार नैसर्गिक सुख समस्त पार्थिव दंभ से श्रेष्ठ होता है, उसी प्रकार जैसे सृजन विनाश मे श्रेष्ठ होता है, जैसे फरिश्ता अपनी दीप्त आत्मा की मासूमियत की वजह से शैतान की समस्त अथाह शक्तियो से और उसके अपार दभपूर्ण उन्माद मे श्रेष्ठ होता है। तुम्हारे पास जो कुछ है उसे कला की वेदी पर न्योछावर कर दो और अपने समस्त हृदय से उससे प्रेम करो। पार्थिव लालसा से भरे हुए *भावावेश के साथ उससे प्यार न करो, बल्कि शात नैसर्गिक* भावावेश के साथ उससे प्यार करो, इसके बिना मनुष्य अपने आपको इस पृथ्वी से ऊचा उठाने मे असमर्थ रहता है और वह सात्वना के चमत्कारी स्वरो का उच्चारण नही कर सकता। *क्योकि सभी प्राणियो* को सात्वना और शाति प्रदान करने के लिए ही इस पृथ्वी पर महान कलाकृति का अवतरण होता है। वह आत्मा को झकृत नहीं कर सकती, बल्कि वह एक सुमधुर प्रार्थना होती है जो ईश्वर तक पहुचने के लिए सतत सचेष्ट रहती है। लेकिन कुछ क्षण ऐसे आते है, अधकार के क्षण '

"वह रुक गये और मैंने देखा कि उनका निर्मल चेहरा उदास हो गया, जैसे अचानक उस पर से कोई बादल गुज़र गया हो।

"'मेरे जीवन मे भी ऐसा एक अवसर आया था,' उन्होने कहा। 'आज तक मै यह समझ नही पाया हू कि उस विचित्र आकृति के पीछे, जिसका चित्र मैंने बनाया था, क्या चीज़ थी। निश्चय ही वह कोई पैशाचिक चीज़ थी। मै जानता हू कि ससार शैतान के अस्तित्व को स्वीकार नही करता, इसलिए मै उसकी चर्चा नही करूगा। मै केवल इतना ही कहना चाहता हू कि मैंने उसका चित्र घोर अरुचि से बनाया था, और मुझे अपने काम के प्रति तनिक भी आकर्षण नही था। *मैंने अपनी भावनाओं को दबाने की और* मेरी आत्मा मे जो घृणा

थी उसका दमन करके उसका वैसा ही चित्र बनाने की चेष्टा की जैसा कि वह जीवन में सचमुच था। वह कोई कलाकृति नहीं थी, और यही कारण है कि जो लोग भी उसे देखते हैं वे जिन भावनाओं से प्रभावित होते हैं वे बेचैन, परेशान भावनाएं होती हैं ; वे कलाकार की भावनाएं नही होतीं क्योंकि कलाकार अपनी चिंता में भी शांति का संचार कर देता है। मैंने सुना है कि यह चित्र एक आदमी के पास से दूसरे के पास जा रहा है और बेचैनी फैला रहा है, कलाकार के हृदय में ईर्ष्या की, अपने जैसे चित्रकार के प्रति कुत्सित घृणा की भावना, सताने की और उत्पीड़ित करने की दुष्टतापूर्ण इच्छा पैदा कर रहा है। सर्वशक्तिमान तुम्हें ऐसे भयानक आवेशों से बचाये! उनमे बुरी कोई चीज़ नही होती। किसी दूसरे को लेशमात्र भी यातना पहुंचाने से कहीं अच्छा है कि तुम स्वयं कठोर से कठोर यातना सहन कर लो। अपनी आत्मा की शुद्धता को बचाये रखना। जिसे प्रतिभा का वरदान मिला है उसकी आत्मा शुद्धतम होनी चाहिये। उसके साथियों के बहुत-से दोप क्षमा किये जा सकते हैं लेकिन उसके दोप नहीं क्षमा किये जा सकते। जो आदमी अपने घर से बहुत सजीले कपड़े पहनकर तड़क-भड़क के साथ निकलता है उस पर पास से गुज़रती हुई गाड़ी से कीचड़ की एक छींट पड़ते ही हर आदमी उसे घेरकर खड़ा हो जाता है, उसकी ओर उंगली उठाता है और उसके इस दोष की चर्चा करता है, जबकि यही लोग दूसरे राहगीरों के रोज़मर्रा के मामूली कपड़ों पर लगे हुए इससे भी बुरे ढेरों धब्बों को देखते तक नहीं। क्योंकि रोज़मर्रा के कपड़ों पर धब्बे दिखायी नहीं देते।'

"उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया और अपने गले लगा लिया। अपने जीवन में कभी मैंने इतना उत्कर्ष अनुभव नहीं किया है और न ही कभी मैं इतना भावविह्वल हुआ हूं। पुत्र होने के नाते जितना स्नेह उचित था उससे भी बढ़कर श्रद्धा के साथ मैं उनके सीने से चिपट गया और मैंने उनके लहराते हुए रुपहले बालों पर अपने होंट रख दिये। उनकी आंखों में आंसू चमक रहे थे।

"'मैं तुमसे बस मेरी एक इच्छा पूरी करने को कहता हूं, बेटा,' जब हम दोनों एक दूसरे से विदा होनेवाले थे तो उन्होंने कहा। 'हो सकता है कि जिस तस्वीर की मैंने चर्चा की है वह किसी दिन कहीं तुम्हें दिखायी दे जाये। उसकी लाजवाब आंखों से और उनके अस्वाभा-

विक भाव से तुम उस तस्वीर को फौरन पहचान लोगे। मै तुमसे बस इतना कहना चाहता हू कि हर कीमत पर उसे नष्ट कर देना .'

"जैसा कि आप लोग खुद समझ सकते है, स्वाभाविक बात थी कि मैने उनकी यह इच्छा पूरी करने का वचन दे दिया। पिछले पद्रह वर्षो मे मुझे कोई ऐसी चीज नही दिखायी दी थी जो मेरे पिताजी की बयान की हुई तस्वीर से थोडी-बहुत भी मिलती हो। आज इस नीलाम मे जाकर मुझे यह तस्वीर दिखायी दी "

इतना कहकर कलाकार ने अपना वाक्य पूरा किये बिना ही उस तस्वीर को दुबारा देखने के लिए दीवार की ओर नज़र फेरी। श्रोताओ की सारी भीड ने भी ऐसा ही किया, वे सभी उस असाधारण चित्र को देखने के लिए एक साथ मुडे। लेकिन उन्हे यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि दीवार पर तस्वीर नही थी। पूरी भीड मे बहुत-सी मिली-जुली आवाजो की एक लहर दौड गयी और उसमे "चोरी" का शब्द साफ पहचाना जा सकता था। जब श्रोताओ का ध्यान यह वृत्तात सुनने की ओर लगा हुआ था, किसी ने वह तस्वीर उडा दी थी। इसके बाद बहुत देर तक वहा पर मौजूद सभी लोगो को इस बात का पूरा विश्वास नही था कि उन्होने सचमुच वे असाधारण आखे देखी थी, या वह सब कुछ केवल एक छलावा था जो देर तक पुरानी तस्वीरे देखते रहने के कारण थकी हुई उनकी आखो के सामने क्षणभर के लिए आकर गायब हो गया था।

अलेक्सेई तोलस्तोय

१८१७–१८७५

अलेक्सेई कोंस्तान्तीनोविच तोलस्तोय (१८१७–१८७५) का जन्म एक पुराने कुलीन वंश में हुआ। उनका बचपन अपनी माता की और फिर मामा की जागीर में बीता। उनके मामा अ० पेरोव्स्की इतिहासकार, वाङ्मीमांसक और लेखक थे, उन्हीं के यहां अलेक्सेई ने साहित्यिक और कलात्मक शिक्षा पायी। १८३४ में तोलस्तोय को विदेश मंत्रालय के मास्को अभिलेखागार में एक "प्रशिक्षणार्थी" के तौर पर लिया गया। १८३७ में उन्होंने फ्रैंकफ़र्ट-ऑन-माइन में रूसी दूतावास में काम किया और १८४० से वह ज़ार के निजी शाही कार्यालय में काम करने लगे।

अल्पायु में ही तोलस्तोय ने लेखनी संभाल ली थी और उनकी पहली कहानी 'वेम्पायर', जो इस संग्रह में शामिल है, १८४१ में छपी थी। १८४० के दशक में तोलस्तोय ने कई उत्तम गीत और गाथाएं लिखीं तथा इवान प्रचंड के काल पर एक ऐतिहासिक उपन्यास 'प्रिंस सेरेब्रयान्नी' लिखने की योजना बनायी। अगले दशक के मध्य से पत्र-पत्रिकाओं में कई अत्यंत लोकप्रिय व्यंग्य रचनाएं छपने लगीं – इनके लेखक का नाम कोज़्मा प्रुत्कोव बताया जाता था, जो वास्तव में तोलस्तोय तथा दो पत्रकार भाइयों – झेमचुज्नीकोव – का सामूहिक उपनाम था।

१८५५ में तोलस्तोय क्रीमिया युद्ध में भाग लेने के लिए मेजर के पद पर सेना में भरती हुए, परंतु सहसा गंभीर रूप से बीमार हो गये और युद्ध में भाग न ले पाये। युद्ध समाप्त होने पर उन्हें ज़ार अलेक्सान्द्र द्वितीय का एडजुटेंट नियुक्त किया गया, किंतु इस सेवा से उन्हें मानसिक संतोष प्राप्त नहीं हुआ, सो १८६१ में उन्होंने सेवा से निवृत्ति पा ली। एडजुटेंट के नाते ज़ार के साथ अपने निकट संपर्क के दिनों में तोलस्तोय अक्सर ज़ार को रूस की सच्ची स्थिति के बारे में बताते थे, कई बार उन्होंने उत्पीड़ित लेखकों, विशेषतः तरास शेव्चेंको और इवान तुर्गेनेव की रक्षा में अपना मत व्यक्त किया, १८६४ में

उन्होंने निकोलाई चेर्निशेव्स्की की सजा कम करवाने के लिए काफी प्रयत्न किया।

छठे दशक के मध्य से सातवें दशक के मध्य तक का काल तोलस्तोय के सृजन में सबसे अधिक फलप्रद रहा।

सेवा-निवृत्त होकर वह देहात में जा बसे। सातवें दशक के आरंभ में उनका काव्य नाटक 'दोन-जुआन', उपन्यास 'प्रिंस सेरेब्रयान्नी' और फिर नाटक त्रयी – 'इवान प्रचंड की मृत्यु', 'जार फ्योदोर इओआनोविच' और 'जार बोरीस' (१८६२–१८६६) प्रकाशित हुए। इन दिनों वे फिर से गाथा विधा और व्यंग्य की ओर उन्मुख हुए। सेंसर के कारण उनकी व्यंग्य रचनाएं छप नहीं सकती थीं, हस्तलिखित नकलों में ही पाठक उन्हें पढ़ पाते थे।

रूसी साहित्य में अ० को० तोलस्तोय एक विलक्षण गीतकार, व्यंग्यकार, गद्य लेखक और नाटककार के रूप में जाने जाते हैं।

अ० तोलस्तोय ने रूसी समाज के क्रांतिकारी भाग का खुलेआम समर्थन नहीं किया, तथापि वह जारशाही की नीति से असंतुष्ट थे और विरोधपक्षी-अभिजाततंत्रीय दृष्टिकोण से उसकी आलोचना करते थे। अत्याचार, निरंकुशता, नौकरशाही से उन्हें सख्त नफरत थी। आदर्श की खोज में वह रूस के अतीत की ओर उन्मुख हुए और उसमें उन्होंने राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता के वे सिद्धांत पाये, जो उनके समकालीन जीवन में नहीं थे। यही इतिहास में उनकी रुचि का कारण था, जहां वह अखंड चरित्र के शक्तिशाली नायक पाते थे, इसीलिए वह नौकरशाही, स्वेच्छाचारी सेंसर तथा जारशाही व्यवस्था के दूसरे नासूरों की इतनी मर्मांतक आलोचना करते थे। अपने भावप्रवण गीतों में भी तोलस्तोय चरित्र की अखंडता और भावनाओं की शुचिता की अभिपुष्टि करते थे। उनकी प्रतिभा के ये पहलू ही उन्हें आज भी हमारे करीबी बनाते हैं।

वेम्पायर

वॉन डाम पार्टी मे खासी भीड थी। कोलाहलपूर्ण वाल्ज नृत्य के पश्चात रुनेव्स्की ने अपनी पार्टनर को उसके स्थान पर पहुचाया और कमरो मे टहलता हुआ अतिथियो के नाना दलो को देखने लगा। एक आदमी की ओर उसका ध्यान गया लगता था कि वह जवान ही है, लेकिन उसका चेहरा पीला था और बाल बिल्कुल सफेद। वह अगीठी के आले मे टेक लगाये हॉल के एक कोने मे किसी को घूर रहा था। इस क्रिया मे व्यस्त वह इस बात से बेखबर था कि उसके सूखे कोट के सिरे को लपटे छू रही है और उससे धुआ उठने लगा है। इस अजनबी के विचित्र रूप ने रुनेव्स्की के मन मे कौतूहल जगाया और उसने इस मौके का फायदा उठाकर उससे बातचीत शुरू की।

"लगता है आपको किसी की तलाश है?" उसने कहा, "इधर आपके कोट मे आग लगनेवाली है।"

अजनबी ने पीछे मुडकर देखा, अगीठी से परे हट गया और रुनेव्स्की को पैनी नजरो से देखते हुए जवाब दिया

"नहीं, मुझे किसी की तलाश नही है। मुझे तो बस यह देखकर हैरानी हो रही है कि आज की इस पार्टी मे मै उपीर देख रहा हू।"

"उपीर? क्या मतलब?" रुनेव्स्की ने पूछा।

"उपीर का मतलब है उपीर," अजनबी ने निर्लिप्त स्वर मे उत्तर दिया। "आप लोग पता नहीं क्यो उन्हे वेम्पायर कहते है, लेकिन यकीन मानिये उनका असली रूसी नाम उपीर ही है। और चूकि वे शुद्ध स्लाव मूल के है, हालाकि सारे यूरोप मे और एशिया तक मे फैले हुए है, सो कोई वजह नही कि हगेरियाई पादरियो द्वारा बिगाडे गये नाम से उन्हे पुकारा जाये। सभी शब्दो को तोड-मरोडकर उन्हे लैटिन भाषा के शब्दो जैसा बनाना ही उनका काम था, उपीर को

वेम्पायर बना दिया। हुंह, वेम्पायरस-वेम्पायरी," हिकारत से उसने कहा। "यह तो वैसे ही है जैसे रूसी मामूली भूत को फैंटम कहें।"

"लेकिन यह तो बताइये कि ये वेम्पायर या उपीर यहां आ कैसे सकते हैं?" रुनेव्स्की ने पूछा।

उत्तर देने के बजाय अजनबी ने हाथ उठाकर एक प्रौढ़ा की ओर इशारा किया, जो दूसरी महिला से बातें कर रही थी और उसके पास ही बैठी युवती को प्यार से देख रही थी। प्रत्यक्षतः, बात उस युवती की ही हो रही थी, क्योंकि वह जब-तब मुस्करा देती और उसके गालों पर हल्की सी लाली छा जाती।

"इस बुढ़िया को जानते हैं?" अजनबी ने रुनेव्स्की से पूछा।

"यह ब्रिगेडियर सुग्रोबिन की पत्नी हैं," उसने उत्तर दिया। "मेरा इनसे परिचय तो नहीं है, लेकिन मैंने सुना है कि काफ़ी अमीर है और मास्को से थोड़ी दूर इनका बहुत बढ़िया दाचा है।"

"हां, कुछ साल पहले तक वह ज़रूर सुग्रोबिना थी, लेकिन अब वह घिनौने उपीर के अलावा और कुछ नहीं है, जो बस आदमी का खून चूसने के मौके की तलाश में ही रहता है। देखिये, कैसे इस बेचारी लड़की को निहार रही है। यह उसकी सगी नातिन है। ज़रा सुनिये बुढ़िया क्या कह रही है: वह लड़की की तारीफ़ कर रही है और उसे अपने दाचा पर दो-एक हफ़्ते रहने के लिए बुला रही है, उसी दाचा पर जिसकी आप बात कर रहे हैं। लेकिन मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि तीन दिन बीतते न बीतते बेचारी लड़की मर जायेगी। डाक्टर कहेंगे कि उसे ताप हो गया था या निमोनिया बतायेंगे, मगर आप उनकी बातों पर विश्वास मत करना!"

रुनेव्स्की को अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

"आपको मेरी बातों पर शुबहा है," अजनबी ने कहना जारी रखा। "लेकिन मुझसे अच्छी तरह कोई यह साबित नहीं कर सकता कि सुग्रोबिना उपीर है, क्योंकि मैं उसके दफ़न में खुद मौजूद था। अगर लोगों ने तब मेरी बात मानी होती तो उसके कंधों के बीच खूंटा ठोक देते। पर क्या किया जाये? उसके घरवालों में से कोई वहां था नहीं, दूसरों को क्या लेना-देना?"

ऐन उसी क्षण एक अजीब सा वयोवृद्ध व्यक्ति बुढ़िया के पास आया। वह भूरे रंग का टेल-कोट पहने था, सिर पर विग लगाये था, उसके

गले में पैतालीस वर्ष की उत्तम सरकारी सेवा के पुरस्कारस्वरूप मिला संत व्लादीमिर क्रास लटक रहा था। दोनों हाथों में वह सोने की नासदानी पकड़े हुए था और दूर से ही उसे ब्रिगेडियरनी की ओर बढ़ाता आ रहा था।

"यह भी वेम्पायर है?" रुनेव्स्की ने पूछा।

"शक की कोई बात ही नहीं," अजनबी ने जवाब दिया। "यह स्टेट काउसलर तेल्यायेव है। सुग्रोबिना का गहरा दोस्त है, उससे दो हफ्ते पहले मरा था।"

ब्रिगेडियरनी के पास पहुंचकर वह मुस्कराया, एक पांव पीछे घसीटकर और सिर आगे झुकाकर उसने अभिवादन किया। बुढ़िया भी मुस्करा दी, स्टेट काउंसलर की नासदानी में उंगलियां डालकर चुटकी भर सुंघनी उसने ली।

"मीठी खुशबूवाली है न, मेहरबान?" उसने पूछा।

"मीठी खुशबूवाली है, मोहतरमा, मीठी खुशबूवाली," मिश्री-घुली आवाज में तेल्यायेव ने जवाब दिया।

"सुना आपने?" अजनबी ने रुनेव्स्की से कहा। "जब ये दोनों ज़िंदा थे तो बिल्कुल यही बातचीत इन दोनों में होती थी। सुग्रोबिना से मुलाकात होने पर हर बार तेल्यायेव नासदानी पेश करता था और वह यह पूछकर कि नास सुगंधवाली है या नहीं, एक चुटकी लेती थी। तेल्यायेव जवाब देता था कि खुशबूवाली है और उसके पास बैठ जाता था।"

"अच्छा, यह बताइये," रुनेव्स्की ने पूछा, "आपको यह पता कैसे चलता है कि कौन वेम्पायर है और कौन नहीं?"

"इसमें कोई मुश्किल बात नहीं है। जहां तक इन दोनों का सवाल है, मुझसे कोई गलती नहीं हो सकती, क्योंकि इनके मरने से पहले मैं इन्हें जानता था। सच पूछें तो मुझे इन्हें ऐसे लोगों के बीच देखकर बहुत हैरानी हुई जो इन्हें अच्छी तरह जानते हैं। इसके लिए तो वाकई गजब की हिम्मत चाहिए। पर आप पूछ रहे हैं कि उपीर को पहचाना कैसे जाये? जरा गौर करिये कि कैसे एक दूसरे से मुलाकात होने पर वे जीभ से चटकारा लेते हैं। दरअसल यह चटकारा नहीं है, बल्कि वैसी आवाज है, जैसी सतरा चूसते समय होंठों से निकलती है। यह इनका संकेत है, इसी से ये एक दूसरे को पहचानते और अभिवादन करते हैं।"

एक सजे-धजे नौजवान ने आकर रुनेव्स्की को याद दिलाया कि अगले नाच में उनकी जोड़ियों को एक दूसरे के सामने खड़ा होना है। सभी जोड़ियां अपने-अपने स्थान पर पहुंच चुकी थीं। रुनेव्स्की की कोई पार्टनर नहीं थी, सो उसने जल्दी से उस युवती को नाच के लिए आमंत्रित किया, जिसके बारे में अजनबी का कहना था कि यदि वह नानी के यहां गयी तो जल्दी ही उसका मरना निश्चित है। नाचते समय रुनेव्स्की ने उसे गौर से देखा। उसकी उम्र कोई सत्रह साल रही होगी, नयन-नक्श तो अपने आप में ही अनुपम थे और उनमें एक असाधारण मर्मस्पर्शी भाव था। यह सोचा जा सकता था कि एक शांत उदासी उसके चरित्र का स्थायी लक्षण है, लेकिन उससे बातचीत में रुनेव्स्की किसी चीज के हास्यास्पद पहलू को लेता तो यह भाव विलुप्त हो जाता और उसका स्थान विनोदमय मुस्कान ले लेती। वह जो भी जवाब देती वह विदग्धतापूर्ण होता, उसकी हर टिप्पणी मौलिक और सटीक होती। वह किसी की बुराई किये बिना मजाक करती और हंसती तो इतने साफ़ मन से कि जिनका वह मजाक उड़ाती वे भी उसकी बातें सुनकर बुरा न मानते। स्पष्ट था कि वह विचारों के पीछे दौड़ती नहीं है, शब्द खोजती नहीं है, बल्कि विचार एकाएक ही पैदा होते हैं और शब्द सहज ही जीभ पर आते हैं। कभी-कभी वह अपने विचारों में खो जाती और फिर से उसके मुखड़े पर उदासी की छाया पड़ जाती। हर्षोल्लास से उदासी और उदासी से हर्षोल्लास में परिवर्तन एक विचित्र वैषम्य प्रस्तुत करता था। उसकी सुकोमल, छरहरी आकृति को दूसरे नाचनेवालों के बीच झलकता देखकर रुनेव्स्की को लगता कि वह कोई पार्थिव जीव नहीं, बल्कि उन दिव्य प्राणियों में से एक है, जो कवियों के शब्दों में, चांदनी रातों में फूलों पर मंडराते और बैठते हैं, और उनके भार से फूलों की टहनियां झुकती नहीं। रुनेव्स्की को पहले कभी भी किसी ने इतना प्रभावित नहीं किया था। नृत्य समाप्त होते ही उसने अनुरोध किया कि युवती की मां से उसका परिचय करवा दिया जाये।

पता चला कि सुग्रोविना से बात कर रही महिला उसकी मां नहीं, बल्कि दूर के रिश्ते से मौसी लगती थी, जिसका नाम जोरिना था और उसके यहां वह पल रही थी। रुनेव्स्की ने यह भी जाना कि युवती अरसे से अनाथ है। जहां तक वह देख पाया, मौसी उसे नहीं चाहती

थी, नानी उसने लाड़-दुलार करती थी, उसे अपना खजाना कहती थी, लेकिन यह कहना कठिन था कि उसका लाड़-दुलार सच्चे दिल से है या नहीं। बेचारी युवती की इस दशा से स्तेव्स्की के मन में उसके प्रति सहानुभूति और भी बढ़ी, परन्तु खेदवश, वह उससे बातचीत जारी नहीं रख सका। मोटी मौसी ने कुछेक ओछे सवाल पूछकर अपनी नखरीली बेटी से उसका परिचय करा दिया और वह तुरंत ही उस पर हावी हो गयी।

"आप मेरी बहन के साथ बहुत हंसते रहे हैं," उसने स्तेव्स्की से कहा। "बहन का जब मूड अच्छा होता है तो खूब हंसती है। सबकी टांग खींची होगी उसने?"

"यहां उपस्थित लोगों की कोई खास बात ही नहीं की हमने," स्तेव्स्की ने जवाब दिया। "फ्रेंच थियेटर की ही चर्चा होती रही।"

"सच? पर यह तो आपको मानना ही होगा कि हमारा थियेटर तो निंदा करने लायक भी नहीं है। बहन की खातिर कभी वहां जाना पड़ता है तो बहुत ही बोरियत होती है, मां को तो फ्रेंच आती नहीं और उनको थियेटर के होने न होने से कोई फर्क भी नहीं पड़ता, नानी तो उसका नाम तक नहीं सुनना चाहती। आप नानी को जानते नहीं, वह तो असली ब्रिगेडियरनी है। पता है, उन्हें इस बात का अफ़सोस है कि अब बालों में पाउडर लगाने का फैशन नहीं रहा।"

नानी पर हंसकर और अपने कटाक्षों से स्तेव्स्की को चकाचौंध करने की इच्छा से सोफ़िया कार्पोव्ना (यही इन साहिबा का नाम था) दूसरों की भी खिल्ली उड़ाने लगी। काली-काली मूछोंवाले एक नाटे अफसर पर, जो फ्रेंच कैड्रिल नाचते हुए बहुत ऊंचा कूद रहा था, वह सबसे ज्यादा फब्तियां कस रही थी।

"जरा इन जनाब का हुलिया देखिये," वह कह रही थी। "इससे ज्यादा मजेदार हुलिया कोई हो सकता है और ऐसी काठी के लिए उससे सटीक नाम और क्या होगा, जिस पर इन जनाब को गर्व है ये हैं फूकिन! सारे मास्को में इससे ज्यादा चिपकू आदमी आपको नहीं मिलेगा, ऊपर से तुर्रा यह कि जनाब अपने को हसीन समझते हैं और इनका ख्याल है कि सभी इन पर फ़िदा हैं। देखिये, देखिये इसके कंधों के झुम्मे कैसे उछल रहे हैं! मुझे लगता है, यह फर्श को ही तोड़ डालेगा!"

सोफ़िया कार्पोव्ना ने हर किसी पर टोंट कसना जारी रखा, उधर फूकिन चेहरे पर क्रोध का भाव लिये वड़े ज़ोर-शोर से कूद रहा था। उसे देखकर रुनेव्स्की अपनी हंसी न रोक पाया। उसके हंसी से प्रेरित सोफ़िया कार्पोव्ना ने वेचारे फूकिन पर अपने वाग्वाणों की वौछार पहले से दुगनी कर दी। आखिर किसी तरह रुनेव्स्की ने उससे पिंड छुड़ा ही लिया। उसकी स्थूल काय मां के पास जाकर उसने घर आने-जाने की अनुमति मांगी और व्रिगेडियरनी से वातचीत छेड़ी।

"देखो, मेहरवान, ज़ोरिना से, फ़ेदोस्या अकीमोव्ना से मिलने ज़रूर जाया करना, पर मुझ पापिन को भी नहीं भुलाना," स्नेहपूर्ण स्वर में वुढ़िया ने उससे कहा। "अरे मेहरवान, सारा वक्त जवानों से हंसी-मज़ाक में ही गुज़ारोगे क्या? हमारे ज़माने में तो वात ही दूसरी थी: तव नौजवान ऐसी अकड़ नहीं दिखाते थे, वड़ों की इज़्ज़त करते थे; ये दुमवाले कोट नहीं पहनते थे, पर कपड़े उनके कम सजे-धजे नहीं होते थे। अव वताओ, मेहरवान, ये दुमवाले कोट पहने तुम क्या लग रहे हो? न परिंदा, न आदमी! अरे मेहरवान, तव तहज़ीव ही दूसरी थी, शऊर था लोगों में! और अफ़सर लोग पार्टियों में तुम्हारे इस फूकिन की तरह उछलते-कूदते नहीं थे, और लड़ने में भी तुम्हारे अफ़सरों से उन्नीस क्यों, इक्कीस थे। अरे मेहरवान, व्रिगेडियर इग्नाती सवेल्यीच साहव जव जव तुर्कों की लड़ाई* का किस्सा सुनाने लगते थे तो मेरे तो रोंगटे खड़े हो जाते थे। वह वताते कि वह काउंट प्योत्र अलेक्सान्द्रोविच** के साथ देन्यूव के इस किनारे पर खड़े थे और तुर्क उस किनारे पर। हमारे तो सिपाही थोड़े से ही थे, सो भी नये रंगरूट, उधर तुर्कों के झुंड के झुंड जमा थे। तो लो काउंट को महारानी*** का हुक्म मिला कि नदी पार करो और अधर्मियों को ज़मीन चटा दो! करते क्या, काउंट चाहता तो नहीं था, पर हुक्म माना, देन्यूव पार कर गया, उसके साथ मेरे इग्नाती सवेल्यीच भी। मेहरवान, हमारे ज़माने में लोग वहसें नहीं करते थे,

---

* आशय १७३० के अंत–१७७० के आरंभ के वर्षों में रूस और तुर्की लड़ाई से है।

** काउंट प्योत्र अलेक्सान्द्रोविच रुम्यान्त्सेव-ज़ादुनाइस्की (१७२५–१७९६) – रूसी जनरल फ़ील्ड मार्शल।

*** महारानी येकातेरीना द्वितीया – १७६२ से १७९६ तक रूस की सम्राज्ञी।

जहा जाने का हुक्म मिलता, वही जाते थे। तो बस उन अधर्मियो के उस किले को, मिलिस्त्रिया नाम है उसका, घेर लिया उन्होंने, मगर सिपाही तो कम थे, पीछे हटना पडा, पीछे से उन मुओ ने रास्ता रोक लिया। तीन तरफ से काउट को घेर लिया। बस वही उसका काम तमाम हो जाना था और उसके साथ मेरे इग्नाती सवेल्यीच का भी, अगर वह जर्मन वेइस्मान * न आ पहुचता। नदी का रास्ता रोके जो तुर्क खडे थे उन पर वह टूट पडा और बस धज्जिया उडा दी उनकी। कहने को भले ही जर्मन था, पर लडने मे हमारे जनरलो से कम नही था। इग्नाती सवेल्यीच ने भी यहा अपनी बहादुरी दिखायी, अधर्मियो की गोलिया उसकी टाग मे लगी, वेइस्मान तो बेचारा मारा ही गया। हा तो, मेहरबान? काउट नदी पार करके अपने तट पर आ गया और लगा फिर से लडाई की तैयारी करने! बोला, पीछे नही हटूगा, इन मुओ को मजा चखाके छोडूगा! देखा, मेहरबान, ऐसे लोग थे हमारे जमाने मे, बुरा मत मानना, दुमवाले कोट भले ही तुम लोग पहन लो, पर उनका मुकाबला नही कर सकते।"

बुढिया पुराने ज़माने की, अपने पति इग्नाती सवेल्यीच और रुम्यान्त्सेव की और बहुत सी बाते करती रही।

"कभी मेरे दाचा पर आओ न," आखिर मे उसने कहा, "मै तुम्हे काउट प्योत्र अलेक्सान्द्रोविच और प्रिंस ग्रिगोरी अलेक्सान्द्रोविच ** और अपने इग्नाती सवेल्यीच की भी तस्वीरे दिखाऊगी। अब पहले की तरह तो नही रहती, वह दिन अब कहा, पर मेहमानो की खातिरदारी हमेशा खुशी से करती हू। बडी खुशी होती है जब कोई मुझे याद करता है, मेरे भोज कुज मे चला आता है। सेम्योन सेम्योनोविच," तेल्यायेव की ओर इशारा करके उसने कहा, "मुझे नही भुलाते, कुछ दिनो मे आने का वायदा कर रहे है। मेरी दाशा भी कुछ दिन मेरे पास रहेगी। बडी अच्छी बच्ची है, अपनी नानी को अकेली थोडे ही छोडेगी, है न, दाशा?"

दाशा चुपके से मुस्करा दी, सेम्योन सेम्योनोविच ने सिर झुकाकर रुलेव्स्की का अभिवादन किया, जेब मे सोने की नासदानी निकालकर

---

* ओट्टो आडोल्फ वेइस्मान (मृत्यु – १७७३) – रूसी सेना के एक जनरल।

** प्रिंस ग्रिगोरी अलेक्सान्द्रोविच पोत्योम्किन (१७३९–१७९१) – रूसी राजनेता और जनरल फील्ड मार्शल। सम्राज्ञी येकातेरीना द्वितीया के चहेते।

उसे आस्तीन से पोंछा और दोनों हाथों में लेकर पेश किया, ऐसा करते हुए उसने एक कदम पीछे वढ़ाया, वजाय इसके कि आगे वढ़ता।

"आपकी सेवा करके खुश हूं, मार्फ़ा सेर्गेयेव्ना, आपकी सेवा करके," मिश्रीघुली आवाज़ में उसने कहा, "और अगर... यहां तक कि... ऐसा हो जाये... मतलव..." यहां सेम्योन सेम्योनोविच के मुंह से विल्कुल वैसी आवाज़ निकली जैसी अजनवी ने वतायी थी, और रुनेव्स्की अनचाहे ही ठिठक गया। उसे वह अजीव व्यक्ति याद हो आया, जिसके साथ इस शाम के शुरू में उसकी वातचीत हुई थी। यह देखकर कि वह पहले की ही भांति अंगीठी के आले के पास खड़ा है, उसने सुग्रोविना से पूछा कि क्या वह उसे जानती है। अजनवी पर एक नज़र डालकर वुढ़िया ने जवाव दिया :

"जानती हूं, मेहरवान, जानती हूं। यह जनाव रिवारेन्को हैं। उक्राइनी मूल का है, अच्छे घराने का, मगर तीन साल हुए वेचारे का सिर फिर गया। अरे मेहरवान, यह सव नयी तालीम की वजह से है। मां का दूध पीना छोड़े दो दिन नहीं होते और चल देते हैं परदेस को। दो-एक साल वहां भटकता रहा और उलटी मति लेकर लौटा है।" इतना कहकर उसने फिर से इग्नाती सवेल्यीच के अभियानों का किस्सा छेड़ दिया।

रुनेव्स्की की नज़रों में अव रिवारेन्को के व्यवहार की सारी विचित्रता स्पष्ट हो गयी। वह पागल था, व्रिगेडियरनी सुग्रोविना भली औरत है, और सेम्योन सेम्योनोविच तेल्यायेव तो वस सनकी है, वह शायद हकलाता है या उसके कुछ दांत गायव हैं, इसीलिए उसके मुंह से चटकारे की आवाज़ निकलती है।

वॉल डांस पार्टी के वाद कुछ दिन गुजरे और रुनेव्स्की का दाशा की मौसी के साथ अधिक घनिष्ठ परिचय हुआ। दाशा उसे जितनी अच्छी लगती थी, उतनी ही उसे ज़ोरिना से घिन होती थी। वह कोई पैंतालीस वरस की वेहद मोटी और देखने में वहुत ही अप्रिय औरत थी, लेकिन खूव वन-ठनकर और ऊंची सोसाइटी के तौर-तरीकों से रहने का दावा करती थी। अपनी सारी कोशिशों के वावजूद भानजी के प्रति अपना दुर्भाव वह प्रायः नहीं छिपा पाती थी। रुनेव्स्की को इसका कारण यह लगा कि उसकी अपनी वेटी सोफ़िया कार्पोव्ना न तो दाशा जैसी सुंदर थी, न उतनी जवान। लगता था सोफ़िया कार्पोव्ना

खुद यह महसूस करती थी और जैसे भी बन पड़ता है उससे बदला लेती थी। वह इतनी चालाक थी कि कभी भी सीधे-सीधे दाशा की बुराई नहीं करती थी, लेकिन बातों-बातों में उसके बारे में बुरी राय देने में कभी नहीं चूकती थी। वह हमेशा उसकी सच्ची सहेली होने का दिखावा करती थी और बड़े जोश से उसकी मनगढ़ंत कमियों को माफ करती थी।

रनेव्स्की पहले दिन से ही भांप गया कि वह उस पर डोरे डालना चाहती है। अपनी वितृष्णा को दबाकर उसने यह जाहिर न करना ही जरूरी समझा कि वह उसे कितनी घिनौनी लगती है। वह सदा बड़ी शिष्टता से उसके साथ पेश आता था।

जोरिना के घर आनेवाले लोगों को रनेव्स्की ने ऊंची सोसाइटी में, भद्र घरों में नहीं देखा था। उनमें ज्यादातर गृहस्वामिनी की ही तरह निंदा-चुगली में अपना समय व्यतीत करते थे। इन सब लोगों के बीच दाशा उस सुकोमल पंछी जैसी थी, जो उजले बगीचे से भटककर अंधेरे दड़बे में उड़ आया हो। इन लोगों की तुलना में अपनी श्रेष्ठता अनुभव किये बिना वह नहीं रह सकती थी। उसका जन्म जिस ज़िंदगी के लिए हुआ था उससे इनका सारा व्यवहार, सारी आदतें इतनी भिन्न थीं, लेकिन उसे कभी ख्याल तक न आया था कि वह इन लोगों से मुंह मोड़े, इन्हें हिकारत से देखे। रनेव्स्की को दाशा के धीरज पर आश्चर्य होता जब वह अपनी दयालुतावश बड़े-बूढ़ों के वे लंबे किस्से सुनती जिनमें उसकी जरा भी दिलचस्पी न होती। उसे इस बात पर आश्चर्य होता कि इन साहबजादों और साहबजादियों के साथ, जिनमें ज्यादातर को वह फूटी आंखों न सुहाती थी, सदा कितनी शिष्टता और विनम्रता से पेश आती थी। कई बार उसने यह भी देखा कि वह अपनी सारी शालीनता से, कभी-कभी तो एक नज़र से ही नौजवान छैलों को संयम की सीमा में रोक देती थी, जब वे उससे बातें करते हुए सब कुछ भूल जाने को आतुर होते थे। धीरे-धीरे दाशा रनेव्स्की की आदी हो गयी। उसके आने पर अब वह अपनी खुशी नहीं छिपाती थी। लगता था उसका मन उससे कह रहा था कि वह एक सच्चे मित्र की भांति उस पर भरोसा कर सकती है। उसका विश्वास दिन पर दिन बढ़ता जा रहा था। अब वह अपनी छोटी-छोटी दुख-सुख की बातें उसे बताने लगी थी और एक बार उसने यह भी स्वीकार कर लिया कि वह इस

घर में कितनी दुखी है।

"मुझे पता है मैं उन्हें अच्छी नहीं लगती, उनके लिए बोझा हूं," उसने कहा। "आप यकीन नहीं करेंगे कितनी दुखी हूं मैं इस बात से। दूसरों के साथ मैं हंसती-खेलती हूं, लेकिन अकेले में मैं अक्सर आंसू बहाती हूं।"

"पर आपकी नानी?" रुनेव्स्की ने पूछा।

"नानी की बात बिल्कुल अलग है! वह मुझे चाहती है, हमेशा लाड़-दुलार करती है और अकेले में भी वैसे ही पेश आती है जैसे सबके सामने। नानी और मां की बूढ़ी धाय के अलावा और कोई नहीं है जो मुझे प्यार करता हो। धाय का नाम क्लेओपात्रा प्लातोनोव्ना है। वह तो मुझे तबसे जानती है जब मैं छोटी-सी बच्ची थी, सिर्फ़ उसी से मैं मां की बातें कर सकती हूं। मैं बहुत खुश हूं कि नानी के दाचा में उससे मिलूंगी। आप भी वहां आयेंगे न?"

"जरूर आऊंगा अगर आपको बुरा न लगे तो।"

"उलटे, मुझे तो खुशी होगी। आपसे जान-पहचान हुए कुछ ही दिन हुए हैं तो भी पता नहीं क्यों मुझे लगता है कि आपको इतने अरसे से जानती हूं कि याद ही नहीं पड़ता कब पहली बार हम मिले थे। शायद इसकी वजह यह है कि आपको देखकर मुझे अपने मौसेरे भाई की याद आती है जो मुझे सगे भाई की तरह प्यारा है। आजकल वह काकेशिया में है।"

एक बार रुनेव्स्की ने पाया कि दाशा की आंखें रोने से लाल हैं। इस डर से कि उसे और अधिक दुख न पहुंचे उसने ऐसा दिखावा किया जैसे कुछ भी न देखा हो। उससे इधर-उधर की बातें करने लगा। दाशा जवाब देना चाहती थी, लेकिन उसकी आंखों से झरझर आंसू बह चले, एक शब्द भी उसके मुंह से न निकला, चेहरा रूमाल से ढांपकर वह कमरे से बाहर निकल गयी।

थोड़ी देर में सोफ़िया कार्पोव्ना कमरे में आयी और दाशा के इस विचित्र व्यवहार के लिए क्षमा मांगने लगी।

"मैं तो खुद अपनी बहन के लिए शर्मिंदा हूं," उसने कहा, "पर वह निरी बच्ची है, ज़रा-सी बात पर रोने लगती है। आज थियेटर जाने का उसका बहुत मन था, लेकिन बाक्स के टिकट बहुत कोशिश करने पर भी नहीं मिले। इतनी सी बात पर वह इतनी दुखी

हो उठी है कि अब जल्दी ही उसे ढाढ़स नहीं आयेगा। वैसे अगर आपको उसके सभी अच्छे गुण पता हो तो आप उसकी ऐसी कमज़ोरियां खुशी-खुशी माफ कर देंगे। मैं सोचती हूं कि उससे भला कोई जीव नहीं है। जिसे वह चाहती है वह कोई अपराध ही क्यों न कर बैठे, वह उसकी सफाई में कुछ न कुछ बात ढूंढ लेगी और सबको यकीन दिला देगी कि उसने जो किया ठीक किया। लेकिन अगर किसी को वह बुरा समझती है तो उसे चैन से नहीं छोड़ेगी, सबको बता कर रहेगी कि वह उसके बारे में क्या सोचती है।"

इस प्रकार सोफिया कार्पोव्ना ने बेचारी दासा की तारीफ करते हुए रनेव्स्की को जता दिया कि उसका दिल छोटा है, कि वह किसी से तरफदारी करती है तो किसी से अन्याय। लेकिन उसकी बातों का रनेव्स्की पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह उनमें केवल ईर्ष्या देख रहा था और शीघ्र ही उसने पाया कि उसका अनुमान सही है।

"आपको शायद यह बात अजीब लगी होगी कि आप जब मुझसे बातें कर रहे थे तो मैं यों अचानक उठकर चली गयी," अगले दिन दासा ने उससे कहा। "सच मानिये, मैं और कुछ नहीं कर सकती थी। कल मुझे अचानक मां की चिट्ठी मिल गयी। *नौ साल हो गये* मां को गुज़रे, मैं छोटी सी थी जब मुझे उनकी यह चिट्ठी मिली थी। उसे पढ़कर मेरे बचपन की यादें एकदम जी उठीं, और आपके सामने जब मैंने उस चिट्ठी की बात सोची तो अपने आंसू न रोक पायी। ओह, कितनी सुखी थी तब मैं! यह चिट्ठी पाकर कितनी खुश हुई थी! हम तब गांव में थे, मां ने मास्को से चिट्ठी लिखी थी, वायदा किया था कि जल्दी ही आयेंगी। सचमुच ही वह अगले दिन आ गयीं, मैं तब बाग में थी। मुझे याद है कैसे मैं धाय के हाथों से अपने को छुड़ाकर दौड़ी-दौड़ी मां के गले से लिपट गयी थी।"

दासा थोड़ी देर तक अपने विचारों में खोयी चुप बैठी रही।

"*फिर कुछ ही दिनों में,*" *उसने आगे कहा,* "मां अचानक, बिना किसी वजह के बीमार पड़ गयीं, दिन पर दिन सूखने लगीं और हफ्ते भर बाद मर गयीं। नानी आखिरी दम तक उनके पास से नहीं हटीं। सारी-सारी रात उनके पलंग के पास बैठी वह उनकी टहल करती थीं। मुझे याद है कैसे आखिरी दिन उनके कपड़ों पर मां का खून लगा हुआ था। मैं तो यह देखकर भयभीत हो उठी थी, लेकिन मुझे बताया

गया कि मां तपेदिक से, खून की उलटी आने से मरी है। फिर कुछ दिनों बाद मैं मौसी के यहां आ गयी और तब सब कुछ बदल गया।"

रुनेव्स्की बड़ी सहानुभूति से दाशा की बातें सुन रहा था। वह अपनी भावनाएं दबाये रखना चाहता था, लेकिन उसकी आंखें गीली हो गयीं। अब वह अपने मनोवेग को और नहीं रोक सकता था – दाशा का हाथ पकड़कर उसने ज़ोर से दबाया।

"मुझे अपना मित्र मानें," उद्विग्न स्वर में वह बोला, "मुझ पर भरोसा रखें! जिसे आप गंवा बैठी हैं उसका स्थान तो मैं नहीं ले सकता, लेकिन, ईमान कसम, जब तक मेरे प्राण में प्राण हैं, मैं आपकी तन-मन से रक्षा करूंगा!"

दाशा का हाथ उसने अपने गर्म होंठों से सटाया, उसके कंधे पर सिर रखकर वह निस्स्वर रोने लगी। बगल के कमरे में किसी के कदमों की आहट हुई। दाशा ने हौले से रुनेव्स्की को परे हटा दिया और धीमे किंतु दृढ़ स्वर में कहा:

"मुझे जाने दीजिये। शायद मैंने यह ठीक नहीं किया कि अपनी भावनाओं में बह गयी, लेकिन मैं यह कल्पना नहीं कर सकती कि आप बेगाने हैं; मेरे दिल की आवाज़ कहती है कि मैं आप पर भरोसा रख सकती हूं।"

"दाशा, प्यारी दाशा!" रुनेव्स्की व्याकुल हो उठा। "बस एक शब्द और! कह दीजिये कि आप मुझसे प्रेम करती हैं और मैं इस नश्वर संसार का सबसे सुखी प्राणी होऊंगा!"

"क्या आपको इसमें संदेह है?" शांत स्वर में उसने कहा और कमरे से निकल गयी। वह इस उत्तर पर स्तब्ध था और असमंजस में भी: क्या दाशा ने उसके शब्दों का सही अर्थ समझा है?

मास्को से तीस वेर्स्ता दूर भोज कुंज गांव है। दूर से ही पुराने ढंग का लिंडन वृक्षों से घिरा पक्का मकान दिखाई देता है। ये वृक्ष ढलवां टीले पर बने फ़्रांसीसी शैली के उद्यान का मुख्य आकर्षण हैं।

यह मकान देखकर कोई भी आदमी, जिसे इसका इतिहास न मालूम हो यह नहीं सोच सकता कि यह उसी ब्रिगेडियरनी का है, जो इग्नाती सवेल्यीच के फ़ौजी अभियानों के किस्से सुनाती है और मीठी खुशबूवाली रूसी नसवार सूंघती है। यह भवन हल्का-फुल्का और भव्य है। पहली

नजर मे ही पता चल जाता है कि किसी इतालवी वास्तुकार ने उसे बनाया है, क्योकि लोम्बार्दी मे या रोम के आस-पास बनी अनुपम हवेलियो से वह बहुत मिलता-जुलता है। खेदवश रूस में बहुत थोडे ऐसे मकान है, लेकिन वे सब बहुत सुदर है, पिछली सदी की सुरुचि के प्रमाण है। सुग्रोबिना का मकान निस्सदेह उनमे सर्वश्रेष्ठ है।

जुलाई की एक शाम को मकान की खिडकिया सदा से अधिक उजली लग रही थी, और तीसरी मजिल मे भी एक कमरे से दूसरे मे जाती रोशनिया दिख रही थी, जो कि विरले ही होता था।

ऐन इसी समय सडक पर एक बग्घी नजर आयी, मकान को जा रहे लबे रास्ते पर मुडी और मुख्य द्वार के पास आकर रुक गयी। फटे कपडे पहने एक नौकर दौडा-दौडा आया और उसने बग्घी से उतरने मे रुनेव्स्की की मदद की।

रुनेव्स्की जब कमरे मे पहुचा तो उसने देखा कि कमरे मे बहुत से मेहमान है, कुछ ताश खेल रहे थे तो कुछ बातो मे मगन थे। ताश खेलनेवालो मे मकान मालकिन थी, उसके सामने सेम्योन सेम्योनोविच तेल्यायेव बैठा था। कमरे के एक कोने मे मेज पर बहुत बडा समोवार रखा हुआ था और उसके पास एक प्रौढा बैठी थी। यह वही क्लेओपात्रा प्लातोनोव्ना थी जिसके बारे मे दाशा ने रुनेव्स्की को बताया था। उसकी उम्र ब्रिगेडियरनी जितनी ही लगती थी, लेकिन उसके बदरग चेहरे पर गहरी उदासी की छाप थी, मानो उसकी छाती पर किसी भयानक रहस्य का बोझ हो।

रुनेव्स्की जब अदर आया तो ब्रिगेडियरनी ने स्नेहपूर्वक उसका अभिवादन किया

"आओ, आओ, मेहरबान! भला हो तुम्हारा, मुझ बुढिया को भूले नही। मैं तो सोचने लगी थी कि तुम आओगे ही नही। आओ, बैठो हमारे पास, चाय पिओ, और सुनाओ, शहर की क्या नयी खबर है?"

सेम्योन सेम्योनोविच ने इतने विचित्र ढग से झुककर रुनेव्स्की का अभिवादन किया कि उसका शब्दो मे वर्णन करना कठिन है, और जेब से अपनी नामदानी निकालकर मिश्रीघुली आवाज़ मे कहा

"एक चुटकी लीजियेगा? असली रूसी नसवार है, मीठी खुशबूवाली। मै फ्रासीसी इस्तेमाल नही करता। रूसी उससे कही ज्यादा

अच्छा है और फिर... जहां तक जुकाम का सवाल है..."

जीभ के ज़ोरदार चटाके के साथ उसका यह वाक्य पूरा हुआ और फिर चटाके की आवाज़ चूसने की अस्पष्ट-सी आवाज़ में वदल गयी।

"वहुत-वहुत शुक्रिया। मैं नसवार नहीं सूंघता," रुनेव्स्की ने जवाव दिया।

व्रिगेडियरनी ने तेल्यायेव पर गुस्से भरी नज़र डाली और अपने वगल में वैठी महिला से दवी आवाज़ में कहा:

"सेम्योन सेम्योनोविच की भी क्या अजीव आदत है, जव देखो जीभ से चटाके मारता रहता है। उसकी जगह मैं होती तो नकली दांत लगवा लेती और सवकी तरह वोलती।"

रुनेव्स्की अन्यमनस्क-सा व्रिगेडियरनी और सेम्योन सेम्योनोविच की वातें सुन रहा था। उसकी नज़रें दाशा को ढूंढ रही थीं। उसने देखा कि वह चाय की मेज पर दूसरी लड़कियों के साथ वैठी हुई है। दाशा ने अपने सहज सौहार्द से उसका अभिवादन किया, लेकिन साथ ही इतनी शांतचित्त थी कि इससे उदासीनता का भ्रम होता था। रुनेव्स्की के लिए अपनी सकपकाहट को छिपा पाना कठिन हो रहा था, और उसकी वातों का जवाव जिस अटपटे ढंग से वह दे रहा था उससे यह लग सकता था कि वह संकोच में है। परंतु शीघ्र ही उसने अपने पर कावू पा लिया। कुछ महिलाओं से उसका परिचय कराया गया और वह उनसे यों वातें करने लगा जैसे कुछ हुआ ही न हो।

व्रिगेडियरनी के घर में उसे सव कुछ असाधारण लग रहा था। ऊंचे-ऊंचे कमरों की वैभवी सज्जा और उसमें जलती मोमवत्तियां; इतालवी चित्रकारों के चित्र और उन पर गरदा-जाला; फ़्लोरेंस की पच्चीकारीवाली मेज़ें और उन पर अखरोट के छिलके, मैले-कुचैले ताश के पत्ते और अधूरी वुनाई और साथ ही अतिथियों के सत्कार के साधारण लोगोंवाले तौर-तरीक़े, गृहस्वामिनी की पुराने जमाने की वातें और सेम्योन सेम्योनोविच की जीभ के चटाके – यह सव एक अजीवोगरीव मिश्रण प्रस्तुत करता था।

जव समोवार उठा लिया गया तो लड़कियों ने कोई खेल खेलना चाहा और रुनेव्स्की से कहा कि वह भी उनके साथ आकर वैठे।

"चलो, किस्मत वूझने का खेल खेलें," दाशा ने कहा। "यह देखो, कोई किताव रखी है; हम में से हर कोई इसका कोई सा पन्ना खोलेगा,

दूसरी लडकी बतायेगी दाये या बाये पन्ने पर कौन सी पंक्ति पढनी है। उस पंक्ति मे जो लिखा होगा वह हमारे लिए भविष्यवाणी होगा। चलिये, मै शुरू करती हू। रुनेव्स्की जी, आप पंक्ति बताइये।"

"बाये पन्ने पर नीचे से सातवी पंक्ति।"

दाशा ने पढा

"चूसेगी खून नातिन का नानी।"

"हे, भगवान!" हसते हुए लडकिया चीखी। "क्या मतलब है इसका? शुरू से पढिये, ताकि कुछ समझ मे आये!"

दाशा ने किताब रुनेव्स्की को दे दी। यह कोई हस्तलिखित ग्रथ था, उसने पढना शुरू किया

झपटा उल्लू ने काली रात मे,
चमगादड को जो अपने पजो मे,
निकला अमब्रोमी गिरोह लिये
पडोसी अपने का महल लूटने।
चढी है जजीरे फाटक पर, लगे ताले ढेरो,
नही डर उन्हे, आयेगी मालकिन करने अगवानी देखो!

'बोल, मार्फा, सोता है कहा बूढा तेरा?
अरी, फक हुआ क्यो चेहरा तेरा?
बहती जाती उफनती नदी महल तले,
छिपी रहेगी करतूत काली, अधेरे की चादर तले।
अरी, डर मत, जिलेगा नही मुर्दा बूढा तेरा,
होगा, सो होगा, ले चल अब हमे तू आगे!"

बहती जाती उफनती नदी महल तले,
उमडती-घुमडती है घटाए काली,
लो हो गया काड पूरा!
गिरोह सग उडाता दावत अमब्रोमी
जल खूनी चमक उठा चादनी मे,
मस्त है कुलटा अमब्रोमी की बाहो मे!

बहती जाती उफनती नदी महल तले
उठती है लपटे काले आसमान मे।
दिया हुक्म अमब्रोमी ने लुटेरो को

"चीर डालो, छोटे-बड़े सब को!
चुप हो, मार्फ़ा, अब तू मत रो,
खोला था फाटक तूने ही मेहमानों को!"

बहती है नदी, उफनती-चमकती,
धू-धू जलता है महल सारा।
बोला अमब्रोसी अपने जवानों से:
"चलो, मेरे बांको, अब घर चलें!
चुप हो, मार्फ़ा, अब तू मत रो,
खोला था फाटक तूने ही मेहमानों को!"

गूंजता है शाप पति का मार्फ़ा के कानों में
तोड़ते हुए दम कहा था उसने.
"नाम हो तेरा, कुल सारे तेरे का,
सौ-सौ बार लगे तुझे शाप मेरा!
जागेगा न कभी प्यार तेरे सारे कुल में,
चूसेगी खून नातिन का नानी!

छाया रहेगा शाप मेरा कुल पर तेरे,
नहीं मिलेगा उसे चैन तब तक,
ब्याही नहीं जाती तस्वीर जब तक,
ताबूत से न उठेगी दुलहन जब तक,
और कुलटा के प्यार की आख़िरी निशानी,
फोड़ के खोपड़ी, पड़ी होगी खून में सनी!"

झपटा उल्लू ने काली रात में,
नमगादड़ को जो अपने पंजों में,
निकला अमब्रोसी गिरोह लिये,
पड़ोसी अपने का महल लूटने।
चुप हो, मार्फ़ा, अब तू मत रो,
खोला था फाटक तूने ही मेहमानों को!

स्नेल्की चुप हो गया। एक बार फिर उसे उस आदमी के शब्द याद आये, जो कुछ दिन पहले बॉल डांस पार्टी में मिला था और जिसे समाज पागल कहता था। जब वह पढ़ रहा था तो सुग्रोविना ताश की मेज पर बैठी ध्यान से सुन रही थी, उसने पढ़ना बंद किया तो वह बोली:

"अरे मेहरबान, यह क्या पढ रहे हो? हमें डराने की सोची है क्या, मेहरबान?"

"नानी, मुझे भी नही पता क्या किताब है यह," दाशा ने जवाब दिया। "आज मेरे कमरे मे बडी अलमारी दूसरी जगह रख रहे थे तो यह ऊपर से गिर पडी।"

सेम्योन सेम्योनोविच ने ब्रिगेडियरनी को आख मारी और कुर्सी पर घूमकर कहा

"यह तो शायद कोई अन्योक्ति है, ऐसी कोई रूपक-कथा या . कहिए कोई कपोल-कल्पना है "

"हा, हा कपोल-कल्पना!" बुढिया बडबडायी। "अरे, हमारे ज़माने मे ऐसी किताबे कोई नही लिखता था, और लिखता तो कोई पढता भी न! देखो तो क्या सूझी है! चमगादडो पर कविता लिख रहे हैं। मुझे तो उनसे बडा डर लगता है, बाबा, और उल्लुओ से भी। अरे, अब क्या बताऊ, मेरा इग्नाती सवेल्यीच कोई कायर आदमी नही था, तुर्को से लडने गया था, पर चूहो और छछूदरो से बुरी तरह डरता था, स्वभाव ही ऐसा था। यह सब तब से हुआ जब मोलदाविया मे छछूदरो ने उनका जीना हराम कर दिया था। अरे मेहरबान, सारी रसद खा गये, सारा गोला-बारूद तक खराब कर दिया। इग्नाती सवेल्यीच बताया करता था कि अपने तबुओ मे वो सोते, तो चूहे-छछूदर आकर चुटिया ही खीचने लगते थे। हा, तब मरद चुटिया बाधते थे, आजकल की तरह थोडे ही – बाल बिखराये फिरते हैं।"

दाशा भविष्यवाणी को मजाक मे ले रही थी। रुनेव्स्की दिमाग मे उठ रहे विचित्र विचारो से छुटकारा पाने की कोशिश कर रहा था, आखिर उसने अपने आप को यकीन दिला दिया कि यहा पढी कविता और रिबारेन्को के शब्दो मे समानता मात्र एक सयोग है। उन्होने किस्मत बूझना जारी रखा, उधर बुजुर्गों का ताश का खेल पूरा हो गया और वे मेज़ से उठ खडे हुए।

रुनेव्स्की इस बात पर अत्यत दुखी था कि सारी शाम उसे दाशा से अकेले मे बात करने का मौका नही मिला। वह अनिश्चितता से व्यथित था। वह जानता था कि दाशा उसे अपना मित्र समझती है, लेकिन प्रेम करती है या नही – यह पक्की तौर पर नही जानता था और पहले उससे पूछे बिना उसका रिश्ता नही मागना चाहता था।

इस शाम के दौरान कई बार ऐसा हुआ कि अर्थपूर्ण दृष्टि से रुनेव्स्की को देखते हुए तेल्यायेव अपनी जीभ से चटाके मारने लगा।

लगभग ग्यारह बजे अतिथि सोने के लिए जाने लगे। रुनेव्स्की ने गृहस्वामिनी से शुभ रात्रि कही और क्लेओपात्रा प्लातोनोव्ना ने एक नौकर को बुलाया, जिसकी बैंगनी नाक उसकी नशे की आदत की कहानी कहती थी, और उससे कहा कि वह मेहमान को उसके लिए तैयार किये गये कमरों में ले जाये।

"हरे कमरों में?" सुरादेव बाकस के भक्त ने पूछा।

"हां-हां, हरे कमरों में," क्लेओपात्रा प्लातोनोव्ना ने जवाब दिया। "तू भूल गया कि और कोई जगह नहीं है?"

"हां, और कोई जगह नहीं है," नौकर बड़बड़ाया, "लेकिन जब से प्रास्कोव्या आन्द्रेयेव्ना मरी हैं, तब से वहां कोई नहीं रहा।"

इस बातचीत से रुनेव्स्की को भूत-प्रेतोंवाले पुराने महलों के कुछ किस्से याद हो आये। इन किस्सों में आम तौर पर यह होता है: पथिक को रास्ते में रात हो जाती है, वह एकमात्र सराय में रहने की जगह मांगता है, लेकिन सराय का मालिक कहता है कि सराय में कोई कमरा खाली नहीं है, लेकिन घने जंगल के पीछे जिस महल की बुर्जियां दिख रही हैं वहां वह शरण पा सकता है, बशर्ते वह डरपोक नहीं है। पथिक राज़ी हो जाता है और सारी रात भूत-प्रेत उसे सोने नहीं देते।

सुग्रोबिना के घर में घुसते ही रुनेव्स्की को एक विचित्र सी अनुभूति होने लगी थी, जैसे उसके साथ यहां कोई अनहोनी होने जा रही है। उसने अपने मन को समझाया था कि यह शायद रिबारेन्को की बातों का असर है और फिर आज उसकी मनोदशा कुछ अजीब है।

"मुझे क्या फ़र्क पड़ता है," नौकर ने आगे कहा, "हरे कमरे तो हरे सही।"

"अच्छा-अच्छा, बत्ती उठा और ज़्यादा होशियार मत बन।"

नौकर ने बत्ती उठायी और रुनेव्स्की को दूसरी मंज़िल पर ले चला। कुछ सीढ़ियां चढ़कर उसने पीछे झांका और यह देखकर कि क्लेओ-पात्रा प्लातोनोव्ना चली गयी है, अपने आप से बातें करने लगा।

"होशियार मत बन! मैं क्या होशियार बन रहा हूं? मुझे उनके कमरों से क्या लेना-देना है? मेरे लिए क्या ड्योढ़ी कम है? हुंह, होशियार मत बन! अगर मैं मालकिन की जगह होता तो कमरे बंद

ही न करता, पादरी को बुलवाकर उनमे पवित्र जल छिड़कवा देता और फिर मेहमानों को वहा ठहराता, खुद भी रहता। ताला लगे कमरे किस काम के हैं? क्या करना है उनमे?"

"कैसे कमरे है ये?" रुनेव्स्की ने पूछा।

"कैसे कमरे? हजूर, अभी सब बताये देता हू। प्रास्कोव्या आन्द्रेयेव्ना—उनकी आत्मा को शाति मिले," सीढ़ी के बीचोबीच रुककर और आखो को ऊपर उठाकर वह कहने लगा।

"अच्छा, बाद मे बताना, बाद मे," रुनेव्स्की ने कहा, "पहले मुझे वहा ले चलो।"

वह एक खुले कमरे मे घुसा, जहा अगीठी का ऊचा आला था। आग जलायी जा चुकी थी। लगता था ऐसा ठड मे बचने के लिए इतना नही किया गया, जितना बद हवा को साफ करने और प्राचीन कक्ष को ऐसा रूप देने के लिए कि लोग वहा रहते हैं। एक छोटे से बद दरवाजे के पास सोफे के ऊपर टगी तस्वीर देखकर रुनेव्स्की दग रह गया। यह सत्रह-एक बरस की युवती की तस्वीर थी, वह लेस लगी आधी बाहोवाली क्रिनोलीन की ड्रेस पहने थी, बालो मे पाउडर लगा हुआ था और वक्ष पर गुलाब का गुलदस्ता। यदि यह प्राचीन परिधान न होता तो वह यही समझता कि यह दाशा की तस्वीर है नयन-नक्श, नजर, चेहरे का भाव—सभी कुछ दाशा का था।

"किसकी तस्वीर है यह?" उसने नौकर से पूछा।

"अजी, यही तो हैं वह प्रास्कोव्या आन्द्रेयेव्ना। मालिक कहते हैं कि दार्या वसील्येव्ना से मिलती है इनकी शक्ल, लेकिन सच बात पूछिये तो मुझे तो कही मिलती-जुलती नही लगती इनके बाल पाउडर लगे हैं और दार्या वसील्येव्ना के तो कत्थई रग के हैं। और फिर वह ऐसे कपडे भी नही पहनती, यह तो पुराना फैशन है!"

रुनेव्स्की ने अपने गाइड के तर्को को काटने की कोई आवश्यकता नही समझी, लेकिन वह यह जानने को उत्सुक था कि प्रास्कोव्या आन्द्रेयेव्ना कौन थी, सो नौकर से उसने यही पूछा।

"प्रास्कोव्या आन्द्रेयेव्ना हमारी ब्रिगेडियरनी मालकिन की फूफी थी," उसने जवाब दिया। "उनकी तो जी सगनी भी हुई थी उससे क्या नाम था उसका अच्छा, जाये भाड मे! कही परदेस से आया था, परले दरजे का कजूस था! मुझे तो उसकी याद

नहीं, उसके किस्से ही सुने हैं, भगवान भला करे उसका! देखिये न हजूर, उसी ने यह मकान बनवाया था, हमारे मालिकों ने बाद में खरीद लिया था। तो बस उसके और प्रास्कोव्या आन्द्रेयेव्ना के लिए ही ये कमरे सजाये गये थे, जिन्हें हम हरे कमरे कहते हैं। सब कमरों से अच्छी तरह इन्हें सजाया, फ़र्श पर कालीन बिछाये, दीवारों पर तस्वीरें और आईने टांगे। सारी तैयारी कर ली थी कि शादी से एक दिन पहले दूल्हा कहीं गायब हुआ। प्रास्कोव्या आन्द्रेयेव्ना बेचारी बहुत ही दुखी हुई, बहुत ही दुखी हुई और आखिर चल बसीं। उनकी मां, मतलब हमारी ब्रिगेडियरनी मालकिन की दादी ने वारिसों से मकान खरीद लिया, और बेटी के लिए तैयार कमरों को हूबहू वैसे ही रहने दिया। दूसरे कमरों को तो कई बार बदला है, लेकिन इनको छूने की हिम्मत किसी ने नहीं की। हमारी ब्रिगेडियरनी मालकिन भी इन्हें बंद रखे हुए थीं, पर क्या करें, मेहमान बहुत आ गये हैं, सो हजूर के लिए और कोई कमरा नहीं बचा।"

"लेकिन तुम यह क्यों कह रहे थे कि मालकिन की जगह होते तो पादरी को बुलवाकर इन कमरों में पवित्र जल छिड़कवा देते?"

"हां, हजूर, अच्छा ही रहता ऐसा करवा देना। देखिये न, जहां साठ साल से किसी ईसा के भक्त का पैर न पड़ा हो, वहां कोई दूसरे मालिक आ बसें तो कोई बड़ी बात है क्या?"

रुनेव्स्की ने बैंगनी नाकवाले नौकर से चले जाने को कहा, लेकिन लगता था कि वह जाना नहीं चाहता, थोड़ी देर और बातें करना चाहता है।

"इधर और भी कई कमरे हैं," सोफ़े के पास बंद दरवाज़े की ओर इशारा करते हुए उसने कहा, "कोई भी इनमें नहीं रहता। अगर इन्हें आजकल के फ़ैशन से सजा दें और पुराना फ़र्नीचर हटा दें तो उन कमरों से भी ज़्यादा अच्छे होंगे जिनमें मालकिन रहती हैं। लेकिन, क्या करें हजूर, मालिक लोगों को खुद इसका ख्याल नहीं आता, और हमसे कोई सलाह मांगता नहीं।"

उससे पिंड छुड़ाने के लिए रुनेव्स्की ने एक रूबल का नोट उसके हाथ में थमाया और कहा कि उसे नींद आ रही है और वह अकेला रहना चाहता है।

"बहुत-बहुत शुक्रगुज़ार हैं हजूर के," नौकर ने जवाब दिया,

"हजूर को नीद अच्छी आये। किसी चीज की जरूरत पडे, मालिक, तो बस घटी बजा दीजियेगा, तुरत हाजिर हो जाऊगा। आपका खिदमतगार तो, हजूर, यहा का आदमी नही है, घर के रास्ते जानता नही है, हम तो, मालिक, अधेरे मे भी ठोकर नही खाते।"

वह चला गया। रुनेव्स्की को सुनाई दे रहा था कि कैसे उसके खिदमतगार के साथ जाते हुए वह उसे समझा रहा था कि ब्रिगेडियरनी अगर हरे कमरे बद न रखे तो कितना अच्छा हो।

अकेला रह जाने पर रुनेव्स्की ने देखा कि एक दीवार मे बहुत बडा आला है और उसमे रेशमी पर्दो और ऊचे चदोवेवाला सजा-धजा पलग बिछा हुआ है, लेकिन शायद जिसके लिए यह पलग तैयार किया गया था उसकी याद की इज्जत करते हुए, या फिर इसलिए कि इसे बेचैनी भरा समझा जाता था, रुनेव्स्की का बिस्तर छोटे-से बद दरवाजे के पास सोफे पर लगाया गया था।

बिस्तर पर लेटते हुए रुनेव्स्की ने फिर से एक नजर उस तस्वीर पर डाली जो उसे अपने मन मे बसी छवि की इतनी स्पष्ट याद दिलाती थी।

"रहस्य जगत के नियमो के अनुसार जरूर यही होना चाहिए कि यह तस्वीर रात को जी उठेगी और किसी तहखाने मे बिना क्रिया-कर्म के दफनायी अपनी हड्डिया दिखाने ले जायेगी!" उसने सोचा, परतु दाशा के साथ चित्र की समानता ने उसके विचारो को दूसरी दिशा प्रदान की। बत्ती बुझाकर उसने सोने की कोशिश की लेकिन नीद आ ही नही रही थी। दाशा की चिता उसे चैन नही लेने दे रही थी, बडी देर तक वह करवटे पलटता रहा आखिर अर्धनिद्रा की दशा मे डूब गया, जहा मानो धुध मे बूढी ब्रिगेडियरनी, रिबारेन्को, अमब्रोसी और सेम्योन सेम्योनोविच तेल्यायेव उसकी नजरो के सामने तिर रहे थे।

हताशा भरे दिल की तह से उठी ठडी आह सुनकर अचानक उसकी नीद खुली। उसने आखे खोली और अगीठी मे अभी तक जल रही आग की रोशनी मे देखा कि उसके पास दाशा खडी है। उसे देखकर वह चकित रह गया, लेकिन उसके वस्त्रो पर उसे और भी अधिक आश्चर्य हुआ। वह बिल्कुल वैसे ही वस्त्र पहने थी, जैसे प्रास्कोव्या आन्द्रेयेव्ना की तस्वीर पर अकित थे, गुलाब का गुलदस्ता उसके वक्ष

पर टंका हुआ था और हाथ में वह पुराने ढंग का पंखा लिये हुए थी।
"आप ?" रुनेव्स्की चिल्लाया, "इस समय, इस रूप में!"
"मित्र, अगर आपकी नींद में खलल पड़ रहा है तो मैं चली जाती हूं," उसने जवाव दिया।
"नहीं नहीं, जाइये मत!" वह बोला। "यह बताइये कि आप यहां किसलिए आई हैं और मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?"
उसने फिर से आह भरी और यह आह इतनी विचित्र और भावमय थी कि वह उसके दिल को चीर गयी।
"आह, इतना कम समय है आपसे बात करने का; जल्दी ही मुझे वहां लौटना है, जहां से मैं आयी हूं, और वहां इतनी तपिश है!"

वह सोफ़े के पास रखी आरामकुर्सी पर बैठ गयी और पंखा झलने लगी।

"कहां तपिश है? आप कहां से आयी हैं?" रुनेव्स्की ने पूछा।
"कुछ मत पूछिये," उसके प्रश्न पर ठिठककर वह बोली, "इसकी बात मत करिये! मुझे इतनी खुशी है कि आप को यहां देख रही हूं," उसने मुस्कराकर कहा। "आप यहां काफ़ी दिनों तक रहेंगे?"
"जितने ज़्यादा दिन हो सकेगा!"
"हमेशा यहीं सोयेंगे?"
"ख्याल तो यही है। लेकिन आप यह पूछ क्यों रही हैं?"
"ताकि मैं आपसे अकेले में बातें कर सकूं। मैं रोज़ रात को यहां आती हूं लेकिन पहली बार आपको यहां देख रही हूं।"
"आज ही तो मैं यहां आया हूं!"
"रुनेव्स्की," थोड़ी देर चुप रहकर उसने कहा, "मुझ पर एक अहसान करिये। उधर कोने में सोफ़े के पास ताक पर एक डिब्बी रखी है; उसमें आप सोने की अंगूठी पायेंगे; उसे लेकर कल मेरी तस्वीर के साथ मंगनी कर लेना।"
"हे भगवान!" रुनेव्स्की चिल्लाया, "आप मुझसे क्या चाहती हैं!"

तीसरी बार उसने पहले से भी अधिक दर्दनाक आह भरी।
"भगवान के वास्ते मेरा मज़ाक मत उड़ाइये!" अपने रोम-रोम में होती सिहरन को रोकने में असमर्थ वह चिल्लाया। "यह बताइये

कि आप यहा क्यो आई है? ऐसे वस्त्र आपने क्यो पहने है? भगवान के वास्ते, अपना भेद मुझे बता दीजिये!"

रुनेव्स्की ने उसका हाथ पकडा, लेकिन उसके हाथ मे ठडी, हड्डियल उगलिया ही आयी और उसे लगा कि वह ककाल का हाथ पकडे है।

"दाशा, दाशा!" बदहवास सा वह चिल्लाया, "क्या मतलब है इसका?"

"मै दाशा नही हू," प्रेत ने उपहासमय स्वर में कहा, "आप मुझे दाशा क्यो समझ रहे है?"

रुनेव्स्की बेहोश हो चला था, लेकिन ऐन तभी दरवाजे पर जोरो से दस्तक हुई और वही नौकर बत्ती हाथ मे लिये अदर दाखिल हुआ।

"क्या हुक्म, हुजूर?" उसने पूछा।

"मैने तो तुम्हे नही बुलाया था।"

"हुजूर, आपने घटी बजायी थी। वह देखिये डोरी अभी तक झूल रही है!"

रुनेव्स्की ने वाकई घटी की डोरी देखी, जिसकी ओर पहले उसका ध्यान नही गया था, और तब वह अपने भय का कारण समझ गया। जिसे उसने दाशा समझा था, वह प्रास्कोव्या आन्द्रेयेव्ना की तस्वीर थी, और जब वह उसका हाथ पकडना चाहता था तो उसने डोरी का सख्त फुदना पकड लिया था और उसे लगा था कि वह ककाल की हड्डियल उगलिया पकडे हुए है।

परतु वह उससे बाते करता रहा था और वह जवाब देती रही थी। उसे मन ही मन यह स्वीकार करना पडा कि उसकी व्याख्या बहुत स्वाभाविक नही है, सो वह इस निष्कर्ष पर पहुचा कि उसने जो कुछ देखा है, वह उन सपनो मे से एक है, जिनके लिए रूसी भाषा मे कोई उपयुक्त शब्द नही है और जिन्हे फ्रेंच लोग "कॉशमार" कहते हैं। ये सपने प्राय जागने के बाद भी जारी रहते है और इनके साथ हमेशा तो नही, परतु बहुधा छाती में घुटन होती है। इनका विशिष्ट लक्षण यह है कि आदमी सपने मे जो देखता है वह हूबहू यथार्थ जैसा होता है।

नौकर को भेजकर रुनेव्स्की सोने ही लगा था कि वह फिर से दरवाजे पर प्रकट हुआ। उसकी बैगनी नाक सफेद पडी हुई थी, उसका अग-अग काप रहा था।

"क्या हुआ?" रुनेव्स्की ने पूछा।

"हजूर, आप जो चाहें, लेकिन मैं इस मंज़िल पर रात नहीं काटूंगा और अपने कमरे में दुवारा नहीं जाऊंगा!" उसने जवाव दिया।

"वोलो तो क्या है तुम्हारे कमरे में?"

"मेरे कमरे में क्या है? मालिक, वहां प्रास्कोव्या आन्द्रेयेव्ना की तस्वीर वैठी है!"

"क्या कह रहे हो तुम! पिये हुए हो इसलिए तुम्हें वहम हुआ है!"

"नही, हजूर, नहीं! मैं तो अंदर घुस ही रहा था, तभी देखता क्या हूं कि वहां वैठी है वह; माफ़ करना प्रभु! मेरी ओर पीठ किये वैठी थी, अगर वह मुड़कर देख लेती, मालिक, तो मेरी तो डर के मारे जान ही निकल जाती, किस्मत अच्छी थी, दवे पांव हट गया, उसने मुझे देखा नही।"

तभी रुनेव्स्की का खिदमतगार भी अंदर आया।

"मालिक, यहां कुछ गड़वड़ है," कांपते स्वर में वह वोला।

रुनेव्स्की के पूछने पर उसने आगे वताया:

"मालिक, याकोव के साथ कुछ गप-शप करके हम सोने ही लगे थे कि याकोव वोला: तुम्हारे मालिक वुला रहे हैं! सच पूछें, मालिक, मेरी आंख लग रही थी, और याकोव भी ज़रा डांवांडोल था, सो मैंने सोचा कि उसे वहम हुआ है, वस करवट वदलकर खर्राटे भरने लगा। दो खर्राटे भरे ही थे कि आहट सुनायी दी, लगा कोई ऊंची एड़ियां चटकाता जा रहा है। मैंने आंखें खोली, भगवान कसम, समझ नहीं आता कुछ देखा कि नहीं, वस सारा वदन सुन्न ज़रूर हो गया। उठकर गलियारे में भाग चला। अव हुक्म आपका हजूर, पर मुझे और कहीं सोने दीजिये, चाहे वाहर अहाते में ही क्यों न सोना पड़े!"

रुनेव्स्की ने इस पहेली को सुलझाने का निश्चय किया। गाउन पहनकर और हाथ में वत्ती लेकर वह उधर चला, जहां याकोव के शव्दों में प्रास्कोव्या आन्द्रेयेव्ना थी। याकोव और रुनेव्स्की का खिदमतगार उसके पीछे-पीछे आ रहे थे और डर के मारे थर-थर कांप रहे थे। अधखुले दरवाज़े के पास पहुंचकर रुनेव्स्की थमा। अपनी सारी शक्ति वटोरकर ही वह मुश्किल से अपनी आंखों के सामने आये नज़ारे को सह पाया।

वही प्रेत, जिसे उसने अपने कमरे में देखा था, यहा पुराने ढग की आरामकुर्सी मे बैठा था। वह अपने विचारो मे खोया लगता था। उसका चेहरा पीला और सुदर था, यह दाशा का ही चेहरा था, लेकिन उसने हाथ उठाया – *हाथ हड्डियल था!* प्रेत देर तक उसे देखता रहा, फिर उसने अफसोस मे सिर हिलाया और आह भरी।

यह आह रुनेव्स्की के हृदय के अतरतम तक पैठ गयी।

उसे पता नही चला कैसे उसने दरवाज़ा खोल दिया और देखा कि कमरे मे कोई नही है। उसे जो प्रेत लगा था वह आरामकुर्सी की पीठ पर रखी नौकर की वरदी थी, जिससे दूर से कुर्सी मे बैठी औरत का भ्रम हो सकता था। रुनेव्स्की की समझ मे नही आ रहा था कि वह इतना बड़ा धोखा कैसे खा सकता था। लेकिन दोनो नौकर अभी भी अंदर आने का साहस नही कर पा रहे थे।

"हजूर, इजाज़त दे, मै आपके पास ही कही रात काट लूगा," याकोव ने कहा, "ऐसे ही ज्यादा अच्छा रहेगा, और फिर हजूर ने *याद फरमाया तो मैं पास ही मौजूद हूगा। बस एक आवाज़ लगा* दीजियेगा याकोव!"

"मालिक, मुझे भी याकोव के साथ रहने की इजाजत दे, कौन जाने "

रुनेव्स्की अपने शयन कक्ष मे लौट आया, उसका खिदमतगार और नौकर गलियारे मे दरवाज़े के पास ही लेट गये। शेष रात चैन मे कटी, लेकिन सुबह जब रुनेव्स्की जागा तो रात की सारी घटना उसे तुरत याद हो आयी और वह उसे भुला पाने मे असमर्थ था।

कई बार उसने हरे कमरो की चर्चा छेडी, लेकिन ब्रिगेडियरनी या क्लेओपात्रा प्लातोनोव्ना हर बार बात को दूसरी ओर मोड देती। जो कुछ वह जान पाया वह वही था जो याकोव ने उसे बताया था। सुग्रोबिना की फूफी बिल्कुल जवान ही थी जब उसका एक अमीर विदेशी से विवाह होना था, लेकिन विवाह मे एक दिन पहले दूल्हा कही गायब हो गया, बेचारी दुल्हन उसके दुख मे सूखकर काटा हो गयी और जल्दी ही मर गयी। उन दिनो कई लोगो का यह भी कहना था कि वह जहर खाकर मरी है। उसके लिए सजाये गये कमरे वैसे के वैसे रहने दिये गये, और रुनेव्स्की के आने तक कोई उनमे नही गया था। जब उसने पुरानी

तस्वीर के साथ दाशा की समानता पर आश्चर्य प्रकट किया तो सुग्रोविना ने कहा:

"इसमें हैरानी की क्या बात है, मेहरबान? आख़िर प्रास्कोव्या आन्द्रेयेव्ना मेरी सगी बुआ थी और मैं दाशा की सगी नानी हूं। अगर उनकी शक्ल मिलती है तो इसमें ऐसी अजीब बात क्या है? और, मेहरबान, प्रास्कोव्या आन्द्रेयेव्ना पर जो किस्मत की मार पड़ी, उसमें भी हैरान होने की कोई बात नहीं। अपने किसी रूसी आदमी से ब्याह करती तो आज भी ज़िंदा होती, लेकिन वह तो जाने किस आवारा पर दीवानी हो गयी। हां, मेहरबान, हमारे जमाने में भी कभी-कभार लोगों की मति मारी जाती थी, पर तुम बुरा न मानना फिर भी आज के लोगों से ज़्यादा अक्लमंद थे!"

सेम्योन सेम्योनोविच तेल्यायेव कुछ नहीं बोला, बस रुनेव्स्की को नसवार पेश करते हुए वैसे ही जीभ से चटाके मारता और चूसने की सी आवाज़ें निकालता रहा।

इस दिन रुनेव्स्की को दाशा से अपने प्रेम की बात करने का मौका मिल गया और इसके बाद उसने ब्रिगेडियरनी के सामने अपना दिल खोल दिया। पहले तो वह बहुत हैरान हुई, लेकिन ऐसा नहीं लगता था कि रुनेव्स्की के विवाह प्रस्ताव पर वह नाराज़ है। उलटे, उसने रुनेव्स्की का माथा चूमा और कहा कि अपनी ओर से वह अपनी नातिन के लिए रुनेव्स्की से अच्छे पति की कामना नहीं करती है।

"रही बात दाशा की," उसने आगे कहा, "तो मैंने कब से यह देख लिया है कि तुम उसे भाते हो। हां, मेहरबान, बूढ़ी हूं तो क्या तुम जवानों की रग-रग पहचानती हूं! अरे, भैया, हमारे ज़माने में तो लड़कियों से कोई पूछता थोड़े ही था: मां-बाप ने जिसे चुन लिया उसी से ब्याह कर लेती थीं और सच पूछो ज़्यादा सुखी रहती थीं! हां, परवरिश भी तब दूसरी थी, आज से उन्नीस थोड़े ही थी। अरे, मेहरबान, हमारे ज़माने में भी पढ़ाई-लिखाई की ओर ध्यान देते थे, मगर उलटी-सीधी बातें लड़कियों के दिमाग़ में नहीं ठूंसते थे, इसी से तो वे आज की इन तितलियों से ज़्यादा भली होती थीं। अब मुझे ही देखो, मेहरबान, फ़्रांसीसी में गिटर-पिटर मैं नहीं करती, पर दाशा की मां के लिए धाय ज़रूर रखी थी, और मास्टर भी उसे पढ़ाने आते थे और नाच

सिखाने का उन्माद भी। अरे, सब कुछ तो सीखा था उसने, फिर भी, तुम जानो, बड़ी समझदार और सुशील बेटी थी। इन्नानी सर्वेन्योत से मेरी शादी भी तो पिता जी की इच्छा से हुई थी, पर देखो कितना प्यार था मुझे उससे! मुहिम पर जाने लगता तो मैं रो-रोकर बेहाल हो जाती थी, वह तो मुझे रोता देखकर नाराज ही हो जाता। बोलता, क्यों ठिनकती हो, मार्फा? अरी, मलका की वफादारी से सेवा न की तो किस काम का ब्रिगेडियर हुआ मैं? काउंट प्योत्र अलेक्सान्द्रोविच तुर्कों से लड़ने जाये और मैं घर में दुबका बैठा रह जाऊ? लौट आया तो अच्छी बात है। न लौटा, तो, कम से कम, सिपाहियों की तरह अपना फर्ज तो पूरा कर दूंगा। वरदी कितनी सुंदर थी उसकी—हरी-हरी वरदी, उस पर जरी का काम और लाल कालर, बूट क्या आईने से चमकते थे! लो, मैं फिर अपने जमाने की बातें ले बैठी! तुम्हारा मन अब इन बातों में थोड़े ही है, मेहरबान, जानती हूं मैं। जाओ, मास्को जाओ, दाशा की मौसी ओल्गिना से दाशा का रिश्ता मांगो दाशा की देखभाल का जिम्मा उसी ने संभाला हुआ है दाशा उसी की आश्रिता है। ओल्गिना अपनी रजामंदी दे दे तो फिर दाशा का मंगेतर होकर यहां आना, हमारे साथ रहना। अपनी नानी साल से अच्छी तरह मिलना चाहिए!"

बुढ़िया और भी बहुत कुछ कहती रही, लेकिन रनेव्स्की के पल्ले कुछ नहीं पड़ रहा था। आखिर अपनी बग्घी पर बैठकर वह मास्को चला गया।

रनेव्स्की जब अपने घर पहुंचा तो काफी शाम हो चुकी थी सो उसने दाशा की मौसी से भेंट को अगली सुबह तक स्थगित करना ही उचित समझा। नींद उसे आ नहीं रही थी, सो चांदनी रात का फायदा उठाकर वह शहर में घूमने निकल गया ताकि अपने चित्त को थोड़ा शांत कर ले।

सड़कें वीरान हो थीं, कभी-कभार पहरों पर जल्दी से बढ़ते कदमों की आहट सुनायी देती या कोई ऊंघता कोचवान अपनी घोड़ा-गाड़ी लिये निकलता। शीघ्र ही ये ध्वनियां भी नहीं रहीं रनेव्स्की विशाल नगर और गहनतम नीरवता के बीच अकेला रह गया। सारी मोसोवाया सड़क पार करके वह क्रेमलिन के बाग में मुड़ गया। वह

आगे जाना चाहता था, पर तभी एक बेंच पर विचारमग्न बैठे व्यक्ति पर उसकी नज़र पड़ी। जब वह बेंच के पास पहुंचा तो अजनबी ने सिर उठाया, उसके चेहरे पर चांदनी पड़ी और रुनेव्स्की ने रिबारेन्को को पहचान लिया। कोई और समय होता तो पागल से मुलाकात उसे अच्छी न लगती, लेकिन इस शाम को तो वह खुद ही सारा समय रिबारेन्को के बारे में सोचता रहा था। अपने मन को वह बार-बार समझाता रहा था कि इस आदमी की सारी बातें एक विक्षिप्त व्यक्ति के प्रलाप के अलावा और कुछ नहीं हैं; लेकिन उसका मन यही कह रहा था कि रिबारेन्को पूरी तरह से पागल नहीं है, और शायद इसके पीछे भी कोई कारण है कि अपनी बातों के अर्थ को वह ऐसे विचित्र रूपों में छिपाता है, जिससे किसी नासमझ, अनजान आदमी को उसकी बातें अनर्गल लगें, किंतु रुनेव्स्की को उन्हें नज़रंदाज़ नहीं करना चाहिए। उसका अंतःकरण उसे इस बात के लिए कचोट रहा था कि वह दाशा को ऐसी जगह पर अकेली छोड़ आया है, जहां उसके लिए खतरा है।

उसे देखकर रिबारेन्को ने उठकर उसकी ओर हाथ बढ़ाया।

"लगता है, हमारी पसंद एक जैसी है," उसने मुस्कराते हुए कहा। "अच्छी बात है! आइये, बैठकर कुछ बातें करें।"

रुनेव्स्की चुपचाप बेंच पर बैठ गया, थोड़ी देर तक दोनों एक शब्द भी कहे बिना बैठे रहे।

आखिर रिबारेन्को ने खामोशी तोड़ी।

"अच्छा, अब मान जाइये कि बॉल डांस पार्टी में जब हम मिले थे तो आपने मुझे पागल समझा था," उसने कहा।

"हां, मानना पड़ेगा कि आप मुझे अजीब आदमी लगे थे," रुनेव्स्की ने जवाब दिया। "आपकी बातें, आपकी टिप्पणियां..."

"हां, हां, मैं सोचता हूं कि मैं आपको अजीब लगा। उन दुष्ट **उपीरों** ने मुझे गुस्सा चढ़ा दिया था। गुस्से की बात भी थी। ऐसी बेहयाई मैंने कभी नहीं देखी। क्यों, उनमें से कोई मिला बाद में?"

"मैं ब्रिगेडियरनी सुग्रोबिना के दाचा पर गया था, वहां उन लोगों से मिला जिन्हें आप **उपीर** कहते हैं।"

"सुग्रोबिना के दाचा पर?" रिबारेन्को ने पलटकर पूछा। "यह तो बताइये क्या उसकी नातिन भी वहां गयी है?"

"वह वहीं पर है, कल ही मैं उससे मिला था।"

"मच? और वह अभी तक जिंदा है?"

"बिल्कुल। नाराज मत होइये, दोस्त, लेकिन मुझे लगता है कि आप बेचारी ब्रिगेडियरनी के खिलाफ बढा-चढाकर बाते कर रहे हैं। वह बडी नेक बुढिया है और अपनी नातिन को सच्चे दिल से प्यार करती है।"

लगता था रिवारेन्को ने रुनेव्स्की के अंतिम शब्द नही सुने। उसने अपने होठो पर यो उगली रख ली, जैसे कि उसका अनुमान गलत निकला हो।

"अजीब बात है," आखिर वह बोला। "आम तौर पर उपीर इतना वक्त नही गवाते। क्या तेल्यायेव भी वहा है?"

"हा, वही है।"

"यह तो और भी अधिक हैरानी की बात है। तेल्यायेव उपीरो की सबसे खूखार नस्ल का है, वह तो सुग्रोबिना से भी बढकर खून का प्यासा है। लेकिन ऐसा ज्यादा दिन नही चलने का, अगर आप को उस बेचारी लडकी की जरा सी भी परवाह है, तो मेरी सलाह मानिये, जल्दी से जल्दी कुछ कदम उठाइये।"

"माफ करना, मुझे यकीन नही होता कि आप यह सब गभीरता से कह रहे हैं। न बूढी ब्रिगेडियरनी मुझे वेम्पायर लगती है और न ही तेल्यायेव।"

"क्या मतलब? आपने उनमे कुछ भी अजीब बात नही देखी?" रिवारेन्को चिल्लाया। "आपने तेल्यायेव को चटाके मारते नही सुना?"

"सुना है, पर, मेरे ख्याल मे सिर्फ इसी वजह से किसी बुजुर्ग आदमी पर, जो पैतालीस बरस से सरकारी नौकरी बजाता आ रहा है, समाज मे इज्जतदार आदमी माना जाता है, ऐसा आरोप लगाया जाये।"

"उफ, कितना कम जानते हैं आप तेल्यायेव को! अच्छा, मान लीजिये वह बिना किसी मकसद के चटकारे मारता है, मगर ब्रिगेडियरनी के सारे रहन-सहन मे आपको कुछ भी अजीब नही लगा? क्या उसके घर मे रात बिताकर आपको एक बार भी सिहरन नही, एक बार भी आपको वैसी क्षणिक रुग्णता और व्याकुलता अनुभव नही हुई, जो हमे याद दिलाती है कि हमारे पास कही अप्रिय और दूसरे लोक के जीव मौजूद हैं?"

"जहां तक ऐसी अनुभूतियों का सवाल है, तो मैं यह नहीं कह सकता कि मैंने कुछ भी महसूस नहीं किया; लेकिन मैं सोचता हूं कि यह सब मेरी कल्पना का फल है और ऐसी ही अनुभूति मुझे ब्रिगेडियरनी सुग्रोविना के घर पर ही नहीं, कहीं भी हो सकती थी। और फिर ब्रिगेडियरनी का स्वभाव और वर्ताव उसके घर के स्थापत्य और सज्जा से इतने विपरीत हैं कि उस घर में आनेवाले अपने को एक विशेष मनोदशा में महसूस करते हैं।"

रिवारेन्को मुस्करा दिया।

"तो मकान के स्थापत्य की ओर आपका ध्यान गया है?" उसने कहा। "कितना सुंदर है बाहर से! बिल्कुल इतालवी शैली का! लेकिन यकीन मानिये, आप पर सिर्फ़ मकान के स्थापत्य का ही असर नहीं पड़ा। सुनिये," रुनेव्स्की का हाथ पकड़कर वह बोला, "मुझसे कुछ मत छिपाइये, एक मित्र के नाते मुझे बता दीजिये, क्या सुग्रोविना के दाचा में आपके साथ कुछ नहीं घटा?"

रुनेव्स्की को हरे कमरों की बात याद आयी, और चूंकि उसका मन कह रहा था कि वह रिवारेन्को पर विश्वास कर सकता है, सो उसने उससे कुछ भी छिपाना अनावश्यक समझा, और जो कुछ हुआ था सभी कुछ ठीक वैसे ही उसे बता दिया। रिवारेन्को बड़े ध्यान से सुनता रहा और जब उसने अपनी बात पूरी की तो बोला:

"आपके साथ सचमुच जो घटा है उसे आप बेकार ही कल्पना की उपज बता रहे हैं। प्रास्कोव्या आन्द्रेयेव्ना का किस्सा मैं जानता हूं। चाहें तो कभी आपको सुना दूंगा; वैसे अगर क्लेओपात्रा प्लातोनोव्ना चाहती तो इस सिलसिले में बड़ी दिलचस्प बातें आपको बता सकती थी। लेकिन, भगवान के वास्ते, अपने साथ हुई इस घटना को हल्के तौर पर मत लीजिये। मेरी ज़िंदगी की एक घटना के साथ इसकी बहुत समानता है और ऐसा संबंध भी, जिसका आपको अभी गुमान तक नहीं है। आपको चेताने के लिए मैं आपको यह घटना सुनाता हूं।"

रिवारेन्को थोड़ी देर चुप बैठा रहा, मानो अपने विचारों को संजो रहा हो, और फिर उस लिंडन वृक्ष पर पीठ टिकाकर, जिसके पास बेंच रखी हुई थी, उसने कहना शुरू किया।

"तीन साल पहले मैं अपना बिगड़ा स्वास्थ्य सुधारने और खास

तौर पर अंगूर के रस का उपचार पाने इटली गया था।

"इस तरह के इलाज के लिए लोगों को आम तौर पर मशहूर झील के किनारे बसे कोमो नगर भेजा जाता है। वहा पहुंचकर मुझे पता चला कि वोल्टा चौक पर एक मकान है जहा पिछले सौ साल से कोई नही रह रहा है और वह शैतान का घर नाम से मशहूर है। बोर्गो विको मे, जहा मैं ठहरा था, होटल देल एंजेलो में अपने दोस्त से मिलने जाते हुए मैं रोज़ इस मकान के सामने से गुजरता था, लेकिन चूंकि उसके बारे मे खास कुछ नही जानता था इसलिए उसकी ओर ध्यान नही देता था। अब उसका अजीब नाम जानकर और उससे जुड़े एक से एक अजीबोगरीब किस्से सुनकर मै खास तौर पर वोल्टा चौक गया और इस मकान को गौर से देखने लगा। बाहर से देखने में उसमे कुछ भी खास नही नज़र आता था, निचली मंज़िल की खिड़कियो पर मोटे सीखचे लगे हुए थे, बाकी सब जगह कपाट बद थे, दीवारो पर दिवगतो के लिए प्रार्थनाओ की घोषणाओ की पर्चिया चिपकी हुई थी, फाटक बद था और बेहद गदा था।

"पास ही नाई की एक दुकान थी। मुझे ख्याल आया, क्यो न वहा चलकर पूछा जाये कि क्या शैतान का घर अदर से देखना मुमकिन है?

"दुकान में घुसते ही मुझे कुर्सी पर पसरा एक पादरी दिखा, उसकी गर्दन में मैला-सा तौलिया बधा हुआ था। मोटा-तगड़ा नाई बाहें चढ़ाये बड़े जतन और फुर्ती से उसकी दाढ़ी पर साबुन लगा रहा था। जोश मे आकर वह अक्सर ब्रश पादरी की नाक और कानों पर भी लगा देता था, लेकिन पादरी यह सब बड़े धीरज से सह रहा था।

"मेरे सवाल के जवाब में नाई ने कहा कि मकान हमेशा बद रहता है और यह कि मालिक शायद ही किसी के लिए उसे खोलने की इजाज़त देगा। पता नहीं क्यो नाई ने मुझे अंग्रेज़ समझा और हाथो से इशारे करते हुए यह बताया कि मेरे कई देशवासियो ने इस मकान मे जाने की इजाज़त पानी चाही थी, लेकिन उनकी सारी कोशिशे नाकाम रही थी, क्योकि दोन* पियेत्रो द' उर्जीना हमेशा दो टूक जवाब देता था कि उसका मकान कोई भठियारखाना नही है और न ही आर्ट गैलरी।

---

* दोन, सिनियोर – श्रीमान।

"नाई की सारी बातें पादरी बड़े ध्यान से सुन रहा था और मैंने कई बार देखा कि झाग की मोटी तह तले उसके होंठों पर विचित्र मुस्कान प्रकट हो रही है।

"नाई ने अपना काम खत्म करके तौलिये से उसकी दाढ़ी पोंछी और हम इकट्ठे वाहर निकले।

"'मैं आपको यकीन दिलाता हूं, सिनियोर,' उसने मुझसे कहा, 'आप नाहक परेशान हो रहे हैं, **शैतान का घर** इस लायक नहीं है कि आप उसकी ओर ध्यान दें। बिल्कुल खाली इमारत है यह, और इसके बारे में आपने जो सुना है वह सब और कुछ नहीं दोन पियेत्रो की उड़ायी बातें हैं।'

"'ठहरिये, ठहरिये,' मैंने आपत्ति की, 'कोई मालिक खुद अपने मकान के बारे में उलटी सीधी अफ़वाहें क्यों उड़ायेगा, जबकि आजकल विदेशियों की इतनी भीड़ है और वह मकान किराये पर चढ़ाकर अच्छे खासे पैसे कमा सकता है?'

"'इसके कारण, आप जो सोचते हैं उससे कहीं अधिक हैं,' पादरी ने जवाव दिया।

"'क्या वह खोटे सिक्के वनाता है?' फ़्रांसीसी मार्शल तुरें के वारे में मशहूर चुटकुला याद करके मैंने पूछा।

"'नहीं,' पादरी ने कहा, 'दोन पियेत्रो वहुत वड़ा सनकी है, पर ईमानदार आदमी है। लोग कहते हैं कि वह निषिद्ध माल बेचता है और मशहूर तस्कर तित्ता कनेली के साथ उसका संबंध है, लेकिन मैं इस वात पर विश्वास नहीं करता।'

"'यह तित्ता कनेली कौन है?' मैंने पूछा।

"'तित्ता कनेली हमारी झील में नाव चलाता था, एक बार वाजार में एक आदमी से उसका झगड़ा हो गया और उसने वहीं उसका खून कर दिया। यह अपराध करके वह पहाड़ों में जा छिपा और तस्करों के गिरोह का सरदार वन गया। कहते हैं कि स्विट्ज़रलैंड से जो माल वह लाता है उसे दोन पियेत्रो के किसी मकान में रखता है; यह भी कहते हैं कि माल के अलावा उस मकान में उसने वहां वहुत पैसा भी जमा कर रखा है, जो व्यापार से कमाया हुआ नहीं है; लेकिन मैं एक वार फिर आपसे कहता हूं, मुझे इन अफ़वाहों पर विश्वास नहीं है।'

"'भगवान के वास्ते यह तो बताइये कि आपका यह दोन पियेत्रो क्या बला है और शैतान के घर का इस सारे किस्से का क्या मतलब है?'

"'इसका मतलब है कि दोन पियेत्रो ने अपने परिवार में हुई एक घटना को छिपाने और जिस जगह वह हुई उसकी ओर से लोगों का ध्यान हटाने के लिए अपने शहर के मकान के बारे में तरह-तरह की अफवाहें फैला दीं – एक दूसरी से बढ़कर बेतुकी अफवाहें। कौतूहल जगानेवाले इन किस्सों को लोग बड़े लालच से सुनने लग गये और जिस बात को लेकर ये शुरू हुए थे उसे भूल गये।

"'आपको यह भी बता दूं कि शैतान के घर के मालिक की उम्र अस्सी से ऊपर है। उसके बाप का नाम भी दोन पियेत्रो द' उर्जीना था, अपने हमवतनों का आदर उसे प्राप्त नहीं था। अकाल के बरसों में, जब आधी आबादी भूखों मर रही होती थी, वह अनाज के अपने विशाल भडारों में से अनाज मुहमांगे दामों पर बेचता था, हालांकि उसके पास अथाह संपदा थी। ऐसे ही एक साल में वह पता नहीं क्यों आपके देश की यात्रा पर गया। मैं बहुत पहले ही भांप गया हूं कि आप अंग्रेज नहीं, रूसी हैं,' पादरी ने कहना जारी रखा, 'हालांकि मेरा लार्ड इससे उलट समझे बैठा है। हां तो, एक दुर्भाग्यपूर्ण वर्ष में बूढ़ा दोन पियेत्रो रूस को रवाना हुआ – अपना सारा काम-काज अपने बेटे, मौजूदा दोन पियेत्रो को सौंप गया।

"'इस बीच बसंत आ गया, नयी फसल बहुत अच्छी होने के आसार थे, सो अनाज की कीमत काफी गिर गयी। शरद ऋतु आयी, रबी पूरी हो गयी और अनाज कौड़ियों के दाम बिकने लगा। बेटा दोन पियेत्रो, जिसे बाप ने सख्त हिदायतें दे रखी थीं, पहले तो इतना महंगा बेच रहा था कि ज्यादा बेच नहीं पाया और फिर लोग उसके बाप के रखे दाम पर अनाज खरीदने से इंकार करने लगे, और, अतत, ग्राहक आने ही बंद हो गये। हमारे इलाके में प्रभु की मेहर से अकाल बहुत कम ही पड़ता है सो बूढ़े उर्जीना की मुनाफा कमाने की उम्मीदों पर पानी फिर गया। उसके बेटे ने कई बार उसे लिखा, लेकिन दाम इतनी तेजी से बदले कि वह बाप से दाम घटाने के इजाजत नहीं पा सका।

"'बहुत से लोगों का कहना है कि बूढ़ा दोन पियेत्रो कल्पनातीत

हद तक कंजूस था, लेकिन मैं सोचता हूं कि वह बहुत दुष्ट था और अपने बेटे की तरह ही सनकी। बेटे के खत पाकर वह जल्दी में रूस से लौट आया। अगर दोन पियेत्रो इतना कंजूस होता जितना कि लोग कहते हैं तो वह या तो जो दाम मिल रहा था उसी पर अनाज बेच देता, या फिर उसे अपनी दुकानों में रखा रहने देता। लेकिन उसने नगर में अफ़वाह फैला दी कि वह गरीबों को अनाज बांटने जा रहा है और खुद सारा अनाज झील में फेंकने का हुक्म दे दिया। नियत दिन जब गरीब लोग उसकी हवेली के सामने जमा हुए तो उसने खिड़की से सिर निकाला और भीड़ से कहा, तुम्हारा अनाज झील में है, जिसे डुबकी लगानी आती है निकाल ले। इस हरकत से वह कोमो के निवासियों की नज़रों में और भी गिर गया और उन्होंने उसका नाम कमीना रख छोड़ा।

"'नगर में बहुत पहले से ही ये अफ़वाहें उड़ रही थीं कि उसने अपनी आत्मा शैतान के हाथों बेच दी है, बदले में शैतान ने उसे गुप्त चिन्हों-वाली पत्थर की सिल दी है। जब तक यह सिल साबूत रहेगी तब तक वह दुनिया का सारा ऐशो-आराम भोगेगा। लेकिन जब उसकी जादुई शक्ति खत्म हो जायेगी तो शैतान दोन पियेत्रो की आत्मा ले जायेगा।

"'उन दिनों दोन पियेत्रो नगर के बाहर की अपनी हवेली में रहता था, द' ऐस्ता हवेली से थोड़ी दूर। एक सुबह संत सेबस्तियन मठ का अध्यक्ष खिड़की के पास खड़ा बाहर का नज़ारा देख रहा था। तभी काले घोड़े पर सवार एक आदमी खिड़की के पास रुका और उससे बोला: जान लो कि मैं शैतान हूं और पियेत्रो द' उर्जीना की आत्मा लेने जा रहा हूं, उसे नरक में पहुंचाऊंगा। सारे मठवासियों को बता दो यह बात! —थोड़ी देर बाद मठाध्यक्ष ने उसी घुड़सवार को लौटते देखा, दोन पियेत्रो को उसने ज़ीन के आर-पार डाल रखा था। अपने शिकार पर काला लबादा डाले वह घोड़े को सरपट दौड़ाता आ रहा था। तेज़ हवा से लबादा उड़-उड़ जाता था और मठाध्यक्ष ने देखा कि बूढ़े के सिर पर रात को पहनने की टोपी है और वह गाउन पहने हुए है। शैतान जब एकाएक आ धमका तो वह अपने बिस्तर में था और उसने उसे कपड़े पहनने का भी समय नहीं दिया।

"'किंवदंती यह कहती है। बात यह है कि रूस से लौटने के बाद दोन पियेत्रो लापता हो गया। अप्रिय बातें खत्म करने के लिए

बेटे ने ऐलान कर दिया कि उसका बाप अचानक मर गया है, और दिखावे के लिए उसने खाली तावूत भी दफन करवा दिया। दफन के बाद जब वह पिता के सोने के कमरे मे लौटा तो दीवार पर एक भित्ति-चित्र की ओर उसका ध्यान गया, जो उसने पहले कभी वहा नही देखा था। चित्र गिटार बजाती एक औरत का था। चेहरा उसका अत्यन सुदर था, लेकिन आखो मे बडा अप्रिय, यहा तक कि डरावना भाव था, सो बेटे ने तुरत ही उस पर रग पोत देने का हुक्म दिया। थोडी देर बाद वही आकृति दूसरी जगह उसे दिखी, उस पर भी रंग पोत दिया गया, लेकिन दो दिन भी न बीते थे कि वह फिर से वही प्रकट हो गयी, जहा पहली बार दिखी थी। जवान उर्जीना इस सब से इतना हतप्रभ हो गया कि उसने वह हवेली ही छोड दी, उसके सारे किवाडो और खिडकियो पर पटरे ठुकवा दिये। तब से उस हवेली के पास से गुजरते नाववालो ने कई बार रात को हवेली मे आते गिटार के सुर और दो गाते कठ सुने, एक कठ बूढे दोन पियेत्रो का होता, दूसरा पता नही किसका, लेकिन वह इतना भयानक होता कि नाववाले खिड-कियो तले ज्यादा देर रुकने का साहस न कर पाते।

"'सो देखा आपने, सिनियोर,' पादरी ने कहना जारी रखा, 'दोन पियेत्रो की कहानी मे कुछ असाधारण बात है जरूर, लेकिन उसका वास्ता शहर से बाहर झील के किनारे बनी उसकी हवेली से है, जो द' एस्ता हवेली के पास सरोचियो के उस पार है, न कि उस इमारत से, जिसे देखने को आप इतने उतावले थे।'

"'अच्छा, यह बताइये ' मैंने पूछा, 'क्या अभी भी हवेली से गिटार और दोन पियेत्रो की आवाजे आती है?'

"'पता नही,' पादरी ने जवाब दिया और फिर मुस्कराकर कहा, 'लेकिन अगर आपकी इसमे दिलचस्पी है, तो आपको अधेरा होने पर हवेली की खिडकियो तले जाने से कौन रोकता है? यह और भी अच्छा हो उसमे रात काट देखे?'

"यही तो मैं चाहता था।

"'लेकिन उसके अदर कैसे जाया जा सकता है?' मैंने पूछा। 'आपने ही तो बताया है कि दोन पियेत्रो के बेटे ने दरवाजो और खिड-कियो पर पटरे ठुकवा दिये थे?'

"पादरी सोच मे डूब गया।

"'ठीक कहते हैं,' आखिर वह वोला। 'लेकिन अगर मैं गलती पर नहीं हूं तो एक झरोखा ऐसा है, जिस पर पटरे नहीं ठुके हुए हैं, हवेली एक चट्टान से सटी हुई है, उस पर चढ़कर झरोखे से अंदर घुसा जा सकता है।'

"इस तरह वातें करते हुए हमें पता ही नहीं चला कि कैसे हम वोर्गो विको पार कर गये और झील के किनारे-किनारे द' ऐस्ता हवेली को जाती सड़क पर पहुंच गये। एक हवेली के सामने पादरी थम गया, इसका अग्रभाग महान पलादियो* के चित्रों के अनुसार वना लगता था। हवेली का भव्य सौंदर्य देखकर मैं दंग रह गया, मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि कोमो में रहते हुए इतने दिन हो जाने पर भी इतनी सुंदर हवेली का कोई जिक्र कभी क्यों नहीं सुना।

"'यह रही दोन पियेत्रो की हवेली,' पादरी ने कहा, 'यह रही चट्टान और वह है झरोखा, जिससे आप चाहें तो अंदर जा सकते हैं।'

"पादरी के स्वर में उपहास का पुट था, मुझे लगा कि उसे मेरे साहस पर शक है। लेकिन मैंने पक्का संकल्प कर लिया था कि हर हालत में इस रहस्य को जानकर रहूंगा, जिसने मेरा कौतूहल जगाया है।

"उस दिन मुझसे घर पर नहीं वैठा गया। मैं शहर में भटकता फिरा गोथिक शैली के गिरजे में गया और ज़रा भी आनंद पाये विना वेर्नार्दीनो लुईनी** के अनुपम चित्र देखता रहा। अंजीर और अंगूर की टोकरियों से ठोकरें खाता रहा और एक वार तो चेस्टनटों का पूरा झावा उलट दिया। आपको शायद पता न हो कोमो में गलियों में चेस्टनट भूनकर वेचते हैं, इटली के दूसरे शहरों में भी चेस्टनट विकते हैं, लेकिन कहीं भी गलियों में इतनी अंगीठियां और कड़ाहियां नज़र नहीं आतीं, जितनी कोमो में। लोम्वार्दी के उदार निवासी मुझ पर नाराज नहीं हुए, खुले दिल से वे वस हंस देते थे, जव मैं उनका नुक्सान चुकाने के लिए कुछ सिक्के फेंक देता तो वे ज़ोर-ज़ोर से शुक्रिया अदा करते।

---

* आंद्रेआ पलादियो (१५०८–१५८०) – उत्तर पुनर्जागरणकाल का इतालवी वास्तुकार।

** वेर्नार्दीनो लुईनी (१४८०–१५३२) – इतालवी चित्रकार।

"उस शाम को सलाजार हवेली मे मित्र मडली जमा हो रही थी। ज्यादातर लोग हमारे देशवासी ही थे, बाकी आस्ट्रियाई अफसर या कोमो के रमणीय दृश्य देखने मिलान से आये इतालवी थे।

"जब मैंने उर्जीना हवेली मे रात काटने का अपना इरादा ज़ाहिर किया तो पहले तो सब मेरा मजाक उडाने लगे, फिर मेरा यह विचार उन्हें मौलिक लगा, और आखिर मेरे साथ जोखिम का यह बीडा उठाने को बहुत से लोग तैयार हो गये। मजे की बात यह है कि मैंने ही नही, मिलानवासियों मे से भी किसी ने इस हवेली के अस्तित्व के बारे मे कुछ नही सुना था।

"'जरा ठहरो, दोस्तो,' मैंने कहा, 'अगर हम सब वहा रात काटने चल देंगे तो हमारी सारी मुहीम का मज़ा जाता रहेगा, और मुझे यकीन है कि शैतान कद्रदानो की इतनी बडी मडली के सामने गाना नहीं चाहेगा, लेकिन मैं अपने साथ दो साथियो को ले जाने को तैयार हू, जिनका फैसला किस्मत करेगी।'

"मेरा प्रस्ताव मान लिया गया, पर्ची मेरे दो दोस्तों की निकली, जिनमे एक व्लादीमिर नाम का रूसी था, दूसरा इतालवी था – अन्तो-*नियो। व्लादीमिर मेरा बचपन का साथी और सच्चा दोस्त था।* वह भी मेरी ही तरह अगूर रस का उपचार पाने कोमो आया था, और इलाज खत्म होने पर उसे मेरे साथ फ्लोरेंस जाना और वहा जाडा बिताना था। अन्तोनियो हम दोनो का दोस्त था, हमारा परिचय कोमो मे ही हुआ था, लेकिन हमारा स्वभाव और ख्यालात इतने मिलते-जुलते थे कि हम सहज ही एक दूसरे के निकट आ गये। हमने शाश्वत प्रेम की और मरते दम तक एक दूसरे को न भूलने की शपथ खायी। अन्तोनियो अपनी शपथ पूरी कर चुका है।

"पर नही, ख्वाहमख्वाह मैं अपनी उदासी भरी यादो को बीच मे ला रहा हू और हमारी इस लापरवाही भरी शरारत के दुखद अत का आभास दे रहा हू।

"*मेरे दोस्त!* आप जवान है, आपका स्वभाव जोशीला है। ऐसे आदमी की बात मानिये जिसने अपने अनुभव से यह जाना है कि जिन चीज़ो को समझने में हम असमर्थ हैं और जो प्रभु की कृपा से अधेरे, अभेद्य पर्दे के पीछे हमसे छिपी हुई है, ऐसी चीज़ो का मज़ाक उडाने का क्या नतीजा होता है। इस पर्दे को उठाने की जो जुर्रत करता

है उसकी कौन खैर मनाये! अपने कौतूहल के इनाम में उसे मिलेगा भय, हताशा और विक्षिप्ति। हां, दोस्त, मैं भी जवान हूं, लेकिन मेरे वाल सफ़ेद हैं, आंखें धंसी हुई हैं, भरी जवानी में मैं बूढ़ा वन गया हूं – मैंने इस पर्दे का एक कोना उठाया था, रहस्यमय जगत में झांककर देखा था। आपकी ही तरह मुझे तव उन सव वातों में विश्वास नहीं था, जिन्हें लोग अलौकिक कहते हैं। लेकिन, इसके वावजूद मेरी छाती में अक्सर ऐसी विचित्र आवाज़ें उठती थीं, जो मेरे विश्वास से उलट वात कहती थीं। मैं इन स्वरों को सहर्प सुनता था, क्योंकि मुझे अपने सामने प्रकट हुए संसार और यथार्थ जगत की नीरस, भावहीन ज़िंदगी के बीच विपमता अच्छी लगती थी। लेकिन मैं अपनी नज़रों के सामने घूम रहे दृश्यों को वैसे ही देखता था, जैसे दर्शक कोई रोचक नाटक देखता है। दर्शकों का सजीव अभिनय उसे भावाभिभूत करता है, लेकिन वह जानता है कि मंच पर वने महल कागज़ी हैं और अभिनेता नेपथ्य में जाकर भव्य वेशभूषा उतारकर साधारण वस्त्र पहन लेगा। इसलिए जव मैंने उर्जीना हवेली में रात काटने का इरादा वनाया था तो मुझे किसी तरह की असाधारण घटनाओं की, कारनामों की उम्मीद नहीं थी, मैं तो वस अपने मन में चमत्कार की वह भावना जगाना चाहता था, जिसकी मुझे इतनी लालसा थी। ओह, कितना क्रूरताभरा धोखा खाया मैंने! परंतु यदि मेरे दुर्भाग्य से दूसरों को सवक मिलेगा तो यह मेरे लिए कुछ सांत्वना होगी कि दोन पियेत्रो के घर में मेरे रात काटने से किसी का कुछ फ़ायदा हुआ है।

"अगले दिन झुटपुटा होते ही व्लादीमिर, अन्तोनियो और मैं रहस्यमय हवेली में रात काटने चल दिये। इस शाम की छोटी से छोटी वात मेरे स्मृति-पटल पर अंकित है; तीन साल वीत गये हैं, लेकिन मुझे हमारी सारी वातचीत और हमारे वे लापरवाही भरे मज़ाक, जिन पर शीघ्र ही हमें पश्चाताप करना पड़ा, इतनी अच्छी तरह याद हैं कि लगता है यह सव कल की ही वात है।

"रेमोंदी हवेली के पास से गुज़रते हुए अन्तोनियो थम गया। दायीं वगल के कमरों से विनोदमय गीत गाते कुछ नारी स्वर सुनायी दे रहे थे। उसकी धुन आज तक मेरे कानों में गूंजती है।

"'जरा ठहरो,' अन्तोनियो ने कहा, 'अभी जल्दी है, पहुंच जायेंगे वहां ठीक वक्त से।'

"इतना कहकर वह खिडकी की ओर जाने लगा, ताकि गाना अच्छी तरह सुन सके, लेकिन तभी एक पत्थर से ठोकर खाकर वह धडाम से गिर पडा, गिरते-गिरते उसका सिर खिडकी से टकराया और खिडकी का शीशा टूट गया। उसके गिरने का शोर सुनकर एक लडकी मोमबत्ती लिये दौडी-दौडी बाहर आयी। वह इस हवेली के चौकीदार की बेटी थी। अन्तोनियो का चेहरा लहूलुहान हो रहा था। लडकी भयभीत लगती थी, वह दौड-धूप कर रही थी, टब से पानी ले आयी और मुह धोते हुए बार-बार कहने लगी हे भगवान! बेचारा! मुआ रास्ता!

"'यह अपशकुन है!' होश सभालते ही अन्तोनियो ने मुस्कराकर कहा।

"'हा,' मै बोला, 'क्यो न हम लौट चले, फिर कभी हो जायेगी शरारत।'"

"'नही, नही!' अन्तोनियो ने आपत्ति की। 'कुछ नही हुआ। मैं नही चाहता कि आप लोग बाद मे मेरा मजाक उडाये और सोचे कि हम दक्षिणी लोग आप रूसियो से कमजोर है!'

"हम आगे चल दिये। दसेक मिनट बाद वही लडकी जो रेमोदी हवेली मे अन्तोनियो की मदद करने निकली थी, दौडी-दौडी हम तक आ पहुची। इस बार भी उसने अन्तोनियो को बुलाया और बडी देर तक दबी आवाज मे उससे बाते करती रही। मैंने देखा कि बडी मुश्किल से वह अपने आसू रोके हुए है।

"'क्या कह रही थी?' लडकी के चले जाने पर व्लादीमिर ने अन्तोनियो से पूछा।

"'बेचारी पेपीना,' अन्तोनियो ने जवाब दिया। 'कह रही थी कि मै अपने पिता जी के जरिये उसके भाई को माफी दिलवा दू। कहती थी कि कई बार घर आयी थी, लेकिन मैं घर पर नही मिला।'

"'*कौन है उसका भाई?' मैंने पूछा।*

"'कोई तस्कर है, तित्ता नाम है।'

"'इस लडकी का कुलनाम क्या है?'

"'कनेली। तुम क्यो पूछ रहे हो?'

"'तित्ता कनेली!' मैं चिल्लाया। मुझे वह पादरी और बूढे उर्जीना की उसकी कहानी याद आ गयी। यह याद मेरे लिए बहुत अप्रिय थी।

वे सब बातें, जिन्हें मैंने तब गप्पें, प्रलाप या किन्हीं मक्कारों की धोखा-धड़ी समझा था, अब मेरी कल्पना में एक भयावह सत्य के रूप में प्रकट हुईं। और मैं तो लौट ही जाता, लेकिन लगा कि ऐसा करना शर्मनाक होगा। मैंने अपने साथियों से कहा कि मैंने पहले भी तित्ता कनेली के बारे में सुना है, और हम आगे चलते रहे। थोड़ी देर में सड़क के एक ओर एक दिया टिमटिमाता नज़र आया। वह उन गिरजों में से एक में जल रहा था, जैसे इटली के उत्तर में बहुत हैं और जिनमें मानव अस्थियां रखी जाती हैं। इस तरह के गिरजों से मुझे सदा घिन रही है, यहां मृतकों के अवशेष एक क्रम में रखे होते हैं, या किसी डिज़ाइन में टंगे होते हैं, मानो उनका मज़ाक उड़ाया जा रहा हो। लेकिन इस शाम को वहां से गुज़रते हुए जब मैंने गिरजे के लोहे के फाटक पर एक नज़र डाली तो अनचाहे ही भय से सिहर उठा। लेकिन मैंने कुछ नहीं कहा और हम चुपचाप उर्जीना हवेली तक जा पहुंचे।

"चट्टान पर चढ़ने में हमें कोई दिक्कत नहीं हुई और वहां से रस्सी की मदद से हम झरोखे में घुस गये। वहां हमने अपने साथ लायी मोमबत्तियों में से एक जलायी और छत के नीचे से ऊपर की मंज़िल का रास्ता ढूंढकर हम एक खुले हाल में पहुंच गये, जहां पुराने फ़ैशन की सज्जा थी। मिथकीय विषयों पर बने कुछ चित्र दीवारों पर टंगे हुए थे, फ़र्नीचर पर रेशमी कपड़ा चढ़ा हुआ था, फ़र्श रंग-बिरंगे संग-मरमर का बना हुआ था। हम पांच या छह ऐसे कक्षों से गुज़रे, एक कक्ष में हमें तंग-सी सीढ़ियां दिखाई दीं, उन पर उतरते हुए हम एक बड़े कमरे में पहुंचे, जहां ज़रीदार चंदोवे तले पुराने ढंग का पलंग बिछा हुआ था। पलंग के पास मेज़ पर गिटार रखा हुआ था, फ़र्श पर पत्थर की सिल के टुकड़े बिखरे हुए थे। मैंने एक टुकड़ा उठाया और देखा कि उस पर कुछ विचित्र, गूढ़ चिन्ह बने हुए हैं।

"'हो न हो यह दोन पियेत्रो का शयन कक्ष है,' दीवार के पास मोमबत्ती ले जाकर अन्तोनियो ने कहा। 'यह रही वह आकृति जिसके बारे में पादरी ने तुम्हें बताया था।'

"सचमुच ही संकरी सीढ़ियों के दरवाज़े और पलंग के बीच गिटार बजाती अतिसुंदर नारी का भित्तिचित्र बना हुआ था।

"'बिल्कुल पेपीना जैसी है!' व्लादीमिर बोला। 'मैं तो कहूंगा कि उसी का छविचित्र है!'

" 'हा, नयन-नक्श हूबहू उसी के हैं,' अन्तोनियो ने हामी भरी, 'लेकिन पेपीना का हाव-भाव बिल्कुल दूसरा है। यह खूबसूरत भले ही है, पर इसकी आखो मे तो कुछ पाशविक है। जरा देखो, कैसे कनखियो से पलग को देख रही है, मुझे तो इसे देखते हुए डर लग रहा है!'

"मैं अन्तोनियो से पूरी तरह से सहमत था, लेकिन मैंने कहा कुछ नही।

"शयन कक्ष के बगलवाला कमरा काफी बडा और गोल था, उसमें स्तभ थे। उससे जुडे कमरो की सज्जा बहुत सुदर थी, उनकी दीवारो पर टेपेस्ट्रिया थी, बिल्कुल वैसी ही जैसी मुग्रोविना के दाचा मे, पर उससे कही अधिक भव्य। चारो ओर बडे-बडे दर्पण, सगमरमर की मेजे, मुलम्मेवाले कार्निस थे और महगे पर्दे। टेपेस्ट्रियो पर मिथको के और अरिओस्तो* के काव्य 'ओर्लोदो' के चित्र बने हुए थे। एक चित्र मे पेरिस इस उलझन मे पडा बैठा था कि तीन देवियों मे से किसको सुनहरा सेव दे। दूसरे चित्र मे छायादार वृक्ष तले एजेलिका और मेदोर आलिगनवद्ध थे—झाडियो के पीछे से उन्हे घूरते क्रुद्ध सूरमा से बेखबर।

"मोमबत्ती की ललछौही रोशनी मे सजीव लगते टेपेस्ट्रियो के चित्रो मे से किसी को जब हम देखते तो शेष कमरा झुटपुटे मे खो जाता। एक बार अचानक मैंने सिर ऊपर उठाया तो मुझे लगा कि छत पर बनी आकृतिया हिल-डुल रही है और उनके अजीबोगरीब रूप छत से अलग होकर अधेरे मे घुलते हुए कमरे की गहराई मे कही विलीन हो रहे है।

" 'मेरे ख्याल मे अब हमे सोना चाहिए,' ब्लादीमिर ने कहा, 'लेकिन सब कुछ कायदे से हो, इसके लिए मेरी राय यह है कि हम तीनो अलग-अलग कमरो मे सोये और सुबह एक दूसरे को बताये कि रात को हमारे साथ क्या कुछ घटा।'

"हम राजी हो गये। चूकि मैं अगुवाई कर रहा था मुझे दोन पियेत्रो का शयन कक्ष मिला, ब्लादीमिर और अन्तोनियो दूर के दो कमरो मे लेट गये। शीघ्र ही सारे घर मे गहरा सन्नाटा छा गया।"

---

* लुदोविको अरिओस्तो (१४७४–१५३३) – इतालवी कवि। एजेलिका और मेदोर 'ओर्लोदो' काव्य के नायक हैं।

इतना कहकर रिवारेन्को रुका और रुनेव्स्की की ओर मुड़कर उसने पूछा :

"आप शायद थक गये होंगे। काफ़ी देर हो गयी है, आपको नींद तो नहीं आ रही?"

"नहीं, नहीं, विल्कुल नही," रुनेव्स्की ने उत्तर दिया। "वताते जाइये, वहुत कृपा होगी।"

रिबारेन्को थोड़ी देर चुप रहा और फिर उसनें इस प्रकार आगे का वृत्तांत सुनाया :

"अकेले रहकर मैंने कपड़े उतारे, अपनी पिस्तौलों की जांच की, शानदार चंदोवे तले पलंग पर लेट गया, नरम-नरम रज़ाई ओढ़ी और मोमवत्ती वुझाने जा ही रहा था कि दरवाज़ा हौले से खुला और व्लादीमिर अंदर दाखिल हुआ। अपनी मोमवत्ती उसने पलंग के वगल में छोटी सी अल्मारी पर रखी और मेरे पास आकर वोला :

"'सारा दिन हमारे कामकाज के वारे में तुमसे वात करने का मौका नहीं मिला। अन्तोनियो सो रहा है, हम कुछ देर वातें कर लें, फिर अपने कमरे में चला जाऊंगा, देखूंगा क्या विचित्र घटना होती है। मैंने तुम्हें अभी वताया नहीं कि मुझे मां की चिट्ठी मिली है। उसने लिखा है: हालात ऐसे हैं कि मेरा वहां होना ज़रूरी है। सो मैं सोचता हूं कि तुम्हारे साथ फ़्लोरेंस में जाड़ा नहीं काट सकूंगा।'

"यह खवर सुनकर मुझे वहुत अफ़सोस हुआ। व्लादीमिर भी परेशान लग रहा था। वह मेरे पलंग पर वैठ गया, चिट्ठी पढ़कर उसने मुझे सुनायी, हम काफ़ी देर तक उसके परिवार के मामलों और अपने इरादों की वातें करते रहे। उससे वातें करते हुए मुझे कई वार उसमें कुछ विचित्र लगा, लेकिन मैं यह समझ नहीं पा रहा था कि यह विचित्र वात क्या है। आखिर वह उठा और रुंधे कंठ में वोला :

"'मुझे किसी अनिष्ट की आशंका हो रही है; कौन जाने कल हमारी मुलाकात हो न हो? आओ, दोस्त, मुझसे गले मिल लो... शायद यह आखिरी वार हो!'

"'क्या हुआ तुम्हें?' मैंने हंसकर कहा। 'कब से तुम ऐसी आशंकाओं में विश्वास करने लगे?'

"'गले मिल लो!' व्लादीमिर ने फिर से कहा, उसकी आवाज़ विचित्र ढंग से ऊंची हो गयी थी। उसका चेहरा वदल गया, आंखें

लाल हो गयी, अंगारो-सी दहकने लगी। उसने मेरी ओर हाथ बढ़ाया, मुझे अपनी बाहों में भरना चाहा।

"'जाओ, जाओ, ब्लादीमिर,' अपना आश्चर्य छिपाते हुए मैंने कहा। 'भगवान करे तुम्हे नीद आ जाये और तुम अपनी ये आशकाए भूल जाओ।'

"वह दात भीचकर कुछ बडबडाया और बाहर चला गया। मुझे लगा कि वह अजीब ढग से हस रहा है, लेकिन मैं यकीन से नही कह सकता था कि यह उसी की आवाज थी या किसी और की।

"धीरे-धीरे मुझे झपकी आने लगी और मैं सो गया। पता नही सपने मे मैंने क्या देखा, पर शायद कुछ डरावना ही था, क्योकि जल्दी ही मैं भयभीत होकर जाग उठा और आखे रगडने लगा। मेरे कानो मे गिटार की झकार गूज रही थी और शुरू-शुरू मे तो मुझे लगा कि मैं अभी भी सपने मे ही ये ध्वनिया सुन रहा हू, किंतु मेरे उस खौफ का वर्णन कौन कर सकता है जब मैंने पलग और दीवार के बीच भित्तिचित्र की औरत को खडे देखा, अपनी भयावह, अमानवीय दृष्टि से वह मुझे घूर रही थी। एक हाथ मे वह गिटार पकडे हुए थी, दूसरे से उसके तारो को छू रही थी। मैं भयग्रस्त हो उठा, मेज से पिस्तौल उठाकर दागने ही वाला था, कि उसने गिटार हाथ मे छोड दिया और घुटनो के बल गिर पडी। मैं पेपीता को पहचान गया।

"'मुझ पर रहम करे, सिनियोर,' बेचारी लडकी चिल्ला रही थी। 'मैं आपकी कोई चीज़ नही चुराना चाहती थी! दया करिये, मुझे मत मारिये!'

"मै बहुत शर्मिंदा था कि मैंने उसकी आखो मे अपना भय प्रकट कर दिया है, और मै उसे ढाढस बधाने की भरसक कोशिश करने लगा। हा, इतना जरूर उससे पूछा कि वह मेरे पास क्यो आयी है, उसे क्या चाहिए?

"'आह!' उसने गहरी सास ली। 'आपके पास आकर जब मैंने सिनियोर अन्तोनियो से बात की तो उसके बाद चुपके-चुपके आपके पीछे चलती रही, आपको झरोखे में घुसते मैंने देखा। लेकिन मुझे अदर आने का दूसरा रास्ता मालूम है, क्योकि इस मकान मे कभी-कभार मेरा भाई तित्ता शरण लेता है, आपने उसके बारे मे सुन रखा होगा। कौतूहलवश मैं भी आपके पीछे-पीछे अदर आ गयी, और फिर जब

लौटना चाहा तो देखा कि जल्दी में मैंने चोर दरवाज़ा बंद कर दिया है और अव मैं वाहर नहीं निकल सकती। मैं आपके कमरे में आ गयी। आपको जगाने की तो हिम्मत नहीं हुई, सो गिटार बजाने लगी, ताकि आप जाग जायें। हाय, मुझसे नाराज़ मत होइये – अपने भाई की खातिर मैं आपको परेशान कर रही हूं। मुझे पता है आप सिनियोर अन्तोनियो के दोस्त हैं, हो सके तो मेरे भाई को वचा लीजिये! मेरे दिल को जो कुछ भी प्रिय है उसकी कसम खाकर कहती हूं कि वह कव से इज़्ज़तदार आदमी वनना चाह रहा है। लेकिन अगर जंगली जानवर की तरह उसका पीछा होता रहा, तो वह न चाहते हुए भी डाकू वना रहेगा, हत्याओं का पाप उसकी आत्मा पर चढ़ता जायेगा और वह सदा-सदा के लिए अपना सर्वनाश कर लेगा। मैं आपके पांव पड़ती हूं, उसे माफ़ी दिला दीजिये, उसके पश्चाताप पर तरस खाइये, उसकी वेचारी वहन पर तरस करिये!'

"ऐसा कहते हुए वह मेरे पांवों से लिपट गयी, वड़े-वड़े आंसू उसके गालों पर ढरक रहे थे। उसके सिर पर वंधा लाल-नारंगी रिवन खुल गया और उसकी लटें नागिनों की तरह वल खाती उसके कंधों पर फैल गयीं। वह इतनी कमनीय थी कि उस क्षण मैं अपना सारा डर, उर्जीना हवेली और उसके किस्से – सव कुछ भूल-भाल गया। मैं पलंग से उठ खड़ा हुआ, हमारे होंठ एक लंवे चुंवन में मिल गये। वगल के कमरे से परिचित स्वर सुनकर हम होश में आये।

"'कौन है तेरे साथ, पेपीना?' दरवाज़ा खोलते हुए किसी ने पूछा।

"'हाय, मेरा भाई!' लड़की चीखी और मेरी वांहों से निकलकर भाग गयी।

"लवादा ओढ़े और सिर पर काले परवाली टोपी पहने एक आदमी अंदर दाखिल हुआ। मुझे देखकर वह रुक गया। अव आप कल्पना करिये मेरे आश्चर्य की – उसके चेहरे को गौर से देखने पर मैंने पाया कि यह तो वही पादरी है!

"'अरे, आप हैं, सिनियोर रूसी!' कमरवंद में वह वड़ी पिस्तौल रखते हुए, जिससे मेरा स्वागत करने जा रहा था, उसने कहा। 'स्वागत है! मेरा भेस वदला देखकर हैरान मत होइये। आपने मुझे पादरी के रूप में देखा है, फिर कभी कोचवान के रूप में देखेंगे या मेहतर

के रूप में। जब तक सरकार से माफी नहीं मिल जाती मुझे छिपकर रहना पड़ेगा।'

"यह कहकर उसने गहरी उसास ली; फिर प्रसन्नमुख होकर मेरे पास आया और मेरा कंधा थपथपाते हुए बोला.

"'मैंने जान-बूझकर आपको अपने दोस्त दोन पियेत्रो की हवेली में बुलाया है—एक छोटा-सा सौदा करना है। मुझे पैसों की ज़रूरत है, यहां मैंने बहुत सी कीमती चीजें छिपाकर रख रखी हैं—अंगूठियां, कंठहारों, झुमकों, कड़ों की पूरी पिटारी है। सारी चीजों के मैं आपसे सिर्फ सतहत्तर नेपोलियनदोर* लूंगा।' मेरे पलंग तले झुककर उसने वहां से खासी बड़ी पिटारी निकाली और मैंने एक से एक सुंदर सोने की चीजें देखीं। कुछ कंठहारों में विरले रत्न जड़े हुए थे, और हर चीज इतनी सफाई से बनी हुई थी जितनी मैंने पहले कभी नहीं देखी। उसने जो कीमत मांगी थी वह मुझे बहुत अजीब लगी, उससे यही पता चलता था कि ये सब चीजें उसे मुफ्त में मिली हैं, लेकिन अब कुछ पूछने, बहस करने का समय नहीं था, और फिर पेपीना का भाई मेरी पिस्तौलों और मेरे बीच खड़ा अपनी पिस्तौल इस तरह घुमा रहा था कि मैंने राजी होने में ही अपनी खैर समझी, और अपना बटुआ खोलने पर उसमें ठीक सतहत्तर नेपोलियनदोर पाये, जो मैंने डाकू को दे दिया।

"'बहुत-बहुत शुक्रिया,' उसने कहा, 'आपने नेक काम किया है! अब मुझे आपको बस इतना बताना है कि अगर आपको पुलिस को यह बताने की सूझी कि यह माल कहां से मिला है, तो मैं आपकी खोपड़ी का कचूमर निकाल दूंगा। अच्छा तो, शुभ रात्रि!'

"उसने मुझसे हाथ मिलाया और इतनी जल्दी विलीन हो गया कि मैं देख ही नहीं पाया वह किस रास्ते से गया है। दीवार में चोर दरवाज़े के कब्ज़े चरमराने की आवाज ही मुझे सुनाई दी और फिर चारों ओर सन्नाटा छा गया। मेरी नजर दीवार पर पड़ी और मैं अनचाहे ही ठिठक उठा। एक बार फिर मुझे यह लगा कि पेपीना नहीं, बल्कि यह औरत ही थी जो कुछ क्षण पहले दीवार में उतर आयी थी और जिसका चुंबन मैंने लिया था। मुझे अफसोस होने लगा कि मैंने उस वक्त दीवार पर नजर क्यों नहीं डाली यह देखने के लिए कि

---

* फ्रांस का सोने का सिक्का।

वह वहां है या नहीं। बहरहाल अपने डर पर काबू पाकर मैं पिटारी की चीजें देखने लगा। तरह-तरह की ज़ंजीरों, इत्र की शीशियों आदि के बीच मुझे एक बड़े सेब जितने आकार की सोने की अत्यंत सुरुचिपूर्ण जड़ाई वाली रोकोको शैली की शीशी दिखी। इसका काम इतना नाजुक था कि यह सोचकर कहीं पिटारी में उस पर खरोंच न पड़ जाये, मैंने शीशी अलग से निकाल ली और अपने रूमाल में लपेटकर मेज़ पर रख दी। फिर पिटारी बंद करके मैं लेट गया और जल्दी ही सो गया। सारी रात सपने में मुझे पेपीना और भित्तिचित्र की सुंदरी दिखती रही, अक्सर कल्पनाजनित मधुरतम दृश्यों के बीच मैं भय से उछल पड़ता और फिर से सो जाता। गर्दन में एक दर्द का अहसास भी मुझे परेशान करता रहा। मैं सोच रहा था कि हवा लग गयी है। जब मैं जागा तो दिन चढ़ चुका था और मैं जल्दी-जल्दी कपड़े पहनकर अपने साथियों को ढूंढने निकला।

"अन्तोनियो को मैंने सन्निपात की अवस्था में पाया। वह पागलों की तरह हाथ फेंक रहा था और लगातार चीखता जा रहा था :

"'छोड़ दो मुझे! मेरा इसमें क्या कसूर कि वीनस सबसे सुंदर देवी है? पेरिस सुरुचिपूर्ण व्यक्ति है, ग्रिफ़न* पर सवार होकर जब मैं अपने चीनी राज्य में पहुंचूंगा तो ज़रूर उसे पीकिंग में न्याया-धीश बनाऊंगा!'

"मैं उसे होश में लाने के लिए अपना पूरा ज़ोर लगा रहा था कि तभी दरवाज़ा खुला और हैरान-परेशान व्लादीमिर एकदम सफ़ेद चेहरा लिये अंदर दौड़ा आया।

"'अरे वाह, ज़िंदा है!' अन्तोनियो को देखकर वह खुशी से चिल्लाया। 'मतलब मैंने इसे जान से नहीं मारा? ज़रा दिखाओ तो गोली कहां लगी है?'

"वह लपककर अन्तोनियो को टटोलने लगा, लेकिन कहीं कोई घाव नज़र नहीं आ रहा था।

"'देखा तुमने,' अन्तोनियो बोला, 'मैंने बताया था न कि पान

---

* ग्रिफ़न – एक मिथकीय जीव, जिसका धड़, पिछली टांगें और पूंछ शेर जैसी होती हैं और अगली टांगें, पंख और सिर बाज़ का, कुछ चित्रों में सिर भी शेर का बनाया जाता है।

देवता* बासुरी बजाने मे भी उतना ही निपुण है, जितना पिस्तौल चलाने मे।'

"व्लादीमिर अभी भी अन्तोनियो को टटोलता जा रहा था, आखिर जब उसे यकीन हो गया कि वह जिंदा है और घायल भी नही है, तो वह हर्षोल्लास से भरकर चिल्लाया.

"'शुक्र है भगवान का, मैंने इसकी हत्या नही की, वह सब एक दुस्स्वप्न था!'

"'दोस्तो, मेरी समझ मे कुछ नही आ रहा, भगवान के वास्ते बताओ तो मामला क्या है,' मैंने कहा।

"आखिर मैं और व्लादीमिर अन्तोनियो को होश मे ले आये, लेकिन वह इतना कमज़ोर था कि मैं उससे कुछ भी नही पूछना चाहता था, सो व्लादीमिर से कहा कि वह हमे बताये रात को उसके साथ क्या बीती है।

"'अपने कमरे मे जाकर मैंने मोमबत्ती उन शमादानो मे से एक मे लगा दी, जो बडी-बडी मकडियो की तरह आईने के सुनहरे चौखटे पर लगे हुए थे, और फिर अपनी पिस्तौलो का अच्छी तरह मुआयना किया। खिडकी का ठुका हुआ कपाट मैंने किसी तरह खोल लिया और अकथनीय आनद के साथ रात की साफ हवा में सास लेने लगा। चारो ओर नीरवता थी। चाद चढ गया था, हवा इतनी पारदर्शी थी कि दूर के पहाडो के सारे उतार-चढाव मुझे साफ नज़र आ रहे थे, बारोंदेल्लो महल की मीनार उनके बीच सगर्व सिर उठाये खडी थी। मैं अपने विचारो मे डूब गया, झील और पहाडो को निहारते कोई आधा घटा बीत गया, तभी पीठ पीछे हल्की-सी आहट हुई और मैंने पलटकर देखा। मेरी मोमबत्ती पर कालिख बहुत चढ गयी थी, सो पहले तो मुझे कुछ नज़र नही आया, लेकिन फिर आखो पर ज़ोर डालने पर मुझे अधेरे मे दरवाज़े पर एक विशाल सफेद आकृति दिखी।

"'कौन है?' मै चिल्लाया। आकृति कराही और मानो अदृश्य चक्को पर मेरे पास चली आयी। उससे अधिक डरावना चेहरा मैंने आज तक नहीं देखा है। भूत ने हाथ उठा लिये, मानो मुझे अपनी चादर मे लपेटना चाहता हो। पता नही उस वक्त मैंने क्या महसूस किया,

---

* यूनानी मिथको मे प्रकृति का, विशेषत गडरियो और वन का देवता।

लेकिन मेरे हाथ में पिस्तौल थी, गोली चली और भूत यह चिल्लाते हुए गिर पड़ा: 'व्लादीमिर! क्या कर रहे हो? मैं अन्तोनियो हूं!' मैं उसे उठाने के लिए लपका, लेकिन गोली उसकी छाती के आर-पार निकल गयी थी, घाव से खून का फव्वारा छूट रहा था, दम तोड़ते आदमी की तरह उसके गले में घरघराहट हो रही थी।

"'व्लादीमिर,' वेजान आवाज़ में उसने कहा, 'मैं तो तुम्हारी वहादुरी का इम्तहान लेना चाहता था, तुमने मुझे मार ही डाला; मुझे माफ़ कर देना, जैसे मैं तुम्हें माफ़ कर रहा हूं!'

"मैं चिल्लाने लगा, तुम दौड़े आये और हम दोनों मिलकर अन्तोनियो को उसके कमरे में ले गये।

"'यह तुम क्या कह रहे हो?' मैंने व्लादीमिर को टोका, 'मैं तो सारी रात अपने कमरे से वाहर निकला ही नहीं। तुमने जव अपनी मां की चिट्ठी मुझे सुनाई और फिर अपने कमरे में चले गये, उसके वाद से मैं विस्तर में ही रहा, अन्तोनियो के वारे में मुझे कुछ भी नहीं पता। और फिर तुम देख ही रहे हो कि वह ज़िंदा है और सही-सलामत, मतलव यह सव तुमने सपने में देखा है।'

"'तुम खुद सपने में वोल रहे हो!' व्लादीमिर झुंझलाकर वोला, 'मैं तुम्हारे पास आया ही नहीं था और न मैंने कोई चिट्ठी पढ़ी थी।'

"अव अन्तोनियो कुर्सी से उठकर हमारे पास आया।

"'क्या वहस कर रहे हो तुम दोनों?' उसने कहा। 'देख तो रहे हो कि मैं ज़िंदा हूं। ईमान कसम, व्लादीमिर को डराने की वात मैंने सोची तक न थी। मुझे इसकी फ़ुरसत ही कहां थी। जव मैं अकेला रह गया तो मैंने भी व्लादीमिर की तरह सवसे पहले अपनी पिस्तौलें जांचीं। फिर मैं सोफ़े पर लेट गया, अनचाहे ही मेरी नज़र तस्वीरों भरी छत और सुनहरे अरवस्क से सजी कार्निसों पर गयी। पशु-पक्षी यहां फलों, फूलों और भांति-भांति के वेल-वूटों के साथ विचित्र ढंग से गुंथे हुए थे। मुझे लगा कि ये वेल-वूटे हिल-डुल रहे हैं, अपनी कल्पना के घोड़ों को वेकावू न होने देने के लिए मैं उठा और हाल में चक्कर काटने लगा। अचानक कार्निस से कुछ अलग हुआ और फ़र्श पर आ गिरा। हाल में इतना अंधेरा था कि मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दिया, लेकिन आवाज़ से मैं समझ गया कि गिरनेवाली चीज़ मुलायम है। थोड़ी देर में मेरे पीछे कदमों की आहट हुई, जैसे कोई जानवर चल

रहा हो। मै पीछे घूमा तो देखता क्या हूं कि मेरे सामने साल भर के बछडे जितना बडा सुनहरा ग्रिफन खडा है। वह अपनी बुद्धिमत्तापूर्ण आखो से मुझे देख रहा था और अपनी बाज की चोच इधर-उधर घुमा रहा था। उसके पख ऊपर उठे हुए थे और उनके सिरे कुडलाकार मुड़े हुए थे। उसे देखकर मुझे आश्चर्य हुआ लेकिन मै डरा नही। पर उससे पिड छुडाने के लिए मैंने पैर पटका और उस पर चिल्लाया। ग्रिफन ने अपना एक पजा उठाया, सिर झुकाया और कान हिलाकर मानव स्वर मे बोला 'आप नाहक परेशान हो रहे है, सिनियोर अन्तोनियो। मै आपको कोई कष्ट नही पहुचाऊगा। मेरे स्वामी ने मुझे भेजा है ताकि मै आपको यूनान लिवा ले चलू। हमारी देवियो मे फिर से सेब को लेकर झगडा हो गया है। जूनो कहती है कि पेरिस ने सेब वीनस को इसलिये दिया, क्योंकि उसने पेरिस को हेलन दिलवाने का वायदा किया था। मिनर्वा भी कहती है कि पेरिस ने इसाफ नही किया है। उन दोनो ने बूढे से शिकायत की है, बूढा कहता है इस झगडे का फैसला सिनियोर अन्तोनियो को करने दो। अगर आप चाहे तो मुझ पर सवार हो जाये, पलक झपकते ही मै आपको यूनान पहुचा दूगा।'

"'यह विचार मुझे इतना मजेदार लगा कि मै तुरत ही ग्रिफन पर सवार होने लगा, लेकिन उसने मुझे रोक दिया, बोला 'हर देश की अपनी-अपनी प्रथाए होती है। यह कोट पहनकर अगर आप यूनान पहुचेगे तो सब आपका मजाक उडायेगे।'—'तो फिर मै क्या पहनकर जाऊ?' मैंने पूछा। 'आपको हमारा राष्ट्रीय परिधान ही धारण करना होगा, और कोई नही। सारे कपडे उतारकर नगे हो जाओ और फिर लबादा ओढ लो। सभी देवता और देवियां तक भी ऐसे ही वस्त्र धारण करते हैं।' मैंने ग्रिफन का कहना माना और उसकी पीठ पर सवार हो गया। वह सरपट दौड चला। बडी देर तक हम भाति-भाति के गलियारो मे गुजरते रहे, कमरो की लबी कतारे पार करते, कभी नीचे उतरते, तो कभी ऊपर चढते रहे, आखिर एक विशाल हॉल मे पहुचे, जहा गुलाबी रोशनी फैली हुई थी। हॉल की छत पर उडते पक्षियो और क्यूपिडो* के साथ आकाश का चित्र बना

* यूनानी मिथको के ईषत् देवी-देवता क्यूपिड – कामदेव, निम्फ – प्रकृतिदेवी, नायड – जलदेवी, ड्रायड – वनदेवी, ओरियड – पर्वतदेवी फाउन और सेटर – वनदेवता।

हुआ था। हाल के अंत में सोने का सिंहासन था और उस पर जूपिटर बैठा हुआ था। 'यह हमारे स्वामी दोन पियेत्रो द' उर्जीना हैं!' ग्रिफ़न ने मुझसे कहा।

"'सिंहासन के सामने पारदर्शी नदी वह रही थी और उसमें एक से एक सुंदर निम्फ़ें और नायडें स्नान कर रही थीं। बाद में मुझे पता चला कि इस नदी का नाम लादोन है। उसके तट पर ढेरों नरकल उग रहे थे और एक पादरी वहां वैठा बांसुरी वजा रहा था। 'यह कौन है?' मैंने ग्रिफ़न से पूछा। 'यह पान देवता है,' उसने उत्तर दिया। 'वह कोट क्यों पहने है?' मैंने फिर से पूछा। 'क्योंकि वह पुरोहित वर्ग का है और उसके लिए नंगा घूमना अशोभनीय होगा।' 'लेकिन वह उस नदी के तट पर कैसे वैठ सकता है, जिसमें निम्फ़ें स्नान कर रही हैं?'—'वह अपनी वासना पर वश कर रहा है, देखते नहीं वह उनकी ओर से मुंह मोड़ रहा है?'—'मगर उसके कमरवंद में पिस्तौलें क्यों हैं?'—'ओफ़्फ़ो,' ग्रिफ़न ने झुंझलाकर कहा, 'आप ज़रूरत से ज़्यादा कौतूहल करते हैं; मुझे क्या पता!'

"'मुझे यह अजीव लगा कि कमरे में नदी वह रही है, मैंने उस चीनी पर्दे के पीछे झांककर देखा, जिसके नीचे से जलधारा निकल रही थी। पर्दे के पीछे पाउडर लगा विग पहने एक बूढ़ा वैठा था, और शायद ऊंघ रहा था। दबे पांव उसके पास जाकर मैंने देखा कि नदी एक कलश में से निकल रही है, जिस पर बूढ़ा टेक लगाये वैठा है। मैं बड़े कौतूहल से उसे निहारने लगा, तभी ग्रिफ़न दौड़ा-दौड़ा मेरे पास आया, मेरा लवादा खींचकर मेरे कान में बोला: 'यह तू क्या कर रहा है, पगले? तू लादोन को जगा देगा, और तब वाढ़ आ जायेगी।' मैं वहां से हट गया। धीरे-धीरे हॉल में लोग भरते जा रहे थे। फ़ाउनों, सेटरों और गड़रियों के वीच निम्फ़ें, ड्रायडें और ओरियडें घूम रही थीं। नायडें जल से निकलीं, हल्की चादरें ओढ़कर वे भी टहलने लगीं। देवता टहल नहीं रहे थे, वल्कि देवियों के साथ जूपिटर के सिंहासन के गिर्द विराजमान थे और घूमनेवालों को देख रहे थे। इन घूमनेवालों के बीच मैंने काला डोमिनो* और नकाव पहने एक

---

* डोमिनो—हुडवाला एक लंबा, खुला लवादेनुमा पहनावा, जिसका पुराने ज़माने में यूरोप में वहुत प्रचलन था।

आदमी को देखा, जो किसी की ओर ध्यान नहीं दे रहा था, लेकिन सब उसके लिए रास्ता छोड रहे थे। 'यह कौन है?' मैंने ग्रिफन से पूछा। वह सकपका गया। 'कोई नहीं, ऐसे ही कोई है!' चोच से अपने पर सवारते हुए उसने उत्तर दिया। 'उसकी ओर ध्यान मत दो!' लेकिन तभी एक सुदर तोता हमारे पास उड आया और मेरे कंधे पर बैठकर अपनी नकियाती आवाज मे बोला 'बु-ऽ-ऽ-द्धू, बु-ऽ-ऽ-द्धू! तुझे इतना भी नही पता, यह आदमी कौन है? इसका तो हम दोन पियेत्रो से भी ज्यादा आदर करते हैं!' ग्रिफन ने उस पर कुपित दृष्टि डाली और अर्थमय ढग से आख मारी, परतु तब तक वह मेरे कधे से उडकर छत पर क्यूपिडो और बादलो के बीच विलीन हो गया था।

"'शीघ्र ही हॉल मे उत्तेजना फैल गयी। भीड पीछे हटी और मैंने फ्रिजियन टोपी पहने एक युवक को देखा, उसके हाथ बधे हुए थे और दो निम्फें उसे पकडकर ला रही थीं। 'पेरिस!' जूपिटर या दोन पियेत्रो द' उर्जीना ने (जैसा कि ग्रिफन उसे कहता था) उससे कहा, 'पेरिस! कहते हैं तुमने वीनस को सोने का सेब देकर *अन्याय* किया है। देखो, मुझे मजाक पसद नही। मै तुम्हे उलटा लटका दूगा!' –'हे शक्तिशाली वज्रदेव!' पेरिस ने उत्तर दिया, 'स्टिक्स* की शपथ, मैंने सच्चे मन से न्याय किया है। पर यह देखिये सिनियोर अन्तोनियो यहा मौजूद है। मै जानता हू, वह सुरुचिपूर्ण व्यक्ति हैं। उनसे फैसला करवा लीजिये, अगर उन्होंने बिल्कुल मुझ जैसा फैसला न किया तो खुशी से मुझे उलटा लटका देना!'–'अच्छी बात है!' जूपिटर बोला, '*ऐसा ही सही!*'

"अब मुझे तेजपत्र वृक्ष के नीचे बिठाया गया और सोने का सेब मेरे हाथ मे दिया गया, जिस पर लिखा था 'सर्वसुदरी को'। जब तीनो देवियां मेरे पास आयी तो पादरी की बासुरी से पहले से भी अधिक मधुर सुर निकलने लगे, लादोन नदी के नरकल मद-मद डोलने लगे, उनके झुरमुट मे से अनगिनत चमचमाते पछी उड निकले, उनके गीत इतने करुणामय, इतने मधुर और इतने विचित्र थे कि मेरी *समझ मे नही आ रहा था मै रोऊ या खुशी से हसू।* इस बीच चीनी पर्दे के पीछे बैठा बूढा शायद पछियो के गीतो और नरकल के मर्मर-

* स्टिक्स – हेडस (पाताल लोक) के गिर्द बहनी नदी और उसकी देवी।

गान से जाग गया, खांसने लगा और अस्फुट स्वर में, मानो उनींदे में बोला: 'ओह, सिरिंगा! ओह, मेरी बेटी!'

"'मैं सब कुछ भूल-भाल गया था, लेकिन तभी ग्रिफ़न ने मेरे हाथ पर ज़ोर से चोंच मारी और गुस्से में बोला: 'जल्दी से अपना काम करिये, सिनियोर अन्तोनियो! देवियां आपकी प्रतीक्षा कर रही हैं, बूढ़े के जागने से पहले अपना निर्णय सुना दीजिये!' मैंने अपने विह्वल मन को वश में किया, जो मुझे उर्जीना हवेली से बहुत दूर रंगों और स्वरों के जगत में ले गया था। एकाग्रचित्त होकर मैंने तीनों देवियों पर दृष्टि डाली। उन्होंने अपनी चादरें ढरका दीं। ओह, मेरे मित्रो! किन शब्दों में मैं उस प्रचंड ज्वाला का वर्णन करूं, जो तत्क्षण मेरी रग-रग में दौड़ गयी! मेरी भावनाएं घुल-मिल गयीं, सारे विचार अस्त-व्यस्त हो गये, मैं तुम्हें, अपने सगों को, स्वयं अपने को भूल गया, अपने सारे विगत जीवन को भूल गया। मुझे पूरा विश्वास था कि मैं ही पेरिस हूं और मुझे ही वह महान निर्णय सौंपा गया है, जिससे ट्रोया का पतन हुआ। जूनो में मैंने पेपीना को पहचाना, किंतु वह तब से सौ गुनी अधिक सुंदर थी, जब रेमोंदी हवेली से मेरी मदद करने निकली थी। वह हाथ में गिटार लिये थी और उसके तारों को अपनी कोमल उंगलियों से छू रही थी। वह इतनी कमनीय थी कि मैं उसे सेब देने के लिए हाथ बढ़ा ही रहा था, पर तभी वीनस पर दृष्टि डाली और एकाएक अपना निर्णय बदल लिया। वीनस बेपरवाही से हाथ बांधे, कंधे पर सिर झुकाये उलाहना भरी दृष्टि से मुझे देख रही थी। हमारी आंखें मिलीं, उसके गालों पर लाली दौड़ गयी और उसने नज़रें चुरा लीं, उसकी यह भंगिमा इतनी मनमोहक थी कि मैंने ज़रा भी हिचकिचाये बिना सेब उसे दिया।

"'पेरिस की खुशी का ठिकाना न रहा; किंतु डोमिनो और नकाब पहने आदमी वीनस के पास आया और पल्ले के नीचे से कोड़ा निकालकर बड़ी निर्ममता से उस पर कोड़े बरसाने लगा; हर प्रहार के साथ वह कहता: 'यह ले, यह ले; आगे से अपनी बारी याद रखेगी; जब तुझसे कहा नहीं तो क्यों आंखें मटकाती है? आज तेरा दिन नहीं, जूनो का दिन है; थोड़ा सब्र नहीं होता तुझसे? यह ले इनाम, यह ले, पहले!' वीनस रो रही थी, दहाड़ें मार रही थी, लेकिन अजनबी उसकी पिटाई करता जा रहा था, जूपिटर की ओर

मुडकर उसने कहा : 'इससे निपट लूं, तो तेरी भी बारी आयेगी, खूसट बुड्ढे!' तब जूपिटर और सभी देवी-देवता अपनी-अपनी जगह से उछले और अजनबी के पैरो मे गिर पडे, चिरौरिया करने लगे : 'दया करो, हमारे स्वामी! अगली बार हम ठीक से काम करेगे!' इस बीच जूनो या पेपीना (मैं अभी तक नही जानता कि वह कौन थी) मेरे पास आयी और लुभावनी मुस्कान के साथ बोली : 'यह मत सोचो, मीत, कि मै तुमसे नाराज हू, क्योकि तुमने सेब मुझे नही दिया। भाग्य की गूढ पुस्तक मे यही लिखा होगा! तुम्हारी निष्पक्षता का मै कितना आदर करती हू, यह दिखाने के लिए मै तुम्हे एक चुंबन देना चाहती हू!' उसने अपनी मोहक बाहो मे मुझे भर लिया और लालसा भरे अपने गुलाबी होंठ मेरी गर्दन मे दबा दिये। उसी क्षण मुझे एक तीव्र पीडा हुई जो तुरत ही जाती रही। पेपीना का आलिगन इतना सुखद था कि मै तो फिर से अपनी सुध-बुध भुला बैठता, लेकिन वीनस के चीत्कारो ने उसकी ओर से मेरा ध्यान हटाया। डोमिनो पहने आदमी उसके बाल पकडकर बडी बेरहमी से उस पर कोडे बरसाता जा रहा था। उसकी निष्ठुरता पर मै आपे से बाहर हो गया। 'बस भी करोगे कि नही!' आग बबूला होकर मै चिल्लाया और उस पर झपटा। परतु काले नकाब के पीछे से छोटी-छोटी सफेद आखो की अकथनीय चमक चौधी और इस नज़र से मुझे जैसे बिजली का झटका लगा। पलाश मे ही देवी, देवता और निम्फ सब विलीन हो गये।

"'मैंने गोल हॉल वाले चीनी कमरे मे अपने को पाया। चीनी मिट्टी की गुडियो, मैडरिनो और चीनी औरतो के झुड ने मुझे घेर लिया और 'हमारे सम्राट, महान अन्तोनी-फू-त्सिग-त्साग की जय हो!' चिल्लाते हुए मुझे गुदगुदाने लगे। उनसे जान छुडाने की मेरी सारी कोशिशे बेकार थी, उनके छोटे-छोटे हाथ मेरी नाक मे, मेरे कानो मे घुसे जा रहे थे और मै पागलो की तरह ठहाके लगा रहा था। पता नही कैसे मैंने उनसे पिड छुडाया, लेकिन जब मुझे होश आया तो तुम दोनो मेरे पास खडे थे। कैसे तुम्हारा शुक्रिया अदा करू कि तुमने मेरी जान बचा ली!'

"और अन्तोनियो बच्चे की तरह हमे छाती से लगाने और चूमने लगा। उसका उत्साह शात हुआ तो मैंने उसकी और ब्लादीमिर की ओर उन्मुख होते हुए बडी गभीरतापूर्वक उनसे कहा

"'मेरे दोस्तो, मैं देखता हूं कि तुम दोनों ने यह रात सरसाम में काटी है। रही मेरी बात, तो मुझे यकीन हो गया है कि इस हवेली के बारे में सारे अजीबोगरीब किस्से और कुछ नहीं तस्कर तित्तो कनेली की मनगढ़ंत बातें हैं। मैंने खुद उसे देखा है और उससे बातें की हैं। चलो मेरे साथ, मैं तुम्हें दिखाता हूं कि मैंने उससे क्या खरीदा है।'

"यह कहकर मैं अपने शयन कक्ष की ओर चल दिया। अन्तोनियो और व्लादीमिर मेरे पीछे-पीछे आ रहे थे। मैंने पिटारी खोली, उसमें हाथ डाला और बाहर निकाला तो उसमें थीं आदमी की हड्डियां! भय और घिन से मैंने उन्हें परे फेंका और दौड़ा-दौड़ा उस मेज़ के पास गया, जिस पर रात को रोकोको शीशी रखी थी। रूमाल खोलने पर मैं स्तब्ध रह गया। उसमें बच्चे का कपाल था! मेरा खाली बटुआ उसके पास ही पड़ा हुआ था।

"'यह माल तुमने अपने तस्कर से खरीदा है?' अन्तोनियो और व्लादीमिर ने एक स्वर में पूछा।

"मेरी समझ में नहीं आ रहा था क्या जवाब दूं। व्लादीमिर खिड़की के पास गया और आश्चर्यचकित होकर चिल्लाया:

"'हे भगवान! झील कहां गयी?'

"मैं भी खिड़की के पास गया। हमारे सामने बोल्टा चौक था और मैंने देखा कि हम शैतान के घर की खिड़की से झांक रहे हैं।

"'हम यहां कैसे पहुंचे?' मैंने अन्तोनियो से पूछा।

"लेकिन अन्तोनियो जवाब देने की हालत में नहीं था। उसका चेहरा फक सफ़ेद पड़ गया था, उसकी सारी शक्ति जाती रही थी, वह आरामकुर्सी में ढह गया। तब मैंने देखा कि उसकी गर्दन पर छोटा-सा नीला घाव है, जैसा जोंक के काटने से होता है, पर उससे थोड़ा बड़ा। मुझे भी कमजोरी महसूस हो रही थी और आईने के पास जाकर मैंने देखा कि मेरी गर्दन पर भी ठीक वैसा ही घाव है। व्ला-दीमिर को हमारे तरह कमज़ोरी महसूस नहीं हो रही थी और उसकी गर्दन पर घाव नहीं था। मैंने व्लादीमिर से फिर से उसकी आपबीती सुनाने को कहा तो उसने बताया कि जब उसने सफ़ेद भूत पर गोली चलायी और फिर देखा कि यह उसका दोस्त है तो अन्तोनियो उससे मिन्नतें करता रहा था कि वह आखिरी बार उसे चूम ले, लेकिन व्ला-दीमिर ऐसा करने का साहस नहीं कर पाया, क्योंकि उसे अन्तोनियो

की नज़रों में कुछ खौफनाक लग रहा था।

"हम अपनी-अपनी आपबीती की बातें कर ही रहे थे कि कोई फाटक पर ज़ोर-ज़ोर से दस्तक देने लगा। हमने देखा कि बाहर पुलिस का अफसर छह सिपाही लिये खड़ा है।

"'ऐ महानुभावो!' वह बाहर से चिल्ला रहा था, 'फाटक खोलो! सरकार के नाम पर आपको गिरफ्तार किया जाता है!'

"परन्तु फाटक पर इतनी मज़बूती से पटरे ठुके हुए थे कि उसे तोड़ना पड़ा। जब अफ़सर कमरे में घुसा तो हमने उससे पूछा कि किस बात के लिए हमें गिरफ्तार किया जा रहा है?

"'इस बात के लिए कि आपने मृतकों का अपमान किया है और कोमो के कब्रिस्तानी गिरजे से सारी अस्थियां यहां उठा लाये हैं। उधर से गुज़रते एक पादरी ने तुम लोगों को जंगला तोड़ते देखा था, सुबह उसने हमें खबर कर दी।'

"हमने बहुत विरोध किया, मगर वह हमारी एक भी सुनने को तैयार नहीं था, इसी बात पर अड़ा हुआ था कि हम उसके साथ चलें। सौभाग्यवश तभी मुझे कोमो का नगराध्यक्ष (प्रसिद्ध पुराविद र०) नज़र आ गया, जिसे मैं जानता था। मैंने उसे मदद को बुलाया। मुझे और अन्तोनियो को पहचानकर वह हमसे माफ़ी मांगने लगा और उसने उस पादरी को लाने का हुक्म दिया, जिसने हमारी शिकायत की थी, लेकिन उसका कहीं कोई अता-पता ही न था। जब मैंने नगराध्यक्ष को हमारी आपबीती सुनायी तो वह ज़रा भी हैरान नहीं हुआ, हां, उसने मुझसे नगर के अभिलेखागार में चलने को कहा। अन्तोनियो को इतनी कमज़ोरी हो रही थी कि वह हमारे साथ नहीं चल सकता था। व्लादीमिर उसे घर पहुंचाने के लिए वहीं रह गया। अभिलेखागार में नगराध्यक्ष ने एक विशाल पुराना ग्रंथ खोला और मुझे पढ़कर सुनाया

"२० सितम्बर सन १६७६ के दिन नगर के चौक में डाकू गिओराम्बातिस्ता कनेली को सरेआम सज़ाए मौत दी गयी। इस डाकू ने बीस साल तक कोमो और मिलान के इलाकों में आतंक फैलाये रखा था। वह कोमो में पैदा हुआ और उसके अपने बयान के मुताबिक उसकी उमर पचास साल है। जब उसे फांसी के तख्ते पर लाया गया तो उसने पादरी से अंतिम प्रार्थना करवाने से इंकार कर दिया और एक ईसाई की तरह नहीं, बल्कि एक अधर्मी की तरह मरा।

"यही नहीं, नगराध्यक्ष ने (जो हर लिहाज से एक आदरणीय व्यक्ति है और जो अपना हाथ कटवा लेगा मगर झूठ नहीं बोलेगा) मुझे यह भी बताया कि **शैतान का घर** उसी जगह पर बना हुआ है, जहां कभी बुतपरस्तों का पाताल लोक की देवी हेकट और लामियों का मंदिर था। कहते हैं कि इस मंदिर की बहुत सी गुफाएं और सुरंगें अभी भी बची हुई हैं। वे भूगर्भ में बहुत गहराई तक जाती हैं और पुराने ज़माने में लोगों का ख्याल था कि वे पाताल लोक से जुड़ी हुई हैं। जनश्रुति यह भी है कि लामियां, जो, जैसा कि आप जानते हैं, हमारे **उपीरों** से काफ़ी मिलती-जुलती थीं, आज भी तरह-तरह के रूप धारण करके अपने पुराने मंदिर के गिर्द घूमती रहती हैं और भोले लोगों को फुसलाकर अपने यहां ले जाती हैं, ताकि उनका खून चूस सकें। हैरत की बात यह भी है कि व्लादीमिर को सचमुच ही थोड़े दिनों में घर से चिट्ठी मिली, जिसमें उसकी मां ने उसे जल्दी से जल्दी रूस लौट आने को लिखा था।"

रिबारेन्को चुप हो गया और फिर से अपने विचारों में डूब गया।

"तो क्या आपने इस मामले की कोई खोजबीन नहीं की?" रुनेव्स्की ने उससे पूछा।

"की थी," रिबारेन्को ने जवाब दिया। "नगराध्यक्ष की मैं बहुत इज़्ज़त करता हूं, लेकिन फिर भी मुझे लगा कि उसकी बातों से रहस्य सुलझता नहीं।"

"तो आपने क्या पता लगाया?"

"पेपीना से जब उसके भाई तित्ता के बारे में पूछा तो उसकी समझ में ही नहीं आया कि मैं कह क्या रहा हूं। उसने बताया कि उसका कोई भाई है ही नहीं, कि वह अन्तोनियो की मदद करने रेमोंदी हवेली से निकलकर ज़रूर आयी थी, लेकिन हमारे पीछे कभी नहीं दौड़ी आयी थी और न ही उसने अन्तोनियो से भाई को माफ़ी दिलवाने को कहा था। रेमोंदी हवेली और द'ऐस्ता हवेली के बीच दोन पियेत्रो की शानदार हवेली के बारे में भी किसी ने कुछ नहीं सुना था, और जब मैं खास तौर पर उसे ढूंढने निकला तो वहां मुझे कुछ नहीं मिला। इस घटना का मुझ पर ज़बरदस्त असर पड़ा। मैं जब कोमो से रवाना हुआ, तो अन्तोनियो तब बीमार था। महीने भर बाद रोम में मुझे पता चला कि वह कमजोरी से मर गया। मैं खुद इतना कमज़ोर था

जैसे कि बहुत लबी और सख्त बीमारी से उठा होऊ , लेकिन आखिर कुशल डाक्टरो के यत्नो से मेरा खोया हुआ स्वास्थ्य कुछ हद तक लौट आया।

"एक साल और इटली मे रहकर मै रूस लौट आया और अपना पुराना काम सभाला। मै पूरी तरह से काम मे जुट गया, जिससे मेरा ध्यान बटा रहता है, लेकिन कोमो की उस रात की याद आते ही मेरा रोम-रोम सिहर उठता है। आप यकीन नही करेगे आज भी अक्सर मेरी समझ मे नही आता कि इस याद से बचकर कहा जाऊ! हर जगह वह मेरा पीछा करती है, घुन की तरह अदर ही अदर मुझे खाये जा रही है, ऐसे भी क्षण आते है जब इस याद से छुटकारा पाने की खातिर मै आत्महत्या तक करने को तैयार होता हू! अगर मुझे यह ख्याल न होता कि मेरी कहानी आपके लिए चेतावनी हो सकती है तो यह सब बताने की हिम्मत कभी न करता। आप देख ही रहे है, बूढी ब्रिगेडियरनी के दाचा मे आपके साथ जो कुछ हुआ उसमे मेरी आपबीती के साथ कुछ समानता है। भगवान के वास्ते, अपने को बचाकर रखिये, और सबसे बडी बात अपने साथ हुई इन बातो का मज़ाक कतई मत उडाइये।"

रिबारेन्को की बातो मे रात गुज़र गयी, क्षितिज पर उषा की लाली छाने लगी।

सैकडो गिरजो के गुम्बद प्रभात की पहली किरणो मे जगमगाने लगे। पूरब से ताज़ी हवा का झोका आया और इवान महान घटाघर का सबसे बडा घटा गूजा। एक के बाद एक क्रेमलिन के और फिर सारे मास्को के गिरजो के घटे उसके प्रत्युत्तर मे गूजने लगे। सारा वायुमडल गुजायमान हो गया, ऊची-नीची स्वर-लहरिया चारो ओर गूजने लगी, सारा मास्को एक विशाल वाद्य बन गया।

स्नेव्स्की के वक्ष मे इस क्षण विचित्र भावना का मथन हो रहा था। वह श्रद्धापूर्वक पवित्र घटो की गूज सुन रहा था, अपने सामने जगमगाते ससार को स्नेहपूर्ण दृष्टि से देख रहा था। इसमे उसे भावी सुख की छवि दिख रही थी और ज्यो-ज्यो वह इस विचार मे बहता जा रहा था, त्यो-त्यो रिबारेन्को की कहानी के प्रभाव से अधकार मे उठे भयावह दृश्य फीके पडते और विलीन होते जा रहे थे।

रिबारेन्को भी विचारो मे डूबा हुआ था, लेकिन उसके चेहरे पर

विषाद की काली छाया थी। वह मुर्दो-सा पीला पड़ा हुआ था और इवान महान घंटाघर को एकटक निहारता जा रहा था, मानो उसकी ऊंचाई नजरों से मापना चाहता हो।

"चलिये," आख़िर उसने रुनेव्स्की से कहा, "आपको आराम करना चाहिए।"

वे दोनों बेंच से उठ खड़े हुए और रिबारेन्को से विदा होकर रुनेव्स्की अपने घर को चल दिया।

जब वह दाशा की मौसी के यहां पहुंचा तो फ़ेदोस्या अकीमोव्ना ज़ोरिना और उसकी बेटी सोफ़िया कार्पोव्ना ने सहर्ष उसका स्वागत किया, किंतु उसके यह बताने की देर थी कि वह किस मक्सद से आया है, उसी क्षण मां का बर्ताव बदल गया।

"क्या मतलब है इसका?" वह चिल्लायी। "और सोफ़िया? क्या आप इसीलिए इतने दिनों तक हमारे घर आते रहे हैं कि उसका मज़ाक उड़ायें? मैं आपको बताये देती हूं: आपके रोज़-रोज़ हमारे यहां आते रहने के बाद, आपकी शादी की सारे शहर में जो चर्चा हो रही है उसके बाद आपका यह बर्ताव मुझे एकदम अजीब लगता है! यह क्या है, श्रीमान? मेरी बेटी को आपने आस बंधायी, अब जब सब लोग उसे मंगेतर मानते हैं, आप दूसरी का रिश्ता मांगते हैं, सो भी किससे? मुझसे, सोफ़िया की मां से!"

उसकी ये बातें रुनेव्स्की के लिए आसमान टूटने के समान थीं। अब जाकर वह समझा कि ज़ोरिना उसे अपनी बेटी का दामन थमाना चाहती थी न कि अपनी भानजी का, साथ ही वह उसकी सारी चाल समझ गया। जब तक उसे कुछ उम्मीद थी, वह इस बात की भरसक कोशिश करती रही कि किसी तरह रुनेव्स्की का उसके दायरे में उठना-बैठना बना रहे, वह उसकी हर इच्छा को भांपने और पूरी करने की कोशिश करती रही थी। परंतु अब रुनेव्स्की की इस अप्रत्याशित मांग पर उसने आखिरी दांव चलने का फ़ैसला किया था और दुख का नाटक रचकर उससे हामी भरवा लेना चाहती थी। उसका दुर्भाग्य था कि उसकी चाल विफल रही, क्योंकि रुनेव्स्की ने पूरी शिष्टता और शुष्कता से जवाब दिया कि उसने कभी सोफ़िया कार्पोव्ना से शादी करने की सोची तक न थी, कि वह दाशा का रिश्ता मांगने आया है और उसे

उम्मीद है कि उसकी मौसी के पास इंकार करने का कोई कारण नहीं है। तब दाशा की मौसी ने अपनी बेटी को बुला लिया और गुस्से के मारे हांफते हुए उसे बताया कि मामला क्या है। सोफिया कार्पोव्ना गश खाकर तो नहीं गिरी, हां फूट-फूटकर रोने लगी, उसे हिस्टीरिया का दौरा पड गया।

"हे भगवान, हे भगवान," वह चिल्ला रही थी, "क्या बिगाड़ा है मैंने इसका? क्यो यह मुझे मार डालना चाहता है? नहीं, मैं यह सदमा नहीं सह पाऊंगी, हाय, मैं मर क्यो नहीं गयी! नहीं, अब मैं इस दुनिया मे ज़िदा नहीं रह सकती!"

"देखा, क्या हाल कर दिया आपने बेचारी सोफिया का," ज़ोरिना ने कहा। "मैं इस मामले को ऐसे ही नहीं छोड़ूगी!"

सोफिया कार्पोव्ना अपनी भूमिका इतनी निपुणता से निभा रही थी कि स्नेव्स्की को उस पर तरस आने लगा।

वह कुछ जवाब देना चाहता था, मगर तब तक न मा और न ही सोफिया कार्पोव्ना कमरे मे रह गयी थीं। थोडी देर इतजार करके वह अपने घर चल दिया इस सकल्प के साथ कि एक बार फिर दाशा की मौसी की अनुमति पाने की कोशिश किये बिना ब्रिगेडियरनी के दाशा पर नहीं लौटेगा।

वह विचारो मे खोया बैठा हुआ था जब नौकर ने आकर बताया कि कोई कैप्टन ज़ोरिन उससे मिलने आया है। उसने बुलाने को कहा और एक नौजवान अदर आया जिसका खुला और कातिमान चेहरा देखते ही मन मे उसके प्रति सद्भावना जागती थी। ज़ोरिन सोफिया कार्पोव्ना का सगा भाई था, पर चूकि वह अभी-अभी काकेशिया से लौटा था, इसलिए स्नेव्स्की ने उसे पहले कभी नहीं देखा था और उसके बारे मे कुछ नहीं जानता था।

"मै ऐसे मामले की बात करने आया हू, जिसका वास्ता हम दोनो से है," शिष्टतापूर्वक सिर झुकाकर उसने कहा।

"आइये, तशरीफ रखिये," स्नेव्स्की बोला।

"दो महीने पहले आपका मेरी बहन से परिचय हुआ, आप माता जी के यहा आने-जाने लगे और जल्दी ही यह अफवाह फैल गयी कि आप सोफिया का हाथ माग रहे हैं।"

"मुझे पता नहीं ऐसी अफवाहे फैली थी या नहीं," स्नेव्स्की

ने उसे टोका, "लेकिन मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि इसके पीछे मेरा कोई हाथ नहीं था।"

"मेरी वहन को विश्वास था कि आप उससे प्यार करते हैं, और शुरू से ही उसके साथ आपका व्यवहार उसके अनुमान की पुष्टि करता था। आपने उसके मन में प्रेम जगाया। आपने उससे वात भी कर ली थी ..."

"कतई नहीं!" रुनेव्स्की चिल्लाया।

कैप्टन जोरिन की आंखें आक्रोश से दहकीं।

"सुनिये, श्रीमान," वह चिल्लाया, रूखी शिष्टता की उन सीमाओं से वह निकलने लगा, जिनमें शुरू में रहना चाहता था, "आप-को शायद यह पता नही है कि मैं जव काकेशिया में था तभी सोफ़िया ने मुझे आपके वारे में लिखा था; उसके पत्रों से मैं जानता हूं कि आपने उसका रिश्ता मांगने का वायदा किया था; यह रहे उसके पत्र!"

"अगर सोफ़िया कार्पोव्ना ने इनमें यह वात लिखी है, तो मुझे खेद है कि मुझे इसका खंडन करना पड़ेगा," ज़ोरिन ने मेज़ पर जो पत्र फेंक दिये थे उन्हें छुए विना रुनेव्स्की ने जवाव दिया। "एक वार फिर मैं कहता हूं कि उसका रिश्ता मांगने का कभी मेरा कोई इरादा नहीं रहा, यही नहीं, मैंने कभी कोई ऐसा मौका नहीं आने दिया जिससे कि वह यह सोच सके कि मैं उससे प्यार करता हूं!"

"तो आप उससे विवाह करने का इरादा नहीं रखते?"

"हरगिज़ नहीं। इसका सवूत यह है कि मैं आपकी माता जी से उनकी भानजी का रिश्ता मांगने ही मास्को आया हूं।"

"वहुत हो गया। मुझे उम्मीद है आपने मेरे परिवार का जो अपमान किया है उसका उत्तर द्वंद्वयुद्ध में देने से इंकार नहीं करेंगे।"

"मैं आपकी सेवा में हाज़िर हूं, लेकिन मेरी विनती है पहले आप अपने इस कदम पर सोच-विचार कर लें। शायद ठंडे दिमाग़ से सोचने पर आप इस वात के कायल हो जायेंगे कि मैंने आपके परिवार की साख में वट्टा लगाने की वात सोची तक न थी।"

नौजवान कैप्टन ने रुनेव्स्की पर घमंड भरी नज़र डाली।

"कल सुवह पांच वजे व्लादीमिर जानेवाली सड़क पर मास्को से वीसवें वेर्स्ता पर मैं आपका इंतज़ार करूंगा," उसने वेरुखी से कहा।

रुनेव्स्की ने सिर झुकाकर सहमति प्रकट की। अकेले रह जाने पर

वह अगली सुबह की तैयारिया करने लगा। मास्को मे उसके परिचित बहुत कम थे, वे भी इन दिनो अपने-अपने दाचा पर थे, सो आश्चर्य की कोई बात नही कि उसने रिबारेन्को को अपने साथ ले चलने का फैसला किया।

अगले दिन सुबह तीन बजे ही वह और रिबारेन्को बग्घी पर सवार होकर व्लादीमिर जानेवाली सडक पर निकले। नियत स्थान पर ज़ोरिन और उसका सहायक उन्हे मिले।

रिबारेन्को ने ज़ोरिन के पास जाकर उसका हाथ पकडा।

"व्लादीमिर," उसका हाथ ज़ोर से दबाकर वह बोला, "इस मामले में तुम सच्चे नही हो, रुनेव्स्की से सुलह कर लो!"

ज़ोरिन ने मुह मोड लिया।

"व्लादीमिर," रिबारेन्को ने कहना जारी रखा, "किस्मत से खिलवाड मत करो, उर्जीना हवेली याद करो!"

"जाने दो, भैया!" अपना हाथ छुडाते हुए व्लादीमिर ने कहा, "फालतू बातो का वक्त नही है!"

वे झुरमुट के अदर चले गये।

ज़ोरिन के साथ आया आदमी नाटे कद का फौजी अफसर था, जो अपनी काली मूछो को लगातार ऐठता जा रहा था। रुनेव्स्की को उसका चेहरा परिचित-सा लगा और जब वह कदमो मे दूरी नापते हुए खास ढग से उछलता चला तो रुनेव्स्की तुरत पहचान गया कि यह फूकिन ही है, वही नाटा अफसर जिसका सोफिया कार्पोव्ना उस बॉल डास पार्टी मे इतना मज़ाक उडा रही थी, जहा रुनेव्स्की का उससे परिचय हुआ था।

"मेरे दोस्तो," रिबारेन्को ने व्लादीमिर और रुनेव्स्की से कहा, "अभी भी वक्त है, सुलह कर लो, मुझे लग रहा है तुम मे से एक जना घर नही लौटेगा।"

लेकिन फूकिन गुस्से से फुदकता हुआ रिबारेन्को के पास आ गया।

"सुनिये जनाब," अपनी बडी-बडी लाल आखो मे उसे घूरता हुआ वह बोला, "यहा जो अपमान हुआ है वह असहनीय है, जनाब सुलह का सवाल ही नही उठता, जनाब एक इज्ज़तदार, बहुत ही इज्ज़तदार घराने के नाम पर बट्टा लगा है, जनाब मै कोई सुलह-वुलह नही होने दूगा, जनाब और अगर मेरा दोस्त राजी हो भी

गया, तो मैं, येगोर फूकिन, उसके बदले लड़ूंगा, समझे जनाब!"

दोनों विरोधी एक दूसरे के सामने खड़े थे। उनके चारों ओर भयावह खामोशी छायी हुई थी, जो पल भर को घोड़ा चढ़ने की टकटक से भंग हुई।

गुस्से से तमतमाता चेहरा लिये फूकिन खौलता जा रहा था। "जी हां," वह चिल्ला रहा था, "मैं खुद जनाब रुनेव्स्की से द्वंद्वयुद्ध लड़ूंगा! अगर मेरे दोस्त ने इसे न मार डाला, तो मैं खुद इसे मारकर रहूंगा!"

गोली के धमाके के साथ उसका बड़बड़ाना बंद हुआ, और व्लादीमिर के सिर से काली लटों का गुच्छा उड़ गया। प्रायः उसी क्षण एक और धमाका हुआ और रुनेव्स्की ज़मीन पर ढह गया, उसकी छाती से खून निकल रहा था। व्लादीमिर और रिबारेन्को ने लपककर उसे उठाया और उसके घाव पर पट्टी बांधी। गोली उसकी छाती में लगी थी, वह बेहोश हो गया था।

"यही उर्जीना हवेली में तुमने देखा था," रिबारेन्को ने व्लादीमिर के कान में कहा। "तुमने एक दोस्त की हत्या कर दी है।"

रुनेव्स्की को बग्घी में ले जाया गया, और चूंकि ब्रिगेडियरनी का घर ही यहां सबसे नज़दीक था और इस घर की मालकिन को सब एक उदार, मानवप्रेमी बुढ़िया के नाते जानते थे, सो उसे वहीं ले जाया गया, हालांकि रिबारेन्को ने इसका काफ़ी विरोध किया।

रुनेव्स्की बहुत देर तक बेहोश पड़ा रहा। जब उसे होश आने लगा, तो सबसे पहली चीज़ जो उसने देखी वह प्रास्कोव्या आन्द्रेयेव्ना की तस्वीर थी। वह उस सोफ़े के ऊपर टंगी हुई थी, जिस पर रुनेव्स्की को लिटाया गया था। दूसरी ओर चंदोवेवाला पुराना पलंग था और दीवार के बीचोंबीच अंगीठी का विशाल आला।

रुनेव्स्की अपने पुराने कमरे को पहचान गया, लेकिन उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह यहां पहुंच कैसे गया और वह इतना कमज़ोर क्यों है। उसने उठना चाहा, लेकिन छाती में तेज़ दर्द ने उसे लेटे रहने पर मजबूर किया, और वह द्वंद्वयुद्ध से पहले उसके साथ जो कुछ हुआ था उसे याद करने लगा। उसे यह भी याद आया कि कैसे ज़ोरिन के साथ उसका द्वंद्वयुद्ध हुआ था, लेकिन वह नहीं जानता था कि यह कब हुआ था और कितनी देर तक वह बेहोश

रहा। अपनी दशा पर वह विचार कर ही रहा था कि एक अजनबी डाक्टर अदर दाखिल हुआ, उसने घाव की जाच की, नब्ज देखी और कहा कि उसे बुखार है। रात को याकोव ने कुछेक बार आकर उसे दवाई दी।

इस तरह कुछ दिन बीत गये। इस दौरान उसने डाक्टर और याकोव के अलावा और किसी को नही देखा। याकोव से वह कभी-कभार दाशा की बात करता था, उससे बस इतना ही जान पाया कि दाशा अभी भी नानी के घर पर ही है और बिल्कुल भली-चगी है। डाक्टर जब स्नेव्स्की को देखने आता तो यही कहता कि उसे आराम और चैन चाहिए, यह पूछने पर कि वह कब उठ सकेगा, उसने कहा कि कम से कम हफ्ता भर और उसे लेटे रहना होगा। इस सबसे स्नेव्स्की की बेचैनी और अधीरता और भी बढ गयी, उसका बुखार घटने के बजाय बहुत तेज़ हो गया।

एक रात को जब तेज बुखार के कारण उसे नीद नही आ रही थी, उसे पास ही कही से आता अजीब शोर सुनाई दिया। वह ध्यान से सुनने लगा, उसे ऐसा आभास हुआ कि यह शोर उसके कमरे से जुड़े कमरे मे आ रहा है। शीघ्र ही वह ब्रिगेडियरनी और क्लेओपात्रा प्लातोनोव्ना की आवाजें पहचानने लगा।

"कम से कम एक दिन और रुक जाओ, मार्फा सेर्गेयेव्ना," क्लेओपात्रा प्लातोनोव्ना कह रही थी, "सुबह तक ही ठहर जाओ!"

"नही, मेहरबान, नही, मैं अब और नही रुक सकती," सुग्रोविना ने जवाब दिया। "और फिर इतजार करने में रखा भी क्या है? एक दिन पहले क्या और एक दिन बाद मे क्या, आखिर होना वही है जो होना है। और तुम तो, बीबी, हमेशा छोकरियो की तरह ठिनकने लगती हो। दाशा की मा की बारी मे भी तुमने ऐसे ही किया था। अरी, मैं ब्रिगेडियरनी कैसी, जो खून से डरने लगू?"

"आप नही चाहती?" क्लेओपात्रा प्लातोनोव्ना चीख उठी, "आप एक बार इकार नही करना चाहती "

"मूरमा अमत्रोमी!" सुग्रोविना चिल्लायी।

यह सुनकर स्नेव्स्की थोडा उठकर चाबी के छेद से आख लगाये बिना न रह सका।

कमरे के बीचोबीच सेम्योन सेम्योनोविच तेल्यायेव खडा था,

सिर से पैर तक वह लौह कवच धारण किये हुए था। उसके सामने फ़र्श पर लाल कपड़े से ढकी कोई चीज़ पड़ी हुई थी।

"क्या चाहिए तुम्हें, मार्फ़ा?" रूखी आवाज़ में उसने पूछा।

"वक्त हो गया, मेरे मेहरबान," बुढ़िया फुसफुसायी।

अब रुनेव्स्की ने देखा कि ब्रिगेडियरनी सुर्ख लाल रंग का चोगा पहने हुए है, जिसकी छाती पर काला चमगादड़ कढ़ा हुआ था। तेल्यायेव के लौह कवच पर उल्लू बना हुआ था और शिरस्त्राण में उल्लू के पर लगे हुए थे।

क्लेओपात्रा प्लातोनोव्ना के चेहरे पर विभीषण मानसिक द्वंद्व की छाप थी। दीवार के पास जाकर उसने वहां टंगी एक छोटी से सिल उतारी, जिस पर विचित्र, गूढ़ चिन्ह बने हुए थे। सिल उसने फ़र्श पर पटक दी और वह चूर-चूर हो गयी।

अचानक दीवारी कागज़ के पीछे से एक चोर दरवाज़ा खुला और काला डोमिनो और नकाब पहने एक आदमी कमरे में दाखिल हुआ। उसे देखते ही रुनेव्स्की समझ गया कि यह वही आदमी है, जिसे अन्तोनियो ने दोन पियेत्रो द' उर्जीना की हवेली में देखा था।

उसके घुसते ही सुग्रोबिना और तेल्यायेव बुत के बुत बनकर रह गये।

"तुम आ गये?" थरथर कांपते हुए सुग्रोबिना बोली।

"तुम्हारा वक्त आ गया है!" अजनबी ने जवाब दिया।

"बस एक दिन ठहर जाओ, सुबह तक ही सही! मेरे अन्नदाता, मेरे मालिक, मेरे मेहरबान रखवाले!"

बुढ़िया घुटनों पर गिर पड़ी; उसका चेहरा भयंकर रूप से विकृत होने लगा।

"मैं इंतजार नहीं करना चाहता!" अजनबी का उत्तर था।

"बस एक घंटा!" ब्रिगेडियरनी रिरियायी। वह अब एक शब्द भी नहीं बोल रही थी, बस उसके होंठ निस्स्वर हिलते जा रहे थे।

"तीन मिनट!" उसका उत्तर था। "उठा सकती है तो उठा ले इनका फ़ायदा, बूढ़ी चुड़ैल!"

उसने तेल्यायेव को इशारा किया। तेल्यायेव ने झुककर फ़र्श से लाल कपड़ा उठा लिया और रुनेव्स्की ने दाशा को देखा, जो वहां बेहोश पड़ी हुई थी, उसके हाथ बंधे हुए थे। वह जोर से चीखा और

सोफे मे उठने के लिए छटपटाया, किंतु नकाब के पीछे मे छोटी-छोटी सफेद आखों की चौंधनी नजर ने उसे वहीं का वही गाड़ दिया। उसे और कुछ भी दिखाई नही दिया, उसके कानो में भयकर शोर हो रहा था, वह हिलने-डुलने तक मे असमर्थ था। अचानक उसके चेहरे पर किसी ने ठडा हाथ फेरा और उसकी जडता जाती रही। उसके पीछे प्रास्कोव्या अन्द्रेयेव्ना का प्रेत खडा था और पंखा झल रहा था।

"मेरी तस्वीर मे शादी करोगे?" उसने पूछा। "मैं आपको अगूठी दूगी, आप कल उसे मेरी तस्वीर को पहना देंगे। मेरी खातिर इतना सा काम कर देंगे न?"

प्रास्कोव्या अन्द्रेयेव्ना ने अपनी हडियल बाहो मे उसे भर लिया और वह बेहोश होकर तकिये पर गिर पडा।

स्नेव्स्की बहुत देर तक बीमार रहा, प्राय सारा समय वह प्रलाप करता रहा। कभी-कभी वह होश मे आता, लेकिन तब उसकी आखो मे दुखभरी हताशा होती। उसे यकीन था कि दाशा जिंदा नहीं है। हालाकि इसमे उसका कोई दोष नहीं था, लेकिन वह अपने आपको इस बात के लिए कोसता था कि उसे बचा नही सका। उसे जो दवाइया दी जाती उन्हे वह गुस्से मे परे फेक देता था, अपने घाव मे पट्टी उखाड फेकता और अक्सर ऐसा उन्माद उस पर छा जाता कि याकोव को उसके पास आते हुए डर लगता।

एक बार ऐसा ही एक दौरा जब उतरा था, जब प्रकृति हताशा पर विजय पा रही थी और धीरे-धीरे वह प्राणदायक नींद मे डूब रहा था, ऐसे मे उसे लगा कि उसे दाशा की आवाज सुनायी दी है। उसने आखे खोली, मगर कमरे मे कोई नही था और शीघ्र ही वह गाढी नींद की गोद मे समा गया। सपने मे वह उर्जीना हवेली मे पहुच गया। रिवारेन्को उसे बडे-बडे हॉलों मे ले जा रहा था और वे स्थान दिखा रहा था जहा उसके साथ विचित्र घटनाए घटी थीं। "अब हम इस सीढी से नीचे चलते हैं," रिवारेन्को ने कहा, "मैं तुम्हे वह हॉल दिखाता हू, जहा अन्तोनियो ग्रिफन पर सवार होकर गया था।" वे नीचे उतरने लगे, किंतु सीढी का कोई अत ही नही था। हवा निरतर अधिक गरम होती जा रही थी, स्नेव्स्की ने देखा कि सीढी के दोनो ओर की दीवारो की दरारों मे रह-रहकर आग की लाल लपटे चमकती हैं। "मैं वापस जाना चाहता हू," उसने कहा, लेकिन

रिवारेन्को ने उसका ध्यान इस बात की ओर दिलाया कि ज्यों-ज्यों वे आगे चले जा रहे हैं उनके पीछे की सीढ़ियां विशाल खड़ी चट्टानों में बदलती जाती हैं। "हम वापस नहीं जा सकते," उसने कहा, "हमें आगे ही जाना होगा!" और वे नीचे उतरते गये। आखिर सीढ़ियां खत्म हो गयीं, और वे तांबे के विशाल द्वार के सामने पहुंच गये। मोटे द्वारपाल ने चुपचाप द्वार खोल दिया और चमचमाती वर्दियां पहने कुछ नौकर उन्हें ड्योढ़ी तक ले गये, एक नौकर ने पूछा कि स्वामी को क्या बताये कौन आया है; रुनेव्स्की ने देखा कि उसके मुंह से आग निकलती है। वे तेज़ रोशनीवाले एक कमरे में पहुंचे, जहां ज़ोर-ज़ोर से गूंजते संगीत की लय पर भीड़ नाच रही थी। आगे ताश की मेज़ें लगी हुई थीं, उनमें से एक पर ब्रिगेडियरनी बैठी अपने खून से सने होंठों पर जीभ फेर रही थी; लेकिन तेल्यायेव उसके साथ नहीं था, उसके स्थान पर बुढ़िया के सामने काला डोमिनो पहने आदमी बैठा था। "उफ़!" ब्रिगेडियरनी ने गहरी उसांस ली, "इस बुत के साथ तो ऊब गयी! कब सेम्योन सेम्योनोविन आयेगा!" और उसके मुंह से आग की लपट निकली। रुनेव्स्की रिवारेन्को से कुछ पूछना चाहता था, मगर वह वहां था ही नहीं; वह अनजाने लोगों के बीच अकेला रह गया था। अचानक उस कमरे से, जहां लोग नाच रहे थे, दाशा निकली और उसके पास आ गयी। "रुनेव्स्की," उसने कहा, "आप यहां क्यों आये हैं? अगर उन्हें पता चल गया, तो आपकी मुसीबत हो जायेगी!" रुनेव्स्की पता नहीं क्यों भयाक्रांत हो गया। "मेरे पीछे-पीछे आइये," दाशा ने आगे कहा, "मैं आपको यहां से बाहर ले जाऊंगी, लेकिन एक शब्द भी नहीं बोलना, नहीं तो हम मारे जायेंगे।" वह जल्दी-जल्दी उसके पीछे चलने लगा, परंतु अचानक वह वापस मुड़ गयी। "ठहरिये," उसने कहा, "मैं आपको यहां के संगीतकार दिखा दूं!" दाशा उसे एक दरवाज़े के पास ले गयी और उसे खोलकर बोली: "देखिये, ये रहे हमारे संगीतकार!" रुनेव्स्की ने ज़ंजीरों से जकड़े और लपटों से घिरे अनेक अभागों को देखा। बकरों जैसी शक्लोंवाले काले शैतान बड़े जतन से आग तेज़ करने के लिए हवा कर रहे थे और तपे हथौड़े लोगों के सिरों पर मार रहे थे। चीखें, गालियां और ज़ंजीरों की खड़खड़ – यह सब मिलकर नारकीय शोर का रूप ले रहा था, जिसे रुनेव्स्की ने शुरू में संगीत

समझा था। उसे देखकर अभागे शिकारी ने उसकी ओर अपनी लम्बी बाहे बढ़ायी और चीखे "आ जाओ! हमारे पास आ जाओ!" – "चलो यहा से, चलो!" दाशा चिल्लायी और रुनेव्स्की को अपने पीछे अधेरे सकरे गलियारे मे ले गयी, जिसके अत मे सिर्फ एक दीया जल रहा था। रुनेव्स्की ने हॉल मे कोलाहल होते सुना। "कहा है वह, कहा है?" मिमियाती आवाजे कह रही थी, "पकडो उसे, पकडो उसे!" – "मेरे पीछे-पीछे चलो! मेरे पीछे-पीछे चलो!" दाशा चिल्ला रही थी, और वह हाफता हुआ उसके पीछे-पीछे दौडता जा रहा था, उनके पीछे गलियारे मे अनेक खुरो की टापे सुनायी दे रही थी। दाशा ने बगल का एक दरवाज़ा खोला और रुनेव्स्की को अदर खीचकर दरवाजा बद कर दिया। "अब हम बच गये!" दाशा ने कहा और उसे अपनी ठडी हड्डियल बाहो मे भर लिया। रुनेव्स्की ने देखा कि वह दाशा नही प्रास्कोव्या आन्द्रेयेव्ना है। वह जोर से चीख उठा और जाग गया।

उसके विस्तर के पास दाशा और व्लादीमिर खडे थे।

"बडी खुशी है मुझे कि आप जाग गये," व्लादीमिर ने उससे हाथ मिलाकर कहा। "आप कोई बुरा सपना देख रहे थे, लेकिन हमने आपको जगाना ठीक नही समझा, ताकि कही आप डर न जाये। डाक्टर का कहना है कि आपका घाव खतरनाक नही है और इसके लिए जितना आभारी मैं हू उतना और कोई नही। अगर आप ज़िदा न बचते तो मैं अपने को कभी माफ न करता। मुझे क्षमा कर दीजिये, मैं मानता हू कि तब मैं आपे से बाहर हो गया था!"

"सुनो, मीत, व्लादीमिर पर नाराज़ न होओ," दाशा ने मुस्कराते हुए कहा, "वह बडा भला आदमी है, बस जरा गुस्सा जल्दी खा जाता है। इससे जब तुम्हारा पास से परिचय हो जायेगा तो तुम जरूर इसे चाहने लगोगे।"

रुनेव्स्की की समझ मे नही आ रहा था, अपनी आखो पर विश्वास करे या न करे। परतु दाशा उसके सामने खडी थी, वह उसकी आवाज़ सुन रहा था और पहली बार वह उसे "तुम" कहकर बुला रही थी। जब से वह बीमार था उसकी कल्पना ने उसे ऐसे-ऐसे खेल खिलाये थे कि उसकी सभी धारणाए गडमडा गयी थी, उसके लिए यह पहचान पाना कठिन हो गया था कि सत्य कहा है और भ्रम कहा। व्लादीमिर

उसके असमंजस को भांप गया और बोला :

"जब से आप यहां लेटे हुए हैं, यहां बहुत कुछ बदल गया है। मेरी बहन का फूकिन से विवाह हो गया है और वे सिम्बीर्स्क चले गये हैं, बूढ़ी ब्रिगेडियरनी .. पर नहीं, मैं आपको बहुत ज्यादा बातें बता रहा हूं, आपकी तबीयत सुधर जायेगी, तो आप सब कुछ जान जायेंगे!"

"नहीं, नहीं," दाशा ने कहा, "अगर उन्हें सारी बात पता न चली तो ये कभी ठीक न होंगे। नानी को मरे हुए दो महीने हो गये," भारी सांस लेकर उसने रनेव्स्की से कहा।

"खुद दाशा भी सख्त बीमार रही थी, सुग्रोबिना के मरने के बाद ही ठीक हुई," व्लादीमिर ने बताया। "अब आप भी जल्दी-जल्दी चंगे हो जाइये, ताकि हम शादी की दावत उड़ा सकें।"

यह देखकर कि रनेव्स्की कुछ समझ नहीं पा रहा है, दाशा मुस्करा दी। "सबसे बड़ी बात तो बताना भूल ही गये," उसने कहा, "मौसी हमारे विवाह के लिए राजी है और हमें अपना आशीर्वाद देती है।"

यह सुनकर रनेव्स्की ने दाशा का हाथ पकड़ लिया, उस पर चुंबनों की बौछार कर दी, व्लादीमिर को गले लगाया और उससे पूछा कि क्या वे सचमुच लड़े थे?

"मैं तो यह सोच भी नहीं सकता कि आपको उसमें शुबहा हो सकता है," व्लादीमिर ने हंसते हुए जवाब दिया।

"लेकिन किस बात पर?" रनेव्स्की ने पूछा।

"मैं कबूल करता हूं मुझे खुद नहीं पता कि किस बात पर हम लड़े थे। आप बिल्कुल सच्चे थे और सच पूछें तो मुझे इस बात पर खुशी है कि आपने सोफ़िया से विवाह नहीं किया। मैंने खुद ही कुछ दिनों में देख लिया कि वह कितनी घुन्नी है और उसका स्वभाव कितना बुरा है, खास तौर पर जब मुझे पता चला कि आपसे बदला लेने की खातिर उसने फूकिन को यह बताया था कि कैसे आप उसका मजाक उड़ाते रहे थे; लेकिन तब तक देर हो चुकी थी और आप छाती में घाव लिये बिस्तर में लेटे हुए थे। मुझे सोफ़िया अच्छी नहीं लगती, खैर, जाने दीजिये उसे! मेरी तो यही कामना है कि वह फूकिन के साथ सुखी रहे, मुझे उससे कुछ लेना-देना नहीं है!"

"तुम्हें शर्म नहीं आती, व्लादीमिर! आखिर तुम्हारी सगी बहन है," दाशा ने कहा।

"बहन है तो होती रहे," व्लादीमिर ने उसे टोका। "वह भी क्या बहन हुई जिसकी वजह से मैं बेकार में ही एक भले आदमी को मारने चला था और तुम्हें दुखिया बनाने, तुम तो मुझे सोफ़िया से अधिक प्यारी हो!"

इस सुबह के बाद तीन महीने और गुज़र गये। स्नेव्स्की और दाशा का विवाह हो चुका था। वे व्लादीमिर के साथ जलती अंगीठी के पास बैठे हुए थे, और दाशा प्रभात का सुंदर सा गाउन पहने चाय उंडेल रही थी। क्लेओपात्रा प्लातोनोव्ना, जिसने दाशा के लिए अपना यह काम छोड़ दिया था, खिड़की के पास चुपचाप बैठी कुछ कर रही थी। स्नेव्स्की की नज़र अचानक प्रास्कोव्या अन्द्रेयेव्ना की तस्वीर पर पड़ी।

"देखिये, किस हद तक आदमी की कल्पना उसके विवेक पर हावी हो सकती है! अगर मुझे इस बात पर विश्वास न होता कि मेरी बीमारी के दिनों में मेरी कल्पना के कारण ही मुझे मतिभ्रम होता रहा है, तो मैं सौगंध खाकर कह सकता था कि इस तस्वीर से जुड़े विचित्र दृश्य वास्तविकता हैं।"

"प्रास्कोव्या अन्द्रेयेव्ना की कहानी में सचमुच कई अजीब बातें हैं," व्लादीमिर ने कहा। "मैं आज तक यह नहीं जान पाया हूं कि वह मरी कैसे थी और उसका वह सरोतर कौन था जो यों अचानक गायब हो गया। मुझे यकीन है कि क्लेओपात्रा प्लातोनोव्ना ये सारी बातें जानती है, मगर हमें बताना नहीं चाहती!"

क्लेओपात्रा प्लातोनोव्ना ने जो अब तक किसी की ओर ध्यान नहीं दे रही थी, नज़रें ऊपर उठायीं और उसके चेहरे पर सदा से अधिक दुखमय भाव आ गया।

"अगर बूढ़ी ब्रिगेडियरनी की मौत से मेरी सौगंध ख़त्म न हो जाती और दाशा के साथ स्नेव्स्की जी की शादी से उसके कुल पर से दुर्भाग्य की छाया न हट जाती, तो यह भयानक रहस्य आप कभी भी न जान पाते। लेकिन अब हालात बदल गये हैं और मैं आपकी जिज्ञासा पूरी कर सकती हूं। मुझे कुछ अंदाज़ है कि स्नेव्स्की जी किन दृश्यों की बात कर रहे हैं और मैं उन्हें यकीन दिलाती हूं कि इस मामले में उन्हें अपनी कल्पना को दोष नहीं देना चाहिए।

"यहां बहुत सी बातें ऐसी हैं जो आप यों ही नहीं समझ पायेंगे, इन्हें स्पष्ट करने के लिए मैं आपको बता दूं कि दाशा की नानी ओस्त्रोविचेव परिवार में जन्मी थी, जो हंगरी के एक बहुत पुराने कुल से है। हंगरी में अब यह कुल नहीं रहा, लेकिन पंद्रहवीं सदी के आखिर में वह ओस्त्रोविची के नाम से जाना जाता था। उसका कुल चिन्ह था लाल ज़मीन पर काला चमगादड़। कहते हैं कि ओस्त्रोविची बैरन* इससे अपने रात के हमलों की तेज़ी और शत्रुओं का खून बहाने की अपनी तत्परता प्रकट करना चाहते थे। इन शत्रुओं का नाम था तेलारा और ब्रिगेडियरनी के पुरखों पर अपनी श्रेष्ठता जताने के लिए उन्होंने अपने कुल चिन्ह में उल्लू को रखा, जो चमगादड़ों का जानी दुश्मन है। वैसे कुछ लोगों का यह भी कहना है कि यह उल्लू इस बात का संकेत है कि तेलारा कुल तैमूरलंग के वंश से चला आ रहा है, उसके राज-चिन्ह में भी उल्लू था।

"बहरहाल, जो भी हो, दोनों कुलों में लगातार लड़ाइयां होती रहती थीं और इनका सिलसिला न जाने कब खत्म होता अगर गद्दारी और हत्या ने सारी कहानी न बदल दी होती। ओस्त्रोविची कुल के अंतिम बैरन की पत्नी मार्फ़ा अनिंद्य सुंदरी थी, किंतु कलेजा उसका पत्थर का था। वह अमब्रोसी तेलारा के रूप और उसके यश पर मुग्ध हो गयी। एक अंधेरी रात को उसने अमब्रोसी को अपने महल में आने दिया और उसकी मदद से अपने पति का गला घोंट दिया। लेकिन उसके इस कुकर्म की सजा भी उसे भुगतनी पड़ी। अमब्रोसी ने जब देखा कि ओस्त्रोविची महल उसके कब्ज़े में है, तो उसकी जन्मजात शत्रुता की भावना जाग उठी और उसने शत्रु के सभी लोगों को डेन्यूब में डुबो दिया और महल में आग लगा दी। खुद मार्फ़ा बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचा पायी। ये सब बातें ओस्त्रोविची कुल के इतिवृत्त में बतायी गयी हैं, जो इस घर के पुस्तकालय में रखा है।

"यह तो मैं आपको नहीं बता सकती कि यह कुल कब और कैसे रूस में आ बसा; लेकिन यकीन मानिये मार्फ़ा के अपराध का दंड उसके प्रायः सभी वंशजों को भुगतना पड़ा है। उनमें कई यहां रूस में ही अपनी मौत नहीं मरे, कुछ पागल हो गये, और आखिरकार,

---

* यूरोप के कुछ देशों में सामंतों की एक उपाधि।

त्रिगेडियरनी की फूफी की, जिसकी तस्वीर आप अपने सामने देख रहे है, सगाई लोम्बार्दी के एक कुलीन पियेत्रो द' उर्जीना से हुई ."

"*क्या* कहा, पियेत्रो द' उर्जीना ?" रनेव्स्की और व्लादीमिर एकसाथ ही बोल उठे।

"हा," उसने जवाब दिया, "प्रास्कोव्या आन्द्रेयेव्ना के मगेतर का नाम दोन पियेत्रो द' उर्जीना था। बात बहुत पुरानी है, पर मुझे अच्छी तरह याद है। वह जवान नहीं था और ऊपर से विधुर भी, लेकिन उसकी बडी-बडी काली आखे यो चमकती थी जैसे कि वह बीस से ऊपर का न हो। प्रास्कोव्या अन्द्रेयेव्ना जवान लड़की थी, चालाक विदेशी ने आसानी से उस पर डोरे डाल लिये। वह उसके प्यार मे दीवानी हो गयी। उसकी मा को हर विदेशी चीज़ से वैसी नफरत नही थी, जैसी हमारी त्रिगेडियरनी शायद अपना विदेशी मूल छिपाने के लिए *खास* तौर पर *दिखाती थीं। वह* बेटी *का* विवाह दोन पियेत्रो से करना चाहती थी, क्योंकि वह अमीर था, बहुत बडी मडली अपने साथ लाया था और नवाबो की तरह रहता था। और फिर उसने यह भी वायदा किया था कि वह रूस मे ही बस जायेगा, लोम्बार्दी मे अपनी सारी जायदाद अपने बेटे के नाम कर देगा, जो तब कोमो में था।

"दोन पियेत्रो अपने साथ बहुत सारे उम्दा कलाकारो को भी लाया था। उसके वास्तुकारो ने यह मकान बनाया, चित्रकारो और मूर्तिकारो ने उसे सच्चे इतालवी ढग से सजाया। लेकिन दोन पियेत्रो के सारे वैभव के बावजूद बहुत से लोग उसमे घिनौनी कृपणता के लक्षण पाते थे। जब वह ताश खेलते हुए हारता था तो उसका चेहरा ही *बदल जाता था, वह पीला पड जाता था और कापने लगता था*, पर जब वह जीतता तो उसके होठो पर लोभ की मुस्कान होती और जीते हुए सोने को झपटकर उठाता था। उसके चरित्र के इन कुलक्षणों से प्रास्कोव्या आन्द्रेयेव्ना और उसकी मा का उसके प्रति रुख बदल जाना चाहिए था, लेकिन उन दोनो के सामने वह ऐसा ढोंग रचता था कि वे दोनो कुछ भी नही जान पायी और विवाह की तिथि घोषित कर दी गयी।

"शादी से एक दिन पहले अपनी नयी हवेली मे उसने शानदार दावत दी। पहले कभी भी उसने अपना सारा शिष्टाचार इतने चका-चौध कर देनेवाले ढग से नही दिखाया था, जितना उस शाम को।

अपने बुद्धिमत्तापूर्ण और सजीव वार्तालाप से वह सबका मनोरंजन कर रहा था, सब हंस रहे थे, खुश थे। अचानक गृहस्वामी को विदेशी मोहर लगा एक पत्र थमाया गया। पत्र पढ़कर वह झट से मेज़ से उठ खड़ा हुआ और उसने मेहमानों से यह कहकर क्षमा मांगी कि अचानक आ पड़े काम की वजह से उसे तुरंत जाना पड़ रहा है। उसी रात को वह रवाना हो गया। कोई नहीं जानता था कि वह कहां गया।

"लड़की की हालत बुरी थी। उसकी मां ने मंगेतर का अता-पता खोजने के लिए एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाया और आखिर यह कहने लगी कि यह सब उसकी बेटी से ब्याह न करने की एक चाल थी। इसका सबूत यह भी था कि जल्दी-जल्दी में रवाना होते हुए भी दोन पियेत्रो अपने आदमी को हिदायतें लिखकर दे गया था कि उसके मकान और उसमें जो सामान है उसका निबटारा कैसे करना है। सो अगर वह चाहता तो प्रास्कोव्या अन्द्रेयेव्ना को अपने यों एकाएक जाने की वजह बताकर जा सकता था।

"कुछ महीने बीत गये, मगर उसकी कोई खबर नहीं मिली। बेचारी लड़की दिन-रात रोती रहती थी, वह इतनी दुबली हो गयी कि दोन पियेत्रो ने उसे जो अंगूठी दी थी वह अपने आप ही उंगली से उतर गयी। दोन पियेत्रो की कोई खबर पाने की उम्मीद सब खो बैठे थे, तभी प्रास्कोव्या अन्द्रेयेव्ना की मां को कोमो से चिट्ठी मिली, जिसमें बताया गया था कि दोन पियेत्रो रूस से लौटने के बाद अचानक चल बसा। यह चिट्ठी उसके बेटे की थी। लेकिन लड़की के एक रिश्तेदार ने, जो अभी-अभी नेपल्स से आया था, बताया कि ठीक उसी दिन, जिस दिन जवान उर्जीना के शब्दों में उसका बाप गुज़रा था, इस रिश्तेदार ने वेज़ूवियस ज्वालामुखी देखने जाते हुए तोर्रे देल ग्रेको नामक जगह के ढाबे में दो यात्रियों को देखा था। उनमें एक नाइट गाउन और नाइट कैप पहने था, दूसरा काला डोमिनो और नकाब। दोनों यात्रियों में झगड़ा हो रहा था: गाउन पहने आदमी आगे नहीं जाना चाहता था, जबकि डोमिनो पहने आदमी उससे जल्दी करने को कह रहा था; उसका कहना था कि उन्हें अभी क्रेटर तक काफ़ी लंबा रास्ता तय करना है और अगले दिन संत अन्तोनियो का त्योहार है। आखिर डोमिनोधारी ने पहने आदमी को पकड़ा और महाबली की तरह उसे अपने पीछे हुए चढ़ाई चढ़ने लगा। जब वे आंखों से ओझल हो गये तो

इस रिश्तेदार ने लोगो से पूछा कि ये अजीब यात्री कौन है? लोगो ने बताया कि उनमे एक दोन पियेत्रो द'उर्जीना है और दूसरा कोई अंग्रेज है जो उसके साथ वेजूवियस का विस्फोट देखने आया है और अपनी सनक की वजह से कभी नकाब नही उतारता। रिश्तेदार के अनुसार इस भेट से साफ पता चलता था कि दोन पियेत्रो मरा नही, बल्कि कोमो से नेपल्स चला गया था।

"लेकिन, अफसोस, दूसरी खबरो से पता चला कि जवान उर्जीना ने सच बात लिखी है। कई प्रत्यक्षदर्शियो ने यकीन दिलाया कि वे दोन पियेत्रो के दफन के वक्त वहा मौजूद थे, वे कसम खाकर कहते थे कि उन्होंने खुद तावूत को कब्र मे उतारे जाते देखा था। सो, प्रास्कोव्या अन्द्रेयेव्ना के मगेतर का क्या हुआ, इसमे कोई शक न रहा।

"दोन पियेत्रो का बेटा इटली छोडकर कही नही जाना चाहता था, उसने अपने आदमी को लिखा कि वह उसके बाप का मकान नीलामी मे बेच दे। नीलामी बेतरतीब थी और प्रास्कोव्या अन्द्रेयेव्ना की मा ने भोज कुज कौडियो के मोल खरीद लिया।

"प्रास्कोव्या अन्द्रेयेव्ना पहले जितनी रोती-कलपती रहती थी, उतनी ही अब वह शात लगती थी। मा के कमरो मे वह कम ही नजर आती थी। ऊपर की मजिल मे ही एक कमरे से दूसरे का चक्कर काटती रहती थी। गलियारे मे जाते नौकर अक्सर उसे खुद अपने से बाते करते सुनते थे। उसका मनपसद काम था दोन पियेत्रो से जान-पहचान के दिनो की छोटी से छोटी बात याद करना, उसके साथ बितायी आखिरी शाम की एक-एक बात याद करना। कभी वह बिना किसी वजह के हसने लगती और कभी इतने दर्दनाक ढग से कराहती थी कि सुनकर दिल दहल उठता।

"एक शाम को उसका सारा शरीर ऐठने लगा, दो घटे बीतते न बीतते वह भयानक यत्रणाए सहती हुई मर गयी। सबका यही ख्याल था कि उसने जहर खा लिया, उसकी याददास्त की पूरी इज्जत करते हुए भी यह मानना होगा कि अनुमान सही ही था। वरना उसकी मौत के कुछ दिन बाद ही उसके कमरो से जो आवाजे आने लगी उनका क्या मतलब हो सकता था? वे पदचापे, आहे और अजीब से शब्द कहा से आये, जो मैंने खुद ऐसी शामो मे कई बार सुने जब आधी-तूफान से लगातार खडखडाती खिडकिया मुझे सोने नही देती थी और चिमनियो

में हवा ऐसे गूंजती थी मानो कोई करुण गीत गा रही हो। तब मेरे रोंगटे खड़े हो जाते, दांत किटकिटाने लगते और मैं ज़ोर-ज़ोर से वेचारी पापिन की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करती।"

"आप यह बता सकती हैं कि क्या शब्द आपको सुनाई पड़ते थे?" रुनेव्स्की ने पूछा, जो क्लेओपात्रा प्लातोनोव्ना की कहानी बढ़ते कौतूहल के साथ सुन रहा था।

"ओह्, उसके शब्दों में मुझे तब वहुत कुछ अजीब लगता था," क्लेओपात्रा प्लातोनोव्ना ने जवाव दिया। "उनका अर्थ सदा यही होता था कि उसे तब तक चैन नहीं मिलेगा जब तक कोई उसकी तस्वीर से मंगनी नहीं कर लेता, उसकी उंगली में उसकी अपनी अंगूठी नहीं पहना देता। शुक्र है परमात्मा का अब उसकी इच्छा पूरी हो गयी है, अब वह अपनी कब्र में चैन से सोयेगी। आपने दाशा को विवाह में जो अंगूठी पहनायी है, वह वही है जो दोन पियेत्रो ने अपनी मंगेतर को दी थी; और दाशा क्या प्रास्कोव्या अन्द्रेयेव्ना की जीती जागती तस्वीर नहीं है?"

"क्लेओपात्रा प्लातोनोव्ना!" थोड़ी देर चुप रहकर रुनेव्स्की ने कहा, "आपने सारा भेद नहीं खोला है। ओस्त्रोविची कुल का, जिसकी वंशज, आपके शब्दों में, ब्रिगेडियरनी थी, कोई अनबूझ रहस्य है, जो इस घर में मेरे कदम रखने के क्षण से ही मुझे घेरे हुए है। सुग्रोविना तेल्यायेव के साथ एक रात को क्या कर रही थी, जब उन दोनों ने अजीब भेस बना रखा था, ब्रिगेडियरनी लाल चोगा पहने थी और तेल्यायेव पुराने सूरमाओं का लौह कवच धारण किये हुए था? मैं सोचता था कि मैंने कोई सपना देखा था या जब बीमार था सन्निपात में देखा था, लेकिन आपने जो कुछ बताया है उसमें बहुत सी बातें ऐसी हैं, जो उस भयानक रात की घटनाओं से इतना मेल खाती हैं कि मैं इसे कल्पना का खेल नहीं मान सकता। आप स्वयं भी वहां मौजूद थीं जब ब्रिगेडियरनी और तेल्यायेव कोई जघन्य अपराध कर रहे थे, उसकी धुंधली सी वितृष्णा भरी याद ही मेरे मन में बची है। मैं इस बात पर शर्मिंदा हूं," यह देखकर कि सबकी आश्चर्यभरी नज़रें उस पर लगी हुई हैं, रुनेव्स्की ने कहना जारी रखा, "मैं इस बात पर शर्मिंदा हूं कि अभी तक इसके बारे में सोच रहा हूं। मेरा विवेक कहता है कि यह दुस्स्वप्न है, लेकिन ऐसा भयानक दुस्स्वप्न,

कि मैं इस बात का यकीन पाने की इच्छा को नहीं दबा सकता कि वाकई इस सबका कोई मतलब नहीं है।"

"आपने देखा क्या था?" क्लेओपात्रा प्लातोनोव्ना ने बेचैन होते हुए पूछा।

"मैंने आपको, मुग्रोबिना और तेल्यायेव को देखा था और डोमिनो व नकाब पहने उस रहस्यमय अजनबी को देखा था जो दोन पियेत्रो द'उर्जीना को वेज़ूवियम के क्रेटर पर ले जा रहा था और जिसके बारे में मुझे रिवारेन्को ने भी बताया था।"

"रिवारेन्को!" व्लादीमिर ने ठहाका मारा। "तुम्हारा साथी! अरे, प्यारे रुनेव्स्की, अगर उसने तुम्हें कोमो में अपनी आपबीती सुनायी थी, तो मुझे इसमें कोई हैरानी नहीं कि इससे तुम्हारा सिर चकरा गया।"

"लेकिन खुद तुमने और उस अन्तोनियो ने भी रिवारेन्को के साथ शैतान के घर में रात काटी थी न?"

"हां, काटी थी और हम तीनों ने न जाने कैसे-कैसे सपने देखे थे। फर्क सिर्फ इतना है कि अन्तोनियो और मैं जल्दी ही इस सब के बारे में भूल गये, जबकि बेचारा रिवारेन्को कुछ दिन बाद पागल हो गया। वैसे, उसके साथ न्याय करते हुए मुझे यह भी कहना चाहिए कि उसके लिए पागल होने की वजह भी थी। मेरी खुद समझ में नहीं आता कि मैं बच कैसे गया। काश मुझे पता होता कि शैतान के घर में जाने से पहले हमने जो पंच पी थी उसमें अफ़ीम किसने मिला दी थी, तो उसे अपने इस मज़ाक की अच्छी कीमत चुकानी पड़ती।"

"लेकिन रिवारेन्को ने पंच के बारे में मुझे एक शब्द भी नहीं कहा था।"

"क्योंकि वह आज तक यह मानने को तैयार नहीं है कि उसने जो दुस्स्वप्न देखा था वह अफ़ीम की वजह से था। मुझे इसका पक्का विश्वास है, क्योंकि एक गिलास पंच पीकर ही मुझे चक्कर आने लगे थे और अन्तोनियो लड़खड़ाने लगा था, एकदम सपाट जगह पर ही गिर पड़ा था।"

"मगर अन्तोनियो तो तुम्हारी इस शरारत की वजह से मर गया था?"

"यह सच है कि कुछ दिनों बाद वह मर गया, लेकिन यह भी

सच है कि उसे पहले से ही पुराना असाध्य रोग लगा हुआ था।"

"मगर वे हड्डियां, बच्चे की खोपड़ी और वह डाकू जिसे फांसी दी गयी थी?"

"नाराज़ मत होओ, दोस्त, इस सबके जवाब में मैं बस इतना कहूंगा कि खिारेन्को, जिसे मैं दिल से चाहता हूं, कोमो में डर के मारे पगला गया था। उसने सपने में और सचमुच में जो कुछ देखा-सुना था वह सब उसके दिमाग में गडमडा गया और उसने हर बात की अपने ही ढंग से कल्पना कर ली। फिर उसने तुम्हें वह सब बताया और तुमने तेज़ बुखार में उस सारी बकवास को और भी अधिक गडमडा दिया, यही नहीं यह विश्वास भी कर बैठे कि वह सब सच है।"

रुनेव्स्की को इस सारी व्याख्या से संतोष नहीं हुआ और वह बोला:

"पर यह देखो कि दोन पियेत्रो का किस्सा, जिसके घर में तुम लोग रात को घुसे थे, प्रास्कोव्या अन्द्रेयेव्ना की कहानी से जुड़ा हुआ है, और उस पर तो तुम में से कोई भी संदेह नहीं करता।"

व्लादीमिर ने कंधे बिचका दिये।

"मुझे तो दोनों के बीच बस यही संबंध दीखता है कि दोन पियेत्रो प्रास्कोव्या अन्द्रेयेव्ना का मंगेतर था। लेकिन इससे यह मतलब तो नहीं निकलता कि शैतान उसे नेपल्स ले गया था और उसके बारे में खिारेन्को ने सपने में जो कुछ देखा वह सच है।"

"लेकिन प्रास्कोव्या अन्द्रेयेव्ना के रिश्तेदार ने काला डोमिनो पहने आदमी का ज़िक्र किया था, खिारेन्को भी उसी की बात बताता है, और मैं खुद कसम खाने को तैयार हूं कि मैंने उसे अपनी आंखों देखा था। क्या तीन अलग-अलग लोग आपस में तय किये बिना अपने आपको धोखे में डालना चाहेंगे?"

"इसका जवाब मैं तुम्हें यह दूंगा कि काला डोमिनो इतनी आम चीज़ है कि उसकी चर्चा तीन तो क्या तीस लोग आपस में कुछ भी तय किये बिना कर सकते हैं। वह तो वैसे ही है जैसे लबादा, बग्घी, पेड़ या मकान – ऐसी चीज़ें, जिनका नाम हर किसी के मुंह पर दिन में कई बार आ सकता है। यह भी तो देखो कि खिारेन्को और रिश्तेदार की बातों में बस इतनी ही समानता है कि दोनों काले डोमिनो की चर्चा करते हैं, लेकिन दोनों की कहानी में जिन हालात में वह प्रकट होता है, उनमें कुछ भी समानता नहीं है। रही तुम्हारी बात, तुम्हारी

कल्पना ने बस वह रूप बना डाला, जिसके बारे में रिवारेन्को ने तुम्हें बताया था।"

"मगर मुझे ओस्त्रोविची और तेलारा के बारे में कुछ भी नही मालूम था, जबकि मैंने साफ-साफ देखा था कि सुग्रोविना के लाल लबादे पर काला चमगादड बना हुआ है और तेल्यायेव के कवच पर उल्लू।"

"पर वह भविष्यवाणी?" दाशा बोली। "तुम भूल गये कि पहले दिन जब तुम यहा आये थे तो तुमने खुद एक गाथा काव्य पढा था, जिसमे मार्फा और अमव्रोसी का, उल्लू और चमगादड का ज़िक्र था। पर मेरी समझ में नही आता कि तेल्यायेव का उल्लू या अमव्रोसी से क्या रिश्ता हो सकता है!"

"यह गाथा रिवारेन्को ने उस इतिवृत्त में से निकाली थी, जिसके बारे मे मैंने आपको बताया है," क्लेओपात्रा प्लातोनोव्ना ने कहा। "लेकिन आपके पढने के बाद मार्फा सेर्गेयेव्ना ने मुझसे वह पाडुलिपि जला देने को कहा था।"

"और इसके बाद आप कहते है कि वह वेम्पायर नही थी?" रुनेव्स्की ने व्लादीमिर और दाशा से कहा।

"क्या?"

"कि वह वेम्पायर नही है?"

"क्या कहते हो तुम भी, हमारी नानी भला वेम्पायर क्यो हो?"

"और तेल्यायेव भी वेम्पायर नही है?"

"क्या हो गया तुम्हे? सबको वेम्पायर क्यो बनाना चाह रहे हो?"

"तो फिर वह चटाके क्यो मारता है?"

दाशा और व्लादीमिर एक दूसरे की ओर देखने लगे और आखिर दाशा इतने खुले दिल से खिलखिलाकर हसने लगी कि व्लादीमिर इस विनोद के आवेग मे बह गया। वे दोनो हसी से लोट-पोट होने लगे, जब एक रुकता तो दूसरा हसने लगता। वे दोनो इतना खुलकर हस रहे थे कि रुनेव्स्की भी अपनी हसी न रोक पाया, हालाकि उसे लग रहा था कि हसना उचित नही है। सिर्फ क्लेओपात्रा प्लातोनोव्ना पहले की ही भाति उदास बैठी थी।

व्लादीमिर और दाशा तो जाने कब तक हसते रहते, अगर याकोव अदर आकर अपनी भारी-भरकम आवाज़ मे ऐलान न करता "सेम्योन सेम्योनोविच तेल्यायेव पधारे है!"

"वुलाओ, वुलाओ!" दाशा ने खुशी से कहा। "वेम्पायर!" हंसी से लोट-पोट होते हुए वह कह रही थी। "सेम्योन सेम्योनोविच वेम्पायर है! सूरमा अमव्रोसी है! हा-हा-हा!"

ड्योढ़ी में पदचाप सुनायी दी और सब चुप हो गये। दरवाज़ा खुला और बूढ़े सरकारी अफ़सर की जानी-पहचानी आकृति उनकी नज़रों के सामने प्रकट हुई। कत्थई विग, कत्थई कोट, कत्थई पतलून और सदा फैली रहनेवाली मुस्कान इस आकृति के विशिष्ट लक्षण थे और तुरंत ही इनकी ओर ध्यान जाता था।

"नमस्कार, दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना, अलेक्सान्द्र अन्द्रेयेविच!" दाशा और रुनेव्स्की के पास आते हुए उसने अपनी मिश्रीघुली आवाज़ में कहा। "तहेदिल से माफ़ी मांगता हूं, दूल्हे-दुल्हन को वधाई देने पहले नही आ सका, मगर वाहर जाना पड़ा था... घर के काम थे..."

वह अप्रिय ढंग से चटाके मारने लगा। जेव में हाथ डालकर उसने सोने की नासदानी निकाली, पहले दाशा फिर रुनेव्स्की की ओर यह कहते हुए वढ़ायी:

"मीठी खुशवूवाली है... असली रूसी... स्वर्गीया मार्फ़ा सेर्गेयेव्ना कोई दूसरा इस्तेमाल नहीं करती थीं..."

"देखो," दाशा ने रुनेव्स्की से फुसफुसाकर कहा, "इससे तुम इसे अमव्रोसी मान वैठे थे!"

वह तेल्यायेव की नासदानी की ओर इशारा कर रही थी, रुनेव्स्की ने देखा कि उसके ढकने पर वड़े-वड़े कानोंवाला उल्लू वना हुआ है।

रुनेव्स्की का ध्यान इस तस्वीर पर गया देखकर तेल्यायेव ने एक विचित्र दृष्टि उसपर डाली और सिर घुमाया हुआ वोला:

"जी, वस यों ही... एक रूपक है... कहते हैं उल्लू वुद्धिमत्ता का प्रतीक है..."*

वह एक आरामकुर्सी में वैठ गया और हद से ज़्यादा मीठी मुस्कान विखेरता हुआ वह कहता गया:

"वहुत सी नयी-नयी खवरें हैं! स्पेन में राजा दोन कार्लोस के

---

* भारत से भिन्न जहां उल्लू का मतलव वेवकूफ़ है, यूरोप में वास्तव में उल्लू वुद्धिमत्ता का प्रतीक माना जाता है।

समर्थकों की हार हुई है। कल आपके एक परिचित ने इवान महान घंटाघर से छलांग लगा दी, कालिजियेट असेसर रिवारेन्को ने..."

"क्या? रिवारेन्को ने घंटाघर से छलांग लगा दी?"

"जी हां कल पांच बजे.."

"मर गया?"

"जी हां "

"मगर क्यों?"

"कह नहीं सकता कारण कोई नहीं जानता . लेकिन मैं तो कहूंगा बहुत गलत किया आठवीं श्रेणी का अफसर था छठी श्रेणी का बनने में क्या देर लगती फिर पांचवीं का चौथी का "

तेल्यायेव चटाके मारने लग गया और जब तक वहां बैठा रहा स्नेव्स्की ने उसके मुंह से और कुछ नहीं सुना।

"बेचारा रिवारेन्को!" तेल्यायेव के चले जाने पर उसने कहा।

क्लेओपात्रा प्लातोनोव्ना ने ठंडी आह भरी।

"तो भविष्यवाणी सारी की सारी पूरी हो गयी," उसने कहा। "अब इस कुल पर शाप नहीं छाया रहेगा।"

"यह क्या कह रही हैं आप?" स्नेव्स्की और व्लादीमिर ने पूछा।

"रिवारेन्को ब्रिगेडियरनी की अवैध सतान था," उसने उत्तर दिया।

"रिवारेन्को? ब्रिगेडियरनी का बेटा?"

"वह खुद यह नहीं जानता था। आपने जो गाथा पढ़ी थी उसमें उसकी मृत्यु की भविष्यवाणी थी और ओस्त्रोविची कुल में सचमुच यह भविष्यवाणी चली आयी थी।"

दाशा और व्लादीमिर के चेहरे पर उदासी छा गयी, वे विचारमग्न हो गये। स्नेव्स्की भी किन्हीं ख्यालों में डूब गया।

"क्या सोच रहे हो, प्रिय?" आखिर दाशा ने मौन भंग किया।

"रिवारेन्को के बारे में सोच रहा हूं," स्नेव्स्की बोला, "और बीमारी के दिनों में जो देखा था उसके बारे में भी। मेरे दिमाग से वह बात नहीं निकल रही, लेकिन तुम यहां मेरे पास बैठी हो, मतलब वह सब मेरी कल्पना की उपज थी, दुस्वप्न था।"

इतना कहते ही उसका चेहरा फक पड़ गया, क्योंकि उसी क्षण उसे दाशा की गर्दन पर कुछ ही समय पहले भरे घाव का छोटा-सा निशान दिखा।

"यह निशान कहां से पड़ा?" उसने पूछा।

"पता नहीं। मैं तब बीमार थी, शायद कुछ चुभ गया होगा। मैं तो खुद सुबह तकिये को खूनोखून देखकर बड़ी हैरान हुई थी।"

"कब की बात है? तुम्हें याद है?"

"उसी रात को जब नानी गुज़री थी। उसके मरने से कुछ मिनट पहले। इस छोटी-सी दुर्घटना की वजह से ही मैं उसके दफ़न में नहीं जा सकी थी: अचानक इतनी जबरदस्त कमजोरी हो गयी थी!"

इस सारी बातचीत के दौरान क्लेओपात्रा प्लातोनोव्ना कुछ बुदबुदाती रही थी, रुनेव्स्की को लगा कि वह प्रार्थना कर रही है।

"हां," वह बोला, "अब मैं सब समझ गया। आपने दाशा को बचाया... क्लेओपात्रा प्लातोनोव्ना, आपने ही वह पत्थर की सिल तोड़ डाली... वैसी ही जैसी दोन पियेत्रो के पास थी..."

क्लेओपात्रा प्लातोनोव्ना याचना भरी नजरों से रुनेव्स्की को देख रही थी।

"नहीं-नहीं, मुझे वहम हुआ है," वह बोला। "बस, अब इसकी बात नहीं करेंगे। मुझे पूरा विश्वास है कि यह दुस्स्वप्न ही था।"

दाशा उसके शब्दों का अर्थ पूरी तरह नहीं समझ पायी मगर वह सहर्ष चुप हो गयी। क्लेओपात्रा प्लातोनोव्ना ने कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि रुनेव्स्की पर डाली और अपने पीले गालों से आंसू की दो बड़ी-बड़ी बूंदें पोंछ दीं।

"क्या हम चारों के चारों यहां मुंह लटकाये बैठे हैं?" व्लादीमिर बोला। "बहुत अफ़सोस है बेचारे रिबारेन्को का, पर अब हम उसके लिए कुछ नही कर सकते। आइये, एक मजेदार चुटकुला सुनाता हूं: तेल्यायेव बहुत बढ़िया वेम्पायर है न?"

कोई नहीं हंसा, रुनेव्स्की ने घंटी की रस्सी खींची और याकोव के अंदर आने पर उससे कहा:

"सेम्योन सेम्योनोविच कभी भी आये, उसके लिए हम घर पर नहीं हैं। सुन लिया तुमने? कभी भी नहीं!"

"जी, हजूर!"

तब से रुनेव्स्की ने बूढ़ी ब्रिगेडियरनी और तेल्यायेव की कभी कोई चर्चा नहीं की।